डॉ. गौरीशंकर आचार्य अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक

पदमसिंह भाटी

वरिष्ठ पत्रकार

उप सम्पादक

मुकेश चतुर्वेदी

※ सहयोगी ※

डॉ. भीमसेन शर्मा

श्रीमती अनिता शर्मा

रोशन कुमावत

प्रकाशक :

डॉ. गौरीशंकर आचार्य अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

बी-19-बी, जगनपथ, चौमू हाउस, जयपुर

दूरभाष नम्बर : 0141-2371244

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

बी-19 बी, जगनपथ, चौंमू हाऊस, जयपुर 302001, फोन नं. 2371244

1.	श्री दीपचन्द नाहटा	कोलकाता	अध्यक्ष
2.	श्री दौलतराम सारण, (भू.पू.केन्द्रीय मंत्री)	जयपुर	कार्यकारी अध्यक्ष
3.	प्रो.डॉ.मूलचन्द सेठिया	जयपुर	सदस्य
4.	श्री चम्पालाल उपाध्याय, एडवोकेट	रतनगढ़	सदस्य
5.	श्री पूर्णचन्द्र मीमानी	सरदार शहर	सदस्य
6.	प्रो.डॉ.बृजनारायण कौशिक	हनुमानगढ़	सदस्य
7.	श्री कन्हैयालाल शर्मा	सरदार शहर	सदस्य
8.	श्री मोहनलाल जैन	जयपुर	सदस्य
9.	प्रो.डॉ. छगनलाल शास्त्री	सरदार शहर	सदस्य
10.	श्री सत्यपाल वर्मा, चित्रकार	जयपुर	सदस्य
11.	प्रो. डॉ. विद्यासागर शर्मा	श्रीगंगानगर	सदस्य
12.	डॉ. बुधमल श्याम सुखा	दिल्ली	सदस्य
13.	श्री बजरंगलाल सोनी	सरदार शहर	सदस्य
14.	श्री जसवन्तसिंह, एडवोकेट	भादरा	सदस्य
15.	श्री ओमप्रकाश शर्मा	भादरा	सदस्य
16.	श्री पदमसिंह भाटी, वरिष्ठ पत्रकार	जयपुर	सम्पादक
17.	श्री गोविन्दनारायण खादीवाला (स्वतंत्रता सेनानी)	जयपुर	सचिव
18.	डॉ. भीमसेन शर्मा	जयपुर	स्वागताध्यक्ष
19.	श्री मुकेश चतुर्वेदी, पत्रकार	जयपुर	उप सम्पादक

संस्करण : 2006

टाईप सेटिंग एवं : आइडियल कम्प्यूटर सेन्टर®,
आवरण सज्जा 3580, जौहरी बाजार, जयपुर

मुद्रक : शीतल प्रिन्टर्स, जयपुर

अपनी बात

मेरा डॉ॰ गौरीशंकर जी आचार्य से १९५३ से ही सम्बन्ध रहा है, मेरे पूज्य पिता स्व॰ श्री ठाकुर मंगेज सिंह जी ने आचार्य जी की धर्म में पत्नि श्रीमती लक्ष्मी देवी को १९४५ में अपनी धर्म की बहन गंगा माताजी की सौगंध खाकर बनाया। मैं उन दिनों फतेहपुर में पढ़ रहा था। गांधी विद्या मंदिर में कक्षा छह से उनके जेष्ठ पुत्र डॉ॰ भीमसेन शर्मा का सहपाठी रहा। डॉ॰ शर्मा मेरे मित्र, भाई और सहयोगी रहे हैं। हमारी समय के साथ घनिष्ठता बढ़ती रही। हम दोनों से अक्सर आदरणीय आचार्य जी के अनेकों शिष्य, मित्र, प्रशंसक और साथी उनके द्वारा किए कार्यों और समाज के लिए उनके द्वारा दी गई सेवाओं का मूल्यांकन न होने की शिकायत करते रहते थे। मैं भी व्यस्त रहा, और उनके पुत्र डॉ॰ भीमसेन शर्मा भी व्यस्त रहे। सभी सज्जन कहते रहते थे और सहयोग का आश्वासन देते रहते थे किन्तु समयाभाव के कारण अब तक यह संभव नहीं हो सका।
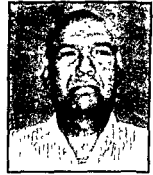
ऐसे कर्मठ, निष्ठावान, सहज-सरल निरभिमानी राजनेता, शिक्षा शास्त्री, सच्चे समाजसेवी, गौभक्त, गीता के उपासक डॉ॰ गौरी शंकर जी आचार्य के व्यक्तित्व कृतित्व के सम्बन्ध में अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रस्तुत करते हुए हमें अतीव हर्ष हो रहा है। अभिनन्दन की आवृति आपके हाथों में है यह विशाल न होकर एक लघु प्रयास है। इसमें आचार्य जी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर विहंगम दृष्टि अवश्य डाली गई है। ग्रन्थ समुचित जानकारी देने वाला और प्रेरक प्रतीत होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

इस ग्रन्थ को तैयार करने और आपके हाथों तक पहुंचाने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है मैं और मेरे सहयोगियों की ओर से उन सभी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और ध न्यवाद देता हूँ। जिन महानुभावों ने इस ग्रन्थ के लिए संदेश, लेख और संस्मरण लिखकर अपना सहयोग प्रदान किया है उसे हम कभी नहीं भुला सकते जिन्होंने छायाचित्र आदि उपलब्ध कराए है, उन सबके प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। डॉ॰ गौरीशंकर जी आचार्य अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के प्रति मै हृदय से कृतज्ञ हूँ।

आचार्यजी की वृद्धावस्था की वजह से जो कुछ बन पड़ा समय-सहयोग दिया। उनके परिवार के सदस्य भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिसमें उनके जेष्ठ पुत्र डॉ॰ भीमसेन शर्मा, पुत्रवधु, श्रीमती अनिता शर्मा का उत्साह और सहयोग प्रशंसनीय है। श्री मोहनलाल जी जैन, प्रो॰ डॉ॰ मूलचन्द जी सेठिया, श्री दौलतराम सारण, श्री बजरंगलाल सोनी, श्री पूर्ण चन्द जी मीमानी, श्री चम्पालाल जी उपाध्याय, श्री सत्यपाल जी वर्मा, प्रो॰डॉ॰ बृजनारायण जी कौशिक, डॉ॰विद्या सागर शर्मा, प्रो. डॉ. वेदप्रकाश जी शर्मा, हमारे मित्र सही राम पारीक आदि अनेक महानुभावों ने समयोचित सहयोग और सुझाव देकर हमारा उत्साह बढाया और ग्रन्थ तैयार करने की प्रेरणा दी। इन सब के प्रति मैं अत्यधिक आभारी हूँ।

डॉ. भीमसेन शर्मा, श्रीमती अनिता, श्री मुकेश चतुर्वेदी, श्री रोशन कुमावत विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं। जिनकी रात-दिन की मेहनत से यह संभव हो सका। आचार्यजी के पड़ पौत्र शुभम शर्मा और हर्षित तथा दोहिती विदीका बादल ने इस ग्रन्थ को तैयार करते समय बार-बार हमारा उत्साह बढाने में कोई कसर नहीं छोडी, इस बाल मंडली ने हमारी मित्र मण्डली बनकर जो सहयोग दिया उसके लिए वह कम धन्यवाद के पात्र नहीं हैं। आचार्यजी के बडे भ्राता स्व. श्री झम्मनलाल जी के पुत्र श्री ओमप्रकाश शर्मा पुत्रवधु श्रीमती स्नेहलता के अलावा आचार्यजी के कनिष्ठ पुत्र श्री कृष्णचन्द शर्मा पुत्रवधु श्रीमती शशी शर्मा और आचार्य जी के पौत्र आलोक शर्मा एवं पौत्रवधू मोनिका शर्मा भी धन्यवाद के पूर्ण अधिकारी हैं।

ज्वालापुर महाविद्यालय के सभी पदाधिकारियों और कर्मचारियों का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने ग्रन्थ के लिए संदर्भ सामग्री और चित्र उपलब्ध कराए। सभी को धन्यवाद प्रेषित करने के बाद इस ग्रन्थ के प्रकाशक को भी धन्यवाद देता हूँ। जिन्होंने अच्छे ढंग से ग्रन्थ का प्रकाशन कर इसे आपके हाथों तक पहुँचाया है।

धन्यवाद और आभार की अन्तिम कडी में उन सभी को जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से ग्रन्थ के प्रकाशन में सहयोग, सुझाव और सलाह देकर एक अच्छे काम में अपनी शुभकामनाएं दीं, वे सभी धन्यवाद के पात्र है। इस अभिनन्दन ग्रन्थ को पूर्ण नहीं कहा जा सकता क्योंकि आचार्य जी जैसे महान पुरूष के कार्यो का मूल्यांकन मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के लिए कतई सम्भव नहीं है।

पद्मसिंह भाटी
सम्पादक

गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष श्री गौरीशंकर आचार्य
सर्वोदय विद्यालय के उद्घाटन अवसर पर भाषण देते हुए

तेजोराशि आचार्यश्री

जिस प्रकार सूर्योदय हो जाने पर अन्धकार का समूल नाश हो जाता है, उसका लेशमात्र भी अवशिष्ट नहीं रहता, उसी प्रकार भगवान का ज्ञान, भगवान का साक्षात्कार हो जाने पर अविद्या अथवा अज्ञान का सर्वथा अभाव हो जाता है, माया का लेश भी नहीं रह जाता। अन्धकार अथवा अज्ञान कोई वास्तविक पदार्थ नहीं हैं, प्रकाश एवं ज्ञान के अभाव की ही क्रमशः "अन्धकार" एवं "अज्ञान" संज्ञा हैं। अतएव ज्ञान रूप प्रकाश का आर्विभाव होते ही अज्ञान रूप अन्धकार सर्वथा विलीन हो जाता है। जब अज्ञान ही नहीं रहता तब उसके कार्यरूप काम-क्रोधादि विकार, दुर्गुण एवं दुराचार तो रह ही कैसे सकते हैं और जब दुर्गुण-दुराचार नहीं रहे तब उनके फलरूप, दुःख-शोकादि का भी अत्यन्ताभाव हो जाता है। इस प्रकार परमात्म विषयक ज्ञान अथवा भगवत्साक्षात्कार हो जाने पर माया एवं उसका सारा परिवार दुःख-शोक, दरिद्रता-दीनता, पराधीनता, ममता-मोह, राग-द्वेष आदि नष्ट हो जाते हैं। सूर्योदय हो जाने के वाद अन्धकार निवृत्ति के लिए स्वतन्त्र प्रयत्न नहीं करना पड़ता। सूर्योदय के निकट आते ही अन्धकार अपने आप भागने लगता है। उसी प्रकार आचार्य गौरीशंकर जी के सत्संग मात्र से अज्ञान रूपी अन्धकार स्वतः दूर हो जाता है।

-मुकेश चतुर्वेदी
पत्रकार

※ अनुक्रमणिका ※

उप-राष्ट्रपति, भारत
VICE-PRESIDENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य के सम्मान में एक अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। शिक्षा, संस्कृति और समाज-सेवा के क्षेत्रों में आचार्य जी ने जीवनभर निःस्वार्थ भाव से निष्ठापूर्वक जो कार्य किया है, वह वास्तव में सराहनीय है। स्वतंत्रता पूर्व भूतपूर्व बीकानेर रियासत में शिक्षा मंत्री और उसके पश्चात कुछ समय के लिए राजस्थान विधान सभा के सदस्य के रूप में उन्होंने सदैव शिक्षा, उच्च संस्कारों और नैतिक मूल्यों को हमारे समाज में प्रतिस्थापित करने के लिए निष्ठापूर्वक कार्य किया। उनके द्वारा स्थापित गांधी विद्या केंद्र, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का अनुसरण करनेवाला शिक्षण संस्थान है जो राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार की दिशा में सराहनीय कार्य कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि इस अभिनंदन ग्रंथ में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के संदर्भ में प्रकाशित सामग्री से युवा पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी।

मैं डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य के अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की मंगल कामना करता हूँ।

(भैरोंसिंह शेखावत)

नई दिल्ली
8 जून, 2005

हरिशंकर भाभड़ा
उपाध्यक्ष

दूरभाष - 91-141-2227568 (कार्या.)
91-141-2220187 (निवास)
राजस्थान सरकार
आर्थिक नीति एवं सुधार परिषद
सचिवालय, जयपुर-302 005
निवास : 50, सिविल लाइन्स, जयपुर

क्रमांक : DC/EPRC/05/462
जयपुर, दिनांक 27 जुलाई, 05

—सन्देश—
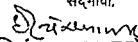
मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि डॉ. गौरी शंकर जी आचार्य के 91 वें जन्मोत्सव पर उनका अभिनन्दन किया जाकर उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेट किया जायेगा।

जैसा कि हम सभी को विदित है कि स्वतंत्रता संग्राम में प्रजा परिषद् आन्दोलन के अंतरंग सहयोगी रहे डॉ. गौरी शंकर जी आचार्य यौवनावस्था से ही समाज सेवा को अंगीकार कर संकल्पबद्ध होकर प्रारम्भ से ही निरन्तर समर्पित भाव से उसमे लगे हुये है। डॉ. गौरीशकर जी शैक्षिक, साहित्यिक, ग्रामोत्थान एव समाजोत्कर्ष के साथ हिन्दी, आयुर्वेद भारतीय सस्कृति, गौ–गीता तथा गायत्री के प्रबल उपासक है।

उनका त्याग, समर्पण एवं विद्वता निश्चितरूप से प्रशंसनीय एव अनुकरणीय है।

मैं अभिनन्दन ग्रन्थ समिति के सभी सहयोगी महानुभावो के प्रयासों की सराहना करते हुये अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन की ईश्वर से मंगल कामना करता हूँ।

सद्भावी,

(हस्ताक्षर)

(हरिशंकर भाभड़ा)

ललित किशोर चतुर्वेदी
प्रदेशाध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान

कार्यालय : सी-51, सरदार पटेल मार्ग
सी-स्कीम, जयपुर-302 001
फोन : 0141-2225040, 2221364

क्रमांक

दिनांक ....
क्रमाक 11083
दिनांक 23 सितम्बर 05

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि डा0 गौरीशंकर जी आचार्य के जीवन के 90वे वर्ष पूर्ण होने पर 91वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जायेगा। ऐसे श्रृद्धेय आचार्य जी ने शिक्षा के क्षेत्र में जो प्रयास किया और जिसके परिणाम स्वरुप सरदारशहर में गॉधी विद्या मन्दिर की स्थापना हुई उसमें भारतीय जीवन मूल्यों के अनुरुप अपना जीवन समाज की सेवा में लगा देने वाले कई कर्मठ कार्यकर्ता खडे कर दिये हैं। शैक्षणिक और साहित्यिक गतिविधियों के मूलाधार, ग्रामोत्थान, आयुर्वेद गौं सेवा और मातृ भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किये हैं। मेरा विश्वास है कि अभिनन्दन ग्रन्थ समाज को दिशा सन्देश देने में सफल होगा। मैं आचार्य जी के दीर्घायु की कामना के साथ–साथ अभिनन्दन ग्रन्थ की सफलता की हृदय के अन्तःस्थल से कामना करता हूँ।

शेष शुभ ।

सद्भावी

(ललितकिशोर चतुर्वेदी)

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य : संक्षिप्त जीवन वृत्त

नाम - गौरीशंकर शर्मा आचार्य
पिता का नाम - श्री जगनराम जी शर्मा वकील
माता का नाम - श्रीमती चन्द्रावली शर्मा
जन्मतिथि - कार्तिक कृष्णा १२ वि.स. १९७२ ४ नवम्बर, १९१५
जन्मकुण्डली -
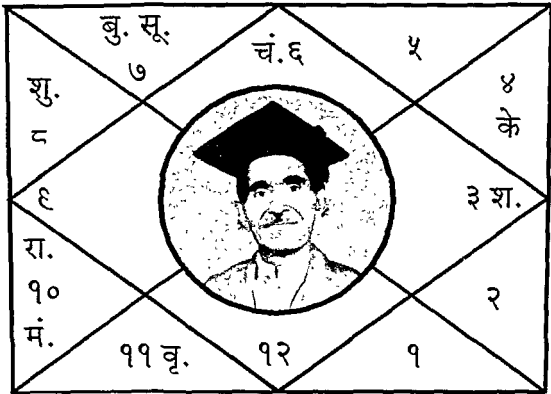
शैक्षणिक योग्यता - * आयुर्वेद भास्कर, विद्या भास्कर; सांख्य-योग काव्यतीर्थ; शास्त्री, वेदान्ताचार्य;एम.ए., साहित्य शास्त्री साहित्य-रत्न तथा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. "न्याय और वैशेषिक दर्शन में आत्मा"

शिक्षा स्थल - * आठ वर्ष की उम्र से गुरूकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर हरिद्वार विद्याध्ययन। * लाहौर डीएवी से हाई स्कूल, इण्टर तथा बी.ए * कलकत्ता में दो बार परीक्षा देने गये। * बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से शास्त्री और

आचार्य की उपाधि ली। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन जी दर्शनशास्त्र के अध्यापक थे। ※ हिन्दी विश्वविद्यालय प्रयाग से राजनीति रत्न किया। ※ बनारस में सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय में भी तीन वर्ष अध्ययन किया। ※ एम.ए. आगरा विश्वविद्यालय से, पीएच.डी. कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय

पुरस्कृत - ※ छात्र जीवन में बनारस, लाहौर एवं बीकानेर में अनेक बार पुरस्कृत किये गये। ※ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रथम गीता प्रतियोगिता में दो हजार से भी ऊपर प्रतियोगियों के मध्य, प्रबल प्रतिकूल लॉबी के बावजूद, प्रथम पुरस्कार (स्वर्ण पदक) ※ नेपाल तथा अन्यत्र भी सम्मानित किये गये।

विवाह - ※ २१ वर्ष की आयु में सौ.का. लक्ष्मी देवी शर्मा के साथ परिणय सूत्र में बंधे मण्डी डबवाली (पंजाब) हरियाणा। ※ २० दिसम्बर १९९६ को धर्मपत्नी का देहावसान।

संतान - ※ २ पुत्र ※ ४ पुत्रियॉं ※ श्रीमती तारादेवी, श्री रमेश चन्द शर्मा ※ डॉ. भीमसेन शर्मा, श्रीमती अनिता शर्मा ※ श्री कृष्ण चन्द शर्मा, श्रीमती शशी शर्मा ※ श्रीमती इन्दु आचार्य, स्व.डॉ.उपेन्द्र मोहन ※ डॉ.श्रीमती संतोष द्विवेदी, श्री मधु सूदन जी द्विवेदी ※ श्रीमती श्यामा उपाध्याय, श्री अजय उपाध्याय

कार्यक्षेत्र - ※ महामना मदन मोहन मालवीय जी के निजी सचिव से अपने कार्यक्षेत्र का प्रारम्भ किया।

※ सरदारशहर में २ वर्ष और बाद में २ वर्ष श्रीगंगानगर में अध्यापक रहे (सरकारी सेवा ५ वर्ष करना जरूरी था)। ※ बनारस विश्वविद्यालय मे छात्र-संगठन (संस्कृत विद्यार्थी संघ) बनाया। ※ बनारस के वि.वि.की परीक्षा व पाठ्यक्रम में परिवर्तन कराया। ※ वृहद् पुस्तकालय सम्मेलन का आयोजन। ※ बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन की स्थापना। ※ सरदारशहर में साहित्य समिति और हिन्दी विद्यापीठ के माध्यम से शैक्षिक, साहित्यिक एवं राजनीतिक प्रौढ शिक्षा, एवं स्त्री शिक्षा की लोक-चेतना का जागरण। ※ सरदारशहर तथा श्रीगंगानगर में अनेक पुस्तकालय और तीसों नुक्कड वाचनालय खोलने हेतु अभिप्रेरणा। ※ श्रीगंगानगर में पुस्तकालय की स्थापना एवं विकास। ※ बीकानेर राज्य में हिन्दी का प्रचार-प्रसार। ※ स्वाधीनता संग्राम (प्रजापरिषद्

आन्दोलन) में अग्रणी सहभागी। ※ राजनीति में महाराजा श्री शार्दुलसिंह जी के समय प्रवेश किया। ※ रायसिंह नगर में सरकार विरोधी आन्दोलन करवाया गया जिसमें सरकार ने गोली चलवाई उसमें श्री बीरबल मोची गोली लगने से शहीद हुए, इस आन्दोलन में धर्म पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी आचार्य झण्डा लेकर आगे आगे चल रही थीं, लाठी चार्ज में उनको चोट आई ※ आजादी के बाद बीकानेर में मंत्रिमण्डल बना जिसमें शिक्षा, रेलवे, चिकित्सा, व डाकतार विभाग के मंत्री बने। ※ बीकानेर में हिन्दी विश्वविद्यालय स्थापना का प्रयास। ※ आजादी के बाद राजस्थान के तत्कालीन राज्य शासन को प्रेरित कर आयुर्वेद बोर्ड, समाज कल्याण बोर्ड, शिक्षा बोर्ड आदि की स्थापना, अध्यक्ष/उपाध्यक्ष आदि एवं उनका कार्य आगे बढ़ाने में अहम् भूमिका। ※ गांधी विद्या मंदिर (ग्रामीण विश्वविद्यालय) की २ अक्टूबर १९५० में स्थापना एवं स्थापन्न प्रेरक पथ प्रदर्शक रहे जिसमें प्रथम संस्थापक अध्यक्ष भी रहे। ※ पचास के दशक में रतनगढ़ से विधानसभा सदस्य। ※ हनुमानगढ और संगरिया में महाविद्यालयों की स्थापना करवाई। ※ भादरा में बालमंदिर की स्थापना। ※ अखिल भारतीय गुर्जर गौड़ विप्र के दस वर्ष अध्यक्ष तथा उदयपुर और कोटा सम्मेलनों की अध्यक्षता। ※ राजस्थान गौशाला पिंजरापोल संघ के संस्थापक अध्यक्ष तथा दस वर्ष तक अध्यक्ष रहे। ※ आयुर्वेद विश्वभारती सरदार शहर के प्रेरक एवं कई वर्ष परामर्शक ※ वृक्षारोपण कार्य में विशेष अभिप्रेरण एवं योगदान। ※ भारत की समस्त गौशालाओं का एक संगठन बनाकर विशेष अधिवेशन जयपुर में करवाया। ऑल इण्डिया गौशाला संघ के महामंत्री अनेकों वर्ष तक रहे। ※ प्राकृतिक चिकित्सालय जयपुर के अनेकों वर्ष तक अध्यक्ष रहे। ※ बीकानेर में स्वतंत्रता सैनानी के रूप में नागरिक अभिनन्दन किया गया। ※ सरदारशहर में २७ सितम्बर, १९९८ को सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। ※ गुरूकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के १२) वर्ष प्रधान व ५ वर्ष कुलपति रहे।

□

“ग” की गौरव गाथा

गणेश, गुरू, गीता, गाय और गायत्री इन पांच 'ग' के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले छठे 'ग' गौरीशंकर आचार्य उन बिरला विभूतियों में से एक हैं जो गीता के मूल मंत्र 'कर्म' को अपने जीवन में उतार कर एक कर्मयोगी के रूप में निर्लिप्त भाव से निरन्तर क्रियाशील रहे हैं और आज जबकि वे अपने जीवन के नौ दशक पूर्ण कर दसवें दशक की ओर बढ रहे हैं अब भी इन पांचों 'ग' के लिए और अधिक कार्य करने के लिए प्रयत्नशील हैं। अपने इष्ट गणेश का सदैव स्मरण करके किसी भी कार्य का श्री गणेश करते समय वे अपने गुरू, गीता, गाय और गायत्री के प्रचार और प्रसार के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। गुरू के आदेश से गौरीशंकर जी ने ६५ वर्ष की आयु में भी अध्ययनरत रहकर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की। गीता उनका प्रिय ग्रन्थ है जिसका उन्होंने इतनी गहनता से अध्ययन किया है कि आज विश्वभर में उनके मुकाबले उसके रहस्य को समझने वाला नहीं है। गीता विश्व का एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जिसको जितनी बार पढा जाए हर बार एक नवीन रहस्य उजागर होता है। गीता के १८ अध्यायों के ७०० श्लोकों का सार अपने मात्र १५ श्लोको में करने वाले गौरीशंकर आचार्य ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कोलकाता से गोवा तक के विद्वानो के साथ हुए शास्त्रार्थ में २१ वर्ष की वय में ही बडे-बडे विद्वानों को शिकस्त देकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इस गीता के शास्त्रार्थ प्रतियोगिता का आयोजन पं. श्रीमदन मोहन मालवीय जी ने किया था। देशभर के विद्वानों के साथ हुए इस शास्त्रार्थ में उन्होंने चुनौती देते हुए कहा था कि गीता का सार इन १५ श्लोकों में ही निहित है इनके अलावा कुछ नहीं। गीता के श्लोकों को जीवन में अंगीकार कर उसके अनुरूप अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर प्रयत्नशील रहना अगर किसी को सीखना है तो वह गौरीशंकर आचार्य से सीख सकता है। ये अपने शिष्य मंडली को हमेशा श्री कृष्ण बनकर अर्जुन के समान निराशा छोड़कर कर्म करने के लिए प्रेरित करते रहे हैं। गाय की सेवा उनके जीवन का लक्ष्य रहा है, गौ सेवा के लिए उन्होंने गौशालाओं का अखिल भारतीय संगठन खडा किया और जयपुर में बना गौमाता भवन उनकी देन है। गायत्री मंत्र का जाप करके अपनी दैनिक चर्या शुरू करने वाले गौरीशंकर इन पांच 'ग' के साथ मिलकर हमेशा अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं।

आचार्य गौरीशंकर ने अपने शिष्यमंडली के साथ मित्र के रूप में व्यवहार कर उसे हमेशा ही प्रेरणा दी है। एक छोटी सी घटना है, उसी से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि वे कभी भी

निराश नही हुए और निराशा में ही आशा की किरण खोजना उनका लक्ष्य रहा है। बात सरदार शहर की है। वेदो के सिलसिले मे एक संगोष्ठी थी। जिसमे आचार्य जी को मुख्य अतिथि के रूप में भाषण देना था। वेदों का विषय नीरस होने के कारण सभा में श्रोताओं की संख्या अंगुलियों पर गिनने लायक ही थी। वे भाषण देने खड़े हुए तो उन्होंने सबसे पहले सभा में कम संख्या में लोगों के आने की चर्चा की और कहा कि आज वेदों के सिलसिले में आयोजित इस संगोष्ठी में इतने कम लोग आये हैं, इसका प्रमुख कारण हमारी कमजोरी है क्योंकि आज हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को भूल चुके हैं। इसके प्रचार प्रसार के लिए हमें बढ चढकर काम करना है। इसमें निराश होने की जरूरत नहीं है। संगोष्ठी में शामिल सभी लोगों को एक प्रतिज्ञा करनी है वह यह कि प्रत्येक व्यक्ति संगोष्ठी में व्यक्त किए गए विचारों को ध्यान से सुने और इसके बाद यही सारी बातें अपने एक मित्र को इस प्रतिज्ञा के साथ बताए कि वह भी यही बात अपने एक मित्र को बताएगा।

इस प्रकार इसका प्रचार अपने आप हो जाएगा और इस विषय पर आयोजित संगोष्ठी में इससे दस गुना लोग भाग लेंगे। हुआ भी यही इसी विषय में ६ माह बाद जब संगोष्ठी आयोजित की गई तो हॉल खचाखच भरा हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे शहर वेदों के प्रति समर्पित होने के लिए लालायित हो।

राजनीति में सक्रिय रहते हुए भी उन्होंने हमेशा गीता को ही आदर्श माना और उसी के अनुरूप उन्होंने कार्य किया। उन्होंने चार बार विधानसभा का चुनाव लडा। तीन बार रतनगढ़ चूरू विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लडा। रतनगढ़ से लड़े तीन चुनावों में से एक उपचुनाव में वे विजयी हुए और भादरा के चुनाव में वे हार गए। चुनाव उन्होंने एक योद्धा के रूप में लड़े और हार जाने या जीत जाने का उनके जीवन पर कोई विशेष फर्क नहीं पड़ा। उन्होंने हार-जीत को हमेशा स्थितप्रज्ञ के रूप में लिया। वैसे उठापटक की राजनीति उन्हें कभी रास नहीं आई। रतनगढ से उपचुनाव में विजयी होने के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के निर्देश पर उन्हें सुखाडिया मंत्रिमण्डल में शामिल होना था। शपथग्रहण करने से कुछ घंटे पूर्व आचार्य जी के साथी रहे किसान नेता चौधरी कुंभाराम आर्य उनके पास आए और उनसे अनुरोध किया कि आप मंत्रिमंडल में शामिल होने के बजाय अपने स्थान पर इलाके के चौधरी रामचन्द्र को मंत्रिमण्डल में शामिल करने का लिखकर दे दें तो वे मंत्री बन जाएंगे। आचार्य जी चौधरी कुंभाराम आर्य का अनुरोध नहीं टाल सके और उन्होंने चौधरी रामचन्द्र को मंत्रिमंडल में शामिल होने का लिखकर दे दिया। हालांकि इस बात को लेकर नेहरू जी बहुत नाराज हुए। आचार्य जी ने उनको साफ शब्दों में कह दिया कि कुंभाराम जी मेरे मित्र हैं, उनकी बात कैसे टाल सकता था। इस घटना के बाद आचार्य जी ने एक प्रकार से राजनीति से सन्यास सा ले लिया और फिर उन्होंने विधानसभा का कभी भी चुनाव नहीं लडा। अलबत्ता चौ.कुंभाराम आर्य के अनुरोध पर उन्होंने एक बार राज्यसभा

का चुनाव जरूर लड़ा, किन्तु जोड-तोड़ की राजनीति में अविश्वास के कारण और तत्कालीन राजनीति में बने समीकरणों के चलते वे राज्यसभा का चुनाव हार गए। राजनीति और समाजसेवा दोनों क्षेत्रों में कार्यरत रहे आचार्यजी ने बाद में समाजसेवा का रास्ता अपना लिया और राजनीति से *अपने आपको एकदम अलग कर लिया।* राजनीति में भी *हमेशा व्यक्तिगत सम्बन्धों को महत्व* देने वाले आचार्यजी को १९५२ के प्रथम विधानसभा चुनाव में बीकानेर संभाग के सभी विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस का टिकट देने का दायित्व सौंपा गया था। वे चाहते तो सरदार शहर जो कि उनका स्वयं का कार्य क्षेत्र रहा था और कार्यकर्ताओं की टीम उनके एक इशारे पर रात-दिन एकजुट होकर लग सकती थी। सरदार शहर से उनकी जीत निश्चित थी, किन्तु राजस्थान की राजनीति में सक्रिय सफल नेता श्री चंदनमल बैद से व्यक्तिगत सम्बन्धों के कारण उन्होंने सरदार शहर से अपने लिए टिकट नहीं मांगी। आचार्य जी ने हमेशा से ही समाज के एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य किया। अपना अध्ययन कार्य समाप्त करने के बाद जब वे बनारस से तत्कालीन बीकानेर रियासत में आए तो उन्होंने सरदार शहर को अपना कार्यक्षेत्र चुना और वहाँ उन्होंने कार्यकर्ताओं की ऐसी टोली तैयार की जो कि समाज सुधार के कार्य में हमेशा तत्पर रहती थी। उन्होंने पिछडे और दबे मरूस्थलीय इलाके में शिक्षा की ज्योति प्रज्ज्वलित करने का बीडा उठाया और युवकों की इस टोली ने सरदार शहर में महिला शिक्षा के लिए लोगों को तैयार किया। उस समय लडकियों को पढ़ाना लिखाना प्रचलन में नहीं था। ऐसे में युवकों की गली मौहल्लों में फिरने वाली टोलियों ने एक ऐसा अभियान चलाया कि लोगों को अपनी लडकियों को पढ़ाने के लिए मजबूर होना पड़ा। सरदार शहर के युवकों की टोली ने आचार्यजी की प्रेरणा से प्रतिज्ञा की कि वे अनपढ़ लडकी से शादी नहीं करेंगे। युवक कार्यकर्ताओं की इस प्रतिज्ञा ने अपना रंग दिखाया और लोगों ने स्त्री शिक्षा के महत्व को समझा और उन्हें पढ़ने के लिए भेजना शुरू कर दिया। दरअसल आचार्यजी को राजनेता के बजाए समाज के पथ-प्रदर्शक के रूप में देखा जाए तो ज्यादा उचित रहेगा। वे गीता के श्रीकृष्ण बनकर अर्जुन के रूप में युवाओं को कर्मक्षेत्र में एक योद्धा के रूप में कूदने के लिए प्रेरणा देते रहे हैं। आज ९० वर्ष के होने के बाद भी उनके मन में किसी प्रकार की निराशा का भाव नहीं है। वे अब भी प्रेरणा के स्त्रोत बने हुए हैं।

आज की उठापटक और गलाकाट राजनीति के चलते आचार्यजी ने बडे से बड़ा नुकसान उठाकर भी राजनीति में व्यक्तिगत संबंधों को ज्यादा तवज्जो दी। इस स्वभाव के कारण उन्हें हमेशा राजनीति में नुकसान उठाना पड़ा। अजमेर राज्य के राजस्थान में विलय होने के दौरान जब तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहन लाल सुखाड़िया और हरिभाऊ उपाध्याय में से एक को चुनने की बात आई तो आचार्यजी ने सुखाड़िया जी को साफ तौर पर कहा कि आप ही राजस्थान के मुख्यमंत्री रहने वाले हैं, किन्तु मेरा वोट हरीभाऊजी को ही मिलेगा। किसान नेता चौधरी कुंभाराम आर्य उनके मित्र

थे उन्होंने उनका साथ अंतिम दम तक नहीं छोडा। एक प्रकार से राजस्थान की जाट राजनीति को आगे बढ़ाने में आचार्य गौरी शंकर जी ने जो प्रमुख भूमिका निभाई है उसका जिक्र तत्कालीन बीकानेर रियासत की गुप्तचर रिपोर्ट में किया गया है जिसमें उनके लिए कहा गया है कि जाटों को राजनीतिक दिशा देने में एक गैर जाट आचार्य गौरीशंकर जी प्रमुख हैं। आचार्य जी ने बीकानेर रियासत में राजनीति की शुरूआत सांस्कृतिक और सामाजिक जागृति के साथ प्रारम्भ की थी। उन्होंने युवकों की ऐसी टोली तैयार की जो कि सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों के साथ जनजागरण का भी कार्य करती थी। महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक जी ने जिस प्रकार गणेशोत्सव के साथ सामाजिक और राजनीतिक जागृति को जोडा उसी प्रकार आचार्य जी ने बीकानेर जैसे जांगल प्रदेश में शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के विकास के साथ ही राजनीतिक जागृति की अलख जगाई जो कि बाद में जाकर प्रजा परिषद् की राजनीतिक जोत में मिलकर मसाल बनी जिसने बीकानेर के सामन्ती शासन की नींव हिलाकर रख दी। साहित्यिक गतिविधियों की आड में राजनीतिक जागृति के लिए किए जा रहे प्रयासों के कारण ही आचार्य जी का सरदारशहर से श्री गंगानगर इसलिए तबादला किया गया ताकि वे सरदारशहर की गतिविधियों से अलग रह सकें किन्तु आचार्य जी का सरदार शहर से जीवन्त सम्पर्क निरन्तर बना रहा। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति पंडित मदन मोहन मालवीयजी के शिष्य और उनके सचिव के रूप में आचार्य जी ने रचनात्मक कार्यों और योजनाओं का प्रशिक्षण लिया, यही नहीं बनारस विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डॉ.राधाकृष्णन के दर्शनशास्त्र के छात्र भी रहे हैं। उसी का नतीजा है कि उन्होंने सरदारशहर में गांधी विद्या मंदिर को देहाती विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित करने का सपना देखा। सपने देखने और उन्हें मूर्तरूप देने में, आचार्यजी का कोई सानी नहीं। उन्होंने महिला शिक्षा और बाल शिक्षा के लिए भादरा, डाबडी, हनुमानगढ, संगरिया में स्कूल और कॉलेजो की स्थापना की। जयपुर में गौमाता भवन बनाया वहीं सरदार शहर में आयुर्वेद विश्वभारती और प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में सरदारशहर और बीकानेर में कार्य किया। जयपुर के बापूनगर में स्थित प्राकृतिक चिकित्सालय के लिए उनके द्वारा दिए गए योगदान को भी नहीं भुलाया जा सकता। उन्होंने ज्वालापुर, कांगडी, काशी, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालयों में विभिन्न रूपों मे अपनी सेवाएं दीं। उस समय अंग्रेजी विषय को महत्व दिया जा रहा था, इसलिए उन्होंने लाहौर (अब पाकिस्तान में) कॉलेज से बी.ए किया। ९० वर्ष की उम्र में भी अभी तक वे विद्यार्थी बने हुए है। अध्ययन और अध्यापन से उनका चोली-दामन का साथ है। अभी भी वे गीता और वेद पर विश्वविद्यालय की स्थापना का सपना संजोए हुए हैं। जिसकी योजना का प्रारूप उन्होंने बना रखा है और किसी ऐसे शिष्य की आज भी उन्हें तलाश है जो कि उनकी इस योजना और सपने को मूर्तरूप दे सके।

तेजोराशि पंडित गौरीशंकर आचार्य को गुरूकुल (ज्वालापुर) में अध्ययन के दौरान ही

अध्यात्म तत्व का निश्चयात्मक ज्ञान हो गया था। चूंकि ज्ञान से नित्य, अव्यक्त एवं अविनाशी परमात्मा प्राप्त होते हैं; आचार्यश्री को परमात्मा के प्रत्यक्ष दर्शन हो चुके थे। इस प्रसंग पर हम आगे के पृष्ठों पर चर्चा करेंगे। जिससे उनका हृदय निर्मल एवं विकार रहित हो गया था। वह ज्ञान रूप प्रकाश से दैदीप्यमान हो क्षितिज पर चमकने लगे। उन्होंने अपने समय की उच्चकोटि की शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन फिर अध्यापन कर उनके सर्वेसर्वा पदों को सुशोभित किया।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री गौरीशंकरजी आचार्य जहाँ एक ओर विद्यानुरागी रहे हैं वहीं राष्ट्रप्रेम और स्वाधीनता की भावना भी आपकी आत्मा में बसी हुई थी, जिसके चलते आप अपनी किशोरावस्था में ही देश के महान क्रान्तिकारी सुभाषचन्द बोस आदि के साथ क्रान्तिकारी गतिविधियों में सहभागी रह चुके हैं। आचार्यजी विद्याध्ययन के दौरान ही अनेक अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त राजनीतिज्ञों के सम्पर्क मे आ गए थे और उनके साथ मिलकर स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई उसी दौरान आप महामना मालवीयजी के सम्पर्क में आए और उनके निजी सचिव बनने का गौरव प्राप्त किया। उन्हीं की प्रेरणा और अपनी जन्मभूमि से अत्यन्त लगाव के चलते आप सरदारशहर आए थे।

अहिंसा की प्रतिमूर्ति आचार्य गौरीशंकर वैभव सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में अवतरित हुए थे लेकिन भगवत्प्राप्ति के पश्चात् सारे ठाट-बाट एवं राजपाट छोडकर गृहस्थ में रहते हुए वितरागी कर्मयोगी का सा जीवन व्यतीत किया। उस समय बीकानेर रियासत में (आपकी जन्मभूमि) अज्ञान का अन्धकार ही अन्धकार फैला हुआ था अतएव वह पूर्ण पुरूष ज्ञान की ज्योति जलाने निकल पडे और गांव-गांव घूमकर तपस्या चरण करने लगे। उनकी शिक्षा का उद्देश्य दक्ष, चरित्रवान, राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत जिम्मेदार व्यक्तित्व तैयार करना था जो राष्ट्र के पुर्ननिर्माण कार्य में सफल सहयोगी बन सके (गांधी जी का सपना)। इस तरह की भावनाएं उनके भाषणों में भी स्पष्ट झलकती थीं और श्रोता उनके उद्‌गारों को अक्षरश: हृदयंगम करते थे। आचार्य श्री जब अपने गृह जनपद (सरदार शहर) में आये तो उनका प्रथम सपना था हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना जो आज गान्धी विद्या मन्दिर (सरदार शहर) के नाम से हिन्दुस्तान के क्षितिज पर दैदीप्यमान है।

बीकानेर की तत्कालीन परिस्थितियों का सिंहावलोकन किए बिना इस स्वप्न दृष्टा, सृष्टा इतिहास पुरूष की गाथा अधूरी सी लगेगी। यहाँ हम विवेचन कर रहे हैं उस समय की राजनैतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों एवं स्वतंत्रता संग्राम और ज्ञान यज्ञ में इस युगपुरूष की स्थिति का।

सन् १८२३ तक राजस्थान के सभी देशी राज्य ब्रिटिश सत्ता के साथ संधि-बन्धन में बंध चुके थे यहाँ के राजा अंग्रेजों के समक्ष अपना गौरव और वर्चस्व खोकर दीन-हीन बन बैठे थे और बची

हुई सत्ता के लोभ में अंग्रेजों के स्वामीभक्त बने हुए थे जिन्होंने कालान्तर में सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों की तन-मन-धन से मदद की और तमगे और उपाधियाँ हासिल कीं। सार्वभौम सत्ता के प्रति उनके मन में घृणा और भय था। १८५७ की क्रान्ति के बाद समाज के बहुत बडे वर्ग में अंग्रेजों के प्रति जबरदस्त आक्रोश था और विरोध की प्रबल भावना उनके मन में भर गई थी। जिसके बारे में होम्स ने अपनी "ए हिस्ट्री ऑफ दी इन्डियन म्यूटिनी'' नामक पुस्तक में लिखा है कि अगर कभी सेना में विद्रोह हुआ तो ब्रिटिश लोगों के प्रति उनकी घृणा का कारण उसमें भय की अपेक्षा अधिक होगा।

इस तरह अवतारीय पुरूषों, महर्षियों, सन्तों, महात्माओं की धरती हमारी भारत माता लम्बे समय तक परतंत्रता की वेडियो में जकडी रही। भारत का अतीत का गौरव नष्ट प्राय: हो गया अन्धविश्वासो, अज्ञानता, निरक्षरता के गर्त में डूबता गया फलस्वरूप भारत देश सभी दृष्टियों से पिछड गया।

बीकानेर राज्य पर उस समय महाराजा गंगासिंह का शासन था। गंगासिंह का जन्म १८८० ई. में हुआ था वे ३१ अगस्त १८८७ के दिन राजगद्दी पर बैठे थे। उन्होंने मेयो कालेज से शिक्षा ग्रहण की थी। आगे चलकर १६ दिसम्बर १८९८ को उन्हें शासन के पूर्ण अधिकार मिले। महाराजा गंगासिंह अंग्रेज भक्त थे, अंग्रेजों से आपने अनेक उपाधियाँ प्राप्त कीं। ये जागीरदार राज्य के अधिकार को नहीं मानते थे और मनमानी करते थे। महाराजा गंगासिंह ने ५६ वर्षों तक शासन किया। उनके शासनकाल में बीकानेर भारत के प्रमुख राज्यों में गिना जाता था। गंगासिंह कन्या शिक्षा के बडे विरोधी थे तथा लोगों को अधिकार देने के भी घोर विरोधी थे। वे अपनी छवि एक लोककल्याणकारी शासक के रूप मे उभारना चाहते थे लेकिन उनके शासन के दौरान लोगो पर हुए नृशंस अत्याचारों एवं जनविरोधी नीतियों के चलते उनके मंसूबे पूरे नहीं हो पाये। सन् १९४३ में इस अंग्रेजों के प्रशंसक एवं कट्टर भक्त राजा गंगासिंह की मृत्यु हो गयी। गंगासिंह की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र शार्दुलसिंह गद्दी पर बैठे जो अपने पिता के पथगामी थे।

दोहरी छवि के मालिक महाराजा गंगासिंह के शासनकाल में बीकानेर राज्य की प्रजा पर भयंकर अत्याचार और पुलिस दमन चक्र चलते रहे। उन्होंने राजनैतिक गतिविधियो पर रोक लगा दी थी, राजनैतिक नेताओं को जेलों में डाल दिया था और नागरिक स्वतन्त्रताओं एवं मौलिक अधिकारो का जबरदस्त हनन किया गया, उस समय आमजन सरकार की मर्जी से सांस ले रहे थे। गांधी जी का नाम, तिरंगा झण्डा यातनाओं के वारन्ट थे। महात्मा गांधी की जय का नारा लगाने वाले को जेल में डाल दिया जाता था और उस पर यातनाओं का अनवरत सिलसिला चालू हो जाता था। इस तरह राजशाही के अनाचार से जनता त्रस्त थी।

ऐसी विषम परिस्थितयों एवं विषैले वातावरण में आचार्य जी ने बनारस से अपना अध्ययन कार्य पूर्ण कर सरदार शहर को अपना कार्य क्षेत्र चुना। उनकी उच्च शिक्षा एवं वृहद सम्पर्कों को देखते हुए राज्य शासन की ओर से उन्हें महत्वपूर्ण पदों पर आमंत्रण दिया गया, नौकरियों के ऑफर दिए गए लेकिन उन्होंने समय की नब्ज को पहचान कर स्कूल में एक शिक्षक बनना स्वीकार किया। उस समय शिक्षा का नितान्त अभाव था समुचित साधनों के अभाव में बहुत ही कम लोग बाहर जाकर शिक्षा ग्रहण कर पाते थे, अज्ञान एवं राजशाही की दमनकारी नीतियों के चलते क्षेत्र काफी पिछडा हुआ था। ऐसे में एक अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त (महामना पं. मदन मोहन मालवीय के निजी सचिव) सब प्रकार के द्वन्दों से रहित, शान्ति परायण विद्वान पुरूष पं. गौरीशंकर आचार्य का आगमन क्षेत्र के लिए वरदान साबित हुआ। आचार्य जी की शान्त, सरल और सौम्य छवि, माधुर्य से परिपूर्ण वाणी उनसे मिलने वाले को प्रथम दृष्टि में प्रभावित कर देती थी।

उस समय राजस्थान में क्रान्तिकारी गतिविधियों का दौर चल रहा था, वहीं दूसरी ओर महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन ने भी जनमानस में अपनी जगह बना ली थी। आचार्यजी भी क्रान्तिकारी रणनीति छोड़ पक्के गांधीवादी बन गए और शान्तिमय कार्यक्रमो को अपनी उद्देश्य पूर्ति का मुख्य साधन बना लिया, वे समाजसेवा, शिक्षा और अछूतोद्धार के कार्यक्रमो के जरिये जनता में शिक्षा के साथ राष्ट्र प्रेम के अंकुर बोने लगे।

आचार्य जी ने सरदारशहर में एक साहित्य समिति का गठन किया जिससे जन-जन में साहित्यिक चेतना का संचार हुआ, वे बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन समिति के जरिये गांव-गांव में नवजागृति पैदा कर रहे थे। समाज का प्रत्येक वर्ग उनसे प्रभावित था खासकर युवा वर्ग उनकी सादा जीवन उच्च विचार की जीवन शैली एवं प्रखर वक्तृव्य कला का कायल हो चुका था। उनकी बैठकों मे, साहित्यक सम्मेलनों में अपार जन समूह बढ़चढ कर हिस्सा लेता था। युवा वर्ग उनकी शिक्षाओं को आत्मसात कर अपने को गौरवान्वित महसूस करता था। उनके भाषणों में जहॉ स्वावलम्बन, नैतिक चरित्र पर बल एवं कार्य के प्रति लगन, ईमानदारी और दक्षता की शिक्षा होती थी। वहीं राष्ट्रप्रेम एवं स्वाधीनता की भावना भी वे जनगण के हृदय में कूट-कूटकर भर रहे थे। आचार्य जी तत्कालीन परिस्थितियों के चलते राजनीति से परे रहकर 'बापू' के सपनों को पर्दे के पीछे रहकर साकार करने में लगे हुए थे। आचार्य जी की प्रेरणा से गली-मुहल्लों में वाचनालय एवं पुस्तकालय खुल गए जहॉ एक से बढकर एक ज्ञानवर्धक पुस्तकें उपलब्ध रहती थीं, आपने स्कूल पुस्तकालय, नुक्कड सभाओं, साहित्य परिषद् की नियमित बैठकों एवं साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों के जरिये अज्ञान के अन्धकार का अपने ज्ञान के प्रकाश से समूल नाश कर दिया आपके

"ज्ञान यज्ञ'' के फलरूप क्षेत्र में राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत, विद्वान, निष्ठावान युवकों का प्रादुर्भाव हुआ।

इस समय आचार्य जी की ख्याति भी सर्वत्र फैल चुकी थी हालांकि आचार्य जी राजनीति से यथासंभव बचकर चले थे लेकिन साहित्यिक गतिविधियों की आड़ में राष्ट्रप्रेम, स्वाधीनता की भावना जो लोगों के दिलों में कूट-कूटकर भरी जा रही थी। वह राजशाही से भी छुपी नहीं रह सकी अतएव आचार्य जी का सरदार शहर से तबादला कर दिया गया जिसका सरदार शहरवासियों के हृदय पर गहरा आघात लगा लेकिन राजाज्ञा का पालन करना ही था। उस समय आचार्य जी की विदाई के अवसर पर एक अभूतपूर्व जुलूस निकाला गया था जो अपने आप में एक इतिहास है। स्थानान्तरण होने के बाद वे पूरी तरह आजादी की जंग में कूद पडे।

आचार्य श्री गौरीशंकर जी अपने तबादले के बाद बीकानेर के बदलते राजनैतिक परिप्रेक्ष्य एवं केन्द्रीय राजनीति में भारी उथल-पुथल के चलते पूरी तरह स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े उन्होंने सर्वप्रथम मृत प्राय: पडी बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् को मजबूती प्रदान की जो कि महात्मा गांधी के सिद्धान्तों क्रमश: राष्ट्रीयता, स्वाधीनता एवं प्रजातंत्र पर आधारित थी। उस समय आचार्य जी इस प्रजा परिषद के संरक्षक एवं पोषक थे। प्रजा परिषद में आचार्य गौरीशंकर जी के अलावा रघुवर दयाल गोयल, मुक्ताप्रसाद वकील, दाऊदयाल आचार्य आदि ने अनेक कष्ट सहकर स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई।

ऐसे हालातों के चलते राज्य ने कुछ प्रशासनिक सुधार किए इस समय बीकानेर में पंडित गौरीशंकर जी के नेतृत्व में बीकानेर प्रजा परिषद का आन्दोलन पूरे जोर-शोर से चल रहा था। अनेक लोग जेलों के सींखचों में डाल दिए गए और उन पर अत्याचारों का दौर चलता रहा। इस समय दो समितियाँ बनीं एक संविधान समिति और दूसरी मताधिकार एवं चुनाव क्षेत्र समिति। इन्हें अपनी रिपोर्ट मार्च १९४७ के पूर्व प्रस्तुत करनी थी। रायसिंह नगर में एक राजनैतिक सभा १९४६-४७ में हुई जिसमें इस प्रदेश की स्थिति पर विचार किया गया। इस सभा में बीरबल मोची शहीद हो गए तथा आचार्य गौरीशंकर जी सहित कई नेता गिरफ्तार कर लिए गए एवं आचार्य श्री की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी जो तिरंगा लेकर महिला वर्ग का नेतृत्व कर रही थीं लाठीचार्ज में घायल हो गई। आन्दोलनों का दौर चलता रहा राज्य शासन के संकेत पर लोगों पर अकथनीय, अकल्पनीय अत्याचार किए गये।

यहाँ आचार्य गौरीशंकरजी का बहुआयामी व्यक्तित्व उभरकर सामने आया एक ओर तो वह साहित्य परिषद् के ज्ञान बान कार्यक्रमों के जरिए जनता में अपनी पैठ बना रहे थे, वहीं उस समय के गांधीवादी विचारकों क्रमश: हरिभाऊ उपाध्याय, जमनालाल बजाज, जयनारायण व्यास, हीरालाल

शास्त्री, माणिकलाल वर्मा आदि के साथ मिलकर स्वराज की परिकल्पना को साकार करने में लगे हुए थे, इसके अलावा वह जोश और उमंग से भरे हुए युवा क्रान्तिकारियों की फौज भी तैयार कर रहे थे। इन क्रान्तिकारी दलों में जाट प्रमुख थे जो कि आचार्यजी के नेतृत्व में तत्कालीन राजनीति में तेजी से उभरकर सामने आ रहे थे, जिनमें प्रमुख थे-सरदार मस्तानसिंह चौधरी, हरदत्तसिंह और चौधरी कुम्भाराम आर्य आदि। यहाँ आजादी के उन दीवानों का जिक्र करना न्याय संगत होगा, जिन्होंने स्वाधीनता संग्राम रूपी यज्ञ में अपना सर्वस्व होम दिया था। इनमें गौरीशंकरजी आचार्य के साथ रघुवर दयाल गोयल, माघाराम वैद्य, दाऊदयाल आचार्य, चम्पालाल रांका, मुक्ताप्रसाद वकील, लक्ष्मणदास स्वामी, गंगादास कौशिक, भिक्षालाल बोहरा, बीरबल मोची (जो शहीद हो गए १९४६-४७ में) माधोसिंह, मालचन्द हिसारिया, स्वामी कर्मानन्द, गंगादास रंगा, मूलचन्द पारीक, दामोदर सिंघल, किशन गोपाल, मेघाराम, चिंरजीलाल सुनार, रामनारायण एवं अन्य भी बहुत से ऐसे लोग हैं, जिनकी सूची बनाई जाए तो बहुत लम्बी हो जाएगी। इन लोगों के अथक प्रयत्नों का सुफल मिला और बीकानेर भारत का अंग बन गया। यहाँ यह कहना आवश्यक होगा कि चूंकि डॉ.गौरीशंकर आचार्यजी के अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त राजनीतिज्ञों एवं क्रान्तिकारियो के साथ मधुर और घनिष्ठ सम्पर्क थे। (महामना मदनमोहन मालवीय जी के निजी सचिव रह चुके थे) तथा स्वयं आग उगलने वाले ओजस्वी प्रखर वक्ता थे जिसकी वजह से प्रत्येक वर्ग चाहे वह गांधीवादी हों या उग्रक्रान्तिदल जिनमें चाहे उनके हम उम्र साथी हों या वरिष्ठ सहयोगी हों सभी आचार्य जी के विचारों का आदर करते थे और उनके नेतृत्व को स्वीकार करते थे। ये अलग बात है कि बाद में आचार्यजी की सरल हृदयता का उनके हमउम्र साथियों ने अनुचित लाभ उठाया जिससे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आचार्यजी को राजनीति से विरक्ति हो गई। यहाँ उनका नाम देना उचित नहीं होगा। यहाँ तत्कालीन बीकानेर राज्य के गृह विभाग ने एक अति महत्त्वपूर्ण गोपनीय टिप्पणी (दस्तावेज) तैयार किया था जिसमें उस समय के सभी प्रभावशाली नेताओं की वस्तुस्थिति का ब्यौरा महाराजा को प्रेषित किया गया था, उसमें आचार्यजी के बारे लिखा था "आचार्य गौरीशंकर जो जाट आन्दोलन के पीछे मस्तिष्क का काम करता है अपनी आधुनिकता और नवीनपन के बावजूद, शाही खेंमे के भक्त व्यक्ति और अतिशयवादी व्यक्ति जो दिल्ली और अजमेर की तरफ देखते रहते हैं, के बीच एक मध्य स्थित भवन का काम करता है। अभी वह निश्चय नहीं कर पा रहा है कि क्या वह रघुवरदयाल के दल से मिले या ग्राम्य जाटों को आन्दोलन के लिए उकसाये।

इस गोपनीय दस्तावेज में यह भी कहा गया था कि "बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् के सामान्य सदस्यों में इस वक्त त्रिकोणीय विरोध चल रहा है। जाट हरदत्त सिंहजी का गुट और रघुवर दयाल का गुट आपस में एक दूसरे को धराशायी करने पर तुले हैं। सरदार गुरूदयाल सिंह का गुट इन

दोनों में संतुलन बनाकर चल रहा है। यदि आचार्य गौरीशंकर इन गुटों के आन्तरिक संघर्ष को समाप्त कर देता है तो उन लोगों में आपस में विरोध पैदा करने की हमारी नीति एकदम विफल हो जाएगी। इस गोपनीय दस्तावेज से यह स्पष्ट हो जाता है कि तत्कालीन समय में आचार्य गौरीशंकरजी की स्थिति अति महत्वपूर्ण थी और वे जाट नेताओं के पीछे मास्टर माईण्ड का कार्य करते थे।

इस तरह बीकानेर में प्रजापरिषद् की गतिविधियाँ शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में तीव्र से तीव्रतर होती गईं जनता में राजशाही के अत्याचारों का विरोध मुखर होता गया साथ ही कांग्रेस के प्रति आस्था भी बढती गई बीकानेर में इस दौर में अनेक क्रान्तिकारी आन्दोलन हुए जिनमें केन्द्रीय नेतृत्व को भी हस्तक्षेप करना पड़ा जिसके चलते पं. जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल सरीखे शीर्ष नेताओं का बीकानेर आगमन हुआ। २९ अक्टूबर १९४६ को परिषद् की बैठक बुलाई गई जिसमें ३९ शीर्ष नेताओं ने भाग लिया इस समय प्रजा परिषद् दो भागों में बंट चुकी थी, आन्तरिक विरोध के चलते नए चुनाव कर निर्विवाद व्यक्ति गौरीशंकर आचार्यजी व प्रोफेसर केदार को परिषद् की बागडोर सौंप दी गई। इसके बाद १९ दिसम्बर १९४७ को गंगानगर में परिषद् की कार्य समिति को महाराजा से समझौता करने एवं संघर्ष कर उत्तरदायी शासन की स्थापना के पूर्ण अधिकार दे दिए। इस कार्य समिति ने २५ जनवरी को हनुमानगढ मे बैठक कर समझौता व संघर्ष समिति बनाई जिसमें पं.गौरीशंकर आचार्यजी, सरदार गुरूदयाल सिंह, चौ.हरदत्त सिंह व कुम्भाराम आर्य थे। २२ फरवरी १९४८ को इस समिति ने महाराज से वार्ता की जो २ मार्च को बीच में रूक गई। अन्ततः महाराजा के निर्देश पर राज्य सरकार ने बीकानेर प्रजा परिषद् को लोकप्रिय मंत्रिमण्डल बनाने के लिए न्यौता भेजा इस समय भी परिषद् में काफी मतभेद उभरकर सामने आए, परिषद् के श्री रघुवर दयाल गोयल, श्री माघाराम वैद्य, श्री दाऊदयाल आचार्य, श्री चम्पालाल रांका आदि चाहते थे कि यह रियासत द्वारा बिछाया गया जाल है जिसमें हमें नहीं फंसना चाहिए जबकि डॉ.गौरीशंकर आचार्यजी, चौ.हरदत्त सिंह, कुशाल चंद डांगा, चौ.कुम्भाराम का विचार था प्रजा परिषद् का मंत्रिमण्डल में शामिल होना प्रजा के हित में होगा उनका मानना था इससे जहाँ एक ओर प्रजा परिषद् का प्रभाव बढ़ सकेगा वहीं हम मंत्री रहते हुए जनता का समुचित कल्याण कर सकेंगे। यह सोचते हुए उन्होंने मंत्रिमण्डल में शामिल होना स्वीकार किया।

संघर्ष समिति के वार्तालाप का हल निकला और अन्ततोगत्वा महाराजा ने १८ मार्च को दस सदस्यों का मंत्रिमण्डल घोषित कर दिया जिसमें परिषद् के चार मंत्री बनाए गए कुंवर जसवन्त सिंह को प्रधानमंत्री बनाया गया, मंत्रिमण्डल में क्रमशः जसवन्तसिंह प्रधानमंत्री, हरदत्त सिह, उप-प्रधानमंत्री व गृहमंत्री, गौरीशंकर आचार्यजी शिक्षा, रेल एवं डाक-तार मंत्री, सरदार मस्तान सिंह स्वायत्त

शासन मंत्री, सेठ कुशाल चन्द डागा, वित्त मंत्री, कुम्भाराम आर्य, राजस्व मंत्री, सूरज करण कानून मंत्री, अहमद बक्स सिन्धी को ग्राम विकास मंत्री बनाया गया तथा कंवर सिंह को देवस्थान मंत्री बनाकर एक स्थान रिक्त रखा गया।

प्रजा परिषद् के आन्तरिक विवादों के चलते लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल अल्पावधि में ही भंग हो गया और आचार्यजी भी त्याग पत्र देकर बाहर आ गए। इससमय से ही जोड-तोड़ की राजनीति प्रारम्भ हो गई थी। अत: सरल हृदय आचार्यजी के मन में राजनीति के प्रति विरक्तिभाव पैदा हो गया और वह वापस शैक्षणिक एवं साहित्यिक दिशा में मुड़ गए हालॉकि बाद में साथियों के दबावों के चलते सन् ५७ तक राजनीति में सक्रिय रहे लेकिन भ्रष्टाचार परक राजनीति उनके अन्तस को कचोटने लगी थी, जिसकी वजह से वह मन से राजनीति में सक्रिय नहीं रहे। लोकप्रिय मंत्रिमण्डल से त्याग पत्र देने के बाद वह अपने ग्रामीण विश्वविद्यालय के स्वप्न को साकार रूप देने में जुट गए और इसी के चलते उन्होंने अपने साथी कन्हैयालाल दूगड़ को अपने सपने का साझीदार बनाया और दोनों ने मिलकर उस सपने को साकार रूप दे दिया जो आज गांधी विद्या मंदिर के रूप में विश्व विख्यात है।

इन सब बातों के अलावा आचार्यजी के बारे में लोगों के जो संस्मरण और घटनाएं सामने आई हैं, उनमें से कुछ का यहॉ जिक्र करना जरूरी है, जिनसे उनके जीवन के लक्ष्य और उद्देश्यों के बारे में झलक मिलती है।

पद लोलुपता से दूर

बात उस समय की है जब लेखक मोहनलाल सुखाड़िया की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया के निजी सचिव थे। उस समय आचार्यजी समाज कल्याण बोर्ड की बैठक में गंगानगर से जयपुर आए हुए थे। बैठक के बाद शाम को सुखाडिया साहब ने खानेपर बुलाया था। खाने की टेबिल पर सुखाडिया साहब उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुबाला, आचार्य गौरीशंकर जी, आचार्य श्री निरंजन नाथ एवं आचार्यजी के पुत्र डॉ. भीमसेन बैठे हुए खाना खा रहे थे। चर्चा के दौरान सुखाडिया साहब ने आचार्य जी को सम्बोधित करते हुए कहा आचार्यजी मैं आपको शिक्षामंत्री बनाना चाहता हूँ। इस पर आचार्य जी बोले आपके बच्चे कहां पढ़ते हैं? सुखाडिया साहब ने जवाब दिया सेन्ट जेवियर में। आचार्य जी बोले यही हमारा मतभेद का कारण रहेगा आपके बच्चे यदि सरकारी स्कूल में पढ़ते तो ज्यादा अच्छा रहता। इस तरह आचार्यजी बड़ी खूबसूरती से मंत्री बनने के आग्रह को टाल गए। मुख्यमंत्री निवास से जब बाहर आए और कार द्वारा जब "बीकानेर राजहंस होटल जा रहे थे तब उन्होंने अपने पुत्र को मुन्नालाल आर्य के मकान पर छोड़ दिया तथा स्वयं आगे चल

दिए। उस समय निरंजन नाथजी ने उनसे कहा आचार्यजी ये प्रस्ताव (शिक्षामंत्री बनने का) मुझे मिलता तो मैं कदापि नहीं छोड़ता।

बीकानेर के महाराजा गंगासिंह बहुत ही अत्याचारी थे। उनके काल में प्रजा पर अकल्पनीय अत्याचार ढ़ाये जाते थे। ३ फरवरी १९४३ को गंगासिंह की मृत्यु के पश्चात इनके ज्येष्ठ पुत्र शार्दुलसिंह गद्दी पर बैठे। उन्होंने भी अपने पिता की दमन नीति को जारी रखा। उस समय गांधी जी के नाम का जयकारा लगाना, तिरंगा झण्डा लेकर चलना अपने आप में यातनाओं को न्यौता देना था लेकिन आजादी के दीवाने अत्याचारों से कहॉ डरने वाले थे। उसी समय की घटना है - दिन था ३० जून १९४६ का, इस दिन रायसिंह नगर में बीकानेर प्रजा-परिषद् का सम्मेलन था। आचार्य श्री गौरीशंकर जी, श्री सत्यनारायण सर्राफ, श्री जीवनदत्त शास्त्री, कुंभाराम आर्य आदि के नेतृत्व में हजारों स्त्री-पुरुष तिरंगा झण्डा लिए सभा स्थल की ओर जा रहे थे। उधर महिला वर्ग का नेतृत्व आचार्य श्री की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी कर रही थीं उनके साथ में श्रीमती कृष्णा शर्मा पत्नी श्री जीवनदत्त शास्त्री भी थीं। लोगों में अपूर्व जोश था। तभी पुलिस ने तिरंगा छीनने की कोशिश की जनता ने विरोध किया पुलिस ने आचार्य जी सहित अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। उधर माताजी लक्ष्मीदेवी तिरंगा लिए बढ़ती जा रही थीं तो पुलिस ने उन पर लाठी चार्ज कर तिरंगा छीन लिया इस पर माताजी के साथ चल रहे युवक वीरबल मोची ने जब पुलिसकर्मी तिरंगे को फाड़कर पैर से कुचल रहे थे तो झपटकर पुलिस से तिरंगा छीन लिया उसी समय पुलिस ने गोलियॉ बरसानी शुरू कर दीं वीरबल को भी तीन गोली लगी थीं लेकिन वह वीर सपूत आगे बढता गया और माताजी को तिरंगा सौपकर बोला 'वंदे मातरम्, जयहिन्द' और वह गिर पडा लोगों ने उसको अपने कन्धों पर उठा लिया और पुलिस का घेरा तोडकर कार्यकर्ताओं ने उसे अस्पताल पहुंचाया लेकिन वह वीर योद्धा स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर चढ चुका था।

स्वतन्त्रता के लिए शौचालय में खड़े रहना पड़ा

जब देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जगह जगह आन्दोलन हो रहे थे उसी समय का एक वाक्या है आचार्य श्री गौरीशंकरजी और श्री कुंभाराम आर्य स्वतन्त्रता संग्राम के तहत भाग-दौड कर रहे थे दोनों को भटिण्डा से आगे जाना था लेकिन दोनों के पास पैसे नहीं थे। आचार्य जी बोले चलो पैदल चलते हैं। उस वक्त श्री कुंभाराम जी के पास एक ही नोट था वह भी किस्मत से नकली निकला। उन्होने आचार्य जी से कहा आप रेल के ड्राईवर के पीछे तीसरे डिब्बे के पास मिलना और कुंभारामजी टिकिट विण्डो पर पहुंच गए, हाथ में नकली नोट। दो टिकिट मांगे और टिकिट उसके हाथ से लेकर बिना चैन्ज लिए ही भाग लिये और नियत स्थान पर खडे आचार्यजी को साथ लेकर

ट्रेन में चढ़ गए और ट्रेन की लैट्रिन में घुस गए अंदर से सिटकिनी बंद कर तब तक खड़े रहे जब तक कि ट्रेन भटिण्डा से काफी दूर तक नहीं निकल गई।

ईश्वर पर अटूट विश्वास

आचार्यश्री का ईश्वरीय सत्ता पर अटूट विश्वास है। आपके विश्वास की ईश्वर भी लाज रखता है वे आज भी गणेशजी, हनुमानजी और शंकर भगवान से प्रत्यक्ष वार्तालाप करने लग जाते हैं। इसी संदर्भ में एक वाक्या याद आ रहा है - उन दिनो पिंजरापोल राजस्थान गौ सेवा संघ बजाजनगर हेतु गौमाता भवन का निर्माण होना था इसके लिए आचार्य श्री गौरीशंकर एवं समिति के पदाधिकारी बी.ड़ी. शर्मा, रामवतार अग्रवाल और विधायक ज्ञानचन्द मोदी आसाम के किसी शहर में पहुँचे और वहाँ एक धर्मशाला में ठहरे। प्रातःकाल धर्मशाला से नित्य कर्म से निवृत्त होकर बाहर आये सामने एक मन्दिर था तभी आचार्य श्री ने साथियों से पूछा भई हम यहाँ आये किसलिए हैं सुनकर साथी अचकचाए रामवतार जी ने कहा आचार्य जी आप भी कमाल करते है यह भी नहीं मालूम कि हम यहाँ चन्दा लेने आए हैं। इस पर आचार्य ने पूछा कितना चन्दा चाहिए इस पर उन्हे बताया गया कि चार से पाँच लाख रूपये की आवश्यकता पडेगी। आचार्य जी बोले 'भगवान भोले शंकर के नाम एक एप्लीकेशन लिखो और सामने मंदिर में रख आओ' यह सुनकर मोदी और रामवतार अग्रवाल आश्चर्यचकित हो आचार्य जी को निहारने लगे। मन में सोचा आचार्य जी कैसी अजीब सी बातें कर रहे हैं भला भगवान को पत्र लिख देने से लाखों रूपये कैसे आएंगे। लेकिन बी.डी. शर्मा जो आचार्य जी के साथ सरदार शहर मे रह चुके थे और आचार्य जी के कई आश्चर्यजनक कारनामे देख चुके थे को आचार्य श्री पर पूरा विश्वास था उन्होंने शकर भगवान के नाम पत्र लिखकर मन्दिर मे रख दिया और बाहर आ गए। वह चारों फल लेनें के लिए एक रेहडी पर खड़े थे उस समय एक व्यक्ति आचार्य जी को दूर से निहार रहा था। बाद में वह पास आकर रामवतार जी से पूछने लगा ये सरदार शहर वाले गौरीशंकर आचार्य जी ही हैं ना। रामवतार जी ने जवाब दिया 'जी हाँ' और उस महानुभाव ने आचार्य जी को प्रणाम किया चरण वन्दना कर उसने अपना परिचय दिया कि मैं आप ही का शिष्य हूँ चलिए घर पर पधारिये उसके बार-बार घर चलने के आग्रह पर आचार्य जी ने कहा भाई हम यहाँ चन्दा लेने आये है पहले अपना काम करलें फिर तुम्हारे घर भी चलेंगे। इस पर उस व्यक्ति (जो कि सेठ था) ने पूछा कितना चन्दा चाहिए। तो उसे बताया गया कि यही कोई चार-पांच लाख रुपये। इस पर वह व्यक्ति बोला आप घर पधारिये चन्दे का इन्तजाम हो जाएगा और उसने उन चारों को घर ले जाकर उनकी सेवा-सत्कार किया और आचार्य जी को लाखों का चैक देकर स्वयं को कृतार्थ किया। इस घटना के बाद आचार्य श्री के साथियों ने कभी उनकी बात पर अविश्वास नहीं किया। ऐसे भगवद् भक्त हैं आचार्य श्री।

दयालु और सहृदय

आचार्य श्री इतने सहृदय और दयालु हैं कि अपना अहित करने वाले का भी हित साधन करने से नहीं चूकते। उन्होंने मन, वचन और कर्म से कभी किसी का अहित नहीं किया। उनकी विशाल हृदयता का अन्दाजा एक साधारण जी घटना से लगाया जा सकता है। जिस समय 'आचार्य श्री' शिक्षा एवं रेलमंत्री थे उस वक्त बीकानेर में एक लड़का उनके पास था उसने आपका कोट चुरा लिया। कोट में जरूरी कागजात थे जिनकी वजह से वह कोट को बेचते समय पुलिस के हत्थे चढ गया पुलिसकर्मी चोर लड़के को पकड़कर मंत्रीजी के सामने लेकर आये लेकिन आपने उस पर दया करते हुए बचा लिया और पुलिसकर्मियों से कहा 'किसने कहा कि इसने कोट चुराया है कोट तो मैंने इसे ड्रायक्लीन के लिए दिया था' और इस तरह उस चोर के प्राण बच गए। इस घटना से उस लडके का हृदय परिवर्तन हो गया और वह आचार्य श्री के चरणों में गिर पड़ा। आचार्यजी उसे घर ले आए और उसे पढ़ाने लगे। कुछ समय बाद उसे रेलवे में नौकरी पर लगा दिया। संयोग से वह रेलवे में ड्राईवर बन गया। इस घटना के वर्षों बाद एक दिन आचार्यश्री हरिद्वार से गंगानगर आ रहे थे वह पानी लेने एक स्टेशन पर उतरे तभी गाड़ी चल दी आचार्य जी ट्रेन पकडने के लिए भागे लेकिन गाडी ने गति पकड़ ली थी तभी रेल चालक का ध्यान भागते हुए आचार्य जी पर पड़ा उसने गाडी रोक दी और भागकर आचार्य जी के पास पहुंचकर चरण वन्दना की और बोला पंडित जी कहां पधार रहे हो। आचार्य जी बोले भई मैंने पहचाना नहीं तब उस चालक ने अपना परिचय दिया और बताया कि मैं आप ही की कृपा से आज चोर से रेल का ड्राईवर बन सका हूं आचार्य जी ने उसे हृदय से लगा कर आर्शीवाद दिया और गाडी में बैठ गए।

□

प्राण-पौरूष-नवपदी-श्री आचार्य गौरीशंकर

डॉ. सरिता वशिष्ठ

- आत्म विद् आत्मनिरंजन सद् संयम अरु नियमन्।
  प्राण अग्नि के संज्ञान नौ दशकों के तप नमन।।
- चाक्षुष पंचतत्व भुवन शुचि वेद दर्शन चिन्तन।
  तुम पवमान सद् चेतन प्रणव सेवी आत्मन्।।
- र 'र्रा' रत सर्वत्र रमण साक्षात् सेवा दर्पण।
  मनसा वाचा अरु कर्मण लोकहित जीवन अर्पण।।
- यम नियम का दृढ पालन युक्ताहार स्वावलम्बन।
  अशरण शरण तन मन धन विश्व बन्धुत्व हित जीवन।
- गौ गांव गणेश जन गण अद्भुत है गीता दर्शन।
  स्वदेश स्वभाषा वरण ग्रामोदय शिक्षा मंथन।।
- रीति नीति मुक्त न बंधन शोधन बोधन संवर्द्धन।
  सकारात्मक सोच सृजन मुमुक्ष जन हित पथ दर्शन।।
- शं शंभु अनुकम्प पंचायतन अटन शिव संकल्प पालन।
  वरदा वाणी गति गहन जगा पौरूष मन भावन।।
- कर्म मय कल्याण करण प्रत्यक्ष प्रकट संवर्द्धन।
  काल साधते कुलात्मन सर्वार्थ उदय [illegible]।।
- 'र' भू द्यु अग्न पानी पवन सृजत संस्कार और नमन।
  शतायु हों आचार्य श्रीमन् गौरीशंकर शत शत नमन।।

महान व्यक्तित्व के धनी : डॉ. गौरी शंकर जी आचार्य

सुशील कुमार त्यागी "अमित"
विद्याभास्कर, एम.ए., साहित्याचार्य
प्राध्यापक, संस्कृत विभाग

किसी देश अथवा स्थान को महानता की श्रेणी में नामांकित करने के लिये उस देश अथवा स्थान के निवासियों का विशेष योगदान रहता है, उन्हीं निवासियों मे से कुछ उत्कृष्ट महान व्यक्तित्व होते हैं, जिनको समादृत भाव से देखा जाता है। इसी श्रृखला में राजस्थान के पूर्व शिक्षामंत्री डॉ.गौरीशंकर जी आचार्य का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

डॉ. गौरीशंकर आचार्यजी वेद, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, दर्शन आदि अनेक शास्रों के मर्मज्ञ विद्वान हैं तथा गायत्री, गीता और गौ सेवा में यावज्जीवन संलग्न रहे हैं।

एक महान् व्यक्तित्व के लिये जिन-जिन गुणों का होना आवश्यक समझा जाता है वे सभी गुण 'आचार्य श्री' में दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे सौम्यता, स्थिरता, विनम्रता, उत्कृष्टता और गंभीरता आदि सभी सद्गुणों के उद्भव स्थान एकमात्र 'आचार्यश्री' ही है। आपके जीवन में लेशमात्र भी अहंकार, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि अवगुण कभी भी स्पर्श नहीं कर पाये। यदि कोई सामान्यजन अपने जीवन में इन महान व्यक्तित्व के दर्शन करना चाहे तो वह बडी सहजता से आचार्यश्री के दर्शन कर सकता है। इस अर्थ में हम कह सकते है कि डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य धरती के वरद पुत्र है।

पूज्य आचार्य जी का जन्म राजस्थान की पुण्यभूमि के बीकानेर खण्ड के 'भादरा' नामक उपनगर में सन् १९१५ ई. में पं. श्री जगनरामजी के घर हुआ। आपके पिताजी सरदार शहर के सुप्रसिद्ध वकील थे।

आचार्य जी की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम भक्त एवं सुप्रसिद्ध दार्शनिक तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज की सुप्रसिद्ध शिक्षण संस्था गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार में हुई। वहॉ से आपने सर्वोच्य उपाधि 'विद्याभास्कर' ससम्मान प्राप्त की। तदुपरान्त 'आचार्यश्री' ने पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर (तत्कालीन पंजाब प्रान्त, पाकिस्तान) से शास्त्री, क्विंस कॉलेज बनारस (वर्तमान में संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी) से साहित्य शास्त्री, कलकत्ता विश्वविद्यालय से सांख्यतीर्थ,
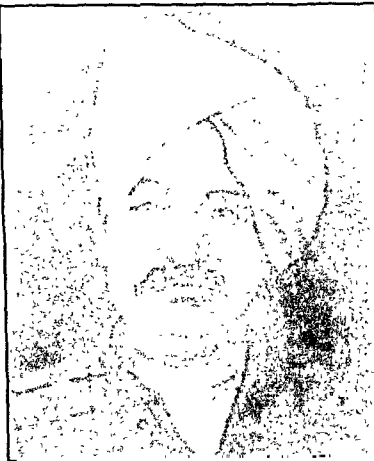
आचार्य श्री गौरीशंकर जी के
पिताश्री पं. श्री जगनराम जी

आचार्य श्री गौरीशंकर जी की
माताश्री श्रीमती चन्द्रावली देवी
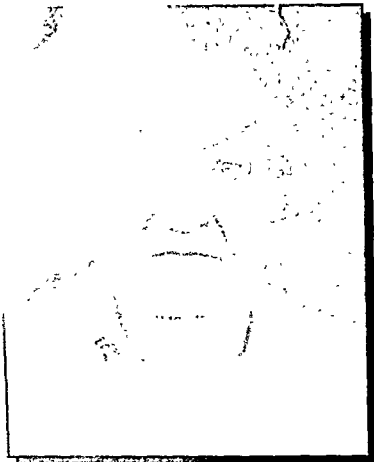
आचार्य श्री गौरीशंकर जी के
ज्येष्ठ भ्राता श्रीयुत झम्मनलाल जी

आचार्य श्री गौरीशंकर जी के
ज्येष्ठ भ्राता श्री झम्मनलाल जी की
पत्नी श्रीमती श्योबाई

बैठे हुए ज्येष्ठभ्राता श्री झम्मनलाल जी साथ में खड़े हैं आचार्यश्री गौरीशंकर जी (विद्यार्थी जीवन में)

आचार्य श्री अपने मंत्रित्वकाल में गूढ़ चिन्तन करते हुए

क्षधर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से वेदान्ताचार्य एवं एम.ए. तथा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर समाज में ख्याति अर्जित की।

आचार्य जी ने शिक्षा एवं राजनीति में ही नहीं अपितु अनेक सामाजिक क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय कार्य किये हैं। आप राजस्थान के बीकानेर स्टेट में प्रथम शिक्षामंत्री एवं रेलमंत्री रहे। पं. जवाहर लाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री एवं श्रीमती इंदिरा गांधी जैसे व्यक्तित्व भी आचार्य श्री का हार्दिक सम्मान करते थे।

समाजसेवा के साथ-साथ आप अपनी मातृसंस्था गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से भी अनवरत जुड़े रहे। सन् १९६२ से १९६३ तक आप गुरूकुल ज्वालापुर के आचार्य पद पर रहे तदनन्तर कुलसचिव, कुलपति आदि अनेक पदों पर आसीन होते हुए महाविद्यालय सभा ज्वालापुर के सन् १९८० से १९९२ तक "प्रधान'' पद को सुशोभित किया। यह मेरा परम सौभाग्य है कि आप जैसी दिव्य आत्मा के दर्शन एवं निकटता का सुअवसर मुझे भी प्राप्त हुआ है। आपके शुभदर्शन अब भी गुरूकुल ज्वालापुर के वार्षिक महोत्सवों पर प्रतिवर्ष होते रहते हैं तथा आपका निश्छल प्रेम, आर्शीवाद एवं मार्गदर्शन जहाँ सभी गुरूकुलवासियों को प्राप्त होता है वहीं यह सुअवसर मुझे भी निरन्तर मिलता रहता है। आप वर्तमान समय में भी महाविद्यालय ज्वालापुर के संरक्षक पद को अलंकृत कर रहे हैं। वास्तव में आपके जीवन पर आपके गुरूजनों की अमिट छाप है। आपने अपने गुरूजनों का नाम ही नहीं रोशन किया अपितु अपनी मातृसंस्था गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को भी गौरवान्वित किया है। ईश्वर करें कि आप शतायु हों-ऐसी मेरी मंगल कामना है।

गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

डॉ. गौरीशंकर आचार्य-एक शिक्षाविद्

संस्था हित में प्राण उत्सर्ग कर दूँ

डॉ. प्यारे लाल चौहान
एम.ए., पी.एचडी.
प्रिन्सीपल

डॉ. गौरी शंकर आचार्य का व्यक्तित्व शिक्षाविद् का व्यक्तित्व रहा है। स्वामी दर्शनानन्दजी की पावन कर्मस्थली गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर उन पावनतम विद्यामंदिरों में से अग्रणी महाविद्यालय है जो अपने में आर्यत्व एवं भारतीय संस्कृति की विराटता को संजोय है। इसीलिये कहा जाता है कि सम्प्रति सम्पूर्ण भारत में प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का साक्षात् प्रतीक एक ही गुरूकुल है। वह गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार है। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, आर्य समाज आन्दोलन, गऊ रक्षा आन्दोलन में गुरूकुल महाविद्यालय की भूमिका अग्रणी रही है। महर्षि दयानन्द के आर्य समाज प्रचार में गुरूकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर की अग्रणी संदेश वाहक की भूमिका रही थी और सम्प्रति है। आर्य संस्कृति एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति का सुन्दरतम् स्वरूप इस पावन स्थली पर विद्यमान है।

स्वामी दर्शनानन्द जी, आचार्य शुद्द बोध तीर्थ जी, आचार्य नरेन्द्र देव जी, डॉ. हरि प्रसाद जी आचार्य पदम सिंह शर्मा की शिक्षण पद्धति से सुवासित, एवं प्रकाशवीर शास्री डॉ. यशपाल सिंह जैसे राजनेताओं की शिक्षण स्थली गुरूकुल महाविद्यालय के संस्कारित परिवेश में पले बढे, डॉ. गौरी शंकर आचार्य गुरूकुल महाविद्यालय का गौरव हैं। सम्प्रति उन्हें चलता फिरता महाविद्यालय कहा जाता है। उनकी धार्मिक आस्था प्रशंसनीय है। आयुर्वेद के मनीषियों में डॉ. आचार्य जी को स्मरण किया जाता है।

गंगानगर (राज) से लेकर गंगद्वार (हरिद्वार) तक ज्ञान की पावन सरिता के वे प्रतीक हैं। उनकी सरलता, सादगी, नम्रता अनुकरणीय है। गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रबुद्ध शिक्षार्थी के साथ-साथ डॉ. गौरी शंकर आचार्य जी गुरूकुल महाविद्यालय की सभा के प्रधान एवं कुलपति रहे हैं। उनसे पूर्वोकृत पद सुशोभित रहे हैं।

गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्राचार्य स्वनाम धन्य डॉ. हरि गोपाल आचार्य के सानिध्य एवं प्रेरणा के फल स्वरूप मुझे भी गुरूकुल महाविद्यालय में कार्य करने का सुअवसर मिला था। मैं आर्य समाज की इस पावनतम संस्था में उपप्रधान तथा लम्बे समय तक महामंत्री रहा हूँ। इसी मध्य

डॉ. गौरी शंकर आचार्य के सानिध्य में रहने का सुअवसर मिलता रहा है। मैंने अपने कार्यकाल में जहाँ गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को बारीकी से देखा, परखा, वहीं पर डॉ. गौरीशंकर आचार्य जी के व्यक्तित्व से प्रभावित रहा हूँ। उनके सरल स्वभाव में लोह पुरूष की दृढता समाविष्ट है।

एक बार महाविद्यालय के प्रबन्धतंत्र में भयंकर विवाद चल रहा था। दो वर्गों में अस्ति-नास्ति का अहं उमड़ रहा था। श्री आचार्य जी उस समय महाविद्यालय सभा के प्रधान थे। ऐसा लगता था कि न जाने कब क्या विध्वंश हो जाये। सम्पूर्ण महाविद्यालय भयभीत था। मैं स्वयं एवं डॉ. हरिगोपाल आचार्य प्रधान सभा डॉ. गौरी शंकर के पास खडे थे। एक व्यक्ति ने आकर प्रधान सभा से अपने पक्ष में पत्र पर हस्ताक्षर करने को कहा। महाविद्यालय का इतिहास डॉ. आचार्य जी के हस्ताक्षरों पर टिका था। प्रधानसभा ने देखा कि मेरे द्वारा हस्ताक्षर करने पर महाविद्यालय का सर्वनाश हो जायेगा। उन्होंने पत्र पर हस्ताक्षर करने से असहमति व्यक्त कर दी। आगन्तुक गरज उठा, कहा कि मैं आपको गोली मार दूँगा। तथा आपको गंगनहर (महाविद्यालय इसी पावन गंगनहर के तट पर स्थित है) में फैंक दूँगा।

डॉ. गौरी शंकर आचार्य जी ने इस आतंकित परिवेश में जो दृढता का परिचय दिया। उस परिचय ने उन्हें गुरूकुल महाविद्यालय का लौह पुरूष बना दिया। प्रधान सभा ने कहा कि मुझे मरना तो है ही, अपनी इस मातृ संस्था के हित ही उत्सर्ग कर दूँगा। दूसरा यह और भी अच्छा होगा कि आप मुझे पतित पावनी माँ गंग नहर में फैक देंगे। मुझे शरीर गंगा में समाने का परम सौभाग्य मिलेगा। आचार्य जी ने सीना तान कर कहा गोली मार दो। परम् सत्ता से मिली प्रधान की दृढ़ता ने महाविद्यालय को बचा दिया। मैं महाविद्यालय के संबंध मे उनके प्रेम-स्नेह, भक्ति को नमन करता हूँ। "आचार्य'' शब्द, डॉ. गौरीशंकर के साथ आबद्ध होकर अलंकृत हुआ है।

प्रधान पद पर आसीन डॉ. गौरी शंकर आचार्य, महाविद्यालय परिवार को अपना परिवार मानते रहे हैं। प्रत्येक परिवार की खुशहाली की जानकारी रखना, द्वार से द्वार तक पहुँचना उनकी उदारता, महानता का प्रतीक रहा है। आचार्य जी, गुरूकुल आवासीय जनों, छात्रों को पुत्रवत् स्नेह करते रहे हैं।

मुझे काफी लम्बे समय तक आचार्य जी के सानिध्य मे रहने का शुभावसर मिला है। मै उनसे प्रभावित रहा हूँ। परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनका यही विश्वास, आस्था बनी रहे।

□

शिक्षा संस्कृति संस्कार से नवयुग लाने वाले

डॉ. विद्या सागर शर्मा
प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)

उज्ज्वल कुल में जन्म हुआ, तुम संस्कार में पले।
बी.एच.यू. से शिक्षा पा, इन्सान बने तुम भले।।

मालवीय के सचिव रहे, शिक्षक संपूर्णानन्द।
दर्शन का आधार रहा, चिन्तन था बडा स्वच्छन्द।।

डिगरियॉ पार्यी बहुत, बुढ़ापे में पी.एच.डी. पाई।
शिक्षक तुमने आजादी की व्यापक अलख जगाई।

ज्वालापुर के गुरूकुल में, ज्ञान क़ा बना आधार।
संस्कृत दर्शन न्याय सांख्य वेदान्त का सीखा सार।।

वेदान्ताचार्य सांख्यतीर्थ साहित्यशास्री आप।
एम.ए., पी.एचडी. शिक्षा में छोड़ी गहरी छाप।।

सर्विस छोड़ी अरु अपनाया स्वतंत्रता-संग्राम।
अपने घर पर लिखवाया, "स्वाधीन भारत'' नाम ।।

स्वतंत्रता सेनानी स्वर्णाक्षर में अंकित नाम।
शिक्षा और रेलमंत्री बन किए थे व्यापक काम।।

धन्य रतनगढ की जनता, एम.एल.ए. तुमको चुना।
गांधी विद्या मंदिर का सपना तूने ही बुना।।

हिन्दी विश्वभारती और ज्वालापुर के कुलपति रहे।
महिला विद्यापीठ डाबडी से सेवा के स्रोत बहे।।

तुम समाजभूषण गुर्जर गौडों के रहे प्रधान।
सारे भारत में अभिनंदित हो, पाया शुभ सम्मान।।

गौ गीता गायत्री को निज जीवन का माना संबल।
तेरे जोशीले भाषण युवकों में कर देते हलचल।।

शिक्षा संस्कृति संस्कार से नवयुग लाने वाले।
हिन्दी के संस्थान बहुत से संरक्षक बन पाले।।

गौ संवर्धन-संस्थाओं में भारी भागीदारी।
बतलाया हो आयुर्वेद पुनः कैसे गुणकारी।।

भाषण और लेख आपके दिखलाते पांडित्य।
"गीता पंचदशी'' प्रसिद्ध है, पढ़ें इसे हम नित्य।।

देखे नब्बै हैं बसन्त, प्रेरक व्यक्तित्व लिए गुरूवर।
आप शतायु हों ईश्वर से करते विनय सभी मिलकर।।

४-एफ-१७, जवाहर नगर
श्री गंगानगर (राज.)

श्री गौरीशंकराष्टकम्

डॉ. प्राणगोपाल आचार्य
प्राचार्य
एम.ए. (हिन्दी-संस्कृत) पीएच.डी

श्री गौरीशंकर वन्दे विबुधर्षभभीश्वरम्।
वाचामर्थैश्चे संप्राप्यम् सर्वलोक नमस्कृतम्।।१।।

गौरीशंकर आचार्य: शिष्यप्रशिष्य संयुत:।
कुरूते ज्ञानसमृद्धिम् भारतेऽस्मिन् विशेषत:।।२।।

एकनवतिके वर्षे आयुषोऽस्य महात्मन:।
प्रवेशे शुभवेलायाम क्रियते ह्यभिनन्दनम्।।३।।

शिक्षा साहित्य संसारे नान्योऽस्ति सदृश: पर:।
संस्कृते: रक्षक: श्रीमान् एष एव मतिर्मम।।४।।

श्री गीताज्ञान सम्पन्न: कर्मयोगी सुधीवर:।
स्वदेशं सेवते नित्यम् इति नास्ति तिरोहितम्।।५।।

गायन्तं भायते या सा गायत्री सर्व रक्षिका।
तस्या आराधको वन्द्य: विभाति जगतीतत्मे।।६।।

कुर्वन् सर्व जनोत्कर्षम् स्वशिष्यैरभिनन्दित:।
लोमशायुष्यमासाद्यं वर्धतामभिवर्धताम्।।६।।

सन्तो बुधा नरा नार्य: गौरीशंकर सेवका:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग् भवेत्।।७।।

अभिनन्दनवेलायां श्रीगौरीशंकराष्टकम्।
प्रोक्तं प्राणेन कुरूतां मनो मोदं महात्मनाम्।।१०।।

श्रीरंगलक्ष्मी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
महन्त, ध्यानदास कुन्ज, बनखण्डी महादेव
मैनेजिंग ट्रस्टी, तुलसी राम दर्शन स्थल, ज्ञानगुदडी
मैनेजिंग ट्रस्टी एवं सेवायत
विश्वेश्वरी अभय कुन्ज, गोपाल बाग वृन्दावन
२६, गोपाल बाग, वृन्दावन-२८११२१ उत्तरप्रदेश

सरदार शहर में शैक्षिक तथा साहित्यिक जागृति के पुरोधा डॉ. गौरीशंकर आचार्य

प्रो.डॉ. छगन लाल शास्त्री
एम.ए. (त्रय),पीएच.डी.

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य का जन्म सरदार शहर में अपने समय के सुप्रसिद्ध वकील पं. जगनराम जी शर्मा के द्वितीय पुत्र के रूप में हुआ। वकील साहब शिक्षा के अनन्य अनुरागी थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री झम्मनलाल जी ने बीकानेर में डूँगर कॉलेज से इण्टरमीडिएट की परीक्षा पास की। सरदार शहर के दो और विद्यार्थी श्री छगनलाल जी सोनी एवं श्री रामेश्वर लाल जी शर्मा उनके साथी थे। उन्होंने भी उनके साथ ही इण्टरमिडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की।

उस समय डूँगर कॉलेज में इण्टरमीडिएट तक का ही अध्ययन होता था। तब बीकानेर राज्य के शासक महाराजा सर गंगासिंह जी थे, जिनका भारत की देशी रियासतो के शासकों मे महत्त्वपूर्ण स्थान था। वे बडे शिक्षा अनुरागी थे। स्वनामधन्य महामना पं. मदनमोहन मालवीय द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना में वे विशेष सहयोगी रहे। कुछ समय तक वे विश्वविद्यालय के प्रो. वाइसचांसलर भी रहे। वे अपने राज्य में शिक्षा प्रसार की तीव्र भावना लिए हुए थे। योग्य विद्यार्थियों को राज्य सरकार के खर्चे पर उच्च अध्ययन के लिए भेजने मे उनकी रूचि थी। उन्होंने इन तीनों ही विद्यार्थियों को उच्च अध्ययन के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय भेजा। तीनों ने बी.ए., एलएल.बी. परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। फिर छगनलाल जी सोनी ने इतिहास में एम.ए. भी किया। तीनों ही बड़े योग्य निकले। श्रीयुत् पं. जगनरामजी को इस बात से बडा सन्तोष हुआ कि उनका बडा पुत्र अंग्रेजी के माध्यम से सुयोग्य विद्वान हो गया है। वे चाहते थे कि उनका द्वितीय पुत्र गौरीशंकर संस्कृत का उच्च कोटि का विद्वान् बने। इसलिए उन्होंने उन्हे गुरूकुल कांगडी (हरिद्वार) भेजा, जहाँ वे वर्षों तक अध्ययन करते रहे। गौरीशंकर जी बचपन से ही बडे मेधावी थे। वे लगन एवं अध्यवसाय के साथ वहाँ अपना अध्ययन परिसमाप्त कर "विद्याभास्कर'' की उपाधि से विभूषित हुए। यह उपाधि प्राप्त करने वाले इस क्षेत्र के वे प्रथम व्यक्ति थे।

वकील साहब पं. जगनरामजी इतने से सन्तुष्ट नहीं थे। वे गौरीशंकर जी को संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान् के रूप में देखना चाहते थे। इसलिये उन्होंने उनको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत का उच्चतर अध्ययन करने हेतु भेजा। राज्य सरकार से इसके लिए छात्रवृत्ति भी प्राप्त हो गई। विश्वविद्यालय में प्राचीन पद्धति से संस्कृत के अध्ययन का एक स्वतंत्र महाविद्यालय भी है, जहाँ व्याकरण, साहित्य, वेद, न्याय, वेदान्त, स्मृति, सांख्य, योग, बौद्ध, जैन आदि दर्शनों का आचार्य तक का अध्ययन होता है। श्री गौरीशंकर जी को दर्शन में अधिक रूचि थी। उन्होने विशेष रूप से वेदान्त विपय लिया। उन्होंने वेदान्त में आचार्य परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहाँ वे "शास्राचार्य'' तथा 'वेदान्त वारिधि'' की उपाधि से सम्मानित हुए। वहाँ रहते हुए उन्होंने सांख्य एवं योग दर्शन का भी अध्ययन किया। बंगाल राज्य द्वारा संचालित बंगाल संस्कृत एसोसिएशन, कलकत्ता से उन्होंने "सांख्य योग तीर्थ'' की उपाधि प्राप्त की।

बनारस में अपना अध्ययन पूरा कर वे सरदारशहर आए। उनका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ। श्रीमती लक्ष्मीदेवी के रूप में उनको उत्तम संस्कारवती सहधर्मिणी प्राप्त हुई जो यावज्जीवन उनके शैक्षिक, साहित्यिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में सर्वथा सहयोगिनी रहीं।

जब वे पढ लिखकर युवावस्था में सरदारशहर आए हुए थे, तब मैं किशोरावस्था में था, उनके सम्पर्क में आया। अपने समय के मूर्धन्य विद्वान् स्व.पं. ओंकारनाथ जी लाटा के पास अध्ययन कर मैं संस्कृत में बंगाल की सर्वोच्च उपाधि "काव्यतीर्थ'' उत्तीर्ण कर चुका था। संस्कृत में और भी अनेक परीक्षाएँ मैने उत्तीर्ण कर ली थीं। मुझे भारतीय दर्शन में विशेष रूचि थी। मैं न्याय, वैशेषिक, सांख्य तथा योग का अध्ययन भी कर चुका था।

मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता थी कि बनारस (काशी) में उच्च स्तरीय अध्ययन किए हुए विद्वान् का यहाँ आगमन एवं प्रवास है, शास्रचर्चा का सुन्दर प्रसंग प्राप्त रहेगा। मेरा आचार्य गौरीशंकर जी के साथ सांख्यदर्शन के सुप्रसिद्ध ग्रंथ "सांख्यकारिका'' के कतिपय महत्त्वपूर्ण स्थलों पर कई दिनों तक विचार-विमर्श चलता रहा। आज भी जब उस सारस्वत प्रसंग का स्मरण करता हूँ तो हर्ष विभोर हो उठता हूँ। "वादे वादे जायते तत्त्वबोध:'' यह उक्ति शास्त्रचर्चा में चरितार्थ होती थी।

तब सरदार शहर में बीकानेर राज्य सरकार द्वारा महाराजा सर गंगासिंह जी के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर स्थापित गंगा गोल्डन जुबली हाईस्कूल चलती थी, जिसका भवन सरदारशहर के नगर सेठ श्रीमान् सुमेरमल दूगड द्वारा महाराजा सर गंगासिंह जी की गोल्डन जुबली के अवसर पर बनवाया गया था। वही यहाँ मुख्य सर्वोच्य शिक्षण संस्थान था। उसमें बड़े ही सुयोग्य अध्यापक कार्यशील थे। उस समय अध्ययन का स्तर बहुत ऊँचा था। अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत तीनों ही भाषाओ

में दसवीं तक पहुँचते विद्यार्थी अच्छी योग्यता प्राप्त कर लेता। अंग्रेजी तो पहली कक्षा से ही शुरू हो जाती थी। राज्य सरकार की छात्रवृत्ति पर अध्ययन करने वालों के लिए अध्ययन पूरा करने पर तीन वर्ष तक राज्य सरकार में सेवा (सर्विस) करने का अनुबंध होता था, तदनुसार गौरीशंकर जी की शिक्षा विभाग द्वारा सन् १९४० में गंगा गोल्डन जुबली हाई स्कूल में संस्कृताध्यापक के पद पर नियुक्ति हुई। उनके इस पद पर आने से सरदारशहर को उनके मार्गदर्शन में शैक्षिक एवं साहित्यिक उन्नति करने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ।

श्री गौरीशंकर जी बचपन से ही क्रातिकारी विचारधारा के धनी रहे है। वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र संघ के नेता रहे। वहाँ अध्ययन काल में ही वे अच्छे वक्ता हो गए थे। बनारस जैसे विद्या केन्द्र में वर्षों तक अध्ययन करते समय उनको अच्छे-अच्छे विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ, जो उनके बौद्धिक विकास में बड़ा सहायक सिद्ध हुआ। सुयोग्य एवं उन्नतिकांक्षी व्यक्ति जहाँ भी जाता है, अपने प्रतिभा कौशल एवं अध्यवसाय से उत्तरोत्तर प्रगति करता ही है।

श्री गौरीशंकर जी बनारस जैसे बहुत बड़े विद्या केन्द्र में अनेक सभाओं एवं सम्मेलनों में भाग ले चुके थे। वे विश्वविद्यालय में भी अनेक सभाओं, गोष्ठियों आदि का आयोजन कर चुके थे। इसे वे बौद्धिक विकास का हेतु मानते थे। सरदारशहर में भी उन्होंने अपने छात्रों में ऐसी रूचि जागृत की, नगर में ऐसा वातावरण तैयार करने का प्रयास किया। श्री हनुमान संस्कृत विद्यालय के प्रधानाध्यापक पं.औंकारनाथ जी लाटा के रूप में उनको एक सुयोग्य विद्वान् सहयोगी प्राप्त हो गए। एक से दो हो जाने पर कार्य मे गति आना स्वाभाविक था। सरदार शहर मे पं. औकारनाथ जी लाटा, पं. लक्ष्मीनारायण जी शर्मा वैद्य, पं. हिमकर जी शर्मा वैद्य, पं. सीताराम जी मिश्र आदि द्वारा नगर में साहित्यिक अध्ययन, प्रचार-प्रसार के लक्ष्य से साहित्य समिति की स्थापना की गई थी, जो श्री गौरीशंकर जी आचार्य के सरदार शहर आने के बाद विशेष सक्रिय हो गई। श्री गौरीशंकर जी के मन में भाव जागृत हुआ कि लोगों में साहित्यिक रूचि उत्पन्न करने हेतु सरदार शहर मे बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया जाए। श्री लाटाजी आदि साथियों ने उनका समर्थन किया, जिनमे एक किशोर कार्यकर्ता के रूप में मैं भी सम्मिलित था।

सन् १९४० मे सरदारशहर मे प्रथम साहित्य सम्मेलन हुआ। यह सम्मेलन डूँगर कॉलेज, बीकानेर के संस्कृत विभागाध्यक्ष, भारत के सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् विद्यावाचस्पति पं. विद्याधर जी शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ। सन् १९४२ में दूसरी बार यह सम्मेलन संस्कृत तथा इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. दशरथ शर्मा जी की अध्यक्षता में हुआ। वे बीकानेर महाराजा के दोनों राजकुमार (महाराजा सर गंगासिंह के पौत्र तथा युवराज शार्दूलसिंह जी के पुत्र) श्री करणीसिंह जी तथा श्री अमरसिंह जी के अध्यापन हेतु नियुक्त थे। इतिहास के तो वे इतने बडे विद्वान् थे कि यूरोप

के ख्यातनामा इतिहासकार डॉ. विण्टरनित्ज जैसे विद्वान्, भारतीय इतिहास के अनेक प्रसंगों पर उनके विचार लेते थे। इन सम्मेलनों में बीकानेर राज्य के तथा बाहर के उच्चकोटि के विद्वान्, कवि एवं लेखक सम्मिलित हुए। साहित्य सम्मेलन, दर्शन सम्मेलन, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन आदि के रूप में उन दोनों सम्मेलनों में ही अनेक कार्यक्रम रखे गए।

बीकानेर से डूँगर कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष हिन्दी साहित्य के प्रख्यात मनीषी प्रोफेसर नरोत्तमदास जी स्वामी, राज्य सरकार द्वारा संचालित अनूप संस्कृत लाईब्रेरी के पुस्तकालयाध्यक्ष, हिन्दी एवं राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि श्री रामनिवासजी हारित, राजस्थानी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री मुरलीधर जी व्यास, महारानी सुदर्शना कॉलेज की संस्कृताध्यापिका प्रखर विदूषी कु. गायत्री, महाजन (बीकानेर) से संस्कृत के दिग्गज विद्वान् व्याकरण, साहित्य, दर्शन एवं संगीत के मर्मज्ञ प्रज्ञाचक्षु पं. केशरीप्रसाद जी शास्त्री, चूरू से अपने समय के सुप्रसिद्ध प्रभावक वक्ता पं. ब्रद्रीप्रसाद जी आचार्य, स्मृतियो एवं पुराणों के गहन अध्येता, अन्वेष्टा पं. मल्लीनाथ जी शर्मा, रतनगढ से रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य, व्याकरण एवं न्याय के उद्भट विद्वान पं. कृष्णचन्द्र जी शास्त्री, अजीतसरिया संस्कृत विद्यालय, रतनगढ़ के प्रधानाध्यापक, संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य तथा संगीत के उच्चकोटि के मनीषी पं गजानन्द जी शास्त्री, सूरजमल नागरमल फर्म द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानो के निदेशक पं. सूर्यमल्लजी माठोलिया आदि बीकानेर राज्य के विभिन्न स्थानों से अनेक विद्वान्, लेखक, कवि तथा संगीतज्ञ इस सम्मेलन में उपस्थित हुए।

जयपुर राज्य के अन्तर्गत शेखावाटी जनपद के भी संस्कृत, हिन्दी आदि के विद्वान् सम्मेलन में आए, जिनमें हरनंदराय रूइया संस्कृत कॉलेज, रामगढ के प्राचार्य, संस्कृत साहित्य के प्रौढ विद्वान् लेखक श्री हनुमत्प्रसाद जी शास्त्री का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्री गौरीशंकर जी की प्रेरणा के परिणामस्वरूप सन् १९४२ के सम्मेलन में लाहौर से रामकृष्ण भारती नामक हिन्दी के प्रतिभाशील कवि भी इस सम्मेलन में आए, जिनकी कविताओं से सम्मेलन गूंज उठता था।

स्वयं सहभागी एवं सक्रिय रहने के कारण मैं यह निःसंकोच कह सकता हूँ कि सम्मेलनों एव सभाओं के चिर अनुभवी श्री गौरीशंकर जी आचार्य तथा कर्मठ विद्वान् पं. औंकारनाथ जी लाटा की तत्परता एवं कार्यशीलता के कारण ये दोनों ही सम्मेलन इतने सफल रहे कि उन्हें स्मरण करते ही आज भी हृदय हर्ष से प्रफुल्लित हो जाता है। उन दिनों सरदारशहर में संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य के अनेक बडे-बडे विद्वान् थे।

श्री गौरीशंकर जी आचार्य एवं पं. औंकारनाथ जी लाटा के जिन सुयोग्य अंतेवासियों तथा युवा साहित्यसेवियों का इस सम्मेलन की सफलता में सहयोग रहा, उनमें श्री पूर्णचन्द जी मीमानी, डॉ. बुधमलजी श्यामसुखा, श्री राधाकृष्ण गोयल आदि मुख्य थे।

श्री गौरीशंकर जी आचार्य एव पं. औंकारनाथ जी लाटा ने सम्मेलन की ओर से हिन्दी

साहित्य की परीक्षाएँ भी प्रारंभ की थी। परीक्षाओं के संचालन का दायित्व श्री लाटा जी ने स्वीकार किया। परीक्षाओं के साथ-साथ "साहित्य मार्तण्ड" हस्तलिखित पत्रिका भी प्रारंभ की गई, जो बड़े ही सुन्दर रूप में चलती रही। उस समय विद्वानों, अध्यापकों, युवा लेखकों एवं कवियों में साहित्य के प्रति बडी अभिरूचि थी। पत्रिका में साहित्य की दृष्टि से उच्चकोटि की सामग्री प्रकाशित होती रही।

साहित्य समिति द्वारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की प्रथमा, मध्यमा (विशारद) तथा उत्तमा (साहित्यरत्न) परीक्षाओं की तैयारी कराई जाती थी। सायंकाल के बाद कक्षाएँ लगती थीं। श्री पूर्णचन्द जी मीमानी, श्री राधाकृष्ण जी गोयल आदि अध्यापन कार्य में बडे सहयोगी रहे। श्री मोहन लाल जी जैन आदि को भी उन्होंने साहित्य समिति के कार्य में जोडा। उस समय विद्वानों मे, कार्यकर्ताओं में कितनी बड़ी त्याग भावना थी, जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। वे सभी कार्य सर्वथा निःशुल्क रूप में चलते थे। वर्षों तक ये कार्य चलते रहे। साहित्य समिति ने साहित्यिक उद्‌बोधन के साथ बौद्धिक जागरण का भी सजीव वातावरण तैयार किया।

बीकानेर राज्य में भी प्रजा परिषद् की स्थापना हुई। सरदार शहर में श्री पूर्णचन्द जी मीमानी, श्री मोहन लाल जैन, श्री राधाकृष्ण जी गोयल द्वारा प्रजा परिषद् की शाखा की स्थापना की गई। क्रमशः उसका विकास हुआ। श्री गौरीशंकर आचार्य एक क्रांतिकारी पुरूष थे। उन्होने राजकीय सेवा के अनुबंध का अपना कार्यकाल पूरा कर राजनीति में प्रवेश किया। उन्होंने प्रजा परिषद् के माध्यम से राज्य में चल रहे स्वातंत्र्य आंदोलन को बल प्रदान किया। वे बडे ही प्रभावशाली वक्ता थे। प्रजा परिषद् का आंदोलन उत्तरोत्तर जोर पकडता गया। उस समय बीकानेर राज्य के शासक महाराजा शार्दुलसिंह जी थे। सरदार के.एम.पण्णीकर जैसे सुयोग्य विद्वान् और राजनीतिज्ञ उनके मंत्रिमण्डल में थे। उनके परामर्श से उन्होंने राज्य में प्रजातांत्रिक दृष्टि से उत्तरदायी सरकार के रूप में एक मिलेजुले मंत्रिमण्डल का गठन किया, जिसमें अपने द्वारा मनोनीत तथा प्रजाजनों में से गृहीत योग्यजनों को लिया गया। प्रजा परिषद् की ओर से चौधरी हरदत्त सिंह जी, श्री कुंभाराम जी आर्य तथा श्री गौरीशंकर जी आचार्य-ये तीन व्यक्ति लिए गए। आचार्य जी को शिक्षा विभाग दिया गया। कुछ समय के अनन्तर बीकानेर राज्य का भारत में विलय हो गया।

श्री गौरीशंकर जी आचार्य बीकानेर की राजनीति में शीर्षस्थ जनों में रहे किन्तु उनका मुख्य विषय तो शिक्षा एवं साहित्य था, जिससे वे कभी पृथक् नहीं हुए। सरदारशहर में श्री कन्हैया लाल जी दूगड़ ने शिक्षा का एक क्रांतिकारी अभियान शुरू किया। इस रेगिस्तानी क्षेत्र में शिक्षा की ज्योति जगाने का महान् लक्ष्य लेकर वे कार्य क्षेत्र में उतरे। उनका यहाँ विश्वविद्यालय स्थापित करने का स्वप्न था। श्री गौरीशंकर जी आचार्य उनके साथ इस कार्य में प्रेरणा स्त्रोत थे। गांधी विद्या मंदिर जैसी महान् संस्था की स्थापना हुई। उसके विकास में श्री गणेशमल जी दूगड़, श्री मोहन लाल जी जैन, श्री रामचन्द्र जी जैन, डॉ. मूलचन्द जी सेठिया आदि कार्यकर्ताओ का बड़ा योगदान रहा। श्री गौरीशंकर जी आचार्य आदि वर्षों तक उनके इस कार्य में उनके साथ जुटे रहे। श्री दूगड जी ने सन् १९८५ में सन्यास दीक्षा ग्रहण की। उनके द्वारा संस्थापित गांधी विद्या मंदिर उनके द्वितीय पुत्र प्रबुद्धचिंतक, लेखक एवं कवि श्री मिलाप जी दूगड के बुद्धिकौशल एवं अध्यवसाय से सन् २००२ मे उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मान्य) विश्वविद्यालय का रूप ले चुका है, जो उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा है। अस्तु!

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य शिक्षा क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए भी राजनीति से सर्वथा पृथक् नहीं हुए। वे रतनगढ निर्वाचन क्षेत्र से राजस्थान विधानसभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए।

श्री आचार्य जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने आयुर्वेद पर भी, जो भारत का महत्त्वपूर्ण चिकित्सा विज्ञान है, शोध कार्य शुरू किया। वे चाहते थे कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति देश मे अधिकाधिक प्रसारित हो, इसलिए ऐसी कतिपय, संख्या में स्वल्पतम् महत्त्वपूर्ण प्रभावकारी औषधियाँ चयनित की जाएँ, जिनका समस्त रोगों की चिकित्सा में उपयोग किया जा सके। विशुद्ध शास्त्रीय विधि से उनका निर्माण हो। अपने इस कार्य में उनको सरदार शहर के सांवरमल जी सोनी तथा बजरंग लाल जी सोनी नामक भ्रातृ युगल अंतेवासी के रूप में प्राप्त हुए जो बड़े सहयोगी सिद्ध हुए। उन दोनों भाईयों ने आचार्य जी के मार्गदर्शन में भस्में, रस, रसायन आदि अनेक औषधियॉ विशुद्ध रीति से बडे ही परिश्रम के साथ तैयार कीं। जो उनके पास संग्रहित हैं।

अनेक कार्यक्रम तथा अनेकानेक योजनाएँ हाथ में लेते रहने के कारण आचार्य जी की प्रतिभा एवं शक्ति विभाजित होती रही। यदि एक ही कार्य में वे अनवरत लगे रहते तो उसका और भी अधिक महत्त्वपूर्ण परिणाम आता।

हमारा यह सौभाग्य है कि आचार्य जी आज वृद्धावस्था में भी सर्वथा सक्रिय है। साहित्यिक एवं सामाजिक आदि सम्मेलनों, सभाओ में भाग लेते हैं। उनकी प्रेरणास्प्रद वाणी से लोग लाभान्वित होते हैं। वे शतायुर्मय, निरामय जीवन प्राप्त करें, परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है।

सरदार शहर, (राज.)

आचार्य गौरीशंकर और सरदार शहर का नवजागरण

डॉ. मूलचन्द सेठिया
भू.पू. प्रोफेसर

बंगाल में 'रिनेसाँ-नवजागरण उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में ही आ गया था, जब राजा राममोहन राय इसके अग्रदूत बन कर राष्ट्रीय मंच पर अवतीर्ण हुए। परन्तु, धूल भरे धोरों की गोद में दुबके हुए बीकानेर के राठौड़ी राज के इस मध्यम श्रेणी के शहर सरदार शहर मे यह बीसवीं सदी के पंचम दशक के आरम्भ में आया। सन् १९४० में स्थानीय मिडिल स्कूल महाराजा गंगासिंह की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में क्रमोन्नत कर गंगा गोल्डन जुबली हाई स्कूल बनाया गया। इसमें एक प्रशस्त चाल, नुकीली नासिका वाले गौरवर्ण हृष्टपुष्ट युवक को संस्कृत अध्यापक के रूप मे नियुक्त किया गया। नाम था आचार्य गौरीशंकर। उन्होंने लाहौर, ज्वालापुर और बनारस के शैक्षिक वातावरण में जिस स्वतंत्रता और उन्मुक्तता का अनुभव किया था, उसे पच्चीस हजार की आबादी वाले इस शहर के किशोरों और युवाओं के मानस में संक्रमित करने का प्रयास किया। वे राष्ट्रीय संकल्प लेकर आए थे, उनकी आँखों में भारत की स्वतंत्रता के स्वप्न मंडरा रहे थे, परन्तु सन् १९४० के बीकानेर राज्य में प्रबल प्रतापी महाराजा गंगासिंह का शासन था। उनकी मर्जी के बिना पूरी रियासत में कहीं पत्ता भी नहीं हिल सकता था। यहॉ स्वाधीनता के सपने यथार्थ की चट्टान से टकरा कर टूट ही सकते थे। डॉ. सम्पूर्णानन्द जैसे महान् विद्वान को चौबीस घण्टे के नोटिस पर बीकानेर छोड़ना पड़ा था। आचार्य जी ने जब वक्त की नब्ज पर हाथ रखा तो वे ताड गए कि अभी राष्ट्र की नहीं राष्ट्रभाषा की बात करनी है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को अपने रचनात्मक कार्यक्रम का एक प्रमुख घटक मान लिया था। आचार्य जी के लिए भी हिन्दी केवल एक भाषा का ही नाम नहीं था, यह राष्ट्र का पर्याय था। इसके साहित्य में राष्ट्र के प्राणों का स्पन्दन सुनाई पडता था। उन्होंने युवा पीढी की चेतना में हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति जो आस्था के बीज बोये, वे कालान्तर में स्वत: राष्ट्रीय भावना के रूप में पुष्पित और फलित हो गए। इस वट-वृक्ष की शाखा प्रशाखाओं ने शीघ्र ही शहर के समग्र जीवन को आच्छादित कर लिया।

प्रश्न है कि आचार्य गौरीशंकर का जादू सरदारशहर के सर पर चढकर क्यों बोलने लगा? आखिर वे स्कूल के संस्कृत पंडित ही तो थे, जिनको अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व वाले उस युग में विशेष सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में संस्कृत एक वैकल्पिक विषय था जिसे सारे विद्यार्थी पढ़ते ही नहीं थे। निश्चय ही उनकी सौम्य एवं प्रसन्न मुख मुद्रा और मधुर

व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण था। परन्तु गहन विश्लेषण करने पर यह प्रतीत होता है कि विद्यार्थियों को स्वदेश प्रेम पर आधारित जो राष्ट्रभाषा का संदेश दे रहे थे, वह उनके ही अन्तर्मन की पुकार थी। विद्यार्थियों की अन्तश्चेतना में युगीन प्रभाव से जो भाव और विचार अंगडाई ले रहे थे, उनको ही आचार्य जी जागृत करने का प्रयास कर रहे थे। नव जागृत युवा चेतना को एक नायक की तलाश थी और वह उन्हें अपने नये अध्यापक के रूप में प्राप्त हो गया। यह भी हो सकता है कि नियति ने आचार्य गौरीशंकर को सरदार शहर में नव-जागरण का संदेश देने के लिए ही भेजा हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने अपनी इस नियति निर्धारित भूमिका का प्रभावपूर्ण रूप से निर्वाह किया।

आचार्य गौरीशंकर का प्रभाव विद्यार्थियों तक ही सीमित नहीं रहा, क्रमश: वह व्यापक से व्यापकतर होते हुए नगर व्यापी हो गया। सन् १९४० में जब आपने सरदार शहर के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया, शहर में एक लघुरूप में बुद्धिजीवी वर्ग का आविर्भाव हो गया था। बाबू शोभाचन्द जम्मड़ मनोरंजन नाट्य परिषद् के अध्यक्ष थे, पर उनके सन्त जैसे सरल-निश्छल और सात्विक व्यक्तित्व का प्रभाव पूरे शहर में व्याप्त था। उन्हें "सरदार शहर का गाँधी'' कहा जा सकता था। सभी जनहितकारी प्रवृत्तियों को उनका आशीर्वाद प्राप्त था, पर वे नाट्य परिषद् से इतर संस्थाओं में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेते थे। आचार्यजी ने साहित्य समिति के माध्यम से सरदार शहर के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया था। संभव है कि यह संस्था कुछ पहले से ही विद्यमान रही हो। आचार्य औंकारनाथ, आचार्य उमाशंकर, वैद्य रामप्रसाद, वैद्य हिमकर और वैद्य लक्ष्मी नारायण आदि हिन्दी और संस्कृत साहित्य एवं आयुर्वेद के प्रति विशेष अभिरूचि रखते थे। बालचन्द नाहटा, वृद्धिचन्द कर्वा, रामेश्वर टाँटिया, जयचन्द लाल सेठिया, जयचन्द लाल बोथरा और वृद्धिचन्द अग्रवाल मधुर आदि ने अपने स्वाध्याय के द्वारा साहित्यिक संस्कार अर्जित कर लिए थे। स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय उच्च स्तरीय पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं को सुलभ करा कर साहित्यिक चेतना के संवर्द्धन में अपना बहुमूल्य सहयोग दे रहा था। परन्तु साहित्य समिति को एक सशक्त और सक्रिय संस्था के रूप में संगठित करने का श्रेय आचार्य गौरीशंकर को ही है। आपकी प्रेरणा से साहित्य समिति के अन्तर्गत हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग की प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा परीक्षाओं के लिए शिक्षण की व्यवस्था करने के निमित्त हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की गई। इससे अनेक युवा विद्यार्थियों के साथ समिति का जुडाव हुआ। यह नया खून अपने साथ नई शक्ति और स्फूर्ति लेकर आया। साहित्य समिति के विशेष रूप से सक्रिय कार्यकर्ताओं में खेतू लाल शर्मा, रामलाल सर्राफ, बुद्धमल श्यामसुखा, राधाकृष्ण गोयल, पूर्णचन्द मीमाणी, दीपचन्द नाहटा, दौलत राम सारण, कामरेड मोहन लाल शर्मा, राधाकृष्ण चाण्डक, मोहन लाल जैन, हीरालाल सेठिया, पन्नालाल बैद, पन्नालाल पेडीवाल आदि के नाम याद आ रहे हैं। हनुमान संस्कृत पाठशाला के

छगन लाल शास्त्री लूणकरण विद्यार्थी आदि भी समिति की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते थे। अपनी स्मृति की शिथिलता के कारण कुछ महत्त्वपूर्ण नाम अवश्य विस्मृत हो रहे हैं, तदर्थ क्षमाप्रार्थी हूँ। साठ वर्ष का लम्बा कालान्तराल भी तो हो गया है।

तत्युगीन परिवेश का विम्बित् विस्तृत विवरण इसलिए प्रस्तुत किया गया है कि आचार्य गौरीशंकर के कार्य का सम्यक् रूप से मूल्यांकन किया जा सके। स्पष्ट है कि उन्होंने युवा कार्यकर्ताओं की एक पूरी टीम तैयार कर ली थी। यह कहना भी अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि युग की पुकार को सुनकर कार्यकर्ता उनकी ओर स्वयं खिंचे चले आए थे। उन दिनों कार्यकर्ताओं में किसी प्रकार की प्रतियोगिता की भावना नहीं थी, पूरे सहयोग और समन्वय की भावना से सारा कार्य संचालित होता था। राजनीति से बच कर ही चलने का प्रयास किया जाता था, फिर भी तुलसी जयन्ती और गीता जयन्ती के कार्यक्रम में खुफिया पुलिस की छाया मंडराती थी। एकबार तो कवि सम्मेलन में पठित छायावादी कविताओं में भी सरकार को राजद्रोह की गंध आने लगी थी। जहाँ तक मुझे स्मरण है, साहित्य समिति के कार्यक्रमों को लेकर सरकार के साथ कोई बड़ी टकराहट नहीं हुई।

सन् १९३९ या १९४० में साहित्य समिति ने आचार्य गौरीशंकर की प्रेरणा से अपने वार्षिकोत्सव का आयोजन बड़े पैमाने पर किया। सरदारशहर में इतना बडा साहित्यिक समारोह पहले कभी नहीं हुआ था। इस समारोह की सफलता से प्रोत्साहित होकर समिति ने बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन का आयोजन किया। इसमे बीकानेर राज्य के कोने कोने से साहित्यिकों का समागम हुआ। इसकी अध्यक्षता इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. दशरथ शर्मा ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस मरू-अंचल की पुरातात्विक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्पराओं का शोधपूर्ण विवेचन किया। यह अभिभाष्य अगर किसी के पास उपलब्ध हो तो इसे पुनर्मुद्रित कराना चाहिये। सम्मेलन में पधारने वाले अन्य विद्वानों में प्रो. विद्याधर शास्त्री, शम्भूदयाल सक्सैना, अगरचन्द नाहटा, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, पं. कृष्णचन्द्र शर्मा, बद्री प्रसाद शर्मा, अक्षयचन्द शर्मा, मुरलीधर व्यास आदि साहित्यकारों के नाम उल्लेखनीय है। शिक्षा, साहित्य और संस्कृति विषयक व्याख्यानों को श्रोताओं ने रूचिपूर्वक सुना। सम्मेलन के त्रि-दिवसीय कार्यक्रम में संस्कृत परिषद्, संगीत परिषद् और राजस्थानी परिषद् का आयोजन भी किया गया था। श्रोताओं ने सबसे अधिक दिलचस्पी कवि-सम्मेलन में ली। लाहौर से आए हुए रामकृष्ण भारती खूब जमे। बादकी के कवि चन्द्र सिंह, नरपत सिंह और हास्य-व्यंग के कवि राम शर्मा और चंद्रदेव शर्मा ने सुनने वालों की वाहवाही लूटी। सरदार शहर की धरती पर संभवत: यह पहला कवि सम्मेलन हुआ था। सरदार शहर के बाद बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन रतनगढ, सुजानगढ, चूरू, तारानगर और बीकानेर में भी हुए जिनमें सरदार शहर के प्रतिनिधियों ने प्रमुख रूप से भाग

लिया। सम्मेलन के विभिन्न अधिवेशनों के अध्यक्ष तो बदलते रहे, पर जब तक इसका अस्तित्व रहा, प्रधानमंत्री का दायित्व आचार्य औंकारनाथ के कंधों पर ही रहा।

आचार्य गौरीशंकर योजना-बिहारी थे। एक न एक योजना उनके मस्तिष्क में मंडराती ही रहती थी। दो एक बरसों के बाद सरदार शहर में ही बीकानेर राज्य के समस्त पुस्तकालयो के प्रतिनिधियों का सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें सभी पुस्तकालयों की सामान्य समस्याओं का निराकरण करते हुए उनके भावी विकास की योजना प्रस्तुत की गई। राज्य सरकार से भी पुस्तकालयों की अधिक उदारता के साथ सहायता करने का अनुरोध किया गया। राज्य में पुस्तकालयों के विकास की दिशा में इस सम्मेलन का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

प्राय: प्रति सप्ताह साहित्य समिति के प्रांगण में एक सभा का आयोजन किया जाता था, जिसमें या तो किसी नियत विषय पर भाषण होते या कविता पाठ का आयोजन किया जाता। शहर के बाहर से विशिष्ट विद्वानों एवं साहित्यकारों के आगमन पर उनका सम्मान करने और उनके विचार सुनने के लिए अतिरिक्त आयोजन किए जाते थे। सन् १९४२ के दिसम्बर माह में प्रसिद्ध विचारक एवं कथाकार जैनेन्द्र कुमार को आमंत्रित किया गया था और कई गोष्ठियों में उनके साथ साहित्य चर्चा का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। बाद में तो कई बार जैनेन्द्र जी सरदार शहर पधारे थे। एक बार उनके साथ उर्दू के मशहूर शायर गोपीनाथ अमन भी आए थे। दोनों ही महारथी शतरंज खेलने के बडे शौकीन थे। साहित्य समिति के एक वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता करने के लिए प्रयाग से प्रख्यात लेखक श्री रामनाथ सुमन का आगमन हुआ। वे तीन दिन तक सरदार शहर में रहे और उन्होने कई कार्यक्रमो में भाग लिया। एक बार तुलसी जयन्ती के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण देने के लिए पं. चन्द्रशेखर शास्त्री बुलाए गए थे, जो रामचरित मानस के अधिकारी विद्वान माने जाते थे। अबोहर से स्वामी केशवानन्द सरदार शहर प्राय: आते रहते थे। स्वामीजी के नेतृत्व में ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन अबोहर में आयोजित गया था, जिसमें आचार्यजी के नेतृत्व में सरदार शहर के प्रतिनिधि बडी संख्या में सम्मिलित हुए थे। उन्होंने वापस आकर सम्मेलन के जो संस्मरण सुनाए वे युवा साहित्यकारों के लिए बहुत प्रेरक सिद्ध हुए। "बच्चन" की कविता का जादू सब के सिर पर चढकर बोलने लगा था। अगले वर्षों में सम्मेलन (अखिल भारतीय) के जयपुर, उदयपुर और हरिद्वार अधिवेशनों में भी सरदार शहर के प्रतिनिधि उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए थे। इन यात्राओं में युवा साहित्यकारों को हिन्दी के ख्याति प्राप्त लेखकों और कवियो के साक्षात्कार से प्रभूत प्रेरणा प्राप्त होती थी।

स्थानीय स्तर पर कवि सम्मेलनों के कार्यक्रम बहुत रूचिकर और आकर्षक सिद्ध होते थे। अबोहर सम्मेलन मे अतिशय लोकप्रियता प्राप्त करने वाले "सैनाणी" के कवि मुकुल को सरदार शहर आमंत्रित किया गया तो आजाद छत पर आयोजित कवि सम्मेलन श्रोताओं से खचाखच भर गया

था। राजस्थानी कविताओं से सारे देश में धूम मचाने वाले रतनगढ़ के कवि गजानन वर्मा का काव्य पाठ भी कई बार आयोजित किया गया था। हास्य-व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि चन्द्रदेव शर्मा के लिए तो सरदार शहर दूसरा घर ही था क्योंकि उनके पिता यहाँ पर पोस्ट मास्टर थे। ग्रीष्मावकाश में वे सरदार शहर ही रहते थे और उनके साथ दैनन्दिन साहित्य चर्चा चलती रहती थी।

साहित्य समिति द्वारा आयोजित सभाएँ समिति के कार्यालय में ही होती थीं, जो आथूरण बाजार में था, जहाँ पर आजकल तेरापंथी सभा का भवन अवस्थित है। बाद में, यह स्थान प्रजा-परिषद् के कार्यालय के लिए छोड़ दिया गया और समिति का कार्यालय आजाद छत पर स्थित एक कमरे में चला गया। समिति द्वारा आयोजित जिन सभाओं में अधिक उपस्थिति होने की संभावना होती थी, वे आजाद छत पर आयोजित की जाती थीं। गाँधी चौक का सभा स्थल के रूप में प्रयोग सर्वप्रथम प्रजा परिषद् की राजनैतिक सभाओं के लिए ही किया गया था।

सरदार शहर के लोक-जीवन में 'ताल' के मैदान का विशेष महत्त्व है। आजकल टेलीविजन ने स्थानीय लोगों को घर की चारदीवारी में बंद कर दिया है, परन्तु उन दिनों लोग सायंकालीन भोजन के बाद ताल में घूमने जाने के अभ्यस्त थे। शहर का यह सबसे महत्त्वपूर्ण मिलन स्थल था। गर्मी के दिनों में तो लोग अलग-अलग स्थानों पर अपनी मण्डलियाँ बनाकर बैठ जाते थे। ये गप्प लड़ाने के साथ ही समसामयिक विषयों पर चर्चा-वार्ता भी करते थे। एक मेले का सा वातावरण बन जाता था। हास-उल्लास का वातावरण था। सन् १९४२ या १९४३ की गर्मियों मे यह सोचा गया कि इस अनायास एकत्र जन-समुदाय का उपयोग क्यों नहीं अनौपचारिक सभा के लिए किया जाए। एक दिन सादुल व्यायामशाला के सामने एक लैम्प पोस्ट के नीचे कुछ विद्यार्थियों ने इस योजना को कार्यान्वित कर ही दिया। अगले दिनों में उपस्थिति निरन्तर बढ़ती गई। ग्रीष्मावकाश के कारण विद्यार्थियों का उत्साह देखते ही बनता था। बाद मे उपस्थिति "सैकडों" की संख्या पार कर गई। इन सभाओं में चुटकुले सुनाए जाते, मधुर गीत गाए जाते और कुछ भाषणबाजी भी होती। आखिर, बारिश की झड़ी शुरू हो गई और दैनिक सभाओं का यह क्रम स्थगित करना पड़ा। निश्चय ही, इन सभाओं ने शहर को कुछ श्रेष्ठ वक्ता दिए और कार्यकर्ताओं की एक नई पीढी तैयार हुई।

श्री बुधमल शामसुखा के घर पर बाहर वाले चित्रित "तिबारे" मे प्राय: प्रतिदिन स्थानीय साहित्य प्रेमी युवाओं की अनौपचारिक बैठक अनायोजित रूप से होती थी, जिसमें हलकी-फुलकी बातो के साथ ही साहित्य चर्चा भी हो जाती थी। उन दिनों में यहाँ कुछ युवाओं पर साहित्य का नशा चढा हुआ था। साहित्यकारों के व्यक्तिगत जीवन के संबंध में नई से नई जानकारी रखी जाती थी। नई रचनाएँ प्रकाश में आती नहीं कि उन्हें हस्तगत करने का प्रयास किया जाता। कई बार तो ऐसा लगता कि हम साहित्यिक वातावरण में सांस ही नहीं ले रहे हैं, साहित्य को ही ओढ़ रहे हैं और साहित्य को ही बिछा रहे हैं। साहित्य के प्रति ऐसी अनुरक्ति मैंने बाद में विश्वविद्यालय के

स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में भी नहीं पाई। सन् १९४२ में श्री शामसुखा के अध्ययनार्थ पिलानी चले जाने के बाद ये गोष्ठियाँ स्वत: स्थगित हो गईं।

सरदार शहर में साहित्यिक वातावरण बनाने में स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय का बहुत बडा योगदान रहा हिन्दी साहित्य की दृष्टि से यह पुस्तकालय काफी समृद्ध था। पाठकों के आग्रह से नये प्रकाशन शीघ्रातिशीघ्र सुलभ कराये जाते थे और स्तरीय पत्र-पत्रिकाएँ भी काफी संख्या में आती थीं। कलकत्ता प्रवासी श्री रामेश्वर टाँटिया से भी नये प्रकाशनों का अवदान प्राप्त होता रहता था। कुछ समय तक राजस्थानी के प्रसिद्ध कहानीकार श्री बैजनाथ पंवार ने पुस्तकालयाध्यक्ष का दायित्व निभाया था। यह स्वाभाविक ही था कि पुस्तकालय साहित्य प्रेमियों का खास अड्डा बन गया सरदार शहर को बौद्धिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बनाने में इस संस्था के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। शहर में और भी कई पुस्तकालय थे जिनकी सेवाओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

आचार्य गौरीशंकर ने एक काम बहुत सूझबूझ का किया, जिससे स्त्री-शिक्षा का कार्य बिना विशेष प्रयास के बहुत आगे बढ़ गया। कन्या पाठशाला में छात्राओं की संख्या अत्यल्प रहती थी। क्योंकि समाज के बड़े-बूढे अपनी बच्चियों को पढ़ने के लिए घर से बाहर भेजने के विरुद्ध थे। आचार्य जी ने आजाद छत पर युवा विद्यार्थियों की एक विराट सभा आयोजित की, जिसमें सैंकड़ो युवकों ने खड़े हो अशिक्षित कन्याओं के साथ ''सगाई'' नहीं करने की प्रतिज्ञा ली। इस सामान्य सी घटना का बड़ा क्रान्तिकारी प्रभाव हुआ। स्त्री शिक्षा के कट्टर विरोधियों को भी अब अपनी बच्चियों को शिक्षित कराने की बात सोचनी पड़ी क्योंकि अगर उनकी सगाई नहीं होगी तो पूरे परिवार पर समस्या का पहाड टूट पडेगा। दूसरे ही दिन से अध्यापिकाओं की पूछ होने लगी और देखते ही देखते सामाजिक स्तर पर एक शान्त क्रान्ति हो गई। साहित्य समिति के द्वारा साहित्यिक और सांस्कृतिक नव जागरण का जो वातावरण बन रहा था, वह संस्था की चौहदी तक ही सीमित नहीं रहा। यह हलचल समिति की सीमाओं को पार कर शहर के गली मुहल्लों तक फैल गई थी। कई मुहल्लों में मुहल्ला वाचनालय खुल गए थे, जहाँ दैनिक पत्र और पत्रिकाएँ मंगाई जाती थीं। इससे मुहल्ले में बैठे बैठे ही लोग देश-विदेश के समाचारों की अभिज्ञता प्राप्त कर लेते थे। कई वाचनालयों के द्वारा मुहल्लों में साप्ताहिक सभाएँ भी आयोजित की जाती थीं, जिनमें बालक मधुर गायन सुनाते थे और भाषण देने का नि:संकोच अभ्यास करते थे। इन गतिविधियों के संचालन में फतेहपुर के दानवीर सेठ सोहन लाल दूगड का आर्थिक सहयोग रहता था और वे जब कभी सरदार शहर आए हुए होते तो सभाओं में स्वयं उपस्थित होकर नन्हें-मुन्नों की पीठ थपथपाते थे।

सभाओं और सम्मेलनों के द्वारा युवाओं को वाणी के द्वारा अपने भावों और विचारों की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति का प्रभूत अवसर मिलता था। परन्तु, साहित्य का अस्तित्व तो केवल सम्भाषण

तक सीमित नहीं होता, लेखन भी उसका एक अनिवार्य घटक है। लेखन का अभ्यास कराने के लिए साहित्य समिति के तत्वावधान में "साहित्य मार्तण्ड'' और "किशोर'' नामक हस्त लिखित पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती थीं। ये जन-साधारण के अवलोकनार्थ सार्वजनिक पुस्तकालय के वाचनालय में रख दी जातीं थीं। वर्ष में एकाधित निबन्ध प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता था।

सन् १९४५ में आचार्य गौरी शंकर का सरदार शहर से श्रीगंगानगर स्थानान्तरण हो गया। साहित्य सेवा के पर्दे के पीछे दबे पॉव चलने वाली राजनीति की पदचाप को राज्य सरकार ने पहचान लिया था। सन् १९४२ में ही यह सन्देह होने लगा था कि सरदार शहर में परोक्ष रूप से चलने वाली राज्य विरोधी गतिविधियों के साथ आचार्य जी का प्रत्यक्ष नहीं तो अप्रत्यक्ष संबन्ध अवश्य है। १९४२ में महाराजा गंगासिह की वर्षगॉठ के समारोह का बहिष्कार करने के आरोप में स्कूल से निष्कासित चारों छात्र साहित्य समिति द्वारा संचालित हिन्दी विद्यापीठ के छात्र रह चुके थे। प्रारम्भ से ही राजनीति के साथ एक निश्चित दूरी बनाये रखने पर भी साहित्य समिति की गतिविधियाँ राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित तो रहती ही थीं। बीकानेर में प्रजा परिषद् की स्थापना हो चुकी थी और राज्य में महाराजा की छत्रछाया में उत्तरदायी शासन की मांग की जाने लगी थी। साहित्य समिति के कई कार्यकर्ता प्रजा परिषद् के राज्य से निर्वासित नेताओं के सम्पर्क में थे और उन पर शहर में परिषद् की शाखा स्थापित करने के लिए जोर डाला जा रहा था। इन परिस्थितियों में राज्य सरकार द्वारा आचार्य जी के स्थानान्तरण का आदेश अनपेक्षित न था, पर जब यह आदेश आ ही गया तो केवल विद्यार्थियों ने ही नहीं, शहर के सभी जागरुक व्यक्तियों ने एक मर्माघात का सा अनुभव किया। लोग सभी जन-हितकारी प्रवृत्तियों के सफल संचालन के लिए आचार्य जी की ओर देखने के अभ्यस्त हो गए थे। युवाओं के लिए तो वे "फ्रैण्ड, फिलॉसफर एण्ड गाइड'' बन गए थे। कुछ भी हो, परिस्थिति के तर्क को विवशता पूर्वक स्वीकार करते हुए उनकी विदाई के लिए बडे पैमाने पर तैयारी की जाने लगी। आजाद छत पर आयोजित एक विराट सार्वजनिक सभा में आचार्य जी को एक रजत मण्डित कलात्मक फ्रेम में अभिनन्दन पत्र अर्पित किया गया। इस अभिनन्दन पत्र में कवि "प्रसाद'' के 'आँसू' का एक पद उद्धृत किया गया था, जो सरदार शहर के सर्वतोन्मुखी विकास में उनकी युगान्तकारी भूमिका को रेखांकित करता था।

पतझड था झाड़ खड़े थे,
सूखी-सी फुलवारी में,
किसलय नव-कुसुम बिछाकर,
तुम आए इस क्यारी में।।

जिस दिन उन्होंने सरदार शहर से श्री गंगानगर के लिए प्रस्थान किया उन्हें विदा नमस्कार करने के लिए अपार जन समूह उमड पडा था और स्टेशन का प्लेटफार्म लोगों से खचाखच भर

श्री गंगानगर जाने के बाद भी आचार्यजी के साथ सरदार शहर के साहित्यानुरागियों और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का सजीव सम्पर्क बना रहा। जब भी कोई समस्या उपस्थित होती तो उसके समाधान के लिए आपके दिशा-निर्देश की अपेक्षा की जाती थी। उनकी अनुपस्थिति में कोई भी साहित्यिक समारोह सूना-सूना-सा प्रतीत होता था। उन्हें बार-बार सरदार शहर आमंत्रित किया जाता था और कई बार तो उन्हें बुलाने के लिए ही कोई-न-कोई आयोजन कर लिया जाता था। आचार्य जी भी अपनी कर्मभूमि का दर्शन करने के लिए उत्सुक रहते थे। परन्तु, क्रमशः सरदार शहर के जन-जीवन पर राजनीति हावी हो गई। राजनीति की रणभेरी की तुलना में साहित्य की वीणा के स्वर मंद पडने लगे। युग की पुकार सुनकर साहित्य समिति के अधिकांश कार्यकर्ता प्रजा-परिषद् के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। मै स्वयं आन्दोलनकारी राजनीति के तूफान में झकझोरे खाने लगा। फिर एक दिन वह भी आया जब साहित्य समिति का अस्तित्व ही संकट में पड गया और वह संस्था जिसने शहर में जडता को तोड़कर चैतन्य का संचार किया था, अशिक्षा के अंधकार में ज्ञान का ज्योतिर्मय दीपक जलाया था, पिछडेपन को हटाकर शहर को प्रगति के पथ पर आरूढ़ किया था और लोक मानस को साहित्य एवं संस्कृति के सुसंस्कार दिए थे-इतिहास के नेपथ्य में चली गई। उसका सार्थक जीवन-काल समाप्त हो गया था। वह जब तक रही, ज्योति की तरह प्रज्ज्वलित होकर रही, उसने कभी धुँए का जाल नहीं फैलाया। फूल मुरझा गया, पर उसकी सुरभि कई दशाब्दियो तक आमोदित करती रही।

बरसों तक भूतपूर्व बीकानेर राज्य में सरदार शहर अपनी अग्रगामिता के लिए पहचाना जाता रहा। चूरू जिले की राजनीति में यह शहर सदा अगली पॉत में रहा। राजस्थान के प्रायः सभी मुख्यमंत्रियों के शासनकाल में महत्त्वपूर्ण विभागों को प्रभावी रूप से संभालने वाले चन्दनमल बैद की शिक्षा-दीक्षा बनारस मे हुई, परन्तु उनके प्रायः सभी सहयोगी साहित्य समिति के सक्रिय कार्यकर्ता रहे थे। दो बार संसद-सदस्य निर्वाचित होने वाले श्री रामेश्वर टॉटिया कलकत्ता प्रवासी होते हुए भी सरदार शहर की सभी सार्वजनिक गतिविधियों के साथ सदा गहराई से जुडे रहे। भारत के केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल मे नगर विकास मंत्री के प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत रहने वाले श्री दौलतराम साहरण, सर्वोच्च न्यायालय के महामहिम जस्टिस बनवारी लाल हिंसारिया और पन्द्रह वर्ष तक राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहने वाले रावत राम आर्य ये सभी साहित्य समिति द्वारा संचालित हिन्दी विद्यापीठ के छात्र रहे थे। आचार्य गौरीशंकर के नेतृत्व में साहित्य समिति ने स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्र मे जो बीज बोए थे, वे बरसों तक पुष्पित फलित होते रहे।

मैं स्वयं आचार्य गौरीशंकर का एक शिष्य और अनुवर्ती रहा हूँ। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

डॉ. आचार्य गौरी शंकर जी-एक परिचय

मोहन लाल जैन

आचार्य गौरीशंकरजी का सरदार शहर आना बडे शुभ मुहूर्त से हुआ। वे आए थे एक स्कूल के शिक्षक पद पर बन गए लोकप्रिय सार्वजनिक व्यक्तित्व। मानों उन्होंने सरदार शहर के लिए ही जन्म लिया हो और सर्व गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं योग्यताएँ सरदार शहर के लिए ही अर्जन की हों। शिक्षक होने के नाते उनका सर्वप्रथम सम्पर्क विद्यार्थियों से ही हुआ। उन्होंने अनुभव किया कि यहाँ के विद्यार्थियों में प्रतिभाएँ निहित हैं। उन्होंने सर्वप्रथम नई पीढ़ी के सार्वजनिक जीवन निर्माण की मनोवैज्ञानिक भूमिका तैयार की। आचार्य जी का वात्सल्यपूर्ण व्यवहार, मृदुल वाणी और मीठी मुस्कान विद्यार्थियों के मन को मोह लेती थी। सानिध्य प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थीगण आचार्य जी के घर पहुँच कर सद्प्रेरणा और ज्ञान ग्रहण करने लगे। आचार्य जी चाहते थे कि वे मात्र विद्यार्जन तक ही सीमित न रहें, कार्यकर्ता भी बनें। उन्होंने विद्यार्थियों मे सार्वजनिक हित की भावना और उन्हें कार्यकर्ता बनने की प्रेरणा दी। अल्प समय में ही कार्यकर्ताओं की एक टीम बन गई तब आचार्य जी ने एक संस्था स्थापना की प्रेरणा दी।

आचार्य जी के सहज स्वाभाविक सफल व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय पाकर शिक्षा और साहित्य क्षेत्र के कुछ विद्वतजन भी आचार्य जी के सम्पर्क में आ गए। आचार्य जी के मार्गदर्शन में साहित्य समिति की स्थापना हुई। साहित्यिक प्रवृत्तियों के साथ-साथ नई पीढ़ी में राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सार्वजनिक भाव जागरण एवं गतिविधियों में सहभागिता की प्रेरणा भी दी जाती थी। मैं पढा-लिखा नहीं था, फिर भी आचार्य जी के सम्पर्क में आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने मुझे सार्वजनिक कार्यकर्ता बना दिया। वे कदम-कदम पर मुझे आगे बढाते रहे। उन्होंने मुझे सदा यही प्रेरणा दी कि जो भी कार्य करो उसे सफलता के शिखर पर पहुँचा कर दम लेना। कार्य करते जाना, असफलता को सफलता में साकार करते रहना, किसी कार्य को असंभव नहीं मानना। उनके ये पाठ पढकर मैं पढा-लिखा बन गया। प्रस्तुत हैं मेरे कुछ संस्मरण :-

१. मेरे बचपन के साथी श्री बुधमल शामसुखा के घर की और मेरे घर की खिडकियाँ आमने-सामने थीं। उनके घर के चौबारिये में प्रतिदिन उनके साथी-सहपाठी-विद्यार्थियों का जमघट लगता था। उनके पारस्परिक शिष्ट सौम्य व्यवहार एवं गुण गरिमापूर्ण चर्चाओं को देख सुन कर प्रभावित होकर मैं उनके जमघट में शामिल होने लगा। उन लोगों ने

मेरा आचार्य जी से परिचय कराया। प्रथम दर्शन में ही आचार्य जी ने मुझे अपना बना लिया और मैं उनका अपना बन गया। उस समय मेरी आयु १६ वर्ष थी और आज मैं ८६ वर्ष का हूँ आज भी हमारा अपनापन ज्यों का त्यों है।

२. आचार्य जी के निर्देशन पर बुधजी मुझे साहित्य समिति की साप्ताहिक गोष्ठी में ले गए। उस दिन उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के लिए, खड़े होकर दो शब्द बोलना अनिवार्य था। मेरी बारी आने पर मैं खडा तो हुआ पर कुछ भी बोल नहीं सका। आचार्य जी ने मुझे अपने पास बुलाया, बड़े स्नेह से कहा-"कोई बात नहीं, अगली बार बोलना"।

३ दूसरे दिन आचार्य जी ने मुझे अपने पास अकेले में बुलाया। मुझे एक मनोवैज्ञानिक प्रयोग के लिए, बडे स्नेहपूर्वक प्रेरित किया। उनके निर्देशानुसार दूसरे दिन बड़े सवेरे में, शहर की बस्ती से दूर सुनसान में चला गया। देखा चारों ओर कि कोई भी मुझे देखने वाला या सुनने वाला नहीं है। तब एक खेजडी के नीचे खडा होकर जो विचार मेरे मन में आए बेधडक बोलता रहा। आचार्य जी के बताए अनुसार मैं बोलने का आनन्द भी लेता रहा। फिर आचार्य जी के पास आकर जो किया, बता दिया तथा जो बोला सुना दिया। उसके बाद अगली साप्ताहिक गोष्ठी में मैंने अपने विचार बेधड़क होकर प्रस्तुत कर दिए। उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित थे और तालियो से उन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाया। आचार्य जी के इस मनोवैज्ञानिक प्रयोग की सफलता मेरे सम्पूर्ण जीवन के लिए वरदान स्वरूप सिद्धि साबित हुई।

४. उसके बाद तो आचार्य जी को मेरे पर भरोसा हो गया। तथा मेरा आत्मविश्वास भी सशक्त बन गया था। वे प्रायोगिक रूप से मुझे एक के बाद एक अवसर प्रदान करने के साथ-साथ प्रोत्साहित भी करने लगे। मेरी भी आचार्य जी के प्रति इतनी आस्था बन गई कि जैसा भी वे कहते मैं बडी लगन से उसे पूर्ण करने का प्रयास करता। उन्होंने मुझे साप्ताहिक गोष्ठी के प्रचार-प्रसार का काम सौंपा, मैंने लोहे की चद्दर का एक भोंपू बना लिया। उससे प्रचार करके गोष्ठी की उपस्थिति बढ़ाता रहा। बाद में आचार्य जी ने साहित्य समिति की कार्यसमिति में मुझे ले लिया और प्रचार-प्रसार मंत्री भी बना दिया।

५. एक दिन आचार्य जी ने कहा-"मोहन तुम 'ज्ञान मदिर' के नाम से एक पुस्तक बिक्री केन्द्र खोलो। मैंने कहा-मैं अनपढ हूँ, यह काम मेरे से कैसे संभव होगा?" उन्होंने बडे विश्वास के साथ कहा-" करने से सब संभव होता है। असंभव शब्द तो नहीं करने वाले के लिए है।" उनके ये शब्द ब्रह्म वाक्य बन गए और मेरी जीवन यात्रा के कदम-कदम पर सत्य

सिद्ध होते रहे हैं। आचार्य जी ने साहित्य समिति से पॉच सौ रुपये ब्याज पर दिलाए तथा इस काम में सहयोग के लिए साथी बुधमल शामसुखा और साथी राधाकृष्ण गोयल को मेरे साथ कर दिया। इन दोनों साथियों के सहयोग एवं मार्गदर्शन में मैंने पुस्तक प्रकाशकों से पत्र-व्यवहार करना, सूची पत्र मॅगा कर चुनी हुई पुस्तकों का आदेश देना, ग्राहक जुटाकर पुस्तकों की बिक्री करना आदि अत्यावश्यक प्रशिक्षण लिया। उन दोनों साथियों ने मेरे में पुस्तक पढ़ने का शौक लगाया, साहित्यकारों के जीवन व कृत्यों से परिचित कराया तथा मुझ अनपढ़ को साक्षर बनाने का भरसक प्रयास किया।

६. ज्ञान मंदिर का शुभारम्भ हुआ। बाजार में एक दर्जी की दुकान के बाहर की चौकी पर एक छोटी-सी अलमारी में पुस्तकों की दुकान के रूप में। ज्यों-ज्यों बिक्री बढती गई यह दुकान एक के बाद एक बडा रूप लेती गई। बिक्री बढ़ाने का जरिया आचार्य जी ने मुझे बताया कि पुस्तकें बक्से में भर-भर कर यात्राएँ करो, कस्बों और शहरों के पुस्तकालयों में ले जाकर दिखाओ, तुम्हारे पास पुस्तकों का संग्रह इतना अच्छा है कि बिक्री खूब होगी। ऐसा ही हुआ, बक्से में पुस्तकें भर कर ले जाता और खाली करके लौटता था।

एक बार मैं यात्रा में आचार्य जी के साथ था। पुस्तकों से भरा बक्सा रतनगढ के स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर रखा था। आचार्य जी ने कहा-"चलो बाहर दूध पी आएँ"। मैंने कहा-"इन बक्सों की रखवाली कौन करेगा?" आचार्य जी ने हँसकर कहा-"अरे इन बक्सों को जो भी ले जाएगा, वह पुस्तकें पढ़ेगा। साहित्य पठन-पाठन का उद्देश्य तो वह पूर्ण ही करेगा।" आचार्य जी के हास्य में भी सारगर्भितता रहती थी।

७. "ज्ञान मंदिर" की प्रगति व विकास से आचार्य जी बहुत खुश थे। शुभ संयोग की बात कि मास्टर अनूपचन्द जी ज्ञान मंदिर मे सहभागी बन गए। मास्टरजी तो सरदार शहर में उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की पहली पंक्ति के व्यक्ति थे और उनका व्यक्तित्व सर्व आदरणीय था। अब तो ज्ञान मंदिर का काम बढाने के लिए अर्थ की कमी नहीं रही। बडी दुकान मे भव्य ग्रंथागार बन गया। पत्र-पत्रिकाओं की एजेन्सियाँ भी ले ली गईं। शुद्ध खादी भण्डार भी साथ जुड गया था। शहर का सार्वजनिक पुस्तकालय ज्ञान मंदिर का सर्वाधिक बड़ा ग्राहक था। आचार्य जी की प्रेरणा से कई नए पुस्तकालयो की स्थापना व संचालन प्रारम्भ हो गया। मोहल्ले-मोहल्ले में वाचनालय चलने लगे। व्यक्तिगत ग्राहकों की संख्या बढने लगी। उन ग्राहकों के घरों में लघु पुस्तकालयों का स्वरूप बनने लगा। एक बार जब आचार्य जी ने ज्ञान मंदिर का निरीक्षण किया तो उन्होंने कहा-"मैने बडे-बडे नगरों मे बड़े-बड़े ग्रंथागार देखे हैं पर ऐसा उच्च कोटि साहित्य ग्रंथागार अन्यत्र नहीं देखा।"

८. आचार्य जी ने सरदार शहर के एक चित्रकार श्री हनिकजी के द्वारा विविध सर्व हितकारी विषयों की एक चित्र प्रदर्शनी बनाई। उसके साथ ही हाथ लालटेन के प्रकाश से पर्दे पर चित्र प्रदर्शित करने वाली एक साधारण मैजिक लैन्टर्न की भी व्यवस्था की। आचार्य जी आस-पास के छोटे-छोटे गॉवों में हम कार्यकर्ताओं को लेकर जाते और उन दोनों साधनों के उपयोग के द्वारा ग्रामवासियों में जनचेतना जाग्रत करते। आचार्य जी के निर्देशन में मैंने इन दोनों साधनों के उपयोग का अच्छा अभ्यास कर लिया। बाद में आचार्य जी की उत्साहवर्धक प्रेरणा पाकर साथी पूर्णचन्द जी मीमाणी के साथ उन दोनों साधनों को लेकर बीकानेर राज्य के सभी शहरों और कस्बों की यात्रा की और जन जागरण का प्रचार-प्रसार किया। इस दौरान आचार्यजी ने हर कदम पर मेरा उत्साह बढ़ाया और कहा-"अब तो तुम भाषण देना भी सीख गए।''

९. अखिल भारतीय मारवाडी सम्मेलन का राष्ट्रीय अधिवेशन दिल्ली में आयोजित था। आयोजकों ने बीकानेर क्षेत्र में अधिवेशन के लिए प्रतिनिधि बनाने हेतु आचार्य जी को लिखा। उन्होंने इस काम की जिम्मेदारी मुझे दी। मैंने विभिन्न कस्बों और शहरों का दौरा करके पर्याप्त संख्या में प्रतिनिधि फॉर्म भरा कर आचार्य जी को सौंप दिये। आचार्य जी ने मुझे स्नेहिल आर्शीवाद दिया।

१०. आचार्य जी हम कार्यकर्ताओं को लेकर मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन में भाग लेने के लिए पहुँचे। माताजी (आचार्य जी की धर्मपत्नी) भी अपने दुध मुँहे बेटे भीमसेन को लेकर साथ थीं। इतने बडे सम्मेलन में भाग लेना हम कार्यकर्ताओं के लिए प्रथम अवसर था। आचार्य जी ने हमें बडे-बडे लोगों से मिलाया। दिल्ली के दर्शनीय स्थल भी दिखाए। हमें नई-नई अनुभूतियों से लाभान्वित कराया।

११. उपरोक्त अधिवेशन के ठीक बाद आचार्य जी हम सभी को साथ लेकर हरिद्वार में आयोजित साहित्य सम्मेलन के प्रयाग के राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने के लिए पहुँचे। पवित्र नदी माँ गंगा के तट पर आयोजित सम्मेलन में भाग लेकर हम कृतकृत्य हो गए। आचार्य जी हम कार्यकर्ताओं को एक के बाद एक सौभाग्य प्रदान करा रहे थे। मैं तो कदम-कदम पर अभिभूत हो रहा था।

१२. उसी समय यह ज्ञात हुआ कि श्री कन्हैया लाल जी दूगड हरिद्वार में गायत्री जप की साधना कर रहे हैं। आचार्य जी हम सबको लेकर उनसे मिलने गए। कन्हैया लाल जी ने कहा कि मेरी गायत्री जप की साधना सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गई। अब आगे का कार्यक्रम है मसूरी

जाकर वहाँ की सुरम्य प्राकृतिक छटा का आनन्द लेने का। उन्होंने आचार्य जी से अनुरोध कि आप भी सबको साथ लेकर हमारे साथ पधारिए और हमें आतिथ्य का सौभाग्य प्रदान कीजिए। आचार्य जी ने समय निश्चित करके मसूरी में उनके साथ हो जाने का वायदा किया और सम्मेलन के अधिवेशन स्थल पर वापस लौट आए।

१३. आचार्य जी हम कार्यकर्ताओं, माताजी और भीमसेन को लेकर देहरादून पहुँचे। वहाँ से उच्चतम अलबेली नगरी मसूरी सामने नजर आ रही थी। जिसे देखकर हम मंत्रमुग्ध हो गए। हमने आचार्य जी की हिम्मत को लखदाद दी। उन्होंने माताजी से ही पूछा कि हम सभी उस ऊँचाई तक पैदल चढ़ें तो कैसा रहेगा? माताजी ने भीमसेन की तरफ इशारा करके कहा-"इसको गोदी में लेकर?" हम कार्यकर्ता साथियों ने तुरन्त कहा-"इसे तो बारी-बारी हम लेकर चढ़ जाएँगे।" बस तय हो गया मसूरी तक पैदल ही जाएँगे। दूसरे दिन प्रातः जल्दी ही पदयात्रा प्रारम्भ हुई। बीच में राजपुरा में सहस्त्रधारा देखकर हम सभी दंग रह गए। हम साथियों में बडा उत्साह भरा था। हम भीमसेन को लेकर बढते गए, चढ़ते गए। आचार्य जी और माताजी को हमने काफी पीछे छोड दिया। आगे चलकर भीमसेन को भूख लग गई और वह रोने लगा। आचार्य जी और माताजी थोड़े-थोडे नजर तो आ रहे थे पर उन तक न तो हमारी आवाज पहुँच सकती थी और न कोई संकेत से ही कुछ समझाया जा सकता था। किसी तरह हमने नीचे जाने वाले यात्रियों द्वारा उन तक सूचना पहुँचाई तब वे साधन जुटा कर हमारे तक पहुँचे। भीमसेन माँ का दुग्धपान करके चुप हुआ तब हमारी जान में जान आई।

१४. देहरादून से मसूरी तक की पदयात्रा में हमने जो मजा लिया और मसूरी में दो दिन रह कर वहाँ की सुरम्य प्राकृतिक दृश्यावलियों का जो हमने आनन्द लूटा तथा कन्हैया लाल जी की मेहमानगिरी का सुख भोग किया, वैसा अवसर फिर कभी नहीं मिला। आचार्य जी के साथ मैं जब-जब और जहाँ जहाँ रहा, उन्होंने मुझे दिया ही दिया और मैंने उनसे लिया ही लिया। उस देन-लेन ने ही मुझे कार्यकर्ता बनाया।

१५. आचार्य जी के एक सहपाठी श्री रामकृष्ण भारती बड़े अच्छे कवि थे। आचार्य जी का स्नेह उन्हें सरदारशहर खींच लाया और वे साहित्य समिति से जुड़ गए। कवि सम्मेलनों में वे जब अपनी कविता सुमधुर राग में गाते तो श्रोता भाव विभोर हो जाते थे। मै अनपढ था फिर भी उनका कवित्व मुझे भी अपनी तरफ खींच लेता था। लुके छिपे रद्दी कागजों पर मैं तब से ही टूटे-फूटे शब्दों में कविता बनाने लगा था। उनकी एक कविता मुझे आज भी याद है -

शैशव की स्वर्णिम आभा,
कितनी मीठी मतवाली।
कितनी उसमें गुदगुदियाँ,
कैसी री भोली भाली।
कल्पना जगत् का माली,
शिशु कवि से भी आगे है।
कवि की सीमा है संभव,
शिशु संभव से भी आगे है।

उस कविता के ये बोल आज भी मेरी रग-रग में व्याप्त हैं।

१६. आचार्य जी और उनका परिवार जब तक सरदार शहर में रहा, तब तक शायद ही कोई दिन ऐसा बीता होगा कि मै उनके परिवार के बीच उपस्थित नहीं हुआ। आचार्य जी जब सरदार शहर से दूर चले गए तब जब भी आते, मेरे घर को और मेरे परिवार को भूलते नहीं थे। हमारे पारिवारिक संबंध ऐसे बन गए थे कि दोनों परिवार पर्यायवाची हो गए। माताजी ने सरदारशहर में मुझे जो स्नेह दिया उतना स्नेह शायद ही किसी को दिया होगा। मैं जब उनके घर पर जाता तो बच्चे मुझे घेर कर बैठ जाते। किस्से कहानियाँ सुनते-सुनाते हँसी के फव्वारे छोडते रहते। भीमसेन आज भी उन दिनों को याद करके मजा लेते रहते है।

१७. आचार्य जी ने मुझ में जो राष्ट्रीय, शैक्षणिक, सेवात्मक और मानवीय एकता की भावना भरी, उनको मैं तब भी और अब भी कार्यरूप देता आ रहा हूँ। उनकी भावना प्रदत्त जितनी ठोस थी, मेरे कार्यरूप में भी वह ठोसता कायम रहती। मेरे सामने मेरे कार्यों में जब कभी कोई कठिनाई या समस्या आती तो मैं उसका समाधान आचार्य जी से प्राप्त करता। उनके द्वारा सुझाया समाधान अचूक भी होता और दिलचस्प भी होता।

एक बार हमारे सामने एक समस्या थी कि बालिका विद्यालय में काफी प्रयास के बावजूद भी लडकियों की संख्या बढ नहीं रही थी। आचार्य जी ने कहा विद्यार्थियों की एक सभा बुलाओ और उनको हम प्रतिज्ञा कराऐंगे कि "अशिक्षित लडकी से विवाह नहीं करेंगे।" ऐसा ही किया और ठीक उसके बाद लडकियों की संख्या बालिका विद्यालय मे बढने लगी।

१८. बीकानेर राज्य प्रशासन का पहला सार्वजनिक मंत्रिमण्डल बना। आचार्य जी शिक्षा और

रेलवे विभाग के मंत्री मनोनीत किए गए थे। मंत्री के रूप में आचार्यजी जब पहली बार सरदार शहर आए तो सरदार शहर के नागरिकों और कार्यकर्ताओं ने उनका भावभीना स्वागत किया। प्रमुख कार्यकर्ताओं ने उन्हें अपने घर पधारने का अनुरोध किया। आचार्य जी ने कहा-"सरदार शहर में तो मोहन का घर ही मेरा घर है। मैं तो उसी के साथ उसी के घर जाऊँगा।'' उनके इन शब्दों ने मुझे धन्य कर दिया।

१९. आचार्यजी ने रेलवे मंत्री होने के लिहाज से मुझसे कहा-"तुम ज्ञान मंदिर की तरफ से पत्र लिख कर रेलवे स्टेशनों पर बुक स्टॉल खोलने की माँग करो। मैं कुछ बडे स्टेशनों पर तुम्हें बुक स्टॉल की इजाजत दिला दूँगा। उससे ज्ञान मंदिर को बड़ा लाभ हो जायेगा।'' मैंने बड़ी विनम्रता से आचार्य जी से निवेदन किया कि मैं आपका अपना हूँ और ज्ञान मंदिर भी आपका अपना है। अपनों के लाभ के लिए अधिकार का उपयोग करना आप जैसे महान् व्यक्ति के पक्ष में भी ठीक नहीं रहेगा और आपके द्वारा निर्मित मुझ कार्यकर्ता के पक्ष में भी ठीक नहीं रहेगा।'' आचार्यजी ने मेरी इस बात से खुश होकर मुझे गले से लगा लिया।

२०. आचार्य जी ने जहाँ मेरे अंदर देशभक्ति, समाजसेवा, मानवीय एकता, मनोवैज्ञानिक-बालशिक्षण, सर्वांगीण बालविकास, अस्पृश्यता निवारण हरिजनोत्थान, जनकल्याण साहित्य सेवा पत्रकारिता आदि भावनाओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष में जो भी बीजारोपण किया, वहीं उन्होंने विश्व व्यापी कार्य करने की तथा किसी कार्य को असंभव न मानने की भी प्रेरणा दी। उन सभी क्षेत्रों में मैंने सक्रियता निभाई। उस सक्रियता के बदले मैंने जो पाया वह असंभव था, जो संभव बना।

गांधी विद्या मंदिर में आचार्य जी की सेवाओं और मेरी सेवाओं की प्रस्तुति मैं यहाँ अछूती छोड़ रहा हूँ कि वह स्वयं उसकी ही विस्मृति के गर्भ में चली गई हैं।

मालवीय नगर, जयपुर

आचार्य श्री गौरीशंकर जी – एक वन्दनीय विभूति

चम्पालाल उपाध्याय
एडवोकेट

आचार्य श्री गौरीशंकर जी के प्रथम दर्शन सन् १९४२ के ग्रीष्मावकाश में तारानगर के सार्वजनिक पुस्तकालय में हुए। वे शिक्षा तथा सामाजिक जागृति के अपने मिशन हेतु सरदार शहर से पधारे थे। श्री मोहन लाल जी जैन उनके साथ आए थे तथा स्थानीय प्रमुख व्यक्तियों ने उनका स्वागत किया। खादी की कमीज, कोट तथा धोती की सादी पोशाक में एक तेजस्वी तथा सौम्य शालीन युवक का प्रभावपूर्ण स्वरूप सामने आया। मै उन दिनों तारानगर की राजकीय मिडिल स्कूल में पढता था और पुस्तकालय का नियमित पाठक था। मैंने आचार्य जी को अपना परिचय दिया। उन्होंने मुझसे कोई प्रश्न पूछा जिसके उत्तर से वे प्रसन्न हुए और बहुत स्नेह के साथ मेरी पीठ थपथपाई।

रात्रि में सार्वजनिक सभा में उन्होंने बहुत ओजस्वी भाषण दिया जिसकी चर्चा कई दिन तक होती रही। उसके बाद उन्हीं के द्वारा संस्थापित बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन के १९४५ के अधिवेशन में सम्पर्क हुआ जो निरन्तर बढ़ता गया। बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् तथा अन्य सामाजिक-शैक्षणिक कार्यों के माध्यम से इस सम्पर्क में निरन्तरता बनी रही। इसी बीच आचार्य जी की भांजी एवं श्री पूर्णचन्द जी शर्मा (जज साहब) की सुपुत्री कान्ता देवी से सन् १९४९ में मेरे विवाह के कारण पारिवारिक निकट संबन्ध भी हो गए।

आचार्य जी तारानगर पधारे थे उससे पूर्व सरदार शहर में शिक्षा प्रसार तथा युवकों में विचार क्रान्ति की उनकी यशोगाथा तारानगर में हम बच्चे सुनते रहते थे। यह भी सुना कि आठ वर्ष की आयु में गुरूकुल कांगडी में प्रवेश लिया। फिर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से वेदान्त आचार्य सहित चार विषयों में आचार्य की उपाधि से विभूषित हुए। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर तथा ओरियन्टल कॉलेज से भी उच्च शिक्षा प्राप्त की। सभी उच्च परीक्षाओं में प्रथम-स्थान प्राप्त करने का असाधारण गौरव आचार्य जी को प्राप्त हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे आयोजित अखिल भारतीय गीता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर दक्षिण भारत तथा बंगाल के संस्कृत विद्वानों को भी आश्चर्यचकित कर दिया आप मेधावी छात्र होने के साथ-साथ प्रमुख विद्यार्थी नेता भी थे। उत्तर प्रदेश तथा पंजाब संस्कृत छात्र संघों की स्थापना में आपका प्रमुख योगदान था। उन संगठनों के अध्यक्ष भी रहे। बहुत वर्षों बाद अति सक्रिय जीवन के बीच अपने सहपाठी श्री प्रकाशवीर शास्त्री के आकस्मिक निधन के

बाद आचार्य जी को गुरूकुल कांगड़ी का अध्यक्ष पद सौंपा गया। वहॉ साठ वर्ष की आयु मे संस्कृत मे एम.ए. की। फिर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से "न्याय और वैशेषिक दर्शन में आत्मा'' विषय में पीएच.डी. की। इसी अवधि में गंगा किनारे स्थित गुरूकुल के अपने निवास पर आचार्य जी को भगवान श्री कृष्ण के दर्शन हुए। उसके पश्चात् पांच वर्ष तक गुरूकुल कांगड़ी के कुलपति के पद को सुशोभित करने के बाद पुन: अध्यक्ष पद संभाला।

महामना मालवीयजी के आप अत्यन्त प्रिय शिष्य थे। आपकी योग्यता तथा संगठन शक्ति से प्रभावित होकर मालवीय जी ने आपको अपना निजी सचिव बनाया। यदि मालवीय जी के पास आचार्य जी अधिक समय तक रहते तो शीघ्र ही अखिल भारतीय ख्याति तथा उच्च स्थान प्राप्त करते। परन्तु आचार्य जी का लक्ष्य तो पिछडे हुए राजस्थान की सेवा करना था। इसी प्रबल भावना के कारण आपका मानस उद्वेलित था। अत: इसी आधार पर मालवीय जी से अनुमति लेकर आचार्य जी सरदार शहर आ गए। वहाँ उनके पिताजी पं. जगनराम जी बडे वकील तथा यशस्वी समाज सेवक के रूप में प्रतिष्ठित थे। उन्होंने भी समाज सेवा की भावना के कारण तहसीलदार के पद से त्याग-पत्र देकर वकालत के क्षेत्र में प्रवेश किया। बीकानेर राज्य के तत्कालीन दीवान तथा मंत्रियों से भी उनके प्रभावपूर्ण सम्पर्क थे। अत: सरदार शहर पहुँचते ही आचार्य जी को उच्च राजकीय पद का प्रस्ताव मिला। परन्तु आचार्य जी ने अपने लक्ष्य के अनुसार स्वयं अनुरोध कर सरदार शहर हाई स्कूल में संस्कृत शिक्षक का पद स्वीकार किया। उस समय सरदार शहर अशिक्षा तथा रूढ़िवादिता के कारण बहुत पिछड़ा हुआ था। आचार्य जी के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व एवं ओजस्वी भाषण शैली ने युवकों तथा जन सामान्य पर जादू का सा असर किया। बौद्धिक चेतना के लिए साहित्य समिति व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की। शिक्षा प्रसार के लिए विशेष अभियान चलाये। उन दिनों पूरे समाज में ही बालिकाओं की शिक्षा नगण्य थी। बहुत समझाने पर भी अभिभावक अपनी कन्याओं को विद्यालय नहीं भेजते थे। लडकियों के विवाह भी छोटी उम्र में कर दिये जाते थे। एक दिन आचार्य जी ने नगर के सैकड़ों युवकों की सभा आयोजित की और अपने विलक्षण भाषण के बाद सबसे एक साथ प्रतिज्ञा करवाई कि अनपढ लड़की से संबन्ध नहीं करेगे। इस प्रतिज्ञा का ऐसा असाधारण प्रभाव हुआ कि दूसरे ही दिन भारी संख्या में अभिभावकों ने अपनी बालिकाओं को विद्यालय भेजना शुरू कर दिया।

सरदार शहर में ही आचार्य जी ने बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन की स्थापना कर प्रथम अधिवेशन आयोजित किया, जिसमें बीकानेर राज्य के संस्कृत, आयुर्वेद तथा हिन्दी के विद्वानों ने भारी संख्या में भाग लिया। उसके बाद प्रतिवर्ष इस संगठन के अधिवेशन विभिन्न शहरों में आयोजित होते थे जिसमें महिला सम्मेलन भी होते थे। पूरे बीकानेर राज्य के विद्वानों, बुद्धिजीवियों

का यह सबल मंच बन गया। स्थान-स्थान पर पुस्तकालय, वाचनालय तथा विद्यालय स्थापित किये गये। प्रौढ शिक्षा के लिए रात्रि पाठशालाएँ भी स्थापित की गईं। इस प्रकार साहित्य सम्मेलन ने सम्पूर्ण बीकानेर राज्य में बौद्धिक जागृति सामाजिक तथा शैक्षणिक अभ्युत्थान का ऐतिहासिक कार्य किया।

आजादी से पूर्व सम्मेलन के रतनगढ अधिवेशन के अवसर पर आचार्य जी के प्रेरणा पूर्ण भाषण से सेठ अनन्तरामजी ढई बहुत प्रभावित हुए उन्होंने दूसरे सत्र में साढ़े तीन लाख रुपये नकद आचार्यजी के समक्ष रख दिये। फिर कहा कि इस राशि से रतनगढ़ में हिन्दी, संस्कृत, आयुर्वेद संबंधी कोई भी बड़ी संस्था स्थापित कीजिए। तब श्री आचार्य जी बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् के कार्यों में भी सक्रिय हो गए थे। अत: उस धनराशि को स्वीकार करने में असमर्थता प्रकट की।

सन् १९४६ में जब बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् का पुनर्गठन हुआ तो आचार्य जी ने उसे सबल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आपके बौद्धिक एवं सांस्कृतिक अनुष्ठानों में हजारों लोगों ने प्रजा परिषद् को शक्तिशाली बनाने में साथ दिया। आचार्य जी ने घर-घर और गॉव-गॉव तक राजनैतिक क्रान्ति का सदेश पहुॅचाया।

सन् १९४८ में बीकानेर राज्य में प्रथम लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल बना तब आचार्य जी को शिक्षा, रेल एवं डाक-तार विभाग सौपे गये। उस समय आप केवल ३३ वर्ष के थे। लेकिन अपने मन्त्रिमण्डल में जिस योग्यता तथा सूझ-बूझ से सुधार के कार्य किये उन्हें आज तक लोग याद करते हैं। शिक्षामंत्री के रूप में अपने पहले आदेश द्वारा संस्कृत शिक्षकों को सामान्य शिक्षकों के समान वेतनमान स्वीकृत कर दिया। मन्त्रिमण्डल के गठन की प्रक्रिया के कारण बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् में भारी मतभेद था। प्रजा परिषद् की कार्यकारिणी की स्वीकृति के बिना ही मंत्री परिषद् का गठन कर लिया गया और परिषद् के संस्थापक तथा सबसे प्रमुख नेता श्री रघुवरदयाल गोयल से परामर्श भी नहीं किया गया। बीकानेर के महाराजा भी गोयल जी के तेज स्वभाव के कारण उनको अलग रखना चाहते थे। श्री गोयल ने मंत्रिमण्डल के गठन की गलत प्रक्रिया का प्रबल विरोध किया। अन्त मे श्री गंगानगर मे प्रजा परिषद् की प्रतिनिधि सभा की बैठक हुई जिसमें केवल दो मतों से मन्त्रिमण्डल से त्याग-पत्र का निर्णय किया गया। उन दो मतों में से एक मत मेरा भी था। बीकानेर राज्य छात्रसंघ का अध्यक्ष होने के नाते मुझे प्रतिनिधि सभा का सदस्य बनाया गया था। कुल सदस्य ८० थे। तब तक आचार्य जी के परिवार में मेरा संबन्ध भी तय हो गया था और व्यक्तिगत संबन्ध भी बहुत अच्छे थे। फिर भी आचार्य जी ने अपने पक्ष में मतदान के लिए मुझ पर कभी दबाव नहीं दिया। अन्य मंत्रियों ने भी दबाव नहीं दिया। यह उनका बड़प्पन और उस समय की राजनैतिक ऊँचाई का प्रमाण था।

देशी राज्यों में राजाओं का शासन समाप्त हो जाने के बाद आचार्य जी पुन: निर्लिप्त भाव से रचनात्मक कार्यों में जुट गये। राजस्थान निर्माण के बाद आचार्य जी ने अधिकांश समय रचनात्मक कार्यों में लगाया। सन् १९५० में आपकी प्रेरणा से श्री कन्हैया लाल जी दूगड (अब स्वामी रामशरण दास जी) ने महात्मा गांधी की पुण्य स्मृति में सरदारशहर में गांधी विद्या मंदिर की स्थापना हेतु एक मुश्त पाँच लाख रुपये प्रदान किये और आचार्य जी को संस्थान का प्रथम अध्यक्ष बनाया। शीघ्र ही संस्था ने पूरे भारत में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया और अब मान्य विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित है परन्तु दैवयोग से किसी बिन्दु पर आचार्य जी तथा श्री कन्हैयालाल जी में मतभेद हो गये जिस पर आचार्य जी ने अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र दे दिया। आचार्य जी के त्याग-पत्र देने पर दानवीर श्री सोहनलाल जी दूगड़ उनसे मिलने सरदार शहर में उनकी कुटिया में पधारे। श्री कन्हैयालाल जी उनके साथ थे। संयोगवश मैं भी वहाँ उपस्थित था। श्री सोहन लाल जी ने बहुत विनम्रता तथा गम्भीरता पूर्वक आचार्य जी से त्याग पत्र वापिस लेने का आग्रह किया। आचार्य जी ने असमर्थता प्रकट की तो उन्होंने कारण पूछा। आचार्य जी ने कहा कि कोई मतभेद नहीं है, पुन: राजनीति में सक्रिय होने के कारण मैंने त्याग पत्र दिया है। श्री सोहनलाल जी दूगड फिर भी संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने श्री कन्हैयालाल जी से कहा कि आचार्य जी के जीवन पर्यन्त उनका वर्तमान निवास स्थान इनके लिए ही सुरक्षित रहना चाहिए तथा इनके मार्ग दर्शन में कार्य करें। आचार्य जी अध्यक्ष पद पर रहते तो संस्था का भी तेजी से विकास होता और मान्य विश्वविद्यालय बनने में ५० वर्ष नहीं लगते। आचार्य जी की प्रतिभा एवं शक्ति का भी पूरा उपयोग होता।

आचार्य जी के ही सद्प्रयत्नों से श्री कन्हैयालाल जी के अग्रज श्री भंवरलाल जी दूगड़ ने गॉधी विद्या मंदिर के परिसर में आयुर्वेद विश्व भारती की स्थापना की। वर्षों तक आचार्य जी इस संस्था के मानद सलाहकार रहे। आपके कुशल निर्देशन में इस संस्था ने भी बहुत कम समय में पूरे भारत में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया।

१९५२ के प्रथम आम चुनाव में श्री माणिक्यलाल जी वर्मा राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के चुनाव प्रभारी थे। उन्होंने आचार्य जी को बीकानेर संभाग का प्रभारी नियुक्त किया। बीकानेर संभाग के कांग्रेस प्रत्याशियों की स्वीकृति लेने के लिए पं. नेहरू के समक्ष आचार्य जी ही उपस्थित हुए थे। उससे पहले मैंने आचार्य जी को सरदार शहर से चुनाव लड़ने का सुझाव दिया था। लेकिन आचार्य जी ने कहा कि सरदार शहर से तो उनके शिष्य श्री चन्दनमल बैद टिकट के इच्छुक हैं, उनका नाम काट कर मैं टिकट लेना नहीं चाहता अत: रतनगढ़ की टिकट ले लूँगा। मैंने कहा रतनगढ क्षेत्र आपके लिए उपयुक्त नहीं है, अचानक कोई गैर कांग्रेसी प्रमुख व्यक्ति भी चुनाव में आ सकता है लेकिन आचार्य जी ने रतनगढ से ही टिकट ली और रतनगढ के अति प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री माधव

प्रसाद जी सोलीसीटर ने बम्बई से आकर चुनाव लड़ा। जोधपुर के महाराजा ने उनको आर्थिक सहयोग दिया तथा स्थानीय कांग्रेसजनों ने माधव प्रसाद जी का साथ दिया और आचार्य जी चुनाव हार गये। दो वर्ष बाद माधद प्रसाद जी के निधन से स्थान रिक्त होने के कारण आचार्य जी ने उप चुनाव रतनगढ से लड़ा। इस चुनाव में जनसंघ की कड़ी टक्कर के बावजूद आचार्य जी चुनाव जीत गये। उस उप चुनाव में जनसंघ के प्रत्याशी श्री अद्‌भुत शास्त्री के समर्थन में श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी सात दिन तक रतनगढ़ में रहे। पं. नेहरू ने आचार्य जी को राजस्थान के मंत्रिमण्डल में शामिल करने के लिए मुख्यमंत्री सुखाड़िया जी को निर्देश दिये। परन्तु चौधरी कुम्भाराम आर्य एवं अन्य जाट नेता रामचन्द्र जी चौधरी को मंत्री बनाना चाहते थे। आचार्य जी की सहमति के बिना यह संभव नहीं था। अत: उन लोगों ने आचार्य जी की सज्जनता का लाभ उठाकर किसी तरह उनको मनाकर श्री सुखाडिया जी के पास ले गये। वहॉं आचार्य जी ने कहा कि मैं मंत्री नहीं बनना चाहता और मेरी जगह रामचन्द्रजी चौधरी को बनायें तो मेरी सहमति है। उस समय श्री रामेश्वर लाल जी टाटिया एम.पी. भी वहॉं उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि आचार्य जी क्या कर रहे हैं, हाथ में आया हुआ मंत्री पद छोड़ रहे हैं, यह ठीक नहीं है। इस पर आचार्य जी ने कहा कि मैंने तो निर्णय कर लिया है इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। आचार्य जी की सहमति के बाद रामचन्द्र जी को मंत्री बनाया गया।

१९५७ में रतनगढ़ से तीसरी बार आचार्य जी ने विधानसभा का चुनाव लड़ा परन्तु स्थानीय कांग्रेस नेताओं के भीतर घात के कारण आचार्य जी चुनाव हार गये।

इसके बाद आचार्य जी ने पुन: अपनी शक्ति रचनात्मक कार्यों में लगाई। पूर्व वर्णित आयुर्वेद विश्व भारती की स्थापना तथा विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। डाबडी, हनुमानगढ़ तथा भादरा में कई शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। बीकानेर की प्रसिद्ध संस्था हिन्दी विश्व भारती की स्थापना में आचार्य जी ने पंडित विद्याधर जी शास्त्री को उल्लेखनीय सहयोग दिया। राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड, शिक्षा सलाहकार समिति, आयुर्वेद विश्व विद्यालय स्थापना समिति, शिक्षा अनुदान समिति के सक्रिय सदस्य रहे। राजस्थान गौ सेवा संघ की स्थापना की और उसके लिए बजाज नगर जयपुर मे गौ माता भवन का निर्माण कराया। अखिल भारतीय गुर्जर गौड महासभा के चार वर्ष तक अध्यक्ष रहे। उदयपुर में आयोजित अधिवेशन का उद्‌घाटन ज्योतिष के विश्व विख्यात विद्वान पं. सूर्य नारायण व्यास ने किया।

१९६७ में आचार्यजी ने भादरा से विधानसभा का चुनाव निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे लड़ा, परन्तु आचार्य जी चुनाव हार गये। उस समय भी मैंने सलाह दी कि चुनाव लडना ही हो तो सरदार शहर से लड़ें। परन्तु आचार्य जी ने पूर्ववत् कहा कि चन्दनमल बैद के खिलाफ चुनाव लडना

नहीं चाहता। सरदार शहर से श्री बैद जी के खिलाफ राजवी रूपसिंह जी चुनाव में उतरे और बैद जी ग्यारह हजार वोटों से पराजित हुए।

१९६७ के चुनाव के बाद आचार्य जी राजनीति से सर्वथा विमुख हो गये। गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को अपना कार्य क्षेत्र बनाकर अपनी संगठन शक्ति, प्रतिभा व प्रभाव के बल पर उसको सशक्त बनाया। अन्य रचनात्मक कार्यो में भी शक्ति लगाते रहे। समय समय पर गाँधी विद्या मंदिर सरदार शहर को भी मार्ग दर्शन देते रहे। अब ९० वर्ष की आयु में भी कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखते हैं। रतनगढ़ के लिए उनके मन में विशेष भावना है। मुझे कहते हैं कि विधायक की पेंशन के रूप में रोटी तो रतनगढ़ की खाता हूँ और वहाँ के लिए कुछ कर नहीं सका इसलिए आप गीता संबंधी कोई विशेष कार्य वहाँ करें यथा शक्ति मेरा भी सहयोग रहेगा। एक वर्ष पूर्व गंगानगर में उनके दर्शन किये तब बताया कि गीता के सब अठारह अध्याय तथा हनुमान चालीसा के चालीस मौन पाठ प्रतिदिन करता हूँ और गायत्री मंत्र का जाप तो चलता ही रहता है। इस प्रकार आचार्य जी पूरा समय भगवत् भक्ति में लगाते हैं। आचार्य जी अति सम्मानित व्यक्ति होने के साथ-साथ अजात शत्रु भी हैं। ऐसे देव पुरूप के निरन्तर सम्पर्क में रहने का सौभाग्य मिलने के कारण मैं अपने आपको धन्य मानते हुए शत्शत् प्रणाम करता हूँ।

रतनगढ

विद्वद्वृन्दविवन्दित प्रेरणास्रोत शिक्षाशास्त्री आचार्य श्री गौरीशंकर जी

डॉ. वेदप्रकाश शर्मा
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष कौमारभृत्य विभाग
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर।
अध्यक्ष-राजस्थान आयुर्वेद विज्ञान परिषद्
फैलो-नेशनल एकेडमी ऑफ आयुर्वेद
सदस्य-विद्या परिषद् (ए.सी.) राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय
वित्त समिति राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय
उपाध्यक्ष-बोर्ड ऑफ इण्डियन मेडिसिन, राजस्थान।
पूर्व सदस्य-भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद् (सी.सी.आई एम.)

आचार्य जी जैसे अमित यश और उदात्त चरित्र वाले गुणीजन वरिष्ठ लोकप्रिय मूर्धन्य-मनीषी की रचना विधाता द्वारा बडे कौशल के साथ मनोयोग पूर्वक की गई प्रतीत होती है।

"तं वेधा विदधो नूनं महाभूत समाधिना''

उनके अभिनन्दन ग्रंथ के लिए मुझ जैसे अल्पज्ञ और अकिन्चन सामान्य व्यक्ति के द्वारा कुछ लिखना उपहास मात्र होते हुए भी आचार्य जी के प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करने के पुण्य से स्वय को पवित्र कर रहा हूँ, यथा-गन्धर्वराज पुष्पदन्त ने भगवान शंकर की स्तुति के उपक्रम में कहा था-

मम त्वेतां वाणीं गुण कथन पुण्येन भवतः
पुनामी त्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।

'पुरमथन! तेरे गुणकथन के पुण्य से निज भारती, पावन करूं, यह धारणा स्थिर बुद्धि मेरी धारती।

आचार्य जी के क्षेत्र का निवासी होने से अनायास उनका कृपापूर्ण सानिध्य, स्नेह और शुभाशीर्वाद प्राप्त होने के साथ मेरे पूरे परिवार से प्रारम्भ से ही आचार्य जी का अत्यन्त आत्मीयतापूर्ण पारिवारिक सुखद संयोग अनवरत रहा है। तत्कालीन बीकानेर राज्य के योग्यतम छात्र, ज्ञान-विज्ञान के उच्चस्तरीय अध्ययन के शीर्षस्थ केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए परम प्रयत्नशील रहते थे, जिस क्रम में आचार्य जी को वहाँ दर्शन विभाग में अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त रहा। संयोग की बात है कि मेरे पितृव्य स्व. श्री लाल शर्मा ने आपके सतीर्थ्य

के रूप में वहाँ से एम.ए. (हिन्दी) और एल.एल.बी. उपाधि प्राप्त कर अपनी विलक्षण प्रतिभा, विद्वता और आदर्शपूर्ण व्यक्तित्व के आधार पर अनेक कीर्तिमान स्थापित कर विश्वविद्यालय को गौरव प्रदान किया और हिन्दी साहित्य समिति-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मंत्री रहते हुए उदीयमान कवि और साहित्यकार के रूप में सहाध्यायी सुप्रसिद्ध कवियित्री महादेवी वर्मा आदि के साथ अपना विशिष्ट स्थान बनाया, जिस समिति के अध्यक्ष हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रख्यात समीक्षक "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल'' थे। श्री गंगानगरस्थ मेरे द्वितीय पितृत्व यशस्वी चिकित्सक स्व. वैद्य रामप्रतापजी आयुर्वेदाचार्य से आयुर्वेद और संस्कृत के संबन्ध में आचार्य जी की परिचर्चा और सन्निकटता बराबर बनी रही।

पितृचरण पुण्य श्लोक 'महामहिमोपाध्याय स्व. पण्डित रामचन्द्रजी शास्त्री, विद्यालंकार संगरिया, तत्कालीन बीकानेर राज्य की राजसभा के सदस्य (एम.एल.ए) रहे जिसके क्रम में बीकानेर में बनी प्रथम लोकप्रिय सरकार में आचार्य जी शिक्षामंत्री बने। संस्कृत और संस्कृति के पुरोधा तथा परिष्कृत राजनीति की पृष्ठभूमि वाले समानधर्मा उक्त दोनों विभूतियों में बीकानेर राज्य के भविष्य तथा बहुचर्चित लोकपरिषद् और प्रजापरिषद् के द्वन्द्व को लेकर गंभीर चिन्तन रहा जो इतिहास की बात है। उक्त रूप में पारिवारिक घनिष्टता के बाद सरदार शहर में गांधी विद्या मंदिर के अन्तर्गत प्रचलित आयुर्वेद विश्व भारती में सन् १९५९ ई. में प्राध्यापक पद पर मेरी नियुक्ति के पश्चात् आचार्य जी का आशीर्वाद बराबर बना रहा और आप मेरे स्थानीय संरक्षक तथा प्रेरणास्रोत रहे। सरदारशहर मरूप्रदेश स्थित गांधी विद्या मंदिर की तपोभूमि में बालू के टीले, पर अवस्थित कच्चे झोपड़ेंनुमा आश्रम में अत्यन्त सादगीपूर्ण आपका जीवनदर्शन रहा जहाँ आपके सानिध्य में मुझे अपने पन्चमहाभूत विषयक पी.एच.डी. शोधकार्य के संदर्भ में मार्गदर्शन और अनेक दर्शनग्रन्थों के अनुशीलन का सौभाग्य घर बैठे सुलभ रहा। समय समय पर आयोजित विशिष्ठ समारोहों में आपके ओजपूर्ण, आकर्षक, प्रभावशाली और शानदार भाषण सुनने के लिए हम उत्सुक रहते थे। आपका उद्‌बोधन रहता कि आयुर्वेद के किसी एक ग्रंथ का विशिष्ट अध्ययन करते हुए रोग विशेष पर योग विशेष के प्रयोग में विशेषज्ञता प्राप्त की जावे।

सौभाग्य से प्रमुख देवतीर्थ हरिद्वार-ज्वालापुर और पुण्यवाराणसी में अपने अध्ययनकाल में पतितपावनी माँ गंगा के पावन सानिध्य, सर्वभूतानां माता गौ की सेवा और वेदमाता गायत्री की उपासना के फलस्वरूप आचार्य जी को अपूर्व पुण्य और सर्वविद्य प्रतिष्ठा प्राप्ति रही। आचार्य जी का संग सदैव श्रेष्ठ पुरूषों का रहा तथा महामना मालवीय जी के सानिध्य में रहते हुए उनका अनुसरण और उनके उच्च आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात कर आचार्य जी स्वयं भी साधु हो गये (अनुयाहि साधु पदवी:) तथा जीवन पर्यन्त पर सेवा का व्रत लेकर-'साध्नोति पर कार्य मिति साधु:'

उक्ति को चरितार्थ किया। 'आकृत्या मनोहर: प्रकृत्या: सुकोमल:'-आचार्य जी में स्वाभाविक सरलता, सौम्यता, सहृदयता और विचार प्रौढता के साथ प्रथमदृष्टि में-दर्शनमात्र से सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित करना 'भवन्ति भव्येषु हि पक्षपाता:' को सार्थक करता है। आत्मौपम्य दृष्टि (सबको समान देखने की मानवीय दृष्टि) के कारण आप अजातशत्रु रहे और शत्रुओं को भी अपने अनुकूल बना लेना तथा अपकार करने वाले का भी सदैव हित सम्पादन आपकी प्रकृति में रहा:-

उपकारिषु य: साधु: साधुत्वे तस्य को गुण:।
अपकारिषु य: साधु: स साधु: सद्भिरूच्यते।।

निस्पृह, कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मयोगी, दानी, ज्ञानी और प्रमाणी होने के साथ आचार्य जी ने सबको सम्मान दिया तथा स्वयं निरभिमानी रहे-

'स बहि मानप्रद आपु अमानी'-(अमानी मानदो मान्य:)

मन, वचन और कर्म में समान भाव के कारण आप सभी क्षेत्रों में लोकप्रिय तथा प्रामाणिक रहे-

स्पृहणीया: कस्य न ते सुमते: सरलाशया: महात्मन:।
त्रयमपि येषां सदृशं हृदयं वचनं तथाऽचार:।।

इस प्रकार के मनुष्यों में देव निवास करते हैं-
('नरो वै देवानां ग्राम:') जो सबके वन्दनीय हैं-

वदनं प्रसाद सदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाच:।
करमं परोपकरणं येषां केषां न ते वन्धा:।।

अनेकानेक शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं तथा गौ संवर्धन केन्द्रों, गौशालाओं की स्थापना में आचार्य जी का निस्वार्थ महनीय योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। ऐसे मनस्वी लोग धन्य हैं जो असाधारण (अनन्य सामान्य) कार्य करके भी उसका कहीं उल्लेख तक भी नहीं करते।

अहौ समुद्रगम्भीर धीरचिन्तात्मनस्विन:
कृत्वाऽप्यनन्या सामान्य मुल्लेखं नोदगिरन्ति ये।।

कथासरित्सागर

सत्व गुण के धनी लोगों की विचित्रचित्त की कठोरता है कि वे उपकार करके इस आशंका से दूर चले जाते हैं कि उपकृत व्यक्ति कहीं उनके उपकार का बदला चुका न दे।

इयमेव हि सत्वशालिनां महतां काऽपि कठोरचित्तता।
उपकृत्य भवन्ति दूरत: परत: प्रत्युपकार शंकया।।

सरकार में मंत्री पद पर रहते हुए "अर्थ शुचित: शुचि: और अलुब्धा: शुचयो वैद्या:- के अनुरूप आचार्य जी आर्थिक मामलों में पवित्रता रखते हुए यशरूपी धन के इच्छुक रहे-

कस्य न दयितं वित्तं, चिन्तंह्रियते न कस्य वित्तेन।
किन्तु यशोधन लुब्धा वान्छन्ति न दुष्कृतैरर्थान्।।

मेरी दृष्टि में यह शुचिता आचार्य जी में ब्रह्मतेजस् के कारण रही जैसा कि ब्राह्मण के गुण है-

ऋजु तपस्वी सन्तुष्ट: सम: सत्यो जितेन्द्रिय:
क्षमी दाता दयालुश्च ब्राह्मणों नवभिर्गुणै:।।

आचार्य जी राष्ट्रप्रेम तथा संस्कृत और संस्कृति के अनन्य पक्षधर रहे। आपकी मान्यता से संस्कृत और आयुर्वेद भारत की अमूल्य निधि है जिसकी अभ्युन्नति, प्रचार प्रसार, प्रशिक्षण और अनुसंधान के प्रति आप सदैव सक्रिय तथा पथ प्रदर्शक रहे। महर्षि गौतम की पुनीत स्मृति मे संस्थापित 'दर्शन भारती विश्वविद्यालय' के आप अध्यक्ष तथा 'हिन्दी विश्व भारती' के कुलपति रहे जिसके उपकुलपति और निदेशक राष्ट्रपति सम्मानित गुरूवर्य्य पं. विद्याधर जी शास्त्री थे। उक्त दोनों संस्थाओं से फरवरी १९६४ में मुझे प्रशस्ति पत्र दिये गये जो आज भी संरक्षित और मेरे लिए अमूल्य निधि हैं। 'विश्वम्भरा'-हिन्दी विश्व भारती अनुसंधान परिषद्, नागरी भण्डार बीकानेर की त्रैमासिक शोध पत्रिका के परामर्श मण्डल, शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ समिति के मंत्री, आयुर्वेद मार्तण्ड वैद्य सीताराम मिश्र अभिनन्दन ग्रंथ के सम्पादक मण्डल और राजस्थान आयुर्वेद परामर्श दाता मण्डल के सदस्य के रूप में आचार्य जी की सहभागिता उल्लेखनीय है। सरदारशहर में सम्पन्न राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के एकादशाधिवेशन (सन् १९६४) में दर्शन परिषद् के आचार्य जी अध्यक्ष रहे जिसके संयोजक का दायित्व मुझे दिया गया था। आपके सद्प्रयत्न से जयपुर में राजस्थान आयुर्वेद अनुसंधान मण्डल की स्थापना राज्य सरकार द्वारा की गई जिसके आप अध्यक्ष रहे। राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय जयपुर की ओर से सन् १९७५ में मेरे सम्पादकत्व में 'आन्वीक्षिकी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया था। 'आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थ शास्त्रयो:' के आधार पर तर्क विद्या का नाम आन्वीक्षिकी होते हुए भी आयुर्वेद में अनुसंधान की दृष्टि से तर्कशास्त्र की पृष्ठभूमि के रूप में आयुर्वेद की पत्रिका का नाम 'आन्वीक्षिकी' रहने पर आप परम प्रसन्न हुए और मुझे प्रोत्साहित किया। 'आरोग्यं भास्करादिच्छेत्'- की मान्यता से आपने "भास्कर फार्मेसी' श्री गंगानगर में प्रारंभ करने की योजना की जिसमें संसार के कल्याण के लिए आचार्य भास्कर द्वारा वर्णित 'भास्कर लवणम्' योग बनाना चाहा।

राष्ट्रभक्ति और गांधीवादी विचार दर्शन वाले आचार्य जी का दृष्टिकोण उदार एवं विशाल रहा। आपका प्रेरणासंदेश था-

'दीर्घं पश्यत मा ह्रस्वं'-विशाल दृष्टिकोण से देखो मनसा संकुचित दृष्टि वाले मत बनो।

मंत्र की व्याख्या करने वाले को आचार्य नाम दिया है-

'मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य:-परन्तु व्यवहार में आचरण प्रधान (आचार्यवान्) व्यक्ति को आचार्य कहा जाता है, जो स्वयं आचरण करता है, तथा अन्य को भी आचरण सिखाता है।

'आचरति आचारयित च आचार्य:।
आचिनोति हि शास्त्रार्थमाचारे स्थापत्यपि।
स्वयमाचरते यस्मात् तस्मादाचार्य ईरित:।।
स्मृति में आचार्य का लक्षण बताया गया है।
सार्थ वेदविचारज्ञ: सदाचारी समर्थक:
दयालु: क्रोधशून्यश्च निर्लोभो वीतमत्सर:।।

देवयोग से आचार्य जी में उक्त सभी गुण हैं, और ऐसे महर्षिणामंशभूत सन्तहृदय पुरूष विरले ही हैं, जो दूसरे के राई के समान गुण को भी बढ़ाचढाकर मानते हुए परम प्रसन्न होते हैं।

मनसि वचसि काये पुण्य पीयूषपूर्णास्त्रिभुवनमुपकार श्रेणिभि: प्रीणयन्त:।
परगुणपरमाणून पर्वतीकृत्य नित्य: निजहृदि विकसन्त: सन्ति, सन्त: कियन्त:।।

इस प्रकार के मनीषी राष्ट्र के लिए गौरव स्वरूप हैं-

कुलै पवित्रं जननीकृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।

आचार्य जी की नैरूज्जपूर्ण पूर्णायु (१२० वर्ष) की प्रभु से मंगल कामना अथर्ववेद के निम्नोक्त मंत्र के रूप में है-

'अभाम्रिर्भवामृतोऽतिजीवो मा ते हासिषु स्सव: शरीरम्'

(मृत्यु को पार करने वाले तथा अमृत-पूर्णायु सम्पन्न होते हुए जीयें। सभी दशों प्राण, शरीर को वार्धक्य आदि दोषों के कारण न छोडें।

निरामयं रामरसायनं पिव-रोग रहित रामरसायन सेवन करें।
भिषजां साधुवृत्तानां भद्रमागमशालिनाम्।
अभ्यस्त कर्मणां भद्र भद्रं भद्राभिलायिणाम्।।

आचार्य जी के विषय में मेरे जैसा अज्ञ अधिक क्या कह सकता है।

नास्यतो मतिमान मत्र वदितुं शक्तो जनो मादृश:।

डॉ. गौरीशंकर आचार्य का जन जागरण व शिक्षा क्षेत्र में विस्मरणीय योगदान

मूलचन्द पारीक
स्वतंत्रता सैनानी-मंत्री
ऊनी खादी ग्राम

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य के साथ कार्य करने का सौभाग्य मुझे सन् १९४६ में बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् के द्वारा बीकानेर रियासत मे चलाये जा रहे उत्तरदायी शासन प्राप्ति के आन्दोलन के समय मिला। चूरू जिले के दूधवाखारा ग्राम के किसान आन्दोलन ने जब जोर पकडा तो बीकानेर रियासत में तेजी से जनजागृति बढ़ी और पूरी रियासत में शासन के विरूद्ध लोग संगठित होने लगे। पंजाब में चले स्वाधीनता आन्दोलन का असर सबसे पहले बीकानेर रियासत के नोहर व भादरा क्षेत्र पर ही पड़ा। भादरा के श्री खूबचन्द जी सर्राफ प्रजापरिषद् की स्थापना से पहले से अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के सदस्य थे। सन् १९३९ में बीकानेर षडयंत्र केस में श्री खूबचन्द जी व सत्यनारायण सर्राफ के विरूद्ध दमन चक्र चला था व उन्हें जेल मे रखा गया था। भादरा निवासी डॉ. श्री गौरीशंकर जी आचार्य पर भी इसका बडा असर पड़ा। वे किसान आन्दोलन के समर्थन और प्रजापरिषद् के संगठन को मजबूत बनाने में जुट गए। बीकानेर राज्य परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष श्री रघुवरदयाल जी गोयल के यहाँ उनका आगमन होता रहता था। उनका परामर्श बहुत महत्त्वपूर्ण रहता था। श्री गोयल के यहॉ मीटिंगों में उनसे सम्पर्क, संबन्ध व स्नेह बढता गया। वे सन् १९४६ से राजस्थान बनने तक चली राजनैतिक गतिविधियों के सूत्रधारों में शामिल थे। उनके प्रयत्न से बुद्धिजीवी वर्ग व बडे पैमाने पर संगठन से लोगों का जुडाव हुआ। मुझे उनका जो सानिध्य व स्नेह मिला, उसे कभी भुला नहीं सकता। उन्होंने गंगानगर जिले में प्रजा परिषद् के लिए बहुत कार्य किया। प्रजापरिषद् के नेताओं व कार्यकर्ताओं को उन्होंने सदा जोड़े रखा व उनका मार्गदर्शन किया। राजस्थान रीजनल कौंसिल की बैठकों में शामिल होकर अन्य रियासतों के आन्दोलनों में भी योगदान दिया। दूधवाखारा के अलावा कांगड, राजगढ व रायसिंह नगर तथा गंगानगर में हुए आन्दोलनों में उनका योगदान रहा।

राजस्थान के शीर्ष नेताओं श्री हीरालाल जी शास्त्री, श्री जयनारायण जी व्यास,श्री गोकुल भाई भट्ट व श्री माणिक्यलाल जी वर्मा, श्री टीकाराम जी पालीवाल, मास्टर भोलानाथ जी, श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय आदि के साथ भी उनके घनिष्ठ संबन्ध थे। उनके साथ मै अनेक सभाओं

व यात्राओं में रहा। ३० जनवरी १९४८ को हम लोग नोहर, भादरा का दौरा करके जब राजगढ़ पहुँचे और बीकानेर रवाना होने को थे, तब महात्मा गांधी की प्रार्थना सभा में गोली चलाकर हत्या करने का हृदयद्रावक समाचार मिला था। राष्ट्रीय नेताओं से भी उनका व्यापक सम्पर्क था।

बीकानेर रियासत में जनप्रतिनिधियों को लेकर पहली अन्तरिम सरकार बनीं, उनमें वे शिक्षामंत्री थे। उन्होंने रियासत में प्रौढ शिक्षण का कार्य प्रारम्भ किया। उन्हीं के करकमलों से १९ अगस्त १९४८ को भारतीय विद्या मंदिर की स्थापना हुई, जिसके अन्तर्गत बीकानेर में शिक्षा की गंगा बही। भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान के द्वारा शोध व साहित्य प्रकाशन का कार्य अभी भी हो रहा है। जिसमें मैं प्रारम्भ से अब तक जुडा हुआ हूँ।

शिक्षा के क्षेत्र में गांधी विद्या मंदिर सरदार शहर उनकी अविस्मरणीय देन है। आयुर्वेद एवं गौ-संवर्धन के लिए व पिंजरा पोलों को संगठन सूत्र में पिरोने का भी श्रमसाध्य कार्य उन्होंने ही किया। उनकी प्रबल इच्छा रही कि बीकानेर में आयुर्वेद कॉलेज की स्थापना हो। बीकानेर में अनेक साहित्यिक संगठनों सांस्कृतिक संस्थानों, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा एवं सामाजिक संगठनों को उनका सहयोग व मार्गदर्शन मिला है। इसी प्रकार संभाग के अन्य जिलों तथा राजस्थान के बाहर भी उनका अनेक संस्थाओं से जुडाव रहा। वे उच्च कोटि के चिंतक व विचारक हैं और रचनात्मक कार्यों से उनका बड़ा लगाव रहा है। चौ. कुम्भाराम आर्य ने बीकानेर संभाग का विशाल कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित करने का कार्यक्रम बनाया था और उसका कार्य डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य व मुझे सौंपा था और तैयारी भी हो गई थी, पर राजस्थान की राजनीति में भारी उठापटक हो जाने से वो नहीं हो सका, अगर वो हो जाता तो बीकानेर संभाग का भारी हित होता।

श्री आचार्य जी के प्रति मेरे मन में बड़ी श्रद्धा है, राजनीति में संभाग के पिछडने व कमजोर रहने एवं क्षेत्र के पिछडने का मलाल आचार्य जी को आज भी है। उनके व्यक्तित्व चिन्तन व सहयोग की छाप आज भी बीकानेर के जन-जीवन पर है।

मैं उनके दीर्घायु की कामना करते हुए उनके प्रति नतमस्तक हूँ। □

निष्काम भाव से कर्म करो, गीता का यह संदेश अमर

आचार्य गौरीशंकरजी द्वारा समस्या पूर्ति हेतु
तीन दशक पूर्व दी गई पंक्ति पर रचना

पूर्णचन्द मीमाणी
आचार्यजी का गीता-शिष्य

गीता ग्रन्थों में अग्रगण्य, गौरवशाली गुणगण गुम्फित।
उसमें जीवन का शाश्वत स्वर, चिन्तन प्रसून अतुलित विकसित।
जीवन के गहन सरोवर में निर्लिप्त जलज पावन बन कर,
निष्काम भाव से कर्म करो, गीता का यह संदेश अमर।।

सुख-दुःख की सतरंगी छाया का लघु जीवन ताना-बाना।
इस जीवन में ही कर प्रयास पुष्कल पद परम सुखद पाना।
यह चरम लक्ष्य-वेधन ही मानव जीवन का शुचि स्वर सुन्दर।
निष्काम भाव से कर्म करो गीता का यह संदेश अमर।।

मानापमान, उत्थान-पतन अरु जन्म-मृत्यु चिर लगे संग।
आतप अरु शीत चक्र की ज्यों चलते जीवन शाश्वत प्रसंग।
अपना प्रशस्त पथ आप करो तुम उन सबसे ऊपर उठकर।
निष्काम भाव से कर्म करो, गीता का यह संदेश अमर।।

हो तुम अपने ही मित्र और हो तुम अपने ही शत्रु स्वयं।
उद्धार करो अपना अपने हाथों, मत मन में लाओ ग़म।
तुम हो विराट विभु विश्वेश्वर के वरद पुत्र अनुपम भास्वर।
निष्काम भाव से कर्म करो, गीता का यह संदेश अमर।।

यह पंच तत्व की देह नश्वर, आत्मा की सत्ता अजर-अमर।
भ्रमती देह जन्म-मरण चक्कर, पर आत्म-तत्व शाश्वत अक्षर।
वह जीर्ण-शीर्ण वस्त्रों को तज नव काया वस्त्र करे धारण।
निष्काम भाव से कर्म करे, इसलिए मोह का कर वारण।।

अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का उद्गम अहंभाव।
उसका ही व्यापक जीवन के कण-कण पर छाया है प्रभाव।
तुम कर उसका उच्छेद सतत, प्रज्ञा में अपनी स्थिति होकर,
निष्काम भाव से कर्म करो, गीता का यह संदेश अमर।।

बन कर निरीह, निस्पृह निष्कल जीवन के कर्म करो सारे।
है पूजा-आराधन प्रभु का ऐसे ही कर्म सदा, प्यारे।
कर्मांजलि तेरी बन जाये नितनव पावन निर्मल निर्झर।
निष्काम भाव से कर्म करो, गीता का यह संदेश अमर।।

तुम वीतराग बन अनासक्त, अहरह शुचि कर्म करो अर्पित।
आराध्य देव के चरणों में दो चढ़ा करो जो कुछ अर्जित।
सर्वात्म भाव से कृष्णार्पण अपने को कर हर नारी नर,
निष्काम भाव से कर्म करो गीता का यह संदेश अमर।।

अणु-अणु में व्यापक परम देव, उनका ही दर्शन हर पग में।
है "नहीं और, कोई नहीं गैर'' तुम स्वयं समाये हो जग में।
इसलिए मनुज विचरो मन के द्वन्द्वों से मुक्त सदा रह कर।
निष्कामभाव से कर्म करो, गीता का यह संदेश अमर।।

है रंचमात्र भी नहीं फलाफल में तेरा वश ओ मानव।
तेरे तो वश में बस पूरा करना अपना कर्तव्य विभव।
इसलिए त्याग फल की आशा, हो हरि-शरण्य कर कर्म-निकर।
निष्काम भाव से कर्म करो, गीता का यह संदेश अमर।।

सरदारशहर

डॉ. गौरीशंकर आचार्य-सपनों का मिशनरी

मिलाप चन्द दूगड़
कुलपति

स्मरण नहीं कर पा रहा हूँ कि पूज्य गौरीशंकर आचार्य से मैं पहली बार कब मिला था। संभवत: सन् १९५० में, जब मैं ६ वर्ष का बालक था और आचार्य जी का आना-जाना हमारे यहॉ आरम्भ ही हुआ था। पिताजी (श्री कन्हैया लाल जी दूगड़ जो सर्वस्व समर्पण कर संन्यस्थ हुए और अब पूज्य स्वामी श्री रामशरण जी के नाम से सुपरिचित हैं) व आचार्य जी अन्य कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर गांधी विद्या मंदिर का ब्लूप्रिण्ट बनाने के लिए दिन-रात एक किए हुए थे।

उन दिनों, हमारी हवेली से मात्र ५० गज की दूरी पर, हमारे ही परिवार के एक अतिथि भवन में आचार्य जी ने वर्षों तक सपरिवार निवास किया था। उनके दोनों सुपुत्र, भीम और किसन, मेरे समवयस्क थे। मेरे बडे भाई कनकमल जी और मैं, जब भी विद्यालय से आते, तब या तो भीम और किसन हमारे यहॉ आ जाते या फिर हम दोनों उनके यहॉ होते। भीम, भाई साहब से साल भर छोटा और मुझसे सालभर बड़ा, जबकि किसन मुझसे कुछ माह छोटा था। उस तिमंजिले विशाल अतिथि भवन के सामने मैदान था और दोनों ओर अस्तबल। वहाँ हमारे परिवार के घोडे-घोडी बँधे रहते थे, इसलिये उस भवन को बोलचाल में "घोड़ियोंवाला नोहरा'' कहा जाता था। उन घोडे-घोड़ियों में एक घोड़ी तो इतनी सीधी और सयानी थी कि यदि कोई बच्चा उसके पॉव के नीचे हाथ कर देता तो वह अपना पॉव जमीन पर नहीं टिकाती थी। हम चारों बालसखा घंटों-घंटों तक उस घोडी को दुलारते-पुचकारते और उसकी सवारी का आनन्द उठाते थे। गर्मियों में हवेली की लम्बी-चौडी छत की खुली हवा में चारों सोते थे, और सर्दियों में अतिथि भवन के "निवाए'' कमरों में। चारों में से कभी कोई इधर-उधर हो जाता तो लोग पूछ-पूछ कर बेहाल कर देते की वह 'एक' कहाँ रहा ?

कुछ वर्षों बाद पिताजी अपनी महलनुमा भव्य हवेली की सुख-सुविधाओं और पारिवारिक शान-शौकत व रईसी को छोडकर गॉधी विद्या मदिर में ओम कुटीर नामक घास-फूस और गोबर-मिट्टी की बनी कुटिया में रहने लगे। आचार्य जी और उनका परिवार भी ओम कुटीर के ठीक पीछे, एक विशाल घेरे पर बनी दो-तीन कच्ची पक्की झोंपडियों में रहने लगा। दोनों तप:पूत एक ही धुन में मगन, विकट तपस्या करने को निकले थे, अपने समस्त सुखों को तिलांजली देकर। उन दिनों वहॉ न बिजली थी, न पानी; न रेल, न सडक, न मकान, न दुकान। बस्ती से दूर,

नितान्त निर्जन बियावान, जहाँ हरियाली तो क्या, दूर-दूर तक घास के तिनके का भी नामोनिशान नहीं। अंधड़ की एक फुफकार फुट भर रेत झोंपडों के अंदर तक झोंक जाती थी। दूर-दूर तक सॉय-सॉय उडती बलुवा रेत का ही राजपाट था। धरती और आसमान गर्मियों में तवे-से तपते तो सर्दियों में बर्फ-से ठिठुराते। ऐसा कोई दिन नहीं जाता होगा जब दस-वीस विच्छू-कनखजूरे और दो-चार सॉप और गोह न निकलते हों। हाँ, हमने तो न किसी को कभी मारा, न किसी ने हमें काटा। ऐसे दुर्गम रेगिस्तानी बीहड में एक सुन्दर सपना संजोया गया था-गाँधी विद्या मंदिर का, जिसे मूर्त करने के लिए जान की बाजी लगा देने की दीवानगी आज अपना रंग दिखा रही है।

हम दोनों परिवार महलों में भी साथ-साथ रहे और झोंपड़ियों में भी, बिल्कुल एक ही परिवार की तरह। ऐसा एकत्व हर स्थिति में इकसार निभाना दोनों ही परिवारों की उदारता और गहरी आत्मीयता को दर्शाता है। एक बात जरूर है कि प्राय: बच्चों के झगडे ही दो परिवार के बीच तना-तनी का कारण बनते हैं, लेकिन हम बच्चों के बीच ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि वयस्कों के बीच-बचाव की या डॉट-फटकार की नौबत आई हो। भाईचारा हर स्तर पर एक-सा लहराता था। पिताजी और आचार्यजी के बीच, माताजी-माताजी के बीच, बेटों-बेटों के बीच, बेटियों-बेटियों के बीच और आपस मे सब के बीच। यह क्रम आज भी टूटा नहीं है। हाँ, माताजी (आचार्यजी की पत्नी) आज हमारे बीच नहीं रहीं, उन्हें श्रद्धावत् प्रणाम।

गाँधी विद्या मंदिर के आरम्भिक वर्षों में वहॉ प्रकृति का विकट ताण्डव और कठोर जीवन था, उनके बीच सहयोग और स्नेह की जो मन्दाकिनी कल-कल बह रही थी, उसने मानों सबको आप्लावित कर रखा था। मैं तो मानता हूँ कि उसी तप के स्वेद और समर्पण की शिलाओं से इस संस्था की नींव चिरकाल के लिए सुपुष्ट हुई है।

पिताजी और आचार्यजी अपने ही कामों में दिन-रात डूबे रहते। दोनों ही स्वप्नदृष्टा और कर्मठ, परन्तु संभवत: सपने देखने में जहॉ आचार्य जी का सानी नहीं था, वहॉ परिश्रम में पिताजी का। आचार्य जी एक से बढ़ कर एक अनूठे, विलक्षण सपने देखते। लोग उन्हें अव्यवहारिक ही नहीं, सनकी और हवाई किले बनाने वाला शेखचिल्ली तक कह देते थे, परन्तु उन्हें इसकी क्या चिन्ता! "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे,'' पिताजी ने उनके सपनों को परखा, अपने अन्तस्तल में रचाया-बसाया और व्यवहारिक स्वरूप दिया। वे उन सपनों को रेखांकित कर उनमें रंग भरने की योजना बनाते और अपने बडे भाई भॅवरलाल जी व अन्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से उन्हें सजीव करते।

आचार्यजी जब बीकानेर रियासत के शिक्षामंत्री थे तब उन्होंने वहॉ हिन्दी विश्वविद्यालय बनाने का सपना देखा था, इधर पिताजी ने भी सरदार शहर में पूज्य बापू की स्मृति में ग्रामीण विश्वविद्यालय बनाने का। यह एक अलौकिक संयोग ही था वैसा ही, जैसे एक बार किसी बालक से

उसके अध्यापक ने "संयोग" शब्द का प्रयोग पूछा तो बालक ने कहा, मेरे माता और पिता का विवाह "संयोग" से बिल्कुल साथ-साथ ही हुआ।

प्रभु का मंगलमय विधान और स्व. गणेशमल जी दूगड़ की चेष्टा ही इन दोनों सपनगीरों को मिला देने का माध्यम बनी। दोनों की एकलक्ष्यता ने उनके सपनों को भी गूंथ कर अभिन्न कर दिया जिसका परिणाम है गाँधी विद्या मंदिर, जो आज मान्य विश्वविद्यालय का आकार लेकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। ऐसे सार्थक सपने कोई देखे तो! और उनको साकार करने के लिए अपना सर्वस्व होम कर, चरैवेति के व्रत-धारण का साहस भी दिखाए तो।

आचार्य जी को न केवल सपने देखने में महारथ हासिल थी अपितु अपने मित्रों, शिष्यो और प्रियजनों को भी उन्होंने सार्थक सपने देखने और उन पर जीवन की दिशा तय करने की सांगोपांग प्रेरणा प्रदान की। मुझे याद है, ५० वर्ष पहले वे ओम कुटीर के सामने नीम के पेड़ों की छाँह में बालकों की कक्षाएँ लेते थे। उनकी प्रखर विद्वत्ता और ओजस्वी वक्तृता का लोहा तो सब मानते ही थे, परन्तु छोटी उम्र के बालकों में भी जब वे अपनी प्रभावी शैली में संस्कारों के प्राण फूँकते थे तो बालकों का रोम-रोम तरंगित हो उठता और वे देखने लगते कुछ बनकर दिखाने और कुछ कर गुजरने के सपने, सार्थक सपने।

आचार्य जी अपनी उम्र की ढलान पर आज भी उसी क्रम के विचित्र सपने देखने से नहीं चूकते। वे कभी-कभी कहते हैं कि मुझे आज रास्ते में भोला बाबा मिल गया, या कि उनका लाडला गणेश मिल गया, उसने मुझे अमुक-अमुक बातें बताई, तो मुझे किंचित् भी आश्चर्य या अविश्वास नहीं होता। उनकी सादगी व सच्चाई इतनी सरल और पारदर्शी है कि उसमें बनावटीपन या बड़बोलेपन की गंध भी नहीं हो सकती। उन्होंने भोले बाबा या उनके लाड़ले को सपने की किस परत को उधेड़-खोल कर देखा यह तो वे ही जानें, या फिर वह औघड़दानी बाबा और उनका लाडला।

उनका विशाल शिष्यवर्ग सारे भारत में फैला हुआ है, जो उनके द्वारा दिखाये गये प्रेरणापूर्ण सपनों को सच करते हुए, समाज की विविध प्रवृत्तियों में सफलता की ऊँची पायदानों पर आरूढ़ है। डेल कार्नेगी ने कहा है, "सपने सच करने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि जाग उठो", आचार्य जी सपने देखकर उन्हें सच करने के लिए न केवल स्वयं जाग उठे अपितु दूसरों को भी सपने देखने के गुर सिखाए, उन्हें झकझोर कर जगाया और लक्ष्य की ओर आगे बढने का पाठ पढ़ाया।

कल यही ख्वाब हकीकत में बदल जाएँगे।
आज जो ख्वाब फकत ख्वाब नजर आते हैं। (जाँ निसार अख्तर)

उनकी एक बात, जिसे कहने का मौका वे कभी चूके नहीं, वह है "जो बनो, श्रेष्ठ बनो"।

मैं तब पाँच-सात वर्ष का बालक था तभी से उनके मुख से यह उद्बोध सुनता रहा हूँ, न जाने कितनी बार! मानों वे इसे मेरे मन-मानस में, रोम-रोम में रचा-बसा देना चाहते थे। बालकों को बुला-बुलाकर पूछते तुम क्या बनोगे, और उनके हर उत्तर पर वे प्रसन्न होते, उन्हें उत्साह प्रदान करते। एक बार एक नाई का बच्चा हम लोगों के साथ खेल रहा था, उन्होंने उससे पूछा, तुम बड़े होकर क्या बनोगे, तो वह सहज ही बोल उठा-नाई बनूँगा, और क्या! आचार्य जी बड़े प्रेम से बोले "नाई तो जरूर बनना, लेकिन ऐसा बनना कि दुनिया में नाम हो जाए''। आज सोचता हूँ कि उस छोटे से बालक ने जाने यह बात कितनी समझी, या नहीं; नाईगिरी के काम से कोई विश्व विख्यात हो जाए-यह भी किसी की समझ में बैठे या न बैठे, आचार्य जी ने तो अपनी बात पूरी ईमानदारी के साथ कह डाली। उन्होंने सपने देखने और दिखाने का मिशन जीवन में स्थापित जो किया था, मानो आचार्य जी को "जफर'' के इस शेर का इल्म था-

जिन्दगी बच्ची है, इसका दिल न तोड़
ख्वाब की इक नन्हीं-सी गुड़िया भेज दे।

आचार्य जी ने जैसे-जैसे उदात्त सपने खुद देखे और लोगों को दिखाए, उन पर नजर दौड़ाएँ तो बरबस जेहन में आ जाती है गालिब की वह पंक्ति-

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले मेरे अरमान, फिर भी कम निकले।

सपनों के इस मिशनरी ने अपने मिशन का निर्वाह जीवन के प्रत्येक क्षण में किया है और बड़ी शान से किया है। वे ९० वर्ष की अवस्था में आज भी अपना वह काम अनवरत किये जा रहे हैं। प्रभु उनके मिशन को आगे बढ़ाएँ, उन्हें स्वस्थ्य और दीर्घ-जीवी बनाएँ, उनका हर सपना साकार करें।

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
गांधी विद्या मंदिर
सरदार शहर, राजस्थान।

बाल-सुलभ सरलता की प्रतिमूर्ति डॉ. गौरीशंकर आचार्य

डॉ. हरिगोपाल जी शास्त्री,
प्रधानाचार्य

गुरूकुल महाविद्यालय की यह धरा धरणी धन्य हुई जब छात्र के रूप में श्री जगनराम जी शर्मा, एडवोकेट, सरदार शहर बीकानेर स्टेट अपने सुपुत्र गौरीशंकर को यहाँ दिनांक २१.०३.१९२४ को प्रवेशार्थ लेकर आये। संस्था में अनवरत अध्ययन कर आपने सन् १९३५ में शास्त्री, सांख्यतीर्थ एवं वेदान्ताचार्य के साथ-साथ विद्या भास्कर उपाधि प्राप्त की। प्रगल्य, वाग्मी, धुन के धनी गौरीशंकर जी आचार्य की प्रतिभा का छात्र समुदाय लोहा मानता था। आर्यकिशोर सभा एवं विद्वत्कला परिषद् के आप अनेक वर्षों तक मंत्री एवं अन्यान्य पदों पर आसीन रहते हुए परस्पर प्रतिस्पर्धाओं के माध्यम से आपने छात्रों में वाणी की शक्ति का सबल प्रादुर्भाव कराया, उस समय छात्रों के जैसे सुन्दर विचार इन सभाओं के माध्यम से प्रकट होते थे वैसे विचारों का प्रतिपादन आज दुर्लभ हो गया है। प्रकाशवीर शास्त्री, शिव कुमार शास्त्री, विश्वनाथ जी शास्त्री, डॉ. यशपाल सिंह, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, डॉ. सूर्यकान्त जी, इन्होंने इन्हीं सभाओं में बोलना सीखकर जनमानस को भाव-विभोर करते हुए महाविद्यालय की कीर्ति कौमुदी को दिग् दिगन्त में फहराया। इन असामान्य प्रखर वक्ताओं में डॉ. गौरीशंकर जी का नाम सर्वाग्रगण्य रहता आया है।

आपकी अपूर्व विद्वत्ता, वाणी के कौशल और कर्मठता को देखकर यहाँ की प्रबन्ध समिति ने आपको संस्था के आचार्य पद का गुरूतर भार देकर आपकी योग्यता और मार्गदर्शन का शतशः लाभ उठाया, आप भी उनकी कसौटी पर खरे उतरे। सन् १९७८ से १९७९ तक आपने कुलसचिव/कुलपति पद का गुरूतर भार अपने सबल कन्धों पर उठाया। १९८० से १९९२ तक आप इस अखिल भारत-वर्षीय स्तर की संस्था के सर्वमान्य प्रधान रहे। आज भी आप महाविद्यालय ज्वालापुर के आजीवन सदस्य हैं। महाविद्यालय ज्वालापुर की महासभा/प्रबन्धकारिणी सभा ने आपको १९९२ से इस संस्था का संरक्षक मनोनीत किया है।

आचार्य जी अपने छात्र जीवन में अत्यधिक प्रतिभावान् रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सन् १९३२ में श्रीमद्भगवद्गीता पर एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें किसी भी स्तर का कोई भी छात्र भाग ले सकता था। आपने उसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया। परन्तु पुरस्कार में जो धनराशि मिली उसे आपने छात्रों के संस्कृत पुस्तकालय के लिए दान कर दिया। इससे आपकी उदारता की बहुत प्रशंसा की गयी। आपने वेदान्ताचार्य मे सर्वोच्य स्थान प्राप्त किया, इसलिए भी आपको बहुत सम्मान मिला।

आचार्य जी जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं, वहीं राजनीति के क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में, धार्मिक क्षेत्र में भी उन्हें बहुत प्रतिष्ठा मिली है। उस समय के बीकानेर राज्य में आप प्रथम शिक्षा-मंत्री रहे। राजस्थान की सुप्रसिद्ध संस्था गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर के तो आप संस्थापक रहे और वर्षों तक वहाँ की प्रबन्ध कत्री सभा के प्रधान रहे। स्वेच्छा से पद छोड देने पर भी आप उसके आजीवन संस्थापक सदस्य हैं। जयपुर का विशाल गौमाता भवन आपके ही सत्प्रयत्नों का मूर्तिमान रूप है। इनके अतिरिक्त बीकानेर में आपने साहित्य सम्मेलन की स्थापना की, श्री गंगानगर में एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना भी आपके सत्प्रयास से ही संभव हो सकी। साथ ही आप राजस्थान आयुर्वेद विकास बोर्ड, प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् आदि संस्थाओं के अध्यक्ष एवं मंत्री रहे।

इतना सब होते हुए भी, आचार्य जी का व्यक्तित्व एक सन्त का व्यक्तित्व है। उनकी दैनिक दिनचर्या में सात-आठ घंटे तो गायत्री जप और ईश्वर ध्यान में व्यतीत होते हैं। यौगिक साधना और स्वाध्याय के परिणामस्वरूप ही आपको आध्यात्मिक एवं सत्यज्ञान की अनुभूति होती रहती है, बहुधा भविष्य में घटने वाली घटनाओं का ज्ञान पहले ही हो जाता है। कभी-कभी तो घटने वाली घटनाओं की निश्चित तिथि भी आपको मालूम हो जाती है। यह तो आपका व्यक्तिगत जीवन है। आप अपने सार्वजनिक जीवन में व्यक्तिगत आचरण को कभी अवरोध नहीं बनने देते। आप जहाँ स्वभाव से अति सरल हैं, वहीं कुशल प्रशासक भी हैं। आपकी लगन और कुशल प्रशासन का ही परिणाम है कि सरदार शहर का गांधी विद्या मंदिर अत्यल्प समय में अत्यधिक उन्नति कर सका। आपके सरल और सौम्य व्यक्तित्व का ही प्रभाव है कि पं. जवाहरलाल नेहरू, श्री लालबहादुर शास्त्री, श्री मोहन लाल सुखाडिया, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री कुम्भाराम आर्य, डॉ. कालूराम श्रीमाली आदि महानुभाव आपका सम्मान करते रहे हैं। यद्यपि आज भी आप सक्रिय राजनीति से दूर हैं, फिर भी राजस्थान के राजनीतिक क्षेत्र में आपकी बहुत प्रतिष्ठा है।

गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई है। यहाँ के तप:पूत आचार्यों के जीवन की आप पर छाप पडी है। आप अपने को सदा ही यहाँ का बहुत ऋणी अनुभव करते हैं। यही कारण है कि विपरीत परिस्थितियों में भी आप यहाँ की उन्नति चाहते हैं और उसके लिए हर संभव सहायता करना चाहते हैं। आप स्नातक बनने के बाद से ही इस संस्था से किसी न किसी रूप में सदा ही सम्बद्ध रहे हैं। महाविद्यालय को आपसे बहुत आशाएँ हैं।

गुरूकुल महाविद्यालय
ज्वालापुर, हरिद्वार।

डॉ.गौरीशंकर आचार्य का परिचय

– बिशनसिंह शेखावत

माननीय संस्कारों में पले व्यक्ति को अपनी ही मृत्यु की स्पष्ट तिथि का ज्ञान हो, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि इन्सान का दिल कितना सिहर उठता है, चिन्तन फीका पड जाता है, चाल रूक जाती है, किन्तु डॉ.गौरी शंकर आचार्य ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने स्वप्न योग से सब कुछ जान लिया, पर दैनिक जीवन की हलचल पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता।

साधारण खादी का कुर्ता, धोती पहने, पैरों में चप्पल, घनी भौहों में झांकती छोटी छोटी आंखें, अधेड़ सी उम्र के डॉ.गौरीशंकर जी का जन्म श्रीगंगानगर के भादरा कस्बे में पं.जगन राम के घर सन् १९१५ में हुआ। बनारस संस्कृत विश्व विद्यालय से साहित्य शास्त्री, हिन्दू विश्व विद्यालय से वेदान्त में शास्त्राचार्य, प्रयाग से राजनीति में साहित्य रत्न, गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से आयुर्वेद भास्कर, बंगाल विश्व विद्यालय से सांख्य योगतीर्थ तथा बुढापे के प्रारंभ में कुरूक्षेत्र से भारतीय दर्शन में डाक्टरेट की डिग्री हासिल की। अब भी अध्ययन तथा अध्यापन, का कार्य निरन्तर जारी है।

आचार्य जी ने जो कुछ पढ़ा उसे जीवन में अक्षरश: ढ़ालने का प्रयास किया। हिन्दी, संस्कृत, गाय, गीता, गायत्री को भारतीय जीवन के साथ समरस करने के लिये अथक प्रयत्न किया। विद्यार्थी जीवन में संस्कृत विद्यार्थी संघ बनाया जिसके वे महामंत्री और डॉ.सम्पूर्णानन्द अध्यक्ष थे। इसी संस्कृत पाठ्यक्रम में गणित, अंग्रेजी, भूगोल आदि विषयों का समावेश कराकर आधुनिक रूप दिया।

ये शिक्षा प्राप्त कर बीकानेर में ५ वर्ष संस्कृत अध्यापक रहे। सरकारी सेवा को स्वतंत्र कार्य करने में बाधक समझ कर छोड़ने के बाद साहित्य का प्रचार शुरू किया। बीकानेर डिविजन में साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। सरदार शहर जैसी रेतीली भूमि को पेड़ों से हरा भरा कर गांधी दर्शन पर आधारित विद्या मंदिर की स्थापना की जो देश भर की प्रमुख संस्थाओं में से एक है। इस संस्था के ९ वर्ष अध्यक्ष रहे। इन्होंने कई प्रसिद्ध शिक्षण संस्थानों का निर्माण किया जिनमें हिन्दी विश्व भारती बीकानेर, नेहरू रात्रि महाविद्यालय, श्रीगंगानगर पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन आदि प्रमुख हैं।

बीकानेर रियासत में उत्तरदायी शासन बनने पर आप शिक्षामंत्री बने। आठ माह के कार्यकाल में अंग्रेजी को प्रारम्भिक कक्षाओं से समाप्त किया, अंग्रेजी अध्यापकों के समान हिन्दी, संस्कृत अध्यापकों को वेतन तथा अध्यापकों को परीक्षा देने की आम छूट दी।

गौरीशंकर का व्यक्तित्व वहु प्रतिभाशाली है। ये राजस्थान आयुर्वेद विकास बोर्ड, समाज कल्याण बोर्ड, प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष एवं मंत्री रहे। राजस्थान गौशाला संघ के ९ वर्ष से अध्यक्ष रहते हुए आचार्य जी ने गौ-माता भवन का निर्माण करवाया है जहाँ पर गाय के मूत्र व गोबर से बीमारी पर अनुसंधान हो रहा है।

प्रात: ५ बजे उठकर लगातार पांच घण्टे गायत्री मंत्र और ईश्वर पूजा का इनका कार्यक्रम अबोध गति से कई वर्षों से चल रहा है। इसी से इन्हें सत्य को पकड़ने की क्षमता प्राप्त हुई है। इन्होंने परिवारजनों को मृत्यु तिथि बताई, जो ठीक निकली, ऐसा इनका कहना है। इन दिनो गीता अध्ययन केन्द्र बनाने, इसके विद्वान तैयार करने का काम भी हाथ में लिया है तथा समय से पूर्व अपने कार्यों को सफल देखने की दृढ इच्छा एवं विश्वास लिये हुए हैं।

यह लेख इतवारी राजस्थान पत्रिका से उद्धृत है।

सभा संचालन

मकरंद

ऋग्वेद एक प्रार्थना है

समानो मत्र समिति सभा की समज मन: सहचित्तमेषाम्
समान मत्रमभिमत्रयेव. सभानेन को हुविषा जुहोमि
समानी व आकूति, समाणा हृदयानि व:
समान मस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।।

[illegible] आचार्य जी प्रभु से यह प्रार्थना करते रहे। [illegible] विभिन्न विचारों को सुनते हुए और समझने के लिए मनोयोग से पूरा [illegible] अपने विरोधी विचारों को भी सत्य ही संतुष्ट करने [illegible] रहे।

[illegible] विरोधी विचारों पर ध्यान देकर, अपने विचारों को [illegible] दुर्लभ है। [illegible] सकती है।

[illegible]

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य-एक प्रेरक व्यक्तित्व

कन्हैया लाल शर्मा,
बी.ए. साहित्यरत्न एस.टी. (डिनमार्क)

आज से लगभग ६५ साल पहले सन् १९४० में जब हम तत्कालीन गंगा गोल्डन जुबली हाई स्कूल, सरदार शहर में छठी कक्षा के छात्र के रूप में संस्कृत विषय का प्रारम्भिक अध्ययन करते थे तब एक गौरवर्ण युवक शिक्षक जो उस दोहरी गुलामी के जमाने में भी खादी की धोती कुर्ते की पोशाक पहनकर स्कूल में आते थे और सभी कक्षाओं के छात्रों को संस्कृत का अध्ययन कराते थे, उनका नाम श्री गौरीशंकर जी आचार्य था एवं समस्त छात्रों मे उनके लिए यही प्रचारित था कि ये गुरूजी अभी बनारस पढकर आये हैं तथा वहॉ पंडित मदनमोहन जी मालवीय के सानिध्य में रहे हैं एवं संस्कृत व दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान हैं। उनके विशिष्ट प्रभावशाली व्यक्तित्व से भी ऐसा आभास होता था कि इन गुरूजी में काफी विशेषताऍ हैं। उनकी मधुर ओजस्वी वाणी में प्रेरक भाषण सुनने को हम सब लालायित रहते थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा आकर्षक था कि वे जहॉ भी जाते वहां बिजली सी कौंध जाती थी और सभी छात्रों को उनका मुस्कान भरा ओजपूर्ण चेहरा देखकर अतीव प्रसन्नता होती थी। वैसे उस जमाने के प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकगण सभी प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी एवं छात्रों के सही मायने में हितैषी तथा जीवन निर्माता होते थे लेकिन ऐसा लगता था कि आचार्य जी का छात्रवर्ग पर उनकी विशिष्टताओं के कारण सर्वाधिक प्रभाव था। आचार्य जी उस जमाने से लेकर आज तक अपनी जादुई वक्तृत्वकला के लिए अप्रतिम माने जाते रहे है वे उस समय सरदार शहर में स्कूल के एक अध्यापक मात्र ही नहीं थे बल्कि युवा पीढी के लिए नव जागरण के प्रेरणा स्त्रोत और साहित्यिक, सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना उत्पन्न कर चहुदिशि प्रसार करने वाले एक ऊर्जा केन्द्र भी थे।

छात्रों को युगानुकूल मार्गदर्शन देने में उनके मस्तिष्क और व्यक्तित्व ने बहुत बडा योगदान किया। मुझे याद है कि उस जमाने में श्रेष्ठिवर्ग और सर्वसामान्यजन लड़कों की अपेक्षा अपनी लड़कियों को बहुत कम पढ़ाया करते थे। काफी लोग तो लड़कियों को स्कूल भेजना भी उचित नहीं मानते थे, फलस्वरूप अधिकांश बालाएं निरक्षर ही रह जाती थीं। आचार्यजी को उस जमाने मे भी स्त्री शिक्षा की यह कमी बहुत खली और मुझे अब तक याद है कि उन्होंने राजा-महाराजाओं के उस शासन काल के विकट जमाने में भी अपने स्कूल के समस्त छात्रों की एक सभा करके लड़कियों की शिक्षा में कमी के फलस्वरूप सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान पर पडने वाले कुप्रभाव की ओर छात्रों का ध्यान आकृष्ट करते हुए उनको स्त्री शिक्षा में सहयोग के लिए प्रेरित किया और छात्रों से ऐसी

प्रतिज्ञा करवाई कि आप सब लोग किसी भी निरक्षर लड़की से विवाह नहीं करेंगे। उनके इस आह्वान पर छात्र कटिबद्ध हो गये और उन्होंने अपने अभिभावकों को स्पष्ट कह दिया कि अगर समाज ने लडकियों को पढाना शुरू नहीं किया तो इसका निकट भविष्य में ही बड़ा दुष्परिणाम होगा। हम सब लोग निरक्षर लडकियों से विवाह नहीं करेंगे। इस अभियान से प्रबुद्ध लोग जागे-सर्वसाधारण के भी समझ में आया और सरदारशहर मे तथा आस-पास के क्षेत्र में स्त्री शिक्षा ने अच्छी गति पकड़ी, जिसका परिणाम आज के गर्ल्स कॉलेज और छात्राओं की अगणित सैकण्डरी तथा सीनियर सैकण्डरी स्कूल हैं।

आचार्य जी ने हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में भी अपने क्रियाकलापों से इस अंचल पर अमिट छाप छोड़ी है। बीकानेर हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन-साहित्य समिति की स्थापना एवं अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की परीक्षाओं में अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होने के लिए छात्रों को प्रेरित करने में आचार्य जी का प्रमुख हाथ रहा है। सर्व साधारण में राजनीतिक चेतना लाने एवं इस क्षेत्र में स्वतंत्रता प्राप्ति आन्दोलन को आगे बढ़ाने में भी आचार्य जी सक्रिय रहे तथा इसी के परिणाम स्वरूप उनको सरदारशहर से जाने के कुछ समय उपरान्त ही तत्कालीन बीकानेर रियासत की लोकप्रिय सरकार में शिक्षा व रेलमंत्री बनाया गया।

आचार्य जी की जीवन यात्रा आगे बढ़ती गई। वे उस समय तक काफी ख्याति प्राप्त कर चुके थे। मै भी अपने ग्रेजुएशन के बाद सन् १९५१ में कलकत्ता जाकर एक व्यावसायिक एवं औद्योगिक लिमिटेड कम्पनी के ऑफिस में काम करने लगा था। लगभग एक साल के प्रवास के बाद जब मैं कलकत्ता से छुट्टी पर घर आया तब तक सरदार शहर से पूर्व की ओर गांधी विद्या मंदिर नामक शिक्षण संस्था की आधारशिला रखी जा चुकी थी और मेरे लिए यह संयोग की बात है कि उसके प्रथम अध्यक्ष पद पर मेरे गुरूदेव आचार्य गौरीशंकर जी आसीन थे। मार्च सन् १९५३ की बात है उस समय मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्री कालिका प्रसाद जी शर्मा संस्था की बेसिक स्कूल में प्रधानाध्यापक पद पर नियुक्त हो चुके थे। एक रोज मैं भी उनके साथ संस्था का कुटिया छप्पर वाला प्रारंभिक रूप देखने गया। उस समय संस्था के अध्यक्ष श्री आचार्य जी भी ओम कुटीर के पीछे वाले टीले पर बनी कुटिया में सपरिवार निवास करते थे। जब मैं आचार्य जी से मिला और उनके छात्र के रूप में अपना परिचय बताया तो उन्होंने मुझसे अपनी पढाई लिखाई तथा वर्तमान कार्य के बारे में पूछताछ की। मेरे बताने पर आचार्य जी ने मुस्कुराकर कहा देखो, कैसी विडम्बना है कि स्थानीय पढा लिखा स्नातक युवक बाहर नौकरी कर रहा है और हमें संस्था के लिए बाहर से बुलाकर पढे लिखे लोगों को नियुक्तियाँ देनी पड़ रही हैं और मुझे उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा कि मैं तो यही कहूँगा कि अपने भाई की तरह तुम भी यहाँ आ जाओ। हम तुम्हारी सेवाओं का भी संस्था में

सदुपयोग कर लेंगे। यह बहुत बड़ा शिक्षा केन्द्र बनने जा रहा है। यहाँ बडी संख्या में शिक्षित लोगों की सेवाओं की आवश्यकता रहेगी। मैंने उस समय आचार्य जी के दैदीप्यमान चेहरे पर वही पुरानी मुस्कान उनकी आंखों में वही आत्मीयता पूर्ण स्नेहभाव और उज्ज्वल भविष्य की कल्पनाओं की प्रसन्नता देखी। मैंने आचार्य जी से यही निवेदन किया कि मैं आपके परामर्श और प्रेरणा के विषय में घरवालों से सलाह करके शीघ्र ही आपकी सेवा में पुन: उपस्थित होऊँगा।

घर पर आने के बाद अपने पिताजी व माताजी एवं सभी पारिवारिक सदस्यो से विचार-विमर्श किया और सभी प्रकार से लाभ हानि तथा भावी संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए यही निर्णय किया कि शीघ्र ही संस्था की सेवा में लग जाना चाहिये तथा कलकत्ता कम्पनी को त्याग-पत्र दे देना है। मुझे याद है कि पहली अप्रैल १९५३ को हम दोनों भाई गांधी विद्या मंदिर जाकर आचार्य जी से उनके ऑफिस में मिले। आचार्य जी अपने ऑफिस में योजना निर्माण कार्य में व्यस्त थे। संस्था का प्रांरभिक काल था अत: परिश्रम भी ज्यादा करना पड़ता था। यहाँ मैं यह लिखना नहीं भूलूंगा कि आचार्य जी अव्वल दर्जे के योजनाकार रहे हैं, लाखों करोडों की योजना वे पलक झपकते ही बना लेते थे। ऑफिस में मैंने आचार्य जी को उसी पहले वाली पोशाक खादी के सफेद धोती कुर्ते में सुशोभित पाया। वे हमेशा लाखग्दे की नर्म देशी जूती पहनते थे और आज भी वही पोशाक और देशी जूती पूर्ववत् पहनते हैं। उस समय संस्था अध्यक्ष का ऑफिस तत्कालीन किसी बड़े कांग्रेसी नेता के ऑफिस जैसा लगता था। एक बड़े कमरे के फर्श पर ही सफेद खादी वस्त्र से बने हुए गद्दे व मसनद लगे हुए थे और उन्हीं पर एक छोटी डेस्क के सहारे बैठकर आचार्य जी सारी लिखा पढ़ी करते थे। आज तो समय की गति और पदाधिकारियों की रुचि परिवर्तन के साथ ही गांधी जी की सीधी सादी संस्था के ऑफिसों के ठाठ में भी आमूलचूल परिवर्तन आ गया है।

आचार्य जी ने मुझसे पूछा कहो भाई, तुम काम के बारे में किस निर्णय पर पहुँचे तब मैंने उनसे यही निवेदन किया कि आपकी प्रेरणानुसार मैंने संस्था कार्य करने का मन बना लिया है अब आपकी जो आज्ञा हो, उसी समय आचार्य जी ने एक सादा कागज मेरी ओर बढाते हुए कहा कि संस्था में अपनी सेवाएँ देने की इच्छा जताते हुए किसी उपयुक्त पद पर नियुक्ति हेतु एक प्रार्थना-पत्र अध्यक्ष गांधी विद्या मंदिर के नाम लिखकर अभी दो। मैंने तत्काल ऐसा ही किया और आचार्य जी ने उसी प्रार्थना पत्र पर मेरा नियुक्ति आदेश लिख दिया और कहा कि हम आपको संस्था के ग्रामोदय विभाग के व्यवस्थापक पद पर १५० (एक सौ पचास) रुपये मासिक वेतन पर नियुक्ति दे रहे हैं। अब आपको ही इस विभाग की योजनानुसार सर्वेसर्वा के रूप में समस्त कार्य करना है। नया काम है प्रारंभ में बडी मेहनत करनी होगी। गांवों में यात्रा के लिए आपके विभाग के पास एक जीप गाडी रहेगी। मुझे कोई लिखित नियुक्ति पत्र नहीं मिला और आचार्य जी द्वारा मेरे प्रार्थना पत्र पर लिखित

उपरोक्त एक पंक्ति के आधार पर ही मैंने बीस साल तक संस्था में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए अनवरत अपनी सेवाएँ दीं।

संस्था की योजनानुसार ग्रामोदय विभाग के कार्य क्षेत्र के रूप में गांधी विद्या मंदिर के चारों तरफ सरदारशहर तहसील के लगभग १० मील के घेरे में आने वाले ६० ग्रामों को चुना गया और वहाँ अथक परिश्रम करके समस्त ग्रामवासियों से सम्पर्क और गांवों के प्रारंभिक बहुद्देशीय सर्वेक्षण के बाद ग्रामोदय की विविध योजनाएँ बनाकर प्रारंभ की गईं। मैं उस समय आचार्य जी के प्रत्यक्ष अधीनस्थ रहकर ही समस्त कार्य कर रहा था। आचार्य जी मेरे कार्य को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और मुझे मेरी कार्यक्षमता को दृष्टिगत रखकर दो माह के लिए गांधी ग्राउण्ड, दिल्ली (रिलवे जंक्शन के सामने) में आयोजित होने वाली अखिल भारतीय हस्तोद्योग प्रदर्शनी में संस्था की तरफ से लगने वाले मण्डप के व्यवस्थापक के रूप में दिल्ली भेज दिया। वहां भी हमारा कार्य सफल एव सराहनीय रहा। संस्था की उद्योगशाला में छात्रों द्वारा निर्मित विभिन्न हस्तकलाकृतियों यथा गलीचो एवं लकड़ी के विविध कार्यों आदि पर अनेक पारितोषिक प्राप्त हुए। उसी अवधि में हमारे अध्यक्ष महोदय भी किसी तीर्थ यात्रा से लौटते हुए उक्त प्रदर्शनी में पधारे और हमारे मण्डप की साज-सज्जा तथा हमारे दल द्वारा संस्था के चहुमुँखी प्रचार प्रसार कार्य को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उनके मस्तिष्क में मेरे लिए संस्था क़े एक़ अत्यन्त निष्ठावान कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में उज्ज्वल छवि बन गई। जिसका सुफल मुझे थोड़े दिनों बाद ही आचार्यजी की अनुकम्पा से मिला। मैने अनुभव किया कि आचार्य जी संस्था हित में किसी के भी मूल्यांकन में कोई त्रुटि नहीं करते थे और संस्थाध्यक्ष के रूप में योग्य कर्मचारी की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करने में कोई कसर नहीं रखते थे।

उपरोक्त प्रदर्शनी की सुसम्पन्नता के उपरान्त दिल्ली से लौटने के लगभग दो माह बाद अप्रैल १९५४ में एक रोज प्रातःकाल हम लोग घूमने के लिए गांधी विद्या मंदिर की ओर जा रहे थे। सामने से आचार्य जी संस्था की जीप में हमें श्री बालाजी की बुंगली के पास मिले। उस समय कोई सड़क नहीं थी केवल रेतीला कच्चा मार्ग था। मैं जानकारी के लिए यह बताना उपयुक्त समझता हूँ कि श्री आचार्य जी अपने जीवन में सच्चे आस्तिक और हनुमान भक्त रहे हैं। उस समय वे हमेशा श्री हनुमान जी के दर्शन करने बुंगली आते थे और वहाँ घण्टों बैठकर या तो गायत्री मंत्र जपते थे अथवा संस्था की कोई योजना बनाने का कार्य अथवा अन्य कोई लेखन कार्य इस पवित्र एकान्त स्थान पर करते थे। आज भी आचार्य जी इस वृद्धावस्था में भी जब कुछ खाते-पीते हैं तो श्री हनुमान जी का आह्वान करके "पधारो हनुमानजी महाराज, चाय पीओ'' कहकर स्वयं चाय पीते हैं, यह उनकी अटल निष्ठा का प्रमाण है।

आचार्य जी ने उस समय अपनी जीप रास्ते में रोककर बिना किसी पूर्व प्रसंग के मुझसे पूछा क्यों भई कन्हैयालाल जी यदि हम आपको कहीं बाहर भेजें तो चले जाओगे। मैंने इसे बड़ी सहजता से लिया, सोचा संस्था के काम से प्राय: जयपुर-दिल्ली जाते रहते हैं, वहीं भेजेंगे क्या कठिनाई है, चले जायेंगे। मैंने उनसे कहॉ, चले जायेंगे। तब आचार्य जी ने कहा भई सोच-समझकर हाँ करना, यह इतना आसान काम नहीं है, मैं देश की नहीं विदेश की बात कर रहा हूँ। मैं भी उस समय केवल २४ वर्ष का नौजवान था, जवानी के जोश में कह दिया आचार्य जी कोई संकोच की बात नहीं है, विदेश भी चले जायेंगे, अगर-आप इतना अच्छा अवसर दिलवाना चाहते हैं तो मैं भी पीछे नहीं हटूँगा, लेकिन शर्त यह है कि मुझे इस कारण से कोई तकलीफ अथवा आर्थिक संकट नहीं झेलना पड़े, क्योंकि मेरे घर वालों के पास कोई आर्थिक साधन नहीं है। आचार्य जी ने आश्वस्त किया कि वह सब मैं देख लूंगा। मैं तुम्हारा नाम इस यात्रा के लिए कार्यकारिणी के सम्मुख रखता हूँ, तुम समझलो कि तुम्हें शीघ्र ही विदेश जाना है और इसके लिए अपनी तैयारी करो। आचार्य जी ने लगभग दो सप्ताह बाद बताया कि उच्च शिक्षा अध्ययन के लिए भारत सरकार की जो टीम अगले माह ऐल्सीनोर, डेनमार्क जा रही है, उसमें तुम संस्था प्रतिनिधि के रूप में सदस्य चुने गये हो और सरकार ने भी तुम्हारे नाम की स्वीकृति हमें भेज दी है, केवल यात्रा की तारीख तय होनी है। डेनमार्क एवं अन्य यूरोपीय देशों के इस शैक्षणिक भ्रमण में टीम को लगभग छ: माह लगने की संभावना है और मैं मई सन् १९५४ में पालम हवाई अड्डे से लंदन होते हुए कोपैनहेगन की उड़ान पर सवार हो गया। तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षामंत्री वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता मौलाना आजाद साहब ने हमारी टीम को अपने नई दिल्ली स्थित केन्द्रीय सैक्रेटेरियट कार्यालय से विदाई दी।

उस समय आचार्य जी की कृपा और प्रभाव ने वह कर दिखाया जो मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। सरदार शहर के लोग भी यह देख-सुन करके चकित रह गये। उस समय मेरी विदेश यात्रा एक अप्रत्याशित घटना थी। आज तो आये दिन लोग विदेशयात्रा करते रहते है, एक सामान्य सी बात है। शैक्षणिक भ्रमण समाप्त कर जब मैं सितम्बर १९५४ में डेनमार्क यात्रा से वापिस सरदार शहर आया तो आचार्य जी के विशेष प्रयास और संस्था कार्यकर्ताओं की सद्भावना से मेरा एक शानदार जुलूस रेलवे स्टेशन से बाजार में होते हुए मेरे घर तक लाया गया जिसमें संस्था के सभी कर्मचारी एवं छात्रगण तथा शहर के अनेक लोग सम्मिलित थे। जुलूस में सबसे आगे खुली जीप गाड़ी में पूज्य आचार्य जी मेरे साथ अगली सीट पर बैठे थे और सम्भवत: उनको ही मेरी इस यात्रा की सुसम्पन्नता पर सर्वाधिक प्रसन्नता थी। आज तो आये दिन विभिन्न प्रकार के जुलूस निकलते हैं लेकिन उस समय एक सामान्य व्यक्ति के लिए शहर में यह एक अभूतपूर्व कार्यक्रम था।

सन् १९४८ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वर्गलोक सिधारने के बाद सन् १९५० में उनके

नाम से सरदार शहर में गांधी विद्या मंदिर की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना के रूप में उभरकर राजस्थान की जनता के सम्मुख प्रस्तुत हुई। इसकी प्रारम्भिक योजना बनाकर उसे मूर्त रूप देने में यहाँ के स्वनाम धन्य सेठ श्री सुमेरमल जी दूगड के सुपुत्र श्री कन्हैया लाल जी दूगड की त्याग भावना एवं आर्थिक साधनों के साथ श्री गौरीशंकर जी आचार्य का तन और मन मस्तिष्क जुड गया जिससे इस कार्य ने क्षिप्र गति से प्रगति करते हुए एक विशाल शिक्षण संस्था का रूप ग्रहण किया। इस संस्था के प्रारम्भिक निर्माण व विकास में जो कार्य श्री दूगड जी की पारिवारिक पृष्ठ भूमि उनके आर्थिक सहयोग एवं त्याग ने किया वही कार्य श्री आचार्य जी की कल्पना शक्ति, विद्वता, ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व एवं सम्पर्क सूत्रों ने किया। जिस समय इस क्षेत्र के सर्वसाधारण को यह पता तक नहीं था कि विश्वविद्यालय किस चिडिया का नाम है, उस समय आचार्य जी की कल्पना डॉ. राधाकृष्णन् कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर गांधी विद्या मंदिर को एक देहाती विश्वविद्यालय का स्वरूप प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील थी और इसी प्रयास के एक अंग के रूप में संस्था में सन् १९५५ में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के कर-कमलो से विश्व विद्यालय भवन की आधारशिला रखी गई। आचार्य जी अपने ओज़स्वी भाषणों में प्राय: यही कहते सुने गए कि हमारा यह संस्थान देश का अग्रणी देहाती विश्वविद्यालय बनेगा जिसमे संसार के अन्य देशों के लोग आकर विद्याध्ययन करेंगे। उस समय श्री दूगड़ जी एवं श्री आचार्यजी दोनों ही महानुभाव कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रहे थे, लेकिन देखने में आया कि कुछ समय पश्चात् इस स्थिति में अन्तर आने लगा और यदाकदा यह अनुभव होने लगा कि श्री आचार्य जी का शिखर व्यक्तित्व संस्था के अध्यक्ष के रूप में ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत गुणों, विद्वता एवं राजनैतिक प्रतिष्ठा तथा अर्जित ख्याति के आधार पर संस्था के अन्य सभी कार्यकर्ताओं पर भारी पडने लगा है और यहाँ तक कि बाहर के लोगों की दृष्टि में आचार्य जी ही संस्था के सर्वेसर्वा हैं। यह स्थिति बहुत समय तक नहीं चल पाई और ऐसी परिस्थितियॉं बनीं कि आचार्य जी को संस्था का अध्यक्ष पद त्यागना पडा।

उस समय इस घटना के आलोक में हमने देखा कि श्री कन्हैया लाल दूगड ने तो अपने स्वभाववश किसी प्रकार की सद्भावना, सद्व्यवहार, सदाशयता अथवा सहृदयता का परिचय नहीं दिया, लेकिन उनके ज्येष्ठ भ्राता स्व. श्री भंवर लाल जी दूगड़ के संबंध श्री आचार्य जी के साथ अत्यन्त मधुर बने रहे और उनके विवेकशील, धीर, गंभीर एवं चिन्तनशील व्यक्तित्व ने आचार्य जी का सानिध्य व संग आजीवन नहीं छोड़ा और उन्होंने आचार्य जी को आयुर्वेद के क्षेत्र में कुछ विशेष सेवाकार्य के लिए अपने साथ जोडा। कुछ समय तक आचार्य जी सपरिवार गांधी विद्या मदिर में बनी अपनी कुटिया में निवास करते रहे। उस समय श्री भंवर लाल जी ने अपनी एक छोटी सी योजना आचार्य जी के सम्मुख प्रस्तुत कर उनको भावी आयुर्वैदिक संस्था का मुख्य सलाहकार

बनाया। दोनों ही महानुभावों को आयुर्वेद के क्षेत्र में पूर्ण रूचि एवं ज्ञान होने के कारण अष्टांग आयुर्वेद की दृष्टि से एक बड़ी संस्था की सांगोपांग योजना शीघ्र ही तैयार हो गई और आयुर्वेद विश्व भारती के नाम से एक महान् संस्था का गांधी विद्या मंदिर के प्रांगण में ही श्री गणेश हुआ जो अपने वर्तमान स्वरूप में आयुर्वेद जगत की सेवा कर रही है। यहाँ भी श्री भंवर लाल जी दूगड़ को आचार्य जी की अनवरत यही सलाह रहती थी कि हमें आयुर्वेद विश्वभारती को एक दिन राजस्थान के प्रथम आयुर्वेद विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित करना है। मेरी भी यह मान्यता है कि अगर दोनों दिग्गजों की यह जोड़ी आज तक सलामत रहती तो राजस्थान का प्रथम आयुर्वेद विश्व विद्यालय, जोधपुर में नहीं बल्कि सरदार शहर में ही स्थापित होता लेकिन दुर्दैव योग से श्री भंवर लाल जी दूगड़ को एक सड़क दुर्घटनावश बीच में ही यह संसार छोड़कर जाना पड़ा। मुझे पहले ग्रामोदय विभाग व्यवस्थापक तथा ग्रामज्योति केन्द्र के संयुक्त सचिव के रूप में एवं तदुपरान्त आयुर्वेद विश्वभारती के कार्यालय सचिव पद पर सेवाएँ देनी पड़ीं। यह उल्लेखनीय है कि मुझे इन दोनों ही विभूतियों के सानिध्य में कई वर्षों तक सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जो मेरे लिए अपने जीवन के स्वर्णिम काल की एक अविस्मरणीय अनुभव पूर्ण घटना है। आचार्य जी अपने भाषणो में विश्वविद्यालय बनाने का जिक्र प्रायः किया करते थे और कहा करते थे कि यद्यपि पॉकेट में एक चवन्नी भी नहीं है लेकिन मेरी दोनों ओर की पॉकेटों में एक एक कर दो करोड़पति रखता हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय बनाना संभव है।

मेरा सम्पर्क अकेले आचार्य जी से ही नहीं रहा बल्कि समाज कल्याण योजनाओं के माध्यम से उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती लक्ष्मी देवी शर्मा, जिनको सभी लोग आदरपूर्वक "माताजी" कहकर पुकारते थे उनके साथ भी मैंने अत्यन्त निकट रहकर कार्य किया है। कई वर्षों तक माताजी गांधी विद्या मंदिर के अन्तर्गत संचालित समाज कल्याण बोर्ड की स्थानीय इकाई की संयोजिका रहीं और मैंने उनके प्रथम सहायक के रूप में संयुक्त संयोजक पद का कार्य संभाला। इस योजनान्तर्गत विभिन्न गांवो में महिला एवं बाल कल्याण केन्द्र वैतनिक कार्यकर्त्रियों के माध्यम से चलते थे, जिनके सुचारू संचालन की जिम्मेदारी हम लोगों पर थी। पूज्या माताजी उस जमाने की एक निर्भीक, स्पष्टवक्ता हौंसले वाली महिला थीं और उनमें नेतृत्व प्रदान करने की विशेष क्षमता थी। आचार्य जी उनको हमेशा देवी कहकर पुकारते थे। खेद है कि वे अब तक आचार्य जी का साथ नहीं निभा सकीं और आयुष्य समाप्ति पर उनको अपना भरा पूरा परिवार छोड़कर असमय इस संसार से विदा होना पडा। उस समय राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड जयपुर की अध्यक्षा श्रीमती इन्दुबाला जी सुखाडिया थीं एवं आचार्य जी उक्त राज्य बोर्ड के एक प्रभावशाली सम्मानित सदस्य थे। उस समय हमने देखा कि श्रीमती इन्दुबाला जी सुखाड़िया भी आचार्य जी से बहुत प्रभावित थीं। एक बार तो

आचार्य जी ने मुझे उक्त बोर्ड के जयपुर ऑफिस में सचिव पद पर नियुक्ति दिलवाने की व्यवस्था भी श्रीमती सुखाडिया से बात करके कर ली थी। लेकिन स्व. श्री भंवर लाल जी दूगड ने संस्था हित में श्री आचार्य जी को ऐसा करने से रोक दिया और मैं भी यहीं सेवारत रह गया। वैसे आचार्य जी का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि उनकी पहुँच श्री मोहन लाल जी सुखाडिया साहव, तत्कालीन मुख्यमंत्री से लेकर सभी मंत्रियों तक अबाध गति से थी। मैंने देखा कि चौधरी कुंभाराम जी आर्य आदि कई मंत्रीगण तो उनके पुराने साथी के रूप में थे और उनको आदरपूर्वक गुरूदेव कहकर सम्मान करते थे। आचार्य जी एक बार रतनगढ़ विधानसभा क्षेत्र से राजस्थान विधानसभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए थे जिससे उनका राजनीतिक क्षितिज और सम्पर्क अधिक विस्तृत हो गया था। कई बार देखने में आया कि जयपुर में संस्था का कोई कार्य करवाना होता तो वे राजकीय उच्चाधिकारियो को सीधा नहीं कहकर उनके संबंधित मंत्री महोदय के मार्फत ही आवश्यक कार्य करवाते थे।

अध्यक्ष पद त्यागने के बाद यद्यपि आचार्य जी वैधानिक रूप से गांधी विद्या मंदिर में किसी पद पर नहीं रहे लेकिन सहभागी संस्थापक के रूप में वे अपना कर्त्तव्य बडी लगन और ईमानदारी के साथ निभाते रहे। प्रत्येक अवसर पर जब भी उनको याद किया गया अथवा उनकी सेवाओं की आवश्यकता हुई तो सभी ने देखा कि आचार्य जी उसी आत्मीयता के साथ संस्था के हित में तत्पर रहे। जब भी वे सरदार शहर आते थे तो यहाँ रहते हुए मेरी मुलाकात उनसे अवश्य होती थी। बीच में जब मैं संस्था के प्रांगण में राज्य सरकार द्वारा संचालित पंचायती राज प्रशिक्षण केन्द्र (सन् १९६२ से ६७ तक) का प्रिन्सिपल रहा तब भी प्रशिक्षण में सम्मिलित होने वाले जन-प्रतिनिधियों को कुछ मार्गदर्शन एवं आर्शीवाद देने के लिए मैं आचार्यजी को समय-समय पर आमंत्रित करता था। हर बार आचार्य जी अपने विद्वतापूर्ण भाषण द्वारा प्रशिक्षार्थियों को नया ज्ञान और नई सीख देते थे। उनके द्वारा पंच-परमेश्वर शब्द की जो व्याख्या ब्रह्मा-विष्णु-महेश के संदर्भ में पौराणिक आधार पर की गई थी वह विलक्षण थी और जिन लोगों ने उसे सुना उन सबको वह आज तक याद होगी। पंचायत, पंचायती राज और पंच-परमेश्वर शब्दों के संबंध में जैसी सांगोपांग विशद् व्याख्या और ज्ञान, आचार्य जी ने अपने भाषणों में दिया वैसे हमें अपने पंचायती राज संबंधी प्रशिक्षण काल में ना तो केन्द्र सरकार द्वारा संचालित सैन्ट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ पंचायती राज, नई दिल्ली मे और ना ही राज्य के ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, नायला में मिला। यह ज्ञान वास्तव में आचार्य जी की विद्वता का द्योतक है। उनकी वक्तृत्व कला का तो जमाना ही कायल है। मुझे केवल ऑफिस अथवा फील्ड में ही आचार्यजी के साथ काम करने का अवसर नहीं मिला बल्कि उनके साथ बाहर जाकर कई अखिल भारतीय सम्मेलनों व सेमीनारो मे भी भाग लेने का सौभाग्य मिला। इस प्रसंग में मैं इतना ही लिखूंगा कि-आचार्य जी के नेतृत्व में संस्था के शिष्ट मण्डल ने भारत के तत्कालीन गृहमंत्री स्व

श्री गुलजारी लाल जी नन्दा व राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व. श्री जयनारायण व्यास के सानिध्य में विद्या भवन उदयपुर में आयोजित शिक्षा सम्मेलन में, सणोसरा (सौराष्ट्र) में स्थित संस्था लोक भारती में आयोजित अखिल भारतीय बुनियादी शिक्षा सम्मेलन में एवं भारत के तत्कालीन वित्तमंत्री श्री मोरारजी देसाई की अध्यक्षता में जयपुर के दुर्गापुरा में आयोजित अखिल भारतीय गौ-सम्बर्द्धन सम्मेलन आदि में सोत्साह भाग लेकर संस्था की उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज कराई। वैसे आचार्य जी स्वयं तो हर साल राज्य में एवं बाहर आयोजित अनेक सम्मेलनों एवं सेमीनारों तथा विभिन्न उत्सवों में सम्मिलित होकर अपनी अमिट छाप छोडते ही रहे हैं।

आचार्य जी जीवन भर स्वाध्यायरत रहे हैं, इसी का परिणाम है कि उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में दर्शन विषय में पी.एच.डी. की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त कर छात्रों के सम्मुख एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। आचार्य जी प्रारंभ से ही बडे प्रकृति प्रेमी रहे हैं, उन्होंने संस्था के प्रारम्भिक काल में अन्य वृक्षों के अतिरिक्त इस क्षेत्र में बहुत से पीपल के पेड़ लगवाये। वे हमेशा यही कहते आये हैं कि हर व्यक्ति को पेड़ अवश्य लगाने चाहिये। उनकी मान्यता है कि पेड कालीदास के मेघदूत की तरह बादलों को बुलाकर बरसात करवा देते हैं।

आचार्यजी के साथ काफी लम्बे समय तक रहने से मुझे उनको अत्यन्त निकट से समझने का अवसर मिला। वे हिन्दी व संस्कृत भाषाओं के उद्भट विद्वान होने के साथ-साथ किसी भी विषय पर चिन्तन करके ओजस्वी भाषण कर सकते हैं। अपने हर कार्य को बड़ी संजीदगी और साफ सफाई तथा यथावश्यक तजबीज से करते आये हैं। यदि कोई पत्र आदि लिफाफे में बंद करके उस पर टिकिट कुछ टेढ़ा-मेढा लग जाता तो भी वे टोकते थे और स्टाम्प को उतारकर दुबारा ठीक करवाते थे। उनके पास एक विशेष विद्या रही है कि वे जब मूड में होते थे तो लकड़ी की एक विशेष तिपाई पर दर्शकों को **Planchettic** का एक कार्यक्रम दिखलाते थे और एक किन्हीं कालू खां जी नामक व्यक्ति की आत्मा को बुलाकर उनसे तिपाई के संकेतों से बातचीत व प्रश्नोत्तर करते थे कुछ लोगों ने तिपाई पर रखे कागज पर कलम को स्वमेव चलते देखा है और प्रश्नकर्ता के प्रश्नो का उत्तर उस कागज पर अंकित हो जाता था। इस प्रकार वे उक्त आत्मा से सम्पर्क करके प्रश्नकर्ता की अनेक प्रकार की जिज्ञासा शान्त करते हुए उसकी समस्याओं का समाधान खोजते थे।

सन् १९५३ से १९७२ तक मेरा आचार्य जी से निरन्तर सम्पर्क रहा किन्तु सन् १९७१-७२ में शहर में और संस्था में श्री दूगड जी की हवेली से संबंधित एक अजीबो गरीब घटना की काली छाया के फलस्वरूप और स्व. श्री भंवर लाल जी दूगड द्वारा संस्थापित भारत विख्यात आयुर्वेदिक संस्था आयुर्वेद विश्वभारती का अस्तित्व मिटाने के लक्ष्य से ऐसा दुष्चक्र चला कि कुछ षडयंत्रकारियों की करतूत से आयुर्वेद विश्व भारती बंद हो गई और गांधी विद्या मंदिर से मेरी सेवायें भी समाप्त

कर दी गई, फिर भी मैं माननीय श्री चन्दनमल जी वैद तत्कालीन शिक्षामंत्री राजस्थान की अनुकम्पा से स्थानीय विशिष्ट शिक्षण संस्था बाल मंदिर के प्राचार्य पद पर नियुक्त होकर शहर में ही टिका रहा और उस दौरान आचार्य जी से भी यदाकदा मुलाकात होती रही लेकिन सन् १९७५ में परिस्थिति ऐसी उपस्थिति हुई कि मुझे शहर से भी बाहर जाकर आजीविकोपार्जन का साधन खोजना पड़ा। प्रयासों के फलस्वरूप में कलकत्ता होते हुए बिड़ला उद्योग समूह के अमलाई (मध्यप्रदेश) स्थित ओरियन्ट पेपर मिल्स में नियुक्त हुआ जहाँ लगभग चौदह साल तक सेवायें देकर सन् १९८८ में सेवानिवृत्ति के उपरान्त अपने घर वापिस आ गया। इस चौदह साल की अवधि मे पूज्य आचार्य जी से मेरा बहुत कम सम्पर्क रहा।

यहॉ आने के बाद सुना कि आचार्य जी एवं माताजी सरदार शहर पधारे हुए हैं और वे अपने शिष्य भाई बजरंग लाल सोनी के यहॉ ठहरे हुए हैं। मुझे वहॉ जाने पर आचार्य जी एवं माताजी से लम्बे अंतराल के बाद पुन: मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई-आचार्यजी का स्वास्थ्य भी ठीक दिख रहा था एवं वे अपनी हमेशा वाली खादी की पोशाक में पूर्ववत् थे, लेकिन मैंने जब उनके चरण स्पर्श कर उनसे बातचीत की तो उन्होंने मुझे पहचानने से ही इंकार कर दिया लेकिन फिर माताजी द्वारा पुरानी घटनाऍ और प्रसंग बताने पर काफी देर से पहचाना। मुझे बडा आश्चर्य भी हुआ और यह जानकर चिन्ता भी हुई कि आचार्यजी स्मृतिभ्रंश दोष से प्रभावित और पीड़ित हैं तथा उनकी स्मरण शक्ति शनै:शनै: कम होती जा रही है। यह सन् १९८८-८९ की बात है इसके उपरान्त तो आचार्य जी से कई अवसरों पर मुलाकात हुई।

सरदार शहर में पिछले वर्षों में आचार्य जी को सम्मानित और अभिनन्दित करने के लिए उनके अभिनन्दन समारोह के रूप में दो सार्वजनिक आयोजन भी हो चुके हैं। पहला आयोजन राजस्थान ब्राह्मण महासभा की स्थानीय इकाई, जिसका मैं अध्यक्ष हूँ, द्वारा श्री कृष्णा पब्लिक स्कूल में ब्राह्मण महासभा के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री भंवर लाल जी शर्मा, विधायक की अध्यक्षता में किया गया एवं दूसरा एक विशाल अभिनन्दन समारोह आचार्य जी के समस्त पुरातन छात्रों द्वारा बाल मदिर प्रांगण में आयोजित किया गया जिसमें शहर की समस्त बडी-बडी हस्तियों ने बढ़-चढकर भाग लिया एवं सहयोग दिया। दोनों ही समारोहों में मेरा भी यथोचित् योगदान रहा। इस अभिनन्दन समारोह में आचार्यजी का पूरा परिवार सम्मिलित हुआ था लेकिन पूज्यमाताजी का स्वर्गवास हो जाने के कारण उनकी कमी सभी को खल रही थी। आचार्य जी के ज्येष्ठ पुत्र डॉ भीमसेन शर्मा तो अपने पिताजी से संबंधित सभी लोगों से जीवन्त सम्पर्क बनाये रखते है। जयपुर से जब भी वे यहाँ आते हैं तो ऐसे प्रायः सभी लोगों से मिलकर जाते हैं।

अब वृद्धावस्था के कगार पर खड़ा हुआ जब मैं आचार्य जी की जीवन यात्रा पर एवं उनके

द्वारा सम्पन्न किये गये विविध कार्यकलापों पर दृष्टिपात करता हूँ तो ऐसा लगता है कि गुरूदेव ने इस क्षेत्र के लोगो को, प्रान्त व देश को निस्वार्थ भाव से कितना बेहिसाब दिया जिसका अभी तक कोई सही मूल्यांकन नहीं हो पाया है। उनका समाज पर एवं अपने शिष्य-प्रशिष्यों पर बड़ा भारी ऋण है जिसे चुकाना तो संभव नहीं है लेकिन उनके द्वारा प्रस्तुत उज्ज्वल आदर्शों पर चलने का प्रयास किया जा सकता है। आज आचार्यजी अत्यन्त वृद्ध और अशक्त हो गये है फिर भी वे हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। जमाना और आने वाली पीढ़ियाँ उनके त्याग, तपस्या और शिक्षा के क्षेत्र में विशेष अवदान को अवश्य याद करेंगे। आने वाले जमाने में ऐसे उच्च कोटि के विद्वान और अजातशत्रु महामानव मिलना असंभव सा लगता है। आचार्यजी का अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित कर उनको भेंट करना एक ऋषितुल्य वयोवृद्ध विद्वान को उनके जीवन काल में ही सच्ची भावाजंलि है। यह शुभ विचार और कल्पना जिन लोगों के मन, मस्तिष्क में प्रस्फुटित हुई वे सब महानुभाव और इसको कार्यरूप में परिणत करने वाले सभी सज्जन धन्यवाद के पात्र हैं। ऐसे सत्प्रयासों से ही महापुरूषों के आदर्श व उनका इतिहास जीवित रहता है। आचार्यजी जैसे विरल दीवाने लोगों के लिए ही किसी शायर ने कहा होगा "लाख होशियार बनाकर खालिक, एक मखमूर बना देता है, बेनूरों की बस्ती में भी किसी को हूर बना देता है''। आचार्य जी शिक्षा जगत के एक ऐसे मखमूर बन गये हैं, जिनको उनकी सेवाओं के लिए सदियों तक याद रखा जायेगा। अन्त में मेरी ओर से पूज्य आचार्य जी के दीर्घायुष्य की कामना के साथ हार्दिक अभिनन्दन रूप में मेरे कवि हृदय के निम्न उद्‌गार प्रस्तुत हैं :-

इस सूखे मरूस्थल में कहाँ आ गये मलयगिरि के ओ चन्दन
विद्वद्‌वर सरस्वती सुमन सत्प्रेरक तुमको सत् शत् वन्दन।
बहुत दूर आ निकले फिर भी विषधरों ने पीछा नहीं छोड़ा,
सर्प चूड़ दे, शोषण कर तव सुवास गुण सर्व निचौड़ा,
फिर भी लगता मन-मस्तिष्क में अभी बहुत कुछ बाकी है,
इस कृतघ्न जगत में अब भी तेरी उदार भावना साँची है,
ऋषितुल्य व्यक्तित्व के आकर्षण से पाकर प्रेरणा स्पन्दन,
विलम्ब सही-हम नत मस्तक हो करते हैं, तब अभिनन्दन।।

सरदार शहर, (राज.)

आचार्य गौरीशंकर हम सबके लिये वन्दनीय एवं श्रद्धास्पद हैं

दीपचन्द नाहटा

भारत की स्वतंत्रता के पूर्व सन् १९४१ में बीकानेर अंचल के सरदारशहर की भूमि पर बीकानेर साहित्य सम्मेलन का एक अभूतपूर्व अधिवेशन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है।

इस साहित्य सम्मेलन के सूत्रधार थे-आचार्य श्री गौरीशंकरजी-जिनका आज हम सोत्साह अभिनन्दन करते हुए गौरवान्वित हो रहे हैं।

आचार्य जी मेरे परम आदरणीय शिक्षक थे। उनसे मैंने जो भी शिक्षा ग्रहण की उसके लिए मैं अपने आप को धन्य मानता हूँ। उन्होंने सामाजिक जागरण के लिए शिक्षा की जो ज्योति प्रज्ज्वलित की वह सर्वविदित है।

आचार्य जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक होकर-राष्ट्र प्रेम की ज्योति से ज्योतिर्मय, महान भारत के सपने संजोये, कुछ कर गुजरने की अभिलाषा लेकर-तारूण्य के तेज से दीप्त होकर सरदार शहर पधारे थे। इनके आने के बाद ही बीकानेर साहित्य सम्मेलन के आयोजन का निर्णय हुआ। इस सम्मेलन में प्रथम बार बीकानेर अंचल के हिन्दी, राजस्थानी एवं संस्कृत के साहित्यकारों, विद्वानों, कवियों एवं मनीषियों का एक मंच तैयार हुआ। हिन्दी साहित्य के माध्यम से राष्ट्र प्रेम की अन्त:धारा भी प्रवाहित हो रही थी। एक नया जागरण आया। आचार्य जी के कुशल नेतृत्व में बाहर से पधारे विद्वानों के विचारों से सरदार शहर आन्दोलित हो उठा और सार्वजनिक सेवा के कार्यों मे नया स्पन्दन आया।

आचार्य जी ने अंग्रेजी रजवाड़ों, जमींदारों से मुक्ति दिलाने और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये लोगों को प्रेरित करने में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वाह किया-फलस्वरूप बीकानेर में सबसे पहले लोकप्रिय सरकार में शिक्षा और रेलमंत्री पद पर आसीन होकर शिक्षा एवं रेल के विस्तार में उन्होने अपना अतुलनीय योगदान दिया। तदुपरान्त वे रतनगढ़ से विधायक भी चुने गये। निर्मल उद्देश्य एवं मानव सेवा की भावना एवं जनता की सेवा का संकल्प लेकर उन्होंने राजनीति से सन्यास लिया और शिक्षा एवं संस्कृति के विस्तार हेतु जन सेवा के मार्ग पर चल दिये।

आचार्य जी के व्यक्तित्व में आकर्षण रहा है। मधुर सौम्य स्वभाव, प्रेम व सेवा की भाषा, कर्म करने की अटूट शक्ति, पारदर्शी निर्मल चरित्र-सहज ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे।

वह समय सामंती था-अत: संभलकर चलने की आवश्यकता थी। हिन्दी का नया मंच बना। साहित्य प्रेम का नया उन्मेष जगा, छात्र जुट गये, विद्वानों का सहयोग मिला, धनिक वर्ग भी मुक्त भाव से आगे आया और सरकारी तंत्र भी सहयोगी बना।

आचार्य जी के कारण युवक वर्ग में नया उत्साह जागा। यहाँ तक कि जब ग्रीष्मावकाश होता-आचार्य जी अपनी सेवा भावी छात्र टोली के साथ गाव-गांव जाकर प्रौढ शिक्षण एवं साक्षरता अभियान के कार्यों को सम्पादित करते। भयंकर ग्रीष्म की लू लपटों के बीच शिक्षा प्रसार के कार्य श्री आचार्य जी की कार्यदक्षता के पुष्ट प्रमाण हैं।

आचार्य जी के मन में एक नई प्रेरणा जगी-वह थी शिक्षा क्षेत्र में क्रान्ति गांधीवादी ढंग से, शिक्षा के क्षेत्र में जीवन को नये ढांचे में बदलने की परिकल्पना। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये गांधी विद्या मंदिर की स्थापना की गई। यह संस्था आज विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त कर सरदार शहर के गौरव की वृद्धि कर रही है। आचार्य जी इसके स्वप्नदृष्टा, इसके प्रेरक, इसके संस्थापकों मे से एक हैं। आज आचार्य जी हमारे बीच में हैं। इनका गौरवमय व्यक्तित्व इस संस्था को फलते-फूलते देखकर कितना आह्लादित है-इसका हम अनुभव कर सकते हैं।

आचार्य जी हमसे दूर रहते हुए भी सदा हमारे पास रहे हैं। इस बीच इन्होंने गुरूकुल कांगडी, ज्वालापुर आदि कई जगह विश्वविद्यालयों को अपनी योग्यता एवं प्रतिभा से सेवा प्रदान की। आचार्य जी शिक्षा शास्त्री, वेदों के गभीर अन्वेषक, सात्विक चरित्र, ज्ञान के उपासक, भारतीय संस्कृति के पुजारी एवं ओजस्वी प्रखर वक्ता हैं-जिसके कारण ये आज भी हम सब के लिए वन्दनीय एवं श्रद्धास्पद है।

आचार्य जी का सरदारशहर की धरती से गहरा संबंध रहा है उन्होंने अपने कृतित्व से अपने असाधारण व्यक्तित्व से हम सबके स्मृति पटल पर अमिट छाप छोडी है। अपनी शत दशकीय जीवन यात्रा मे इन्होंने बहुआयामी उत्कृष्ट, उत्साहवर्द्धक एवं प्रगतिशील कार्य किये। वे आनन्ददायक एवं प्रेरणास्पद हैं। इनके सत्कार्यों की सुरभि से सारा राजस्थान सुरभित हो रहा है और हम सब अपने आचार्य जी को यहाँ अभिनन्दित होते देख गद्-गद् और गौरवान्वित हो रहे है।

आप दीर्घायु हों, स्वस्थ प्रसन्न रहकर, सदा ज्ञान की प्रभा विकीर्ण करते रहें, यही हमारी प्रार्थना है।

सारा देश आपकी अमूल्य सेवाओं के प्रति श्रद्धावनत है और इस अभिनन्दन के द्वारा आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए हार्दिक उल्लास का अनुभव करता है। आपने जिन युवको को प्रोत्साहित किया था। वे भी जहाँ-जहाँ गए हैं-वहाँ जाकर उन्होंने आप को सदा स्मरण रखा है और वहाँ भी साहित्य, समाज व राष्ट्र के कार्यों में यथाशक्य सहयोग दिया है। यह भी आपका ही पुण्य प्रताप है।

आपके दीर्घायु होने की कामना करते हुए हम सभी आपके प्रति कृतज्ञतावश विनयावनत हैं।

नीलहाट हाऊस, कलकत्ता।

कतिपय संस्मरण

तोलाराम शर्मा

यह जानकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि पूज्य गुरूदेव डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य का अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है। मैं सरदार शहर का हूँ, अत: उनका सानिध्य मुझे बचपन में गंगा गोल्डन जुबली हाई-स्कूल, सरदार शहर में पढने के दौरान प्राप्त हो गया था। वे हमे संस्कृत पढ़ाते थे। उनकी पढाने की शैली इतनी प्रभावोत्पादक थी कि हम आज साठ वर्ष बीत जाने पर भी भूल नहीं पा रहे हैं। मैं उनसे संबंधित कतिपय संस्मरण यहाँ पेश कर रहा हूँ।

- सादा जीवन उच्च विचार -

श्रद्धेय गुरूदेव जैसे आज सादगी पसन्द हैं, उसी प्रकार अपनी युवावस्था में भी थे। जो सादा पहनावा आज है, वही उन दिनों भी था। खादी का पहनावा उनका प्रिय पहनावा रहा है। आज तो इस पहनावे को कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया जा रहा है। परन्तु वर्ष १९४४-४५ के पराधीनता के समय इस पहनावे का बहुत महत्त्व था। इस पहनावे वाले को तत्कालीन बीकानेर शासन राजमत न मानकर महात्मा गाँधीजी से प्रभावित राष्ट्रभक्त मानकर उसको सन्देह की दृष्टि से देखता था। उनके खादी के पहनावे का मेरे अन्तर्मन पर इतना प्रभाव पड़ा कि मैं भी खादी को पहनने लगा तथा आज भी खादी ही पहनता हूँ।

जहाँ तक उच्च विचारों का प्रश्न है, मुझे याद आता है कि वे हमें प्रार्थना के बाद उद्बोधन के समय सदा कहा करते थे कि सादा जीवन व्यतीत करते हुए उच्च विचारों वाले बनो। महापुरूषों के जीवन-चरित्र पढने की प्रेरणा दे सदा दिया करते थे। उच्च विचारों वाली पुस्तकें पढने के लिए उनका सदा ही सद् उपदेश रहा करता था। उन्हीं की प्रेरणा से मैंने महापुरूषों के जीवन चरित्र तो पढ़े ही, साथ ही ऐसी पुस्तकें भी पढ़ीं जो आगे बढ़ने को प्रेरित करती थीं। ऐसी ही पुस्तकों में मुझे स्मरण है कि मैंने अपने अध्ययन काल में स्वेट् मार्डन की "आगे बढ़ो" नामक पुस्तक पढी थी। ऐसी पुस्तकों का मेरे जीवन में बहुत प्रभाव रहा है। उच्च विचारों के बल पर ही मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर सका और सम्मानजनक पद से सेवा-निवृत्त हुआ। मेरी तरह ही उनके अनेक शिष्य इसी प्रकार प्रेरित होते रहे हैं।

- नगर प्रेम -

सरदार शहर के प्रति उनका विशेष प्रेम था और अब भी है। सरदार शहर को अग्रगण्य बनाने की उनकी आकांक्षा उनके उद्बोधनों में स्पष्ट झलकती थी। वे कहा करते थे कि सरदार

शहर में बड़े आदमी क्यों नहीं आते ? वनस्थली में बड़े लोग क्यों जाते हैं? वहाँ बड़ा काम हो रहा है। बालिका शिक्षा के क्षेत्र में वहाँ जो कार्य हो रहा है, वह प्रशंसनीय है। मैं चाहता हूँ कि सरदार शहर में भी भारत के सबसे बड़े महापुरूष पधारें। उनकी इस आकांक्षा का ही सत् परिणाम था कि हमारे प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी सरदार शहर पधारे।

नगर को महान् बनाने की आकांक्षा के कारण ही वे यहाँ विश्व विद्यालय की संस्थापना करना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने सेठ कन्हैयालाल जी दूगड़ के आर्थिक सहयोग से नगर में गाँधी विद्या मंदिर की स्थापना की। श्री दूगड जी त्यागी एवं धर्मात्मा पुरूष थे। कालान्तर में उन्होंने संन्यास ले लिया और पुष्कर के पास आश्रम में रहने लगे। उनका संन्यास का नाम स्वामी रामशरण जी था। दिनांक ०१.०८.२००५ को वे ब्रह्मलीन हो गए। गाँधी विद्या मंदिर के तत्वावधान में बहुत सी प्रवृत्तियों का संचालन हुआ। शिक्षा के साथ-साथ ग्रामोत्थान, आयुर्वेद व गौशाला का कार्य-संचालन भी हुआ। आज वह संस्था विश्व विद्यालय की मान्यता प्राप्त कर चुकी है। वनस्थली विद्यापीठ की तरह ही यह संस्था भी मान्य विश्व विद्यालय (Deemed University) है।

संक्षेपत: श्रद्धेय आचार्य जी की उत्कृष्ठ इच्छा का यह साकार रूप है।

- संस्कृत व हिन्दी प्रेम -

श्रद्धेय आचार्य जी संस्कृत के अध्यापक थे। अत: उनका संस्कृत प्रेम स्वाभाविक है। संस्कृत के साथ-साथ हिन्दी प्रेम भी उनमें कम नहीं है। सरदार शहर की "साहित्य समिति"नामक संस्था उनके हिन्दी प्रेम का ही उदाहरण है। इसी संस्था के सहयोग से अनेक छात्रों ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की परीक्षाओं में सम्मिलित होकर 'विशारद' व 'साहित्य रत्न' की उपाधियाँ प्राप्त कीं। गैंने भी इसी संस्था के सहयोग से कक्षा नवीं में पढ़ते हुए 'साहित्य रत्न' की उपाधि प्राप्त की थी। समिति के सदस्यो का प्रयत्न रहता था कि अधिक से अधिक छात्र हिन्दी की परीक्षाएँ दें। छात्रों के अध्ययन व अध्यापन की सुव्यवस्था संस्था ही करती थी।

मुझे याद पडता है कि पूज्य आचार्य जी कहा करते थे कि हमारे राज्य में (बीकानेर स्टेट में) अंग्रेजी के अध्यापकों व संस्कृत व हिन्दी के अध्यापकों में वेतन की समानता नहीं है। अंग्रेजी के अध्यापक अधिक वेतन पाते हैं, जबकि संस्कृत व हिन्दी के अध्यापक उनकी अपेक्षा कम। फिर वे कहते कि मेरा वश चले तो मै इन सबका वेतनमान समान कर दूँ। जब वे बीकानेर स्टेट में शिक्षा-मंत्री बने, तब उन्होंने अपनी कथनी को 'करनी' मे बदल दिया। संस्कृत व हिन्दी के अध्यापकों का वेतनमान भी अंग्रेजी के अध्यापकों के बराबर कर दिया। इससे उनका संस्कृत व हिन्दी प्रेम के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम भी झलकता है। राष्ट्रभाषा का सम्मान राष्ट्रप्रेम का ही लक्षण है।

- वक्तृत्व कला -

श्रद्धेय आचार्य जी एक प्रभावशाली वक्ता हैं। उन्होंने हम बच्चों को भी सदा वक्तृत्व कला में निपुण होने के लिए प्रेरणा दी। हमें वे कहा करते थे कि तुम लोग बोलने में हिचको मत। जंगल में जाकर पेड़ पौधों व पशुओं के सामने बेहिचक बोला करो। यह समझकर बोला करो कि ये सब श्रोतागण हैं। हमने इस विधि से अभ्यास किया, सफलता भी मिली। हम लोग स्कूल की साप्ताहिक सभाओं में अंग्रेजी व हिन्दी की छोटी-छोटी कहानियों से प्रारंभ करके साहित्यिक व सामाजिक विषयों पर भी बोलने लगे। वक्तृत्व कला के विषय में पूज्य गुरूदेव (आचार्यजी) का ही आशीर्वाद है कि मैं राजस्थान के कई महाविद्यालयों में व्याख्याता पद पर रहते हुए स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं में तो स्पष्टता से बोल ही सका, महाविद्यालयों के मंचों तथा सार्वजनिक सभाओं में भी वक्ता की भूमिका प्रभावशाली ढंग से निभा सका। मुझे याद है कि जब मैं कक्षा नवीं या दसवीं का छात्र था, उस समय सरदार शहर में गॉंधी चौक (गढ़ के सामने) में एक सभा हुई थी। भाई जी हनुमान मल जी बैद (रेडियो बाबू) अध्यक्ष थे। भाई जी चन्दन मल जी बैद सभा का संयोजन कर रहे थे। मुझे सर्व प्रथम वहीं इतनी बड़ी सभा में बोलने का अवसर मिला था। मैंने अनुभव किया कि इस सभा में सफलता पूर्वक बोलने के पीछे गुरूदेव आचार्य जी की कृपा ही काम कर रही थी।

- आयुर्वेद प्रेम -

श्रद्धेय आचार्य जी का आयुर्वेद प्रेम सर्वविदित है। साथ ही विश्वविद्यालय की स्थापना से कम की बात वे नहीं सोचते। सरदार शहर में उनका सार्वजनिक अभिनन्दन हुआ था। वे भाई पूर्णचन्द जी मीमाणी के घर विश्राम कर रहे थे। उस समय वे स्वस्थ भी नहीं थे। मैंने उन्हें प्रणाम किया। वे बोले कौन? मैंने अपना नाम बतलाया। वे बोले हमारा काम करोगे? मैंने कहा आपका आदेश शिरोधार्य। उन्होंने लेटे-लेटे ही कहा कि हम सरदार शहर में आयुर्वेद विश्वविद्यालय की स्थापना करने जा रहे है। आर्थिक सहयोग प्राप्त हो रहा है। तुम से इस कार्य में जो भी सहयोग हो सके, करते रहना। मैं सोचने लगा कि पूज्य गुरूदेव का हृदय कितना विशाल है कि वे निरन्तर पर हित, सामाजिक विकास, नगर विकास तथा देशहित का ही चिन्तन करते रहते हैं। ऐसे गुरूदेव के सानिध्य में रहकर मैं धन्य हो गया, ऐसा मैं अनुभव करता हूँ।

- कुछ पारलौकिक -

पूज्य आचार्य जी इस लोक की चर्चा ही नहीं, लोकहित के रचनात्मक कार्य भी करते रहे हैं। इसके साथ ही साथ वे पारलौकिक बातो से भी लाभान्वित करते रहे हैं।

(अ) भगवान् शिव व माता पार्वती से साक्षात्कार

पूज्य गुरूदेव चूरू में ऋषिकुल, ब्रह्मचर्याश्रम में पधारे थे। ऋषिकुल का वार्षिकोत्सव था।

मैं अपने मित्र प्रो. वासुदेव जी आर्य (संस्कृत विभाग) के साथ पूज्य आचार्य जी के दर्शनार्थ उपस्थित हुआ था। मेरे मित्र 'आर्य साहब' आर्यसमाजी थे। अत: साक्षात्कार की बात वे आचार्य जी के मुख से स्वयं सुनना चाहते थे। श्री 'आर्य साहब' को मैंने यह घटना किसी समय सुना रखी थी। यह घटना इस प्रकार है -

आचार्य जी ने बताया था कि वे Ph.D. करने के लिए कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र में थे। छात्रावास की छत पर बैठकर एकाग्र मन से चिन्तन कर रहे थे। चिन्तन का विषय का "न्याय वैशेषिक में आत्मा''। इसी समय मेरे सम्मुख नन्दी पर सवार होकर भगवान शिव व माता पार्वती प्रकट हुए। उन्होंने मुझे कहा कि 'आचार्य, इस विषय में कोई कठिनाई हो तो कहो'। मैंने कहा कि इस समय तो कोई कठिनाई नहीं है। भगवान शिव ने कहा कि कभी कोई कठिनाई हो तो गणेश के दरबार में उपस्थित हो जाना। इतना कहकर वे अर्न्तध्यान हो गए। मैंने गुरूदेव से जानना चाहा कि क्या यह स्वप्न था? गुरूदेव ने कहा कि यह स्वप्न नहीं था। साक्षात् दर्शन हुए हैं।

इस घटना के बारे में मेरे जैसा अल्पज्ञ क्या टिप्पणी कर सकता है? हॉ, योग दर्शन महर्षि पतंजलि कृत- में' विभूति पाद में इस प्रकार की विभूतियों का वर्णन है। होशियारपुर के मानवता मंदिर के संस्थापक ब्रह्मलीन संत बाबा फकीर चन्द जी ने अपने प्रवचनों में मन की एकाग्रता से ऐसा होना बतलाया है।

(ब) भगवान शिव से वार्तालाप - आचार्य जी अपने पूर्वोक्त सार्वजनिक अभिनन्दन के उपरान्त श्री सहीराम पारीक के निवास स्थान पर पधारे थे। मैं भी वहीं उपस्थित था। मुझे उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे बारे में 'शंकर' से पूछ देता हूँ और उन्होंने आवाज लगाई "शंकर-शंकर-और कुछ कहा भी, फिर गुरूदेव ने मुझे कहा कि 'शंकर' तुम से प्रसन्न हैं। जो भी साधना तुम कर रहे हो, वह ठीक है, करते रहो-मुझे ऐसा-लगता है, वे अलौकिक शक्तियों से मानसिक सम्पर्क बनाए हुए हैं।

(स) तिपाई के माध्यम से आत्माओं का आह्वान - मुझे ऐसा याद पड़ता है कि-सरदार शहर में स्कूल के सभाकक्ष में हमने उनके द्वारा तिपाई के माध्यम से आत्माओं को भी देखा है। परन्तु मैं न तो उस समय इस विषय को जानता था और न इस समय ही इस विषय पर अधिक जानता हूँ। अत: मैं टिप्पणी करने की स्थिति में नहीं हूँ।

मैं पूज्य आचार्य जी के सानिध्य में अधिक नहीं रहा हूँ जितने समय-सम्पर्क में रहा और जो कुछ अनुभव किया उसका यह संक्षिप्त वर्णन मात्र है।

अन्त में मैं पूज्य गुरूदेव के स्वस्थ व दीर्घजीवन की कामना करते हुए उनके श्री चरणों में नतमस्तक होकर प्रणाम निवेदन करके अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

त्रिकालदर्शी, सादगी के प्रतीक, आध्यात्म साधना एवं गांधीवादी विचारों में अवस्था प्राप्त मनीषी : डॉ. गौरीशंकर आचार्य

जयबहादुरसिंह शेखावत, एम.ए.,एल.एल.बी
कार्यकारी अध्यक्ष
भारतीय गौवंश रक्षण संवर्धन परिषद्
राजस्थान न्यास, जयपुर

डॉ. गौरी शंकरजी आचार्य स्वतंत्रता सैनानी और बीकानेर राज्य की प्रथम पापूलर मिनिस्टरी में शिक्षा एवं रेलवे मंत्री थे। आज ९०-९१ वर्ष की आयु में भी वे अपने आध्यात्मिक प्रवचनो में ज्ञान के भण्डार हैं। चौमू हाउस के जगन पथ बी-१९-बी में जब वे बाहर से जयपुर पधारते तो हर रविवार सरदार पटेल मार्ग पर उनके सुपुत्र के निवास के समीप भजन सत्संग होता तो तुरन्त अपने आप अपने मोटी खादी कुर्ते में विहिप कार्यालय में सत्संग के भजनों को सुनने पधार आते। मदन मोहनजी मालवीय की कृपा से दर्शनशास्त्र की उच्च उपाधि से सुशोभित होते हुए वे आज भी सादगी एवं सरल स्वभाव के है। सत्संग में भजन सुनते हुए उनसे प्रवचन हेतु निवेदन करने पर प्रथम वाक्य में बोले "आप भजन कर रहे थे और मुझे श्री हनुमानजी के प्रत्यक्ष दर्शन हो रहे थे।

३०-४० वर्ष राजनीति में रहने के पश्चात् आपने राजनीति से मुँह मोड लिया और साहित्य लेखन, आध्यात्म साधना और स्वतंत्रता सैनानी बाबा बलवंत सिंह जी के साथ आप कई वर्षों तक गौसेवा संघ दुर्गापुरा में ट्रस्टी रहे वहाँ पूर्व अध्यक्ष स्व. ब्रह्मदत्त जी के समय प्रतिदिन गीता पाठ भी प्रारम्भ होता था वह आपकी ही प्रेरणा से प्रारम्भ हुआ आज भी चालू है।

भविष्य में दुर्घटना होगी उसे टालने हेतु त्रिकालदर्शी के नाते आप भविष्यवाणी कर संकेत दे देते हैं। ऐसे महान् विचारक, सादगी के प्रतीक पं. डॉ. गौरी शंकर जी के जीवन पर लिखी जाने वाली ग्रंथमाला आज कल की नई पीढी के समाज सेवकों को प्रेरणा देगी। मैं उनके जीवन पर दो चार दृष्टान्त लिखते हुए अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करते हुए अभिनन्दन ग्रंथ समिति के सचिव श्रद्धेय स्वतंत्रता सैनानी श्री गोविन्द नारायण जी के इस सारस्वत कार्य की सफलता के लिये मंगल कामना करते हुए पं. डॉ. गौरीशंकर आचार्य के शतायु होने की प्रभु से प्रार्थना करता हूँ। अब और अधिक लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। यदि ५ नवम्बर, २००५ को इस अभिनन्दन समारोह मे भाग ले सका तो अपना सौभाग्य मानूँगा।

कार्यालय भारत माता मंदिर, जयपुर

दिव्यानुभूतियाँ-संस्मरण
योगीश्वर श्री कृष्ण का बाल रूप में दर्शन

तनसुखराम शर्मा
एम.ए प्रभाकर, आयुर्वेदरत्न
पूर्व अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ
शाखा श्री गंगानगर (राज.)

एक बार दिव्यानुभूतियों के संदर्भ में "श्री आचार्य चरण'' से वार्ता चली तो उन्होंने एक घटना का वर्णन किया।

गौधन हित में गौशालाओं के संरक्षक प्रतिनिधियों की प्रान्तीय स्तर की बैठक में भाग लेने जा रहा था। बीच में ही रात्रि विश्राम करना पड़ा। रात्रि में गौ हित के चिन्तन में नींद आ गई और स्वप्न में भगवान श्री कृष्ण गोपाल रूप में दिखाई दिये। मन में प्रसन्नता हुई। मैं गौशाला में ही सोया था। मैंने भगवान से कहा अच्छे समय में आपने दर्शन दिये किन्तु मुझे आपकी कोई निशानी? भगवान ने मुझे अपना एक चित्र दिया और मैंने उसे तकिये के नीचे रख लिया। पुन: आनन्द की नींद आ गई। उठकर स्वप्न पर सोचने लगा और तकिया उठाकर देखा तो सचमुच भगवान श्री कृष्ण का चित्र तकिये के नीचे मिला। मैंने उसे उठाकर श्री गीताजी की पुस्तक में रख लिया।

क्या यह स्वप्न है ? धन्य हैं ऐसे स्वप्न दृष्टा।

इस प्रकार की अनेक घटनाएँ युगान्तरों से पुराणोक्त कथाओं में वर्णित हैं, प्रत्यक्ष देव सम्पर्क की योग्यता इस युग में आपकी तपस्या एवं साधना का ही प्रमाण है।

३१ राजपूत कॉलोनी, जवाहर नगर
श्री गंगानगर-३३५००१(राज.)

तपः पूत डॉ. गौरीशंकर मेरे प्रेरक

बैजनाथ पंवार (भू.पू. अध्यापक)

सन् १९४१ में जब मैं मेहरासर चाचाण तहसील सरदार शहर के एक प्राईवेट स्कूल में अध्यापक था। आचार्य जी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपकी प्रेरणा से मैंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की विशारद एवं तत्पश्चात् "साहित्य-रत्न'' परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। उन्हीं की कृपा से मुझे तत्कालीन बीकानेर स्टेट की अग्रणी संस्था, पब्लिक लाईब्रेरी, सरदार शहर में पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्य करने का शुभावसर प्राप्त हुआ।

पूज्य आचार्य जी उस समय सरदार शहर के हाई स्कूल में संस्कृत अध्यापक के पद पर कार्यरत थे। हिन्दू विश्व विद्यालय काशी से दर्शनशास्त्र की सर्वोच्च उपाधि से अलंकृत होकर आए थे। सरदार शहर आने से पूर्व आप कई दिनों तक महामना मदन मोहन जी मालवीय के प्राईवेट सैक्रेट्री के रूप में भी अपनी सेवाएँ दे चुके थे।

आप केवल अध्यापक ही नहीं थे, अपितु यहाँ आने पर अल्पावधि में छात्रों-युवकों के हृदय सम्राट बन गये। उनके प्रेरणा स्रोत बनकर हिन्दी की प्रगति एवं विकास के लिए "हिन्दी साहित्य समिति'' की स्थापना की। हाई स्कूल में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओं का केन्द्र चालू करवाया। स्थानीय हाई स्कूल में इन परीक्षाओं का केन्द्र था-स्वयं केन्द्राध्यक्ष थे। समिति के माध्यम से कभी कवि सम्मेलन, गोष्ठियाँ, भाषण एवं निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता था, यही नहीं, किशोर साहित्य मार्त्तण्ड आदि तीन हस्तलिखित पत्रिकाएँ भी प्रतिमाह छात्र बन्धु निकाला करते थे।

आपने सन् १९४३ में सरदार शहर पब्लिक लाईब्रेरी के माध्यम से तत्कालीन बीकानेर स्टेट के समस्त पुस्तकालयों का सम्मेलन भी शिक्षा विभाग के डाईरेक्टर जुगल सिंह खींची की अध्यक्षता में आयोजित किया था।

"बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन'' की स्थापना भी आपकी हिन्दी प्रचार-प्रसार की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी।

राजस्थान विधानसभा के प्रथम निर्वाचन में विजयी पं. माधवप्रसाद शर्मा के दिवंगत होने पर उप-चुनाव में आप विजयी होकर विधायक भी बने, किन्तु दलगत राजनीति आपकी प्रकृति के अनुकूल न थी। बीकानेर स्टेट में जब उत्तरदायी शासन हुआ उस समय आपने शिक्षामंत्री के रूप में विशारद एवं साहित्य-रत्न अध्यापकों को बी.ए के समक्ष ग्रेड दिलवाकर हिन्दी भाषा को अत्यधिक महत्त्व दिलाया।

सन् १९५० में सरदार शहर में श्री कन्हैयालाल जी दूगड़ (स्वामी रामशरण जी महाराज, अब दिवंगत) के साथ मिलकर आपने गांधी विद्या मंदिर की स्थापना की जो वर्तमान में मान्य विश्वविद्यालय के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

मेरे पर आचार्य जी की सदैव विशेष अनुकम्पा रही है। वैसे तो उनके अनेक संस्मरण हैं, किन्तु यहाँ मैं उनके दो संस्मरण प्रस्तुत कर रहा हूँ :-

१) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की "विशारद'' परीक्षा के लिए "प्रथमा'' या मैट्रिक होना अनिवार्य था, इन दोनों में से मैं एक भी नहीं था, किन्तु आपने मुझे विशेष रूप से सिफारिश कर "विशारद'' की स्वीकृति दिलवाई। फलस्वरूप में, विशारद एवं साहित्य-रत्न हो सका।

२) "विशारद'' की तैयारी आप मुझे अपने घर पर करवाया करते थे। मै पॉच-सात दिनों में मेहरासर से उनके घर आकर अध्ययन किया करता था। एक दिन पढ़ाते-पढ़ाते मुझे कहा, "मास्टर साहब। आपने भोजन कर लिया। मैंने झूठ ही "हॉ'' कह दी। कहॉ किया?''आपके इस प्रश्न का मैं उत्तर न दे सका। उन्होंने पहिले मुझे भोजन फिर अध्ययन करवाया। बाद में तो अनेक बार आपके घर माताजी के हाथ से भोजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपनी विशेष कृपा से दो-तीन बार मेरी कुटिया में भोजन कर मुझे उपकृत किया।

ऐसे गुरूवर आचार्यजी ने सहस्रों युवकों को साहित्यिक एवं सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रेरित किया। उन्हीं में से अणुव्रती मोहन भाई, श्री दौलत राम सहारण, डॉ. बुधमल श्याम सुखा, डॉ. मूलचन्द सेठिया, श्री दीपचन्द नाहटा, श्री गणेश मल दूगड, श्री पन्नालाल पेडीवाल, श्री पूर्णचन्द मीमाणी, कामरेड़ मोहन लाल, श्री राधाकृष्ण गोयल एवं श्री रावत राम आर्य प्रभृति अनेक कार्यकर्ता हैं, जिनमें कई दिवंगत भी हो चुके हैं।

तत्कालीन बीकानेर स्टेट में सर्वप्रथम साहित्यिक सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में जागृति का शंखनाद फूंकने वाले आचार्यजी ही हैं। वर्तमान में सरदार शहर की प्रतिष्ठा को राजस्थान की सीमाओं को पारकर भारत के मानचित्र पर रेखाकित करने का श्रेय यदि गुरूवर गौरीशंकर जी को दिया जाये तो इसमें अतिश्योक्ति नहीं होगी।

वयोवृद्ध शिक्षाविद् अनेक संस्थाओं के संस्थापक गुरूवर आचार्य गौरीशंकर जी की ९१वीं जन्मतिथि पर उन्हें सपरिवार स्वस्थ एवं शतायु होने की मंगल कामना परमपिता परमात्मा से करता हूँ।

वार्ड नम्बर-१८, एस.बी.बी.जे. के पीछे

चूरू-३३१००१

श्री गौरीशंकराष्टकम्

डॉ. प्राणगोपाल आचार्य, प्राचार्य
एम.ए. (हिन्दी-संस्कृत) पीएच.डी
श्रीरंगलक्ष्मी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
महन्त
ध्यानदास कुन्ज, वनखण्डी महादेव
मैनेजिंग ट्रस्टी
तुलसी राम दर्शन स्थल, ज्ञानगुदडी
मैनेजिंग ट्रस्टी एवं सेवायत
विश्वेश्वरी अभय कुन्ज, गोपाल बाग वृन्दावन

श्री गौरीशंकर वन्दे विवुधर्षभमीश्वरम्।
वाचामर्थैश्चे संप्राप्यम् सर्वलोक नमस्कृतम्।।१।।
गौरीशंकर आचार्य: शिष्यप्रशिष्य संयुत:।
कुरूते ज्ञानसमृद्धिम् भारतेऽस्मिन् विशेषत:।।२।।
एकनवतिके वर्षे आयुषोऽस्य महात्मन:।
प्रवेशे शुभवेलायाम क्रियते हयभिनन्दनम्।।३।।
शिक्षा साहित्य संसारे नान्योऽस्ति सदृश: पर:।
संस्कृते: रक्षक: श्रीमान् एष एव मतिर्मम।।४।।
श्री गीताज्ञान सम्पन्न: कर्मयोगी सुधीवर:।
स्वदेशं सेवते नित्यम् इति नास्ति तिरोहितम्।।५।।
गायन्तं भायते या सा गायत्री सर्व रक्षिका।
तस्या आराधको वन्द्य: विभाति जगतीतल्मे।।६।।
कुर्वन् सर्व जनोत्कर्षम् स्वशिष्यैरभिनन्दित:।
लोमशायुष्यमासाद्यं वर्धतामभिवर्धताम्।।६।।
सन्तो बुधा नरा नार्य: गौरीशंकर सेवका:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग् भवेत्।।७।।
अभिनन्दनवेलायां श्रीगौरीशंकराष्टकम्।
प्रोक्तं प्राणेन कुरूतां मनो मोदं महात्मनाम्।।१०!!

२६, गोपाल बाग, वृन्दावन-२८११२१ उत्तरप्रदेश

गौतम पुत्रों में शिरोमणी-डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

प्रो. डॉ. वेदप्रकाश त्रिपाठी, प्राचार्य (से.नि.)

"लोकजीवन'', शारदा प्रेस, भीलवाड़ा के संस्थापक स्व. पं. चन्द्र शेखर जी शास्त्री ने १९६८ (शरदकाल) में अखिल भारतीय गुर्जर गौड़ ब्राह्मण महासभा की कार्यकारिणी उपनिवेशन का आयोजन शारदा प्रेस, भीलवाड़ा के परिसर में किया था। डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य उस कार्यकारिणी उपनिवेशन में जयपुर के श्री गोविन्द नारायण जी खादी वाला एवं अजमेर से मैं भी उपस्थित था-महासभा के अजमेर में सम्पन्न हुए वृहद् अधिवेशन में, मैं अ.भा. गुगोब्रा युवक संघ का संस्थापक अध्यक्ष निर्वाचित हुआ था। अत: महासभा कार्यकारिणी का पदेन सदस्य था। तब श्री गौरीशंकर जी से साक्षात्कार हुआ था। मैंने पाया वे अंतर्ज्ञानी मस्तिष्क, उदार हृदय और भव्य आध्यात्मिकता से परिपूर्ण व्यक्तित्व हैं। उनकी त्याग, तपस्या, साधना, ध्येयनिष्ठा, कर्मठता और सद् विचार श्लाघनीय हैं। उन्हीं की प्रेरणा और परिश्रम का प्रतिफल है सरदार शहर का गांधी विद्या मंदिर जो आज ग्रामीण विश्वविद्यालय के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्य एवं अनुदान प्राप्त है। यशस्वी व्यक्ति की यह यशस्वी धरोहर आज भी यशस्वी बनी हुई है। इसके लिए डॉ. गौरीशंकर आचार्य, जो गौतम पुत्रों में शिरोमणी हैं, बधाई के पात्र हैं।

ऐसे विद्वद्वरेण्य, सकल गुण निधानं, सुहृदमित्र को मेरा कोटि-कोटि नमन एवं दीर्घायु की कामना।

कौशल कुन्ज, १-क-८,
शास्त्री नगर, अजमेर-३०५००६

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य जैसा मैंने उन्हें देखा व पाया

प्रो. ओम प्रकाश दुबे

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व समाज में अलख जगाने हेतु अनेक महान् विभूतियों ने गुर्जर गौड समाज में जन्म लेकर न केवल जाति समाज वरन् राजस्थान व समस्त भारतीय समाज में अपने जीवन दर्शन व सात्विक मनोभावों व सादे जीवन तथा सद् कार्यों से सक्रिय योगदान देकर महर्षि गौतम व भारत माता का सम्मान बढ़ाया है, आचार्य जी उसी श्रृंखला में एक ज्वाजल्यमान रत्न है। जो मनसा, वाचा, कर्मणा वेदज्ञ ब्राह्मण होने के साथ-साथ गाँधीवादी, स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षा शास्त्री तथा समाजसेवी हैं। उनकी मधुर एवं स्नेह भरी वाणी स्वतः ही अपरिचितों को भी उनके आत्मीयभाव के कारण अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी।

मैंने सर्वप्रथम गुर्जर गौड़ महासभा के अजमेर अधिवेशन के समय उनके दर्शन किए थे। उनकी शालीनता व विद्वता ने मुझे प्रभावित किया। पुनश्च जब उनके छोटे पुत्र श्री कृष्ण चंद्र शर्मा दयानन्द कॉलेज अजमेर में अध्ययनरत् थे व मैं वहाँ प्राध्यापक था, तो आचार्य जी का अजमेर आगमन हुआ। इनके दर्शन लाभ का अवसर तो मिला ही, उनसे बातचीत व ज्ञान चर्चा का भी अवसर मिला। मैं इतिहास का छात्र व प्राध्यापक रहा हूँ, उनसे वार्ता के दौरान इतिहास के उनके गहन अध्ययन व विषय पर उनके अधिकार ने मुझे न केवल प्रभावित किया वरन् भारतीय संस्कृति के अध्ययन की दृष्टि से मुझे उन्होंने नई दिशा प्रदान की मैं इनका ऋणी हूँ। गाँधी दर्शन पर भी उनसे चर्चा हुई, उनके गहन ज्ञान का लाभ मिला।

मालवीयजी के विश्वविद्यालय में शिक्षित व दीक्षित यह महापुरूष सांसारिक आकर्षणों से ऊपर था। गाँधीवाद, सात्विकता का भाव व ऋषि मुनियों का सा निवृत्ति भाव उनके व्यक्तित्व को प्रकाशमान किए हुए था।

उस समय महाविद्यालय स्तर पर बढ़ती अनुशासन हीनता को लेकर भी वे चिन्तित प्रतीत हुए, पर उन्होंने यही कहा-संस्कार युक्त शिक्षा ही जीवन के मूल्यों की रक्षा कर सकती है। आज तो शिक्षा लक्ष्यहीन व स्वार्थ युक्त होकर कल्याण भाव से विमुख हो रही है, यह चिन्ता का विषय है। परमेश्वर अवश्य ही मार्गदर्शन करेंगे। एक बात जो इन्होंने कही वह यह थी, कि अध्यापक जीवन के आदर्शों को अपने में साकार कर समाज को सही दिशा दे सकते हैं। राष्ट्रीयता व देशसेवा का

भाव जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विलुप्त होता जा रहा है, इसे जागृत करने का उत्तरदायित्व अध्यापकों का ही है।

वास्तव में वे सच्चे गाँधीवादी, शिक्षाशास्त्री स्वतंत्रता सैनानी व मरूधरा में राष्ट्रीय चेतना व ज्ञान की मशाल के वाहक थे। जीवनभर जीवन के मूल्यों, आदर्शों, ब्राह्मणत्व व सामाजिक उत्थान का ध्वज उठाए रहे। उनका जीवन दर्शन स्तुत्य है। धन्य है वह माता जिसने समाज को ऐसा बहुमुखी प्रतिभायुक्त रत्न प्रदान किया, वे सदा प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे। ऐसे महापुरूष सदियों में जन्म लेते हैं। उनकी सेवाओं व कार्यों पर समाज को गर्व है।

सच्चाई पर मरमिटे, इज्जत पर बलि होय।
अमर होय इतिहास में, याद करे सब कोय।।

स्व. प. जगन्नाथ जी उपाध्याय की इन पंक्तियों के साथ मैं उनके प्रति अपनी श्रृद्धाभिव्यक्त करता हूँ।

अजमेर

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य मेरे पूज्यनीय

डॉ. गोविन्द सिंह सहारण
सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,

मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आदरणीय डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य अपने जीवन के ९० वर्ष पूर्ण कर ९१वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। मै अभिनन्दन ग्रंथ समिति के सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने एक महान व्यक्तित्व के बारे में यह शुभ कार्य करने का बीड़ा उठाया जो कि आने वाली पीढियों के लिए प्रेरणा स्रोत होगा।

मेरा सम्पर्क आदरणीय आचार्य जी से १९५५-१९६० के दशक में उस समय हुआ। जब मैं गांधी विद्या मंदिर, बेसिक हाई स्कूल का छात्र था। मैं आचार्य जी के अनुज पुत्र श्री कृष्ण का सहपाठी एवं जेष्ठ पुत्र डॉ. भीमसेन शर्मा का मित्र रहा हूँ। श्री आचार्य जी की मध ुर वाणी, प्यारा स्वभाव, सादा जीवन, उच्च विचार, मानव प्रेम, देश भक्ति मुझे हमेशा प्रेरित करती रही है। ऐसे महान व्यक्तित्व का अगर एक भी गुण हम अपने जीवन में धारण करलें तो वह एक अच्छे इन्सान एवं राष्ट्र निर्माण में एक पथ प्रदर्शक होगा।

पौध रोग विभाग, हरियाणा कृषि विश्व विद्यालय
हिसार-१२५००१

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य का सहज जीवन

सत्यपाल वर्मा
चित्रकार

आचार्य जी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में आचार्य की सर्वोच्य उपाधि प्राप्त कर मरूभूमि मे शिक्षा, संस्कृति व समाज सेवा के लिए समर्पित होकर शिक्षक के रूप में समाज सेवा का व्रत लिया। स्वतंत्रता सेनानी भी रहे। संस्कृति व शिक्षा के क्षेत्र में कई महान् कार्य किये जो सर्वविदित हैं। मैं यहॉ उनको प्रकृति से मिले सहज और सादा जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन कर रहा हूँ, जो अक्सर अनछुई रह जाती हैं और समाज को आदर्श संदेश देती हैं।

श्री गंगानगर राजकीय हाई स्कूल में आचार्य जी ने शिक्षक के रूप में पदार्पण किया। सौभाग्य से उस समय मैं भी इसी स्कूल का छात्र था। तभी आचार्य जी के प्रथम दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्रथम बार में ही स्कूल के सभी छात्र इनके सौम्य स्वभाव और व्यक्तित्व से प्रभावित हुए व श्रद्धा भाव रखने लगे। छात्र ही नहीं सभी शिक्षक भी पूर्ण सम्मान करते थे। दुबली पतली स्वस्थ काया, खादी की धोती और खादी का छोटा कुर्ता व देसी जूती पहने आकर्षक व्यक्तित्व, सज्जन, अध्यात्मिक व आदर्श पुरूष लगते थे। ऐसा लगता था कि कोई दूसरे गॉधी चले आ रहे हैं। सदैव मुख पर मधुर मुस्कान ही रहती थी। मुस्कान रहित कभी इनका चेहरा देखा ही नहीं। अभी ९० वर्ष की आयु मे भी उसी मुस्कान के साथ बोलते हुए ही मिलते हैं।

स्वभाव इतना नम्र कि क्रोध इनको कभी छुआ ही नहीं। एक बार की घटना है कि आचार्यजी ने अपनी एक दुकान किसी हकीम साहब को किराये पर दी हुई थी। किराया बहुत कम था परन्तु आचार्य जी ने कभी किराया बढ़ाने की बात नहीं की। घर के सदस्य दुकान खाली करवाने के लिए बोलते थे। एकदिन मैं भी इनके घर पर बैठा हुआ था। घर के सदस्यों द्वारा दुकान खाली करवाने के लिए कुछ बोलने पर आचार्यजी को थोड़ा क्रोध आ गया। इनके मुख से केवल एक ही वाक्य निकला कि "अपने आप खाली कर देगा, मैं अपना स्वभाव कैसे बदल दूँ" और दूसरे ही क्षण बिल्कुल साधारण और वही मुस्कान जो उनके चेहरे पर रहती थी। जैसे कोई बात ही नहीं हुई। मैं आश्चर्य से इन्हें देखता रहा। एक क्षण में सब क्रोध विसर्जित हो गया, जैसे क्रोध इन्हें हुआ ही नहीं। इससे पहले और इसके पश्चात् इनके चेहरे पर कभी क्रोध देखा ही नहीं।

बीकानेर राज्य की पहली लोकप्रिय सरकार में शिक्षामंत्री बने। इनके बंगले पर एक सज्जन

किसी कार्य हेतु मिलने आये। आचार्य जी पैदल ही बाहर से आ रहे थे। उस सज्जन ने मुख्य द्वार पर ही पूछा कि मुझे मंत्री जी से मिलना है। आचार्य जी अतिथि कक्ष में बैठने के लिए कहकर अंदर चले गये। थोडे समय पश्चात् आचार्य जी कक्ष में आये और बोले क्या काम है? सज्जन बोले मुझे मंत्री जी से ही मिलना है, उन्हीं से काम है। मैं ही मंत्री हूँ, आचार्य जी बोले। वह सज्जन आश्चर्य से कुछ देर देखता रहा कि इतने सज्जन और सरल व्यक्ति जिन्हें मैं पहचान नहीं पाया।

एक दिन बच्चे कार लेकर बाजार चले गये। लौटने पर बच्चों से कहा यह कार सरकार के कार्य हेतु है। आगे से कभी लेकर मत जाना। उसका पैट्रोल आदि का खर्चा भी आचार्य जी ने स्वयं वहन किया। स्वयं भी व्यक्तिगत कार्य के लिए कार को प्रयोग में नहीं लेते थे।

आचार्य जी हिन्दी भाषा के पक्षधर रहे। पहले स्कूलों में अंग्रेजी कक्षा तीन से पढाई जाती थी। अपने मंत्रीत्व काल में इन्होंने कक्षा पॉच से अंग्रेजी प्रारम्भ करवाई।

जब श्री गंगानगर में शिक्षक बनकर आये तो शहर में हिन्दी की गोष्ठियॉ प्रारम्भ कीं। हर रविवार रात्रि में गोष्ठी मुहल्लेवार होती थीं। छात्र भी उस कार्य में सहायक होते थे। प्रोजेक्टर पर स्लाईडस दिखाकर भाषण द्वारा लोगों को देश की संस्कृति और महापुरूषों के बारे में ज्ञान देते थे। शहर में कई वाचनालय भी खुलवाये। उनमें दैनिक समाचार पत्र और पत्रिकायें आती थी। सब चन्दे से चलता था। अच्छी संख्या में लोग पढने आते थे। उस समय किसी-किसी घर में ही समाचार पत्र आते थे।

अल्पाहारी ऐसे कि कोई सन्यासी भी शायद ही हो। मिष्ठान की बात हो तो बादाम की बर्फी से कम नहीं। फल की बात हो तो सेव से कम की बात नहीं। खाते कितना? एक बादाम की बर्फी और एक फॉक सेब की। खिलाने वाला भी आश्चर्य करता। भोजन में एक पतला फुलका, थोडी सी सब्जी या दाल। दोपहर पश्चात् कभी खाने की इच्छा होती तो दो चम्मच दाल से ही सतुष्ट हो जाते।

केवल शिक्षा, संस्कृति, समाज सेवा और गॉधी जी की शिक्षा पद्धति को ही आदर्श मानकर उनके लिए पूर्ण रूप से समर्पित रहे। युवापीढ़ी को आचार्य जी के सादा जीवन और गॉधी विचारधारा से प्रेरणा लेनी चाहिए।

७/१९, विद्याधर नगर
जयपुर-३०२०१२

शिष्य की कलम से
डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

हरिदान चारण

आचार्य श्री का कुछ काल तक शिष्य रहने का परम सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था, जबकि उन्होंने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय, काशी से दर्शनशास्त्र में आचार्य की उपाधि प्राप्त कर बीकानेर राज्य की ओर से ऑफर की गई एक उच्च प्रशासनिक सेवा को ससम्मान त्यागते हुए राज्य में एक शिक्षक के रूप में सेवा करना स्वीकार किया था, और प्रथमत: सरदारशहर स्थित "श्री गंगा गोल्डन जुबली हाई स्कूल'' में शिक्षक के रूप में नियुक्त होकर देश व समाज की सेवा करना स्वीकार किया। उस समय मैं उक्त हाई स्कूल की कक्षा ६ का छात्र था, जहाँ हम लोगों को देववाणी संस्कृत भाषा, आचार्य जी के श्रीमुख से पढ़ने का सुअवसर मिला।

मुझे यह भली प्रकार से याद है कि उस समय रियासत के शासकों के प्रति तत्कालीन राजनेताओं द्वारा आग उगली जा रही थी। उक्त आन्दोलन में आचार्यजी का क्रियात्मक भाग बडा ही शालीन सौम्य व प्रभावशाली रहा। मैंने उन्हें कभी भी किसी शासक के प्रति द्वेषजनित कटु शब्दों का प्रयोग करते नहीं सुना। यद्यपि इन्होंने राजतंत्र का प्रबल विरोध किया था, किन्तु उनका वह विरोध किसी व्यक्ति का न होकर केवल प्रणाली विशेष का था।

लिखने की आवश्यकता नहीं कि पंडित जी का सम्पूर्ण जीवन बडा सीधा सादा सरल व मनमोहक रहा है। मैंने उन्हें सदा हंसमुख व प्रसन्न मुद्रा में देखा है।

इस अवसर पर मैं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी को भूल नहीं सकता, जिन्हें हम सभी लोग माताजी कहकर सम्बोधित किया करते थे। उनका मेरे परिवार के प्रति बडा स्नेह एवं आत्मीयता रही। उस समय वे सरदार शहर क्षेत्र में चल रहे समाज कल्याण विभाग की अध्यक्षा थीं।

मेरे गाँव ऊदासर चारणान में भी एक समाज कल्याण केन्द्र चल रहा था, जिसका निरीक्षण करने वे यहाँ आया करती थीं। वे जब भी मेरे गांव पधारतीं मेरे घर हम लोगों को दर्शन देने आती और हम लोगो का देहाती भोजन मोंठ बाजरे का खीचड़ा, बाजरे की रोटी दही छाछ, राबडी बडे चाव व आत्मीयता से ग्रहण करती थीं।

परम् आदरणीय आचार्य श्री को मेरा साष्टांग प्रणाम एवं आप लोगों के प्रति इस पावन कार्य के लिए कृतज्ञता प्रकाशन।

ऊदासर चारणान, सरदार शहर-चूरू

आग्नेय व्यक्तित्व-गौरीशंकर जी आचार्य

डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली

व्यक्तित्व के विकास की उत्कृष्ट स्थिति होती है-आग्नेय व्यक्तित्व प्रकट करना। आग्नेयता (Warmanes) में कमी आने से मनुष्य अकेला पड जाता है-वह किसी को अपनत्व नहीं दे पाता और दूसरे लोग उससे आत्मीयता का संबंध स्थापित नहीं कर पाते। हमने तो सबसे आत्मीयता का संबंध स्थापित करने को धर्म कहा है -

अयं तु परमो धर्मः यद् योगेन आत्मदर्शनम्।।

(याज्ञवल्क्य स्मृति)

वेद में प्रार्थना मिलती है-मुझे देवों में प्रिय बनाईये, मनुष्यो में प्रिय बनाईये, पशु-पक्षियों में-सभी प्राणियों में प्रिय बनाईये। यह प्रियता आग्नेयता से प्रकट होती है। आचार्य गौरीशंकर जी आग्नेय व्यक्तित्व के धनी हैं। वे भारतीय दर्शन के तलस्पर्शी चिन्तक हैं। दर्शन विचार का विषय होता है, पर वे दर्शन को व्यवहार में ढ़ालने के पक्षधर हैं। आचार सविचार हो और विचार साचार (स-आचार) हो-इस उक्ति में उनका गहरा विश्वास था।

मैं कोटा से प्रकाशित "स्वदेश" साप्ताहिक का सम्पादन करता था तब आचार्य जी के एक-दो लेख मुझे मिले थे जिनको "स्वदेश" में प्रकाशित किया गया था। उनसे साक्षात् परिचय श्रीगंगानगर के राजकीय महाविद्यालय मे प्राध्यापक बनकर १९६० में गया, तब हुआ। हम लोग "स्टडी सर्किल" चलाते थे, जिसमें प्राय: उनके दर्शन हो जाया करते थे। कई बार उन्होंने दर्शन-विषयक निबन्ध पढे थे जिन पर खुलकर चर्चा हुई थी। अन्य विद्वानों के विविध विषयों पर पढ़े जाने वाले निबन्धों पर वे खुलकर चर्चा करते थे और निकाले गए निष्कर्षों की समीक्षा किया करते थे। उनकी तर्कशक्ति का विद्वान् लोहा मानते थे।

उन्होंने राजनीति में भी प्रवेश किया; पर उनको यह बात अच्छी तरह समझ में आ गई कि योग्यता के बल पर वे राजनीति में प्रतिष्ठा तो प्राप्त कर सकते हैं; पर शिखर पर बने रहने के लिए जिस प्रकार की जोड तोड चलती है उसमें वे कच्चे थे।

लम्बे समय तक सांसद रहे महाराजा करणीसिंहजी उनकी विद्वता का सम्मान करते थे। वे श्रीगंगानगर आते तब जिन लोगों से अवश्यकर्त्तव्य मानकर मिलते थे उनमें एक नाम आचार्य गौरीशंकर जी का है।

संस्कृत विभाग के प्राध्यापक पं. बालचन्द्र शास्त्री आचार्य जी की विद्वत्ता और सहजता की सराहना करते थे। शास्त्री जी के गुरू तांत्रिक साधक थे जिनकी अवस्था डेढ़ सौ वर्ष से भी अधिक बताई जाती थी, से मिलने के लिए कई बार आचार्य जी उनके आवास पर जाया करते थे।

उन पर आर्य समाज का बहुत प्रभाव था इसलिए तंत्राचार में तो उनका विश्वास नहीं था; पर जीवन के ज्वलन्त प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए उनके पास अवश्य जाते थे। वहाँ प्राय. साक्षात्कार हो जाता था। मैं वेद पर शोध कर रहा था। मैं इस लोभ से वहाँ जाया करता था कि प्रज्ञा-पुरूष ऋषि के साथ साक्षात्कार हो जाये। ऐसा तो नहीं हुआ पर एक दिन अर्द्ध रात्रि की निशीथ-पूजा के उपरान्त उनकी किसी के साथ तत्स्थ भाव में स्थिति हो गई और लगभग दस मिनट में उन्होंने जो प्रवचन दिया वह मेरे लिए मार्गदर्शक बन गया। ऐसी ही प्रेरणा से आचार्य जी भी शोध कार्य में प्रवृत्त हुए थे।

श्री गंगानगर में स्वामी परमानन्द जी की प्रेरणा से गीता भवन में प्रो. बिहारीलाल टांटिया ने विश्व सनातन धर्म सम्मेलन आयोजित किया था। उसकी प्रबन्ध समिति में आचार्य गौरी शंकर जी भी थे। मैंने अपने प्रवचन में कहा था कि हमारा समाज इसलिए खोया हुआ है कि हमारे धर्माचार्य योग समाधि के नाम पर ऊँघते रहते हैं। उस समय कई धर्माचार्य ऊँघ रहे थे और प्रो टांटिया जी ने कहा था कि ये योग समाधि में लीन हैं। मेरी उक्ति पर आचार्य चन्द्रशेखर जी आग बबूला हो गए। उनको आचार्य जी ने साधा और शान्त किया। आगे चन्द्रशेखर जी, शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ बने।

आचार्य जी "सादा जीवन उच्च विचार'' के सिद्धान्त में विश्वास करते थे। खादी के सादा वस्त्र पहनते थे। सदा प्रसन्न रहने वाले थे। सौम्यमूर्ति थे। समाज में आई हुई गिरावट से चिन्तित थे, पर चिन्ता का भार नहीं ढोते थे। ब्राह्मणत्व की मन्युता तो उनमें थी; पर अकारण क्रोध कभी नहीं करते थे।

उनका जीवन आदर्श था। उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। वे श्रम को समाज में प्रतिष्ठित देखना चाहते थे; पर इसके लिए उपदेश नहीं देते थे। स्वयं श्रम करके दिखाते थे।

वर्ष १९६२ में चीनी आक्रमण हुआ तब लोगों का भ्रम टूटा। लोगों ने समझा कि केवल "महात्मा गांधी की जय'' बोलने से देश नहीं चलेगा। देश को अपना पुरूषार्थ जगाना होगा। तब आकाशवाणी पर पहली बार अभिमन्यु, महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी के गीत गूँजने लगे। लाल किले के मैदान में "शहीद हुए हैं उनकी कुर्बानी'' को याद किया जाने लगा। "परशुराम की प्रतिक्षा'' की जाने लगी।

श्रीगंगानगर के छात्रों में अद्भुत आक्रोश भरा उत्साह था। युद्ध दर्शन की व्याख्या की जाने

लगी। नगर में क्रमश: इन्दिरा गाँधी, मोरारजी देसाई और प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को आमंत्रित करके सोने से तोला गया और उस स्वर्ण को राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दिया गया। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की पुत्री अनिता दिल्ली में थी। वह आस्ट्रेलिया जा रही थी। युवकों में जोश जागा कि अनिता के वजन के बराबर रक्तदान करके सैनिकों के लिए भेजा जाए क्योंकि नेताजी का नारा था "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

श्री गंगानगर और उसके आसपास के क्षेत्र में उत्साहयुक्त वातावरण बनाने में गौरीशंकर जी आचार्य का भरपूर योगदान रहा। स्थान-स्थान पर सिविल डिफेंस के प्रशिक्षण का प्रबंध किया गया।

युद्ध अप्रत्याशित रूप से छिड़ा था। इसलिए अस्तव्यस्तता बढ़ गई थी। गश्त देने के लिए पुलिस के पूरे सिपाही भी नहीं थे। तभी रात को सूचना मिली कि श्री करणपुर के पास दिन में पाकिस्तानी सैनिक टुकड़ियाँ देखी गई थीं, उनमें से किसी ने सीमा पार कर ली है। सामना करने के लिए श्री गंगानगर के युवक शस्त्र संनद्ध होकर तैयार हो गए थे। इस तैयारी में भी आचार्य जी का पूरा योगदान था। बाद में पता चला कि सूचना गलत थी पर, सूचना सही होती तो भी युवक कटिबद्ध हो गए भारतीय सेना के वहाँ पहुँचने तक आक्रामकों को रोकने के लिए।

आचार्य जी से मुझे बडी प्रेरणा मिली। उनके चिन्तन का लाभ मिला। शोध के संबन्ध में जब भी कठिनाई होती मैं उनसे विचार-विमर्श कर लिया करता था। उनकी वेद में रूचि थी और वेद प्रेरित यज्ञ योगमयी जीवन शैली में गहरी आस्था थी।

आचार्य जी का यश: शरीर हमें सदा प्रेरणा देता रहेगा और उनके विचार हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। उनकी पुण्य स्मृति को शत्‌शत् नमन।

बी-६, दातानगर, रेम्बल रोड
अजमेर-३०५००६ (राज)

राजस्थान राज्य को श्री गंगानगर की एक देन
डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

प्रो. आर.पी. भारद्वाज,
भू.पू. प्रोफेसर और सह-निदेशक,
कृषि विश्वविद्यालय

कभी-कभी समय की दीर्घ अवधि के बाद एक ऐसे मनुष्य का प्रार्दुभाव होता है जो चारों ओर के मनुष्यों के जीवन से अपने को संबद्ध रखता है उनके दुख: एवं हर्ष का साथी बनता है। परन्तु वह सदैव याद रखता है कि मेरा जन्म किसी विशेष प्रयोजन से हुआ है ऐसे एक महापुरूष के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उनकी वाणी सुनी और अन्य मनुष्यों की तुलना में एक गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी बानप्रस्थ आश्रम की शैली की झलक उनमें देखी। आर्य समाज, श्री गंगानगर मे प्रवचनो को सुनने के लिए मैं, श्री रमणीक कुमार आर्य, भूतपूर्व अध्यक्ष, आर्य समाज, श्री गंगानगर प्राय: जाते रहते थे वहीं पर श्रीयुत आचार्य गौरीशंकर जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य गौरीशंकर जी द्वारा गीता पर प्रवचन सुनने का अवसर कई बार मिला। वे सदा कहते थे कि अगर मनुष्य समस्त अलौकिक दैवी शक्तियों के लोभ का त्याग करता है तभी उसे धर्म मेघ नामक समाधि प्राप्त होती है। उनका विचार था कि चींटी से लेकर उच्च सिद्ध पुरूष तक सभी में वह आत्मा विराजमान है अन्तर केवल उसकी अभिव्यक्ति के भेद में है जिस प्रकार किसान खेतों की मेड तोड देता है और एक खेत का पानी दूसरे खेत में चला जाता है वैसे ही, आत्मा भी आवरण टूटते ही प्रकट हो जाती है।

भ्रष्टाचार का दावानल :-

मैं, आचार्य जी एवं श्री रमणीककुमार जी हरिद्वार गये और कनखल में परम पूज्यनीय जगदीश स्वामी जी के साथ वहॉं ठहरे। गंगा के तट पर अनायास ही भ्रष्टाचार पर चर्चा शुरू हो गई तो उन्होंने कहा जातिवाद, भाई भतीजावाद, धर्म सभी भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन देते हैं। अत इस दावानल को समाज से जड से ही उखाड़ना श्रेयकर होगा। क्योकि भ्रष्टाचार एक प्रकार का कैसर है अगर समय पर इसकी रोकथाम नहीं हुई तो यह हमारे राष्ट्र को भी लीलता चला जायेगा। राजनीति तो धन बटोरने की क्रीड़ास्थली मात्र ही है आज आम आदमी भी इस भ्रष्टाचार के सच को एक मूक दर्शक बने देख रहा है। उसी समय मुझे एक दृष्टांत याद आया कि एक बार मैं एव

मेरे पूज्य पिताजी ने १२ जैड़ श्री रमणीककुमार जी के निवास पर जाने का कार्यक्रम बनाया। हम दोनों १२ जैड पहुँच गये। सौभाग्यवश आचार्यजी भी वहाँ आये हुये थे। मेरे पिताजी बीकानेर स्टेट में शिक्षा विभाग में प्रधान अध्यापक के पद पर कार्य कर रहे थे। चर्चा शिक्षा विभाग पर होने लगी तो मेरे पूज्य पिताजी कहने लगे कि बीकानेर स्टेट के समय में एक आचार्य गौरीशंकर नाम के शिक्षामंत्री थे। उन्होंने मेरा स्थानान्तरण लालगढ़ जाटान से संगरिया कर दिया। मैंने पूरा दबाव बनाया, अन्य प्रकार का भी प्रयास किया परन्तु मेरा स्थानान्तरण रद्द नहीं किया गया। वे बड़े अड़ियल स्वभाव के व्यक्ति थे। परन्तु अपने कार्य में उनका स्टेट में नाम था। मैंने उनसे कहा यही तो आचार्य गौरीशंकर जी हैं जो उस समय शिक्षामंत्री थे। पिताजी थोडी देर तक तो भ्रमता की स्थिति में रहे। मुझे भी काफी संकोच हुआ। परंतु अचानक ही आचार्य जी ने उनसे क्षमा याचना की कि उस समय उसी प्रकार की परिस्थिति रही होगी। आप मेरे विषय में अन्यथा न सोचें। वास्तव में मैं शिक्षा विभाग में फैले हुए भ्रष्टाचार को हटाने का मात्र प्रयास ही कर रहा था। हम तीनों इस दृष्टांत को याद कर बहुत देर तक हंसते रहे।

अपव्यय धर्म के नाम पर :-

हम तीनों सोमवती अमावस्या के दिन गंगा स्नान करने हेतु हरिद्वार गये थे। सूरतगिरी आश्रम, कनखल में हम प्राय: ठहरा करते थे गंगा के किनारे घूमते-घूमते धर्म के नाम पर बहुत अपव्यय होता है इस पर चर्चा शुरू हो गई। ये दोनों एक आयु के थे परन्तु मैं मात्र २८-३० वर्ष का रहा हूँगा। आचार्य जी कहने लगे कि सोमवती अमावस्या को कोई हरिद्वार जाता है तथा कुछ लोग गंगासागर भी स्नान करने जाते हैं, एक आदमी के आने-जाने का खर्च, ठहरने, दान-दक्षिणा पर कितना रुपया खर्च हो जाता है वर्ष में चार अमावस्या भी हों और हर अमावस्या पर ४०-५० हजार आदमी तो हरिद्वार या गंगासागर जाते ही होंगे अगर हिसाब लगाया जाये तो करोड़ों रुपया खर्च हो जाता होगा। अगर हर वर्ष इस राशि को यमुना, गंगा या अन्य नदियों की गंदगी साफ करने में खर्च कर दें तो नदियों की सफाई भी हो जायेगी और उनसे उपयोग में आने वाला पानी भूमि और सिंचाई हेतु कार्य में आता तो राष्ट्र की अन्न समस्या भी पूरी हो जाती। मैं उनके विचार से पूर्ण सहमत था और मैंने उनसे प्रेरणा भी ली कि मात्र धर्म नाम पर अपव्यय न हो तो ठीक रहेगा। श्री रमणीककुमार जी तो पक्के आर्य समाजी थे ही। उन्होंने भी अपने जीवन में इस धारणा को पूरा बल दिया।

गायत्री मंत्र की महिमा :-

एक बार गायत्री मंत्र पर चर्चा शुरू हो गई तो आचार्य जी कहने लगे कि मंत्र के माध्यम से सारे पापों से मुक्ति मिल सकती है वास्तव में मंत्र से लाभ न मिलने का कारण है कि इसका उचित

रीति-नीति से जप नहीं किया जाता है। गायत्री मंत्र की शब्द संरचना अनुपम एवं अनौखी है। अतः इस मंत्र के प्रत्येक अक्षर का नियमित एकाग्रता पूर्ण चित्त से जप व अनुष्ठान कर इसके चमत्कारिक प्रभाव को देखा जा सकता है।

संस्कृत भाषा के प्रति प्रेम :-

जब भी भाषा पर चर्चा होती तो मैं सदैव अंग्रेजी भाषा को ज्यादा महत्त्व देता। मेरा विचार था कि वैज्ञानिक युग में बिना इस भाषा के कार्य नहीं चल सकता परन्तु आचार्य जी का कहना था कि संस्कृत भाषा में पांडित्य होने पर ही भारत को हर क्षेत्र मे सम्मान मिल सकता है, हमारे सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में उपलब्ध हैं और अगर हर भारतीय को इस भाषा का पूरा ज्ञान हो तो कोई तुम्हारे विरूद्ध कुछ कहने का साहस नहीं बटोर सकता है। अत: अगर भारत को महान् बनाना है उसका भविष्य बनाना है और आध्यात्मिक ज्ञान की ज्योति जलानी है तो इस भाषा को सीखना जरूरी है, वे कहने लगे कि अतिश्योक्ति नहीं, यह भाषा विज्ञान के ज्ञान के लिए एवं औषधि विशेषज्ञता के लिए भी एक धुरी है। पूर्वजों द्वारा लिखित ज्ञान भंडार इसी भाषा द्वारा लिखित पुस्तकों में है।

धैर्य की एक महान मूर्ति :-

इस संसार में दुख: विरहित सुख, अशुभ विरहित शुभ पाने की संभावना कदापि नहीं है। क्योंकि जीवन का अर्थ ही है, साम्य भाषा की विच्युति। सृष्टि-प्रवाह अनन्तकाल से चल रहा है न उसका आदि है न अन्त-एक अनन्त सागर के ऊपर ही निरन्तर गतिशील तरंग के समान है। जीवन एवं मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं एक समय जीवित रहने की चेष्टा करती है तो दूसरे ही क्षण विनाश या मृत्यु की। जब आर्य समाज, श्रीगंगानगर में आचार्य जी इस विषय पर प्रवचन दे रहे थे तो एक संदेश वाहक एक कागज का टुकड़ा (शायद टेलीग्राम) लेकर आचार्य जी के पास गया। मुझे स्मरण है कि उन्होंने उसे ध्यान से पढा और पढ़कर कुर्ते की जेब में वह कागज का टुकड़ा रख लिया। ४५ मिनट तक अपना बौद्धिक चालू रखा। बौद्धिक समाप्त होने के बाद मैं तथा श्री रमणीक कुमार जी उनके पास गये और पूछा कि क्या बात है? उन्होंने जो बताया कि दामाद की मोटर साइकिल के एक्सीडैन्ट हो जाने से मृत्यु हो गई है मैं तो सन्न रहा गया, श्री रमणीक कुमार जी के साथ जाते समय कार्यकर्ताओं को कहकर चले गये कि मुझे अभी जयपुर जाना है आप अपना कार्यक्रम चालू रखें। दामाद की मृत्यु के बाद इतना धैर्य मैंने अपने जीवनकाल में कभी नहीं देखा था। कभी वह घटना याद आ जाती है तो रोंगटे खडे हो जाते हैं। वास्तव में आप धैर्य की एक प्रतिमा हैं, ईश्वर पर अटूट विश्वास है। वास्तव में सत्य संकल्प जिन लोगो के पास होता है और इन्द्रिय संयम हो तो उससे संकल्प को बल मिलता है। जितना इन्द्रिय संयम अधिक होगा उतना

ही दुनिया को हिलाने की शक्ति भी अधिक होती है। वे सदैव कहते रहे कि अगर समाज का भला करना चाहते हो तो पहिले अपनी इन्द्रियों को मन से, मन को बुद्धि में और बुद्धि को बुद्धिदाता-परमात्मा में स्थिर कर दो उससे आपका, आपके कुटंम्ब का और आपके सम्पर्क में आने वालों का भी भला हो जायेगा।

चाय पीने की शैली :-

भोजन करने का उनका ढंग सीखने वाला है। चाय या भोजन करते समय उसकी और बनाने वाले की बडाई करना वे कभी नहीं भूलते। खीर जिस ढ़ंग एवं स्वाद लेकर खाते है, वह अनुकरणीय है।

अन्त: में इस महान् योगी, आध्यात्मिक धरोहर के पुंज को शत् शत् बार नमन करता हूँ और परम् पिता परमेश्वर का आभार व्यक्त करता हूँ कि जीवन के इस मोड पर मुझे उनके साथ कुछ पल रहने का अवसर मिला और मैंने भी उन क्षणों का जीवन में पूरा फायदा उठाया, अत: मैं उनका ऋणी हूँ।

४४८, अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर
अजमेर-३०५००६ (राज.)

कुशल वक्ता

बीकानेर में स्वतन्त्रता आन्दोलन अपने चरम पर था। आचार्य जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री झम्मनलाल जी उस वक्त हाईकोर्ट के रजिस्टार एवं मजिस्ट्रेट थे। उन्होंने उच्च निर्देशों के चलते क्रान्तिकारी रघुवरदयाल गोयल, गौरीशंकरजी आचार्य, कुम्भाराम आर्य तथा अन्य की गिरफ्तारी के आदेश जारी किए थे, उस समय मीटिंग चल रही थी जिसमें गौरीशंकर जी भाषण दे रहे थे। बड़े भाई मजिस्ट्रेट झम्मनलाल जी भी पुलिस कर्मियों एवं अन्य अधिकारियों के साथ उनका भाषण सुनते रहे। भाषण समाप्ति पर पुलिसकर्मियों एवं अन्य अधिकारियों ने मजिस्ट्रेट साहब से उनकी गिरफ्तारी नहीं करने के लिए आग्रह किया तब उन्होंने कहा कि मैने अपने जीवनकाल में ऐसा प्रभावशाली एवं जोशीला भाषण पहली बार सुना है। उसके बाद उनका ऐसा हृदय परिवर्तन हुआ कि उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

एक वंदनीय व्यक्तित्व : डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

सीताराम महर्षि
कवि-साहित्यकार

श्रद्धेय डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य को देखते ही मनुस्मृति का एक श्लोक याद आ जाता है-

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

अर्थात्, इस आयावर्त देश में उत्पन्न हुए विद्वानों से पृथ्वी के मनुष्य अपने-अपने योग्य विद्या, चरित्रों की शिक्षा और विद्याभ्यास करें। स्वनामधन्य आचार्यजी के व्यक्तित्व में मनसा-वाचा-कर्मणा के एकत्व के दर्शन होते हैं। इनका पवित्र हृदय, मधुर वाणी और शालीन व्यवहार प्रत्येक मिलने वाले पर अमिट छाप अंकित करता है।

मैंने सर्वप्रथम सन् १९५६ में आचार्य प्रवर के प्रथम बार दर्शन किये थे। राजस्थान विधानसभा के रतनगढ क्षेत्र के उपचुनाव में उन्होंने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लडा था। इस चुनाव में वे विजयी होकर विधानसभा के सदस्य बने थे। उस चुनाव में श्रद्धेय आचार्य जी ने अपने भाषणों में एक भी ऐसे शब्द का प्रयोग नहीं किया, जो स्तरहीन हो। नपेतुले शब्दों मे उन्होंने अपनी उम्मीदवारी का औचित्य समझाया था। लोग इनकी सरलता, सादगी, आत्मीयता, विद्वता एवं सहृदयता से अत्यन्त प्रभावित हुए थे। लोगों मे प्रायः चर्चा होती थी कि यह संत राजनीति में कैसे आ गये। लोगों का यह चिन्तन सर्वथा सत्यानुमोदित था। आचार्य प्रवर को राजनीति रास नहीं आई। उन्होंने इसका परित्याग कर शिक्षा के क्षेत्र को अपनाया। इस क्षेत्र में इन्होंने गांधी विद्या मंदिर के रूप में जिस शिक्षा केन्द्र की स्थापना की, आज वह विश्व विद्यालय के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय सेवा कर रहा है।

कुछ वर्ष पूर्व सरदार शहरवासियों ने पूज्य आचार्य जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया था। उस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में आयोजको ने मुझे भी याद किया था। बन्धुवर बुधमल जी शामसुखा, आदरणीय मोहन लाल जैन, श्री मूलचन्द सेठिया, सम्मान्य श्री पूर्णचन्द मीमाणी के आग्रह के कारण अभिनन्दन समारोह में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस अवसर पर श्रद्धेय आचार्य जी के प्रति वक्ताओं ने जो भाव सुमन समर्पित किये, उनसे ज्ञात हुआ कि आचार्य प्रवर का व्यक्तित्व कितना विराट है। आपकी शिक्षा सेवा एवं संस्कृति के क्षेत्र में की गयी सेवाओं का क्षेत्र कितना विस्तृत है। विश्वास ही नहीं हो रहा था कि एक व्यक्ति में इतने गुण एक साथ हो

सकते हैं। वक्ताओं का एक ही स्वर था कि श्रद्धेय गौरीशंकर जी आचार्य ने समाज को दिया ही दिया है। लेने का भाव कभी मन में जागा ही नहीं।

श्रद्धेय आचार्य जी से कई बार मिला, किन्तु विशेष चर्चा नहीं हो पाई। सभी मुलाकातें संक्षिप्त रहीं। लेकिन, वे मुलाकातें स्थाई प्रभाव अंकित करने में सक्षम थीं। हर बार लगता जैसे किसी ऋषि के दर्शन कर रहा हूँ। श्रद्धेय आचार्य जी प्रेरणा-पुंज हैं। हर व्यक्ति को आपसे कुछ-न-कुछ मिलता ही है। वर्तमान समाज में श्रद्धेय आचार्यजी जैसे व्यक्ति को देखकर यही अनुभव होता है, जैसे सतयुग के किसी महान् संत के दर्शन कर रहे हों। श्रद्धेय श्री गौरीशंकर जी आचार्य ऐसे कर्मयोगी हैं, जिनका जीवन अनेकानेक व्यक्तियों को कर्मयोग का पाठ पढ़ाता है और उन्हें श्रेष्ठ मनुष्य बनने के लिए प्रेरित करता है।

उनके पावन चरणों में कोटिश: वंदन।

कृष्ण कुटीर
रतनगढ़ (राज.)

त्याग की प्रतिमूर्ति

आचार्य गौरीशंकरजी सच्चे अर्थों में वितरागी पुरुष हैं किसी प्रकार का लोभ-मोह आपको कभी नहीं रहा। बात उस समय की है जब गॉधी विद्यामन्दिर (सरदार शहर) के आप संस्थापक अध्यक्ष थे। विद्या मन्दिर का नाम दूर-दूर तक ख्याति प्राप्त कर चुका था साथ ही आचार्य जी की भी ख्याति सर्वत्र फैल रही थी। जिसके चलते साथी कन्हैयालाल दूगड का मन बदलने लगा और एक दिन वे आचार्य जी के निवास पर आए उन्हें साथ लेकर गॉधी विद्या मन्दिर से गाँधी जी की मूर्ति के पास पहुँचे। कन्हैयालाल जी ने आचार्यजी से कहा कि मैं गांधी जी के सामने आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ और वो बात ये है कि मैं अध्यक्ष बनना चाहता हूँ। इस पर गौरीशंकर जी ने एक क्षण में गाँधी विद्या मन्दिर के अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र दे दिया। आचार्य जी प्रसन्न मुद्रा में घर पहुँचे और सारी बातें हँसते हुए अपनी पत्नी को बताई।

इस घटना के कुछ समय बाद ही तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जी का दौरा हुआ तो आचार्य जी को दोबारा अध्यक्ष बना दिया गया लेकिन आपने पुन: त्याग पत्र दे दिया। इसके बाद जब-जब गॉधी विद्या मन्दिर की स्थिति खराब हुई, तब-तब इनसे अध्यक्ष बनने का आग्रह किया गया लेकिन इन्होंने कहा कि विद्या मन्दिर के लिए मेरी सेवाएँ सदैव उपलब्ध रहेंगी लेकिन जो चीज (अध्यक्ष पद) त्याग दी वह वापिस नहीं लूँगा।

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य मेरे आदर्श

रावतराम आर्य
पूर्व विधायक, जिला प्रमुख (चूरू)

आचार्य जी जैसे महान् पुरूष के लिए आप जो यह करने जा रहे हैं, बडा ही प्रशंसनीय कार्य है, इसके लिए आप सब सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं।

आज के इस कलयुगी एवं स्वार्थ से ओत-प्रोत एवं मतलबी समय में कौन महापुरूषों को याद करता है।

मैं भी आचार्य जी के निकटतम रहा हूँ। उनका सिर पर हाथ रहा है। मैं अनुसूचित जाति के मेघवाल समाज से हूँ। मेरा गांव सारसर चूरू जिले की सरदार शहर तहसील में है। संवत् १९९७ के आस-पास अकाल के कारण मेरा परिवार सरदार शहर में रहकर मेहनत मजदूरी करके अपना निर्वाह करता था। मेरे पिताजी कस्बे में रहने के कारण मुझे अक्षर ज्ञान करवाना चाहते थे, पर मेघवाल होने के कारण कोई पढाने के लिए तैयार ही नहीं था।

आचार्य जी के पिता श्रीजगनराम जी वकील उस समय सरदार शहर में निवास करते थे और आचार्य जी भी सरदार शहर में होने के कारण उनसे संपर्क हुआ।

आचार्य जी ने मुझे हरिजन पाठशाला सरदार शहर में पढ़ने को बैठाया वहाँ से प्राईमरी शिक्षा के बाद इन्होंने राजकीय विद्यालय में दाखिला तो दिलवा दिया पर ज्यों ही छात्रों एवं उनके अभिभावकों को पता चला कि मैं मेघवाल हूँ तो फिर तूफान आ गया, भारी विरोध हुआ। आचार्य जी ने खूब समझाया पर लोग नहीं माने और हमें स्कूल से निकाल दिया गया।

आचार्य जी ने बीकानेर महाराजा हिजहाईनेस श्री शार्दूल सिंह से दरयाफ्त की पर बात नहीं बनीं और इसलिए आचार्य जी ने सरदार शहर में हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की जिसमें खुद ने पढ़ाना शुरू किया जहाँ प्रथमा, विशारद, साहित्य-रत्न आदि की तैयारी करवाते थे और स्वतंत्रता के लिए जन जागरण का कार्य भी करते थे। जिसका सरकार एवं शहर में खूब विरोध होता था।

आचार्य जी की धर्म पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी संभ्रान्त, ब्राह्मण परिवार से थीं और उस समय भंयकर छूआछूत था लेकिन आचार्य जी छुआछूत के घोर विरोधी थे। हम साथ-साथ एक घडे मे पानी पिया करते थे। माताजी (लक्ष्मी देवी जी) को पता लगा कि मैं मेघवाल हूँ तो बडा तूफान मचा, घड़ा फोड़ दिया। आचार्यजी ने दृढ़ता से मुकाबला किया और कहा कि इस घर में सब साथ पानी

पियेंगे, यह सुन माता जी मान गईं और वो भी छूआछूत की कट्टर विरोधी बन गई। उन्होंने आगे चलकर बड़ा स्नेह दिया, ऐसे हैं आचार्य जी, उस समय की कल्पना कीजिए!

स्वतंत्रता आन्दोलन में आचार्यश्री बढ़ चढकर भाग ले रहे थे। बीकानेर प्रजा परिषद् में हम लोग साथ-साथ काम करते थे। बीकानेर स्टेट में अंतरिम सरकार बनीं। जिसमे स्व. चौ. कुंभाराम, श्री हरदत्त सिंह, सरदार मस्तान सिंह मंत्री थे, आचार्यश्री शिक्षामंत्री थे।

जब प्रजा परिषद् का कांग्रेस में विलय हो गया तो राजस्थान विधानसभा के रतनगढ क्षेत्र से आचार्य एम.एल.ए. बने हम लोगों ने चुनाव प्रचार किया। चौ. दौलतराम जी सहारण, चौ. कुंभाराम चुनाव क्षेत्र में दस दिन रहे, लेकिन आचार्य जी की राजनीति में खास रूचि नहीं थी। उन्होंने तो चुनाव भी चौ. कुंभाराम के कहने से लड़ा। वे बराबर कहते रहे कि मैं आगे चुनाव नहीं लडूँगा। ऐसा ही उन्होंने किया। हमने तो आगे कई बार खूब चुनाव लड़े।

आचार्य जी ने सरदारशहर में गांधी विद्या मंदिर के नाम से ग्रामीण विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसे संवारने में अपना जीवन लगा दिया गांधी विद्या मंदिर देश में एक मिसाल है।

आचार्य जी आज भी हमारे बीच में हैं ईश्वर इनको एक सौ पच्चीस साल की उम्र दे यही प्रार्थना है।

नई सड़क, नया बास चूरू, (राज.)

ऐसे सज्जन

बात उस समय की है जब आचार्य जी शिक्षा, रेल एवं डाकतार मंत्री थे। एक बार बीकानेर की महारानी (शार्दूलसिंह की पत्नी) ने महामना मदनमोहन मालवीय से पूछा कि मुझे एक संस्कृत का विद्वान चाहिए। इस पर मालवीय जी ने कहा कि आपके पास है ना पं गौरीशंकर आचार्य। इस पर महारानी आपकी कोठी पर मिलने के लिए पधारी। आचार्य जी चूंकि सरकारी कार्य में ही कार का प्रयोग करते थे, वे सोमवार को तांगे में बैठकर बीकानेर से शिवबाड़ी जाते थे जिसके लिए मौलाना तांगेवाला नियुक्त था जो रोजाना इन्हें ले जाता था उस दिन महाराजा शार्दूलसिंह की पत्नी कोठी में पधारी हुई थीं इसलिए पुलिस वालों ने तांगे को कोठी से पहले ही रोक दिया। आचार्य जी ने अपना परिचय नहीं दिया और उतर कर पैदल ही चल दिए। अनजान पुलिस वाले उन्हें रोकने लगे, कहा- कहाँ चले जा रहे हो सीधे, पता नहीं महारानी पधारी हुई हैं तथा इनके एक घनिष्ठ मित्र ठाकुर मधेसिंह की इन पर नजर पड़ी तो उन्होंने पुलिस वालों को बताया कि यही तो मंत्री जी हैं जिनका महारानी जी इंतजार कर रही हैं। जब आप महारानी जी से मिले, जाते समय महारानी जी को आपने कहा कि आप घर मत आया करो, आफिस में मिला करो। ऐसे सरल हृदय हैं आचार्य गौरीशंकर जी।

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य मेरे आदर्श

रावतराम आर्य
पूर्व विधायक, जिला प्रमुख (चूरू)

आचार्य जी जैसे महान् पुरूष के लिए आप जो यह करने जा रहे हैं, बड़ा ही प्रशंसनीय कार्य है, इसके लिए आप सब सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं।

आज के इस कलयुगी एवं स्वार्थ से ओत-प्रोत एवं मतलबी समय में कौन महापुरूषों को याद करता है।

मैं भी आचार्य जी के निकटतम रहा हूँ। उनका सिर पर हाथ रहा है। मैं अनुसूचित जाति के मेघवाल समाज से हूँ। मेरा गांव सारसर चूरू जिले की सरदार शहर तहसील में है। संवत् १९९७ के आस-पास अकाल के कारण मेरा परिवार सरदार शहर में रहकर मेहनत मजदूरी करके अपना निर्वाह करता था। मेरे पिताजी कस्बे में रहने के कारण मुझे अक्षर ज्ञान करवाना चाहते थे, पर मेघवाल होने के कारण कोई पढाने के लिए तैयार ही नहीं था।

आचार्य जी के पिता श्रीजगनराम जी वकील उस समय सरदार शहर में निवास करते थे और आचार्य जी भी सरदार शहर में होने के कारण उनसे संपर्क हुआ।

आचार्य जी ने मुझे हरिजन पाठशाला सरदार शहर में पढने को बैठाया वहाँ से प्राईमरी शिक्षा के बाद इन्होंने राजकीय विद्यालय मे दाखिला तो दिलवा दिया पर ज्यों ही छात्रों एवं उनके अभिभावकों को पता चला कि मैं मेघवाल हूँ तो फिर तूफान आ गया, भारी विरोध हुआ। आचार्य जी ने खूब समझाया पर लोग नहीं माने और हमें स्कूल से निकाल दिया गया।

आचार्य जी ने बीकानेर महाराजा हिजहाईनेस श्री शार्दूल सिंह से दरयाफ्त की पर बात नहीं बनीं और इसलिए आचार्य जी ने सरदार शहर में हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की जिसमे खुद ने पढ़ाना शुरू किया जहाँ प्रथमा, विशारद, साहित्य-रत्न आदि की तैयारी करवाते थे और स्वतंत्रता के लिए जन जागरण का कार्य भी करते थे। जिसका सरकार एवं शहर में खूब विरोध होता था।

आचार्य जी की धर्म पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी संभ्रान्त, ब्राह्मण परिवार से थीं और उस समय भंयकर छूआछूत था लेकिन आचार्य जी छुआछूत के घोर विरोधी थे। हम साथ-साथ एक घडे मे पानी पिया करते थे। माताजी (लक्ष्मी देवी जी) को पता लगा कि मैं मेघवाल हूँ तो बड़ा तूफान मचा, घडा फोड़ दिया। आचार्यजी ने दृढ़ता से मुकाबला किया और कहा कि इस घर में सब साथ पानी

पियेंगे, यह सुन माता जी मान गईं और वो भी छूआछूत की कट्टर विरोधी बन गई। उन्होने आगे चलकर बडा स्नेह दिया, ऐसे हैं आचार्य जी, उस समय की कल्पना कीजिए!

स्वतंत्रता आन्दोलन में आचार्यश्री बढ़ चढकर भाग ले रहे थे। बीकानेर प्रजा परिषद् में हम लोग साथ-साथ काम करते थे। बीकानेर स्टेट में अंतरिम सरकार बनीं। जिसमें स्व. चौ. कुंभाराम, श्री हरदत्त सिंह, सरदार मस्तान सिंह मंत्री थे, आचार्यश्री शिक्षामंत्री थे।

जब प्रजा परिषद् का कांग्रेस में विलय हो गया तो राजस्थान विधानसभा के रतनगढ़ क्षेत्र से आचार्य एम.एल.ए. बने हम लोगों ने चुनाव प्रचार किया। चौ. दौलतराम जी सहारण, चौ. कुंभाराम चुनाव क्षेत्र में दस दिन रहे, लेकिन आचार्य जी की राजनीति में खास रूचि नहीं थी। उन्होंने तो चुनाव भी चौ. कुंभाराम के कहने से लडा। वे बराबर कहते रहे कि मैं आगे चुनाव नहीं लडूँगा। ऐसा ही उन्होंने किया। हमने तो आगे कई बार खूब चुनाव लड़े।

आचार्य जी ने सरदारशहर में गांधी विद्या मंदिर के नाम से ग्रामीण विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसे संवारने में अपना जीवन लगा दिया गांधी विद्या मंदिर देश में एक मिसाल है।

आचार्य जी आज भी हमारे बीच में हैं ईश्वर इनको एक सौ पच्चीस साल की उम्र दे यही प्रार्थना है।

नई सड़क, नया बास चूरू, (राज.)

ऐसे सज्जन

बात उस समय की है जब आचार्य जी शिक्षा, रेल एवं डाकतार मंत्री थे। एक बार बीकानेर की महारानी (शार्दूलसिंह की पत्नी) ने महामना मदनमोहन मालवीय से पूछा कि मुझे एक संस्कृत का विद्वान चाहिए। इस पर मालवीय जी ने कहा कि आपके पास है ना पं गौरीशंकर आचार्य। इस पर महारानी आपकी कोठी पर मिलने के लिए पधारी। आचार्य जी चूंकि सरकारी कार्य में ही कार का प्रयोग करते थे, वे सोमवार को तांगे में बैठकर बीकानेर से शिवबाड़ी जाते थे जिसके लिए मौलाना तांगेवाला नियुक्त था जो रोजाना इन्हें ले जाता था उस दिन महाराजा शार्दूलसिंह की पत्नी कोठी में पधारी हुई थीं इसलिए पुलिस वालों ने तांगे को कोठी से पहले ही रोक दिया। आचार्य जी ने अपना परिचय नहीं दिया और उतर कर पैदल ही चल दिए। अनजान पुलिस वाले उन्हें रोकने लगे, कहा- कहाँ चले जा रहे हो सीधे, पता नहीं महारानी पधारी हुई हैं तथा इनके एक घनिष्ठ मित्र ठाकुर मघेसिंह की इन पर नजर पडी तो उन्होंने पुलिस वालों को बताया कि यही तो मंत्री जी है जिनका महारानी जी इंतजार कर रही हैं। जब आप महारानी जी से मिले, जाते समय महारानी जी को आपने कहा कि आप घर मत आया करो, आफिस में मिला करो। ऐसे सरल हृदय हैं आचार्य गौरीशंकर जी।

कुशल शिक्षक और प्रखर वक्ता श्री गौरीशंकर जी आचार्य

रामनिवास शर्मा

आजादी के पूर्व मरू जॉगल प्रदेश में दो कस्बे साहित्यिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध थे सरदार शहर और लाडनूं। सरदार शहर में श्री गौरीशंकर आचार्य जी, श्री मूलचन्द सेठिया और कन्हैया लाल दूगड़ आदि प्रमुख थे। लाडनूं में जनजागृति और सांस्कृतिक गतिविधियों के संचालक स्व.पं. अक्षयचन्द्र जी शर्मा थे। मेरा यह भी सौभाग्य रहा कि मैं पं. अक्षयचन्द्र जी का भतीजा होने के कारण उनके काफी निकट रहा तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनके साथ आने-जाने का व भाग लेने का अवसर मिलता रहा। इससे मेरे मानस पटल पर साहित्य, संस्कृति और राजनीति का गहरा प्रभाव पड़ा। प्रजा परिषद् का सक्रिय कार्यकर्ता होने के कारण मैं श्री जयनारायण जी व्यास, मथुरादास माथुर, रणछोड़ गट्टाणी, श्री गौरीशंकर जी आचार्य के सम्पर्क में आता रहा।

पूज्य चाचाजी के साथ आने-जाने के कारण इन सभी राजनैतिक कार्यकर्ताओं से पारिवारिक संबंध स्थापित हो गया।

बीकानेर छोटा बनारस है परन्तु इसमें ऐसी कोई संस्था नहीं थी जो सार्वजनिक रूप से शिक्षा और साहित्यिक गतिविधियों को गति प्रदान कर सके। श्री नाथूरामजी खड़गावत ने बीकानेर में जन जागरण और शरणार्थियों में शिक्षा का प्रचार प्रसार करने के लिए भारतीय विद्या मंदिर रात्रि विद्यालय की १९ अगस्त १९४८ को स्थापना की। इस महती कार्य में उनके सहयोगी थे श्री विद्याधर जी शास्त्री, श्री नरोत्तमदास जी स्वामी, श्री अगरचन्द्र नाहटा, सेठ गिरधारी दास जी मूंदड़ा, सेठ मोतीचन्द्र खजांची आदि। बीकानेर में आजादी के बाद महाराजा करणी सिंह जी ने लोकप्रिय शासन की स्थापना की जिसमें श्री गौरीशंकर जी आचार्य को शिक्षा और रेलमंत्री बनाया गया। भारतीय विद्या मंदिर रात्रि विद्यालय का उद्घाटन समारोह भी श्री गौरीशंकर आचार्य जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। उस समय भारतीय विद्या मंदिर में रात्रि के समय बी.ए., इन्टर, मैट्रिक और साहित्य रत्न "दोनो खण्ड" विशारद, प्रभाकर और रत्न की कक्षाएँ लगती थीं। रात्रि के समय लगभग चार-पाँच सौ विद्यार्थी पढते थे। उस समय बीकानेर में हिन्दी साहित्य, प्राचीन और आधुनिक कवि, समालोचना और कथा साहित्य के विकास आदि विषयों को पढाने के लिए कोई उपयुक्त व्यक्ति

उपलब्ध नहीं था। तब श्री नाथूरामजी खड़गावत ने पं. अक्षयचन्द्र जी को लाडनूं से विद्या मंदिर के प्रिंसीपल के पद पर नियुक्त किया। जब वे प्रिंसीपल बनकर आए तो मैं भी उनके साथ बीकानेर आ गया। बीकानेर आने के बाद मेरी श्री आचार्यजी से कई दफा मुलाकातें होती रहीं।

प्रखर वक्ता श्री आचार्य जी प्रखर वक्ता थे। साहित्यिक और सांस्कृतिक समारोह में जब भी वे भाषण देने खड़े होते तो श्रोतागण उनके धाराप्रवाह भाषण को मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहते। घण्टों बीत जाते परन्तु न तो श्री आचार्य जी थकते और न श्रोता ऊबते थे। श्रोता एकाग्र होकर उनका भाषण सुनते रहते। साहित्यिक गतिविधियों में भी वे राजनैतिक पुट इस प्रकार देते की सब आश्चर्य चकित हो जाते। उनकी शिक्षा में बडी रूचि थी। वे कुशल शिक्षक थे। उनके पास जो भी विद्यार्थी पढ़ता उसके दिल में वे राष्ट्रीयता की भावना के अंकुर के साथ साहित्यिक गतिविधि भी जागृत कर देते थे। श्री राजानंद जी सोनी कहा करते हैं कि श्री गौरीशंकर आचार्य जी के पास पढ़ने से मेरे दिल में जो जागृति पैदा हुई वह आज भी बरकार है और ये श्रेय उनको ही है कि साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में आज भी मेरी रूचि बरकरार है।

जब वह एम.एल.ए. थे तो मैं उनके पास समाज शिक्षा द्वारा मिलने वाले अनुदान हेतु अभिशंषा करवाने के लिए जाया करता था और वे मुझे कहा करते थे अरे भाई इस धूप में क्यों? शाम को ही आ जाते! मैं नत मस्तक हो बात को सुनता और धीरे से कहता "शाम होने के बाद मुझे आपको कई जगह खोजना पड़ता है इसलिए ही मैं इस समय यहाँ आता हूँ ताकि आप मुझे यथा स्थान पर मिल जाते हैं। यह उनका संस्था के प्रति अगाध स्नेह का प्रतीक है।

उनकी दृढ इच्छाशक्ति गहन मनोबल कर्त्तव्य निष्ठ भावना ही गांधी विद्या मंदिर के रूप में दृष्टिगत हो रही हैं। मैं श्रद्धा से उनको नमन करता हूँ।

वाणी विहार, पारीक चौक
बीकानेर।

आचार्य जी के नाम और काम से परिचय

प्रो. (डॉ.) भवानी लाल भारतीय
सेवानिवृत्त अध्यक्ष
दयानन्द शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय
सदस्य : परोपकारिणी सभा
(स्वामी दयानन्द सरस्वती की स्थापन्न)
संस्थापक अध्यक्ष : आर्य लेखक परिषद्

डॉ. गौरीशंकर आचार्य जी के नाम और काम से मेरा परिचय बहुत पुराना है। वे राजस्थान की रियासतों के राजनैतिक आन्दोलनों से आरम्भ से जुडे रहे। शिक्षा, संस्कृति, समाज सेवा तथा राष्ट्र सेवा से जुड़े आचार्य जी ने आदर्श जीवन जिया है, जो नई पीढी के लिए अनुकरणीय है। पर्याप्त समय हुआ गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सवों में आपके दर्शन करने तथा स्वल्प काल के लिए चर्चा करने का अवसर मिला था। ऐसे समर्पित व्यक्तित्व के महापुरूष आज दुर्लभ हो गये हैं। परमात्मा उन्हें दीर्घायुष्य प्रदान करें।

"रत्नाकर" ८/४२३, नन्दनवन,
चौपासनी हाउसिंग बोर्ड,
जोधपुर-३४२००८ (राज.)

"गीता कामधेनु की भांति है, जो सारी इच्छाओं को पूरी करती है। अत: वह माता कहलाती है।" "जो गीता का भक्त है, उसके लिये निराशा की कोई जगह नहीं। वह हमेशा आनन्द में रहता है।" "अनासक्ति पूर्वक सब काम करना ही गीता की प्रधान ध्वनि है।""मैं तो अपनी सारी कठिनाईयों मैं गीता के पास दौडता हूँ और अब तक आश्वासन पाता आया हूँ।"

–महात्मा गाँधी

पितातुल्य श्री गौरीशंकर जी आचार्य

श्रीमती इन्दिरा मिश्रा

आदरणीय श्री गौरीशंकर जी आचार्य बहुत ही सहृदय, स्नेहशील एवं सरल प्रकृति के व्यक्ति हैं। मेरा उनके साथ करीब वर्ष डेढ़ वर्ष का साथ रहा उनके पास रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे मेरे पिता तुल्य हैं, मुझे उनका बहुत स्नेह मिला। वे मेरे संरक्षक एवं पथ प्रदर्शक भी रहे, उनके साथ रहकर मैंने बहुत कुछ सीखा। वे गांधी जी एवं उनकी विचारधारा से बहुत प्रभावित रहे हैं। वे समाजसेवी, ग्रामोत्थान एवं बच्चों व स्त्रियों की शिक्षा के प्रबल पक्षधर एवं प्रेरक रहे है। उन्होंने सरदार शहर में गांधी विद्या मंदिर की स्थापना की। वे बहुत ही कर्मठ एवं दृढ निश्चयी हैं। उन्होंने हमेशा शैक्षिक एवं साहित्यिक गतिविधियों में भाग लिया और अग्रणी रहे। श्री आचार्यजी सदैव सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में व्यस्त रहे। वे आर्य समाज एवं गौरक्षा के भी प्रबल समर्थक थे।

श्री आचार्य जी के एक प्रशंसक एवं मिलने वाले श्री दीपचन्द जी नाहटा प्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी हैं। वे एक बार किसी कार्य या व्यवसाय के संदर्भ में दार्जिलिंग आये थे। वे चाय बागान में हमारे पूज्य अतिथि रहे, उन्हें जब पता लगा कि श्री आचार्य जी से हमारे पारिवारिक संबन्ध एवं परिचय हैं तो वे बहुत प्रसन्न हुए तथा उन्होंने मुझे पुत्री का सा प्यार व स्नेह दिया। श्री आचार्य जी की पत्नी आदरणीया श्रीमती लक्ष्मी देवी जी भी बहुत स्नेहमयी एवं मधुर स्वभाव की थीं। उनसे भी मुझे बहुत प्यार एवं सहयोग मिला। वे भी समाज कल्याण विभाग से जुड़ी हुई थीं। उन्होंने भी गाँवों में जाकर स्त्री शिक्षा एवं बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं कल्याण के लिए बहुत कार्य किया।

वैसे तो श्री आचार्य जी अधिकतर किसी न किसी कार्यक्रम में व्यस्त बाहर ही रहते थे परन्तु जितना भी उनका सहवास प्राप्त हुआ, उससे मुझे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। मैं उसके लिए अपने आपको भाग्यशाली समझती हूँ। समय-समय पर जब भी उनका जयपुर आना होता है। उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है, संपर्क रहता है। आचार्य श्री के ९१ वें जन्मदिवस पर उनके दीर्घायुष्य की कामना करते हुए उन्हें नमन करती हूँ।

दुर्गापुरा, जयपुर।

भारतीय स्वतंत्रता के महान् तपस्वी : आचार्य गौरीशंकर जी

वैद्य मालेन्दु दत्त त्रिपाठी "सुबोध"
मीडिया प्रभारी
उ.प्र.स्वतन्त्रता संग्राम, सैनानी सैनिक परिषद्
महामंत्री जिला कांग्रेस कमेटी

आयुर्वेद विश्व भारती सरदार शहर में पूज्यनीय पिता जी आयुर्वेदाचार्य स्व. पं. योगीन्द्र दत्त त्रिपाठी वहाँ पर थे। मेरा बचपन था। मैंने आचार्य जी को निकट से देखा है। वह बहुत सौम्य प्रकृति के विद्वान, चिन्तनशील, प्रतिभाशाली, व्यक्तित्व के धनी गौरीशंकर जी हैं। उनका ९१ वाँ जन्मदिवस राष्ट्र के लिये वैभवशाली, समृद्धिकारक, सार्थक है। उनका मुस्कान भरा चेहरा मुझे आज भी याद है। आचार्य जी का सादगी पूर्ण जीवन महान प्रेरणादायी है। उन्होंने आयुर्वेद के प्रति जिस समर्पण की भावना से कार्य किया है, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। नित्य का उनका सानिध्य हमारे मन मस्तिष्क में हिलोरें मार रहा है। युग की धारा का चिन्तन कर समाज और देश को अमूल्य धरोहर उन्होंने प्रदान कर हम सबको कृतार्थ करने की कृपा की है। महान् सद्गुणों वाले अभिनन्दनीय आचार्य प्रवर श्री गौरीशंकर जी भारतीय इतिहास के मुख्य पृष्ठों पर सदैव ही अंकित रहेंगे। दुर्भाग्य से आप सबको ज्ञात नहीं हो सका होगा, मेरे पूज्यनीय पिताजी स्व. आचार्य योगीन्द्र दत्त त्रिपाठी जो राजकीय ललित हरि आयुर्वेद कॉलेज पीलीभीत के प्राचार्य थे। सबसे पहले वह आयुर्वेद विश्व भारती सरदार शहर के प्राचार्य थे। उसके बाद वह इन्दौर विश्व विद्यालय में आयुर्वेद विभाग के संकाय अध्यक्ष रहे। सेंट्रल कॉन्सिल ऑफ इण्डियन मेडिसिन के सदस्य साहू जी महाराज विश्व विद्यालय कानपुर के आयुर्वेद संकाय के सदस्य तथा अनेकों विश्वविद्यालयों में सदस्य तथा परीक्षक रहे थे। २५ जून, १९९८ को उनका महा प्रयाण सीतापुर में हो गया था। अत: आचार्य श्री गौरीशंकर जी के संदर्भ में जो संक्षेप में मुझे ज्ञात है, वह मैने लिपिबद्ध कर दिया है। आचार्य जी सरदार शहर में थे और लखनऊ में मेरे बडे भाई वैद्य नगेन्द्र दत्त त्रिपाठी का असामयिक निधन हो गया। आचार्य गौरीशंकर जी घर आकर मेरे पिताजी के दारूण दु:ख में उनके निकट बने रहे, और एक पल को भी अलग नहीं हुये थे। क्योंकि मेरे स्व. बड़े भ्राता पूज्य पिता जी की प्रथम संतान थे। समय के चक्र ने उन्हें दूर कर दिया परन्तु भावनाएँ पूज्यनीय गौरीशंकर जी की स्मृतियाँ पूज्य

पिता जी के सदैव साथ रहीं। आज इतने महान कर्मनिष्ठ विद्वान मानवता के महासागर का जन्म दिवस है और उनका अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशवान हो रहा है। मैं हृदय से नतमस्तक होकर उन्हें प्रणाम करता हूँ। मैं ईश्वर से उनके स्वस्थ्य मूल्यवान जीवन को दीर्घायु प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ।

तुम जीवन पथ की प्रखर ज्योति,
तुम चिन्तक हो सद्भावों के।
आचार्य प्रवर गौरी शंकर जी तुम गौरव हो गरिमाओं के।
शत्बार नमन ओ देवदूत, तुम अमृत हो रचनाओं के।
धरती की धारा में भरते,
सद्ज्ञान यहाँ नौ जीवन में।
वाणी में रवि सा तेज प्रबल शीतलता है, मृदु भावों में।
आचार्य तुम्हारा जीवन है,
आदर्श नया मनभावों में।
शत्बार तुम्हारा अभिनन्दन,
ओ भारत की माटी के चन्दन,
युग-युग जब बदले जायेंगे,
गुण-गान तुम्हारे गाएँगे।।

३०६, जेल रोड़ सीतापुर,

ध्यान के द्वारा अपनी आत्मा को देखो और अपने असली स्वरूप को पहिचानो तथा तदुपरान्त ब्रह्मस्पर्श से होने वाले अक्षय्य सुख का अनुभव प्राप्त करो।

– गीता

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य
एक समर्पित साधनानिष्ठ समाजसेवी

जसराज चौपड़ा
भू.पू. न्यायाधीश राजस्थान हाईकोर्ट

मेरा डॉ. गौरीशंकर जी से प्रथम साक्षात्कार जब वह गंगानगर उनके परम् मित्र स्व. भानुप्रकाश जी शर्मा तत्कालीन जिला एवं सत्र न्यायाधीश से मिलने आये तब सन् १९६७ में हुआ। बहुत सरल, निश्छल, गंभीर एवं नपे तुले शब्दों में अभिव्यक्ति देने वाला व्यक्तित्व था उनका। अभिमान उन्हें छू नहीं गया था। पूर्णत: गांधीवादी विचार थे उनके। समग्र शिक्षा जिसमें जीवन यापन की कलाएँ भी शामिल हों, के वे पक्षधर रहे एवं उनका मानना था कि इस देश मे स्वावलंबी एवं स्व-अर्जन को सिखाने वाली शिक्षा अधिक कारगर एवं कल्याणकारी साबित होगी।

वह सामंती जमाने के हिन्दू विश्व विद्यालय से निकले आचार्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति थे एवं शिक्षा को ही उन्होंने अपने जीवन का ध्येय बनाया। देश की आजादी हेतु उन्होंने अपनी अमूल्य सेवाये दीं। बीकानेर स्टेट की प्रथम लोकप्रिय सरकार में वे शिक्षामंत्री रहे। सम्पूर्ण राजस्थान की विधानसभा हेतु वे चुने गये पर आजादी के बाद राजनीति जिस तरह सिद्धान्तहीन, स्वार्थ एवं जोड-तोड परक होती जा रही थी। वैसी राजनीति उन जैसे सिद्धान्त प्रिय, त्यागमूर्ति गांधीवादी को पसंद नहीं आई एवं उन्होंने भी अन्य गांधीवादियों की तरह से इस तरह की छिछली एवं स्वार्थ परक राजनीति से किनाराकर अपने आपको समाज सेवा एवं शिक्षा के क्षेत्र में सर्वात्मना समर्पित कर दिया एवं आज भी अनवरत इस क्षेत्र में अपनी सेवायें एवं नेतृत्व दे रहे हैं। वे एक चरित्रनिष्ठ समर्पित गांधीवादी शिक्षक थे, हैं, एवं रहेंगे।

गंगानगर में ही दो तीन बार उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मेरे घर पधार कर मुझे एवं मेरे समस्त परिवार को अपने स्नेह से आप्लावित किया एवं हम सबको यह शिक्षा दी कि अपनी आवश्यकताएँ सीमित करें, प्राप्त से संतुष्ट रहें एवं सदैव सबके प्रति कल्याण का भाव रखकर सादा एवं सरल जीवन जीयें। उनका यह निजी उद्‌बोध मेरे जीवन का मूलमंत्र बन गया। बाद के वर्षों में उनसे सम्पर्क नहीं रह पाया परन्तु मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि ऐसे प्रखर एवं प्रबुद्ध शिक्षाविद् एवं समर्पित समाज सेवी शतायु हों एवं उनके सादे एवं सरल जीवन से प्रेरणा लेकर आज का युवक अपने भविष्य का निर्माण करे।

इन्हीं हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ!

जयपुर।

मनीषी विद्वान् एवं समर्पित शिक्षाविद्

पी.डी. सिंह
निदेशक, टैगोर पब्लिक स्कूल, जयपुर

श्रद्धेय श्री गौरीशंकरजी आचार्य न केवल कुशल प्रशासक एवं स्वतंत्रता सैनानी अपितु एक समाजसेवी, ओजस्वी वक्ता एवं समर्पित कार्यकर्ता के रूप में जन-जन की श्रद्धा सम्मान के पात्र रहे हैं।

बाल शिक्षा के क्षेत्र में, मोंटेसरी शिक्षा पद्धति के स्थापन एवं प्रसार में इनका योगदान अविस्मरणीय रहा है। आपकी शिक्षा सेवायें, सहयोग एवं मार्गदर्शन समग्र राजस्थान को मिला। बालशिक्षा में नवीनता एवं गुणवत्ता लाने हेतु आपके अथक प्रयत्न, कार्यकर्ताओं का प्रोत्साहन उनकी परोक्ष-अपरोक्ष सहायता सभी कुछ अपने आप में विशिष्ट रही है।

आपने जो कुछ किया उसमें प्रशासनिक सूझबूझ के साथ निस्वार्थ भाव समाहित रहा है। आपके गतिमान एवं बहुआयामी दृष्टि-संपूरित व्यक्तित्व ने सभी को प्रभावित किया है।

आपकी विद्वता, हिन्दी, संस्कृत, संस्कृति तथा साहित्य का अति विशिष्ट ज्ञान एवं अध्ययन तथा वक्तृत्व शैली सभी का मनमोह लेती थी।

लेडी मोन्टेसरी के शिष्य एवं शिक्षाविद् श्री भामरा जी के साथ काम करने का एक अलग ही अध्याय है। टैगोर स्कूल की विभिन्न इकाईयों में भी व्यक्तित्व विकास कार्यशालाओं को आपका निर्देशन, सहयोग एवं आशीर्वाद मिलता रहा है।

राजस्थान की जनता विशेषत: शिक्षा समाज आपके योगदान को कभी नहीं भूल सकता। मेरे पर उनका विशेष स्नेह रहा है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे स्वस्थ रहें, दीर्घजीवी हों एवं हम सभी को अपना आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान करते रहें।

टैगोर लेन

"कर्तव्य क्या है और क्यों करना चाहिए? वह गीता में बताया गया है।''
–लोकमान्य तिलक

सांस्कृतिक, शैक्षिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जन क्रान्ति के अग्रदूत आचार्य श्री गौरी शंकर जी

योगाचार्य वैद्य लक्ष्मीकान्त दीक्षित
वैद्य पं. श्रीनिवास दीक्षित
वैद्यराज पं. रामप्रसाद दीक्षित

जब मैं और मेरा अनुज चि. श्री निवास दीक्षित वैद्य गंगा गोल्डन जुबली हाई स्कूल के छात्र थे तब ही आचार्य श्री गौरीशंकर जी का गंगा गोल्डन जुबली हाई स्कूल, सरदार शहर में आर्य संस्कृति एवं ज्ञान विज्ञान के वेद अमृत देव वाणी संस्कृत के शिक्षक के रूप में पदस्थापन हुआ। हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई। क्यों? क्योंकि आचार्य श्री हमारे स्व. पिता श्री के परम मित्र स्व. जगनराम जी अधिवक्ता (वकील) के सुपुत्र जो हैं। अत: वे तो हमारे आदरणीय बडे भाई थे और हैं। अत हमारा प्रसन्न होना स्वाभाविक रहा। हमारे उनके परिवार से घनिष्ट सम्बन्ध रहे हैं। हम उनके पिता श्री को बाबोजी और उनकी स्व. मातु श्री को बडिया जी सम्बोधित किया करते थे। आचार्य श्री को भाई जी और आपकी धर्मपत्नी को भाभीजी सम्बोधित किया करते थे। इस प्रकार हमारे उनके परिवार से घरेलू संबन्ध रहे हैं। हमारे पिताश्री स्व. वैद्यराज पं. रामप्रसाद जी सरदार शहर के प्रख्यात चिकित्सक रहे तो बाबोजी स्व. जगनरामजी न केवल सरदारशहर अपितु बीकानेर रियासत के प्रख्यात वकील रहे। आचार्य जी के पिता श्री की पहुँच तत्कालीन दीवान (मुख्यमंत्री) मान्धाता सिंह तक ही नहीं अपितु तत्कालीन महाराजा गंगा सिंह जी तक भी थी। दोनों उनका सम्मान करते थे।

परम् आदरणीय आचार्य गौरीशंकरजी न केवल संस्कृत के ही प्रकाण्ड विद्वान हैं, अपितु आयुर्वेद के भी प्रकाण्ड विद्वान हैं। आप अपने पिता श्री की पहुँच के कारण रियासत में ऊँचे से ऊँचा पद प्राप्त कर सकते थे। किन्तु आपने संस्कृत के अध्यापक के पद का ही चयन किया। क्यों? क्योंकि आपके हृदय में मरूभूमि बीकानेर रियासत की जनता-जनार्दन के पिछडेपन को दूर करने की ज्वाला भभक रही थी। आपने शिक्षा की ज्योति तो प्रज्ज्वलित की ही, साथ ही सामाजिक सुधार की ज्योति भी जलाई। महिला समाज का पिछड़ापन दूर करने हेतु एवं महिला शिक्षा के प्रसार-प्रचार हेतु जनता को प्रशिक्षित किया। महिलाओं में प्रचलित परदाप्रथा रूपी कुप्रथा का उन्मूलन करने हेतु जनजागृती की। आचार्य श्री का ही प्रभाव था कि मैंने हमारे समाज में सर्वप्रथम बागा पहिन कर

पाणिग्रहण संस्कार कराने की कुप्रथा का बहिष्कार किया और अपने समाज में सर्वप्रथम अपनी धर्मपत्नी का पर्दा (घूँघट) हटाया। मेरे स्व. पिता श्री वैद्यराज पं. रामप्रसाद जी भी सुधारवादी थे, उन्होंने भी किसी भी प्रकार का विरोध नहीं जताया।

आचार्य जी ने रियासत की सेवा में होते हुए भी नौकरी जाने की सम्भावना की परवाह न करते हुए, राजनीतिक जन जागरण किया और अंग्रेजों, रजवाड़ों एवं जमीदारों की त्रिपदी दासता (गुलामी) से मुक्ति के लिए अलख जगाई। तत्कालीन महाराजा गंगा सिंह जी के समान कठोर शासक का भी तनिक भय आपके निकट न फटका। आप सार्वजनिक पुस्तकालय में ही नहीं, अपितु गांधी चौक जैसे सार्वजनिक स्थल पर भी खुले में जन सभाओं का आयोजन कर आजादी की अलख जगाते रहे। आप बीकानेर रियासत में जनजागृति करने वाले तथा लोकतंत्र की अलख जगाने वाले व्यक्तियों में प्रमुख व्यक्ति रहे हैं। तत्कालीन महाराजा शार्दूल सिंह जी ने जब अपनी रियासत में लोकतांत्रिक व्यवस्था प्रारम्भ की और सरकार की स्थापना की तो आपको शिक्षा एवं रेलमंत्रालय का पद भार सौंपा गया जिसे आपने बखूबी निभाया। अंग्रेजों की दासता मुक्ति के उपरान्त जब राजस्थान बना और विधानसभा गठन हेतु निर्वाचन हुआ तो आपको कांग्रेस पार्टी द्वारा रतनगढ़ का टिकट दिया गया, जबकि आपका कार्यक्षेत्र सरदार शहर रहा था। यह तत्कालीन शातिर राजनीतिज्ञों, का षड़यंत्र था। उन्हें भय था कि यदि आचार्य जी विजयी हो गये तो उनका मंत्री बनना सुनिश्चित है और हम इससे वंचित रह जायेंगे और वे इस में सफल रहे। मेरे अपने विचार में यह आचार्यजी के लिए अच्छा हुआ। आपने अपने इतने जीवन में कभी भी किसी भी प्रलोभन में आकर कोई भी अनैतिक कार्य नहीं किया नहीं कभी इन्हें किसी प्रकार की पद लोलुपता रही। आपने सदा अपनी स्वच्छ छवि का ध्यान रखा। आपके समान सादा जीवन उच्च विचार वाले व्यक्ति के लिए राजनीति कतई रास न आती। एक बार राजकीय गोदारा गर्ल्स कॉलेज, श्री गंगानगर में आपका सम्बोधन सुनने का मुझे भी सुअवसर मिला। उस समय केन्द्र में कांग्रेस की सरकार थी। आपने तत्कालीन राजनीति की खुलकर भर्त्सना की और दुःख प्रकट किया। जबकि आप स्वयं कांग्रेसी रहे हैं।

सरदार शहर के गांधी विद्या मंदिर का निर्माण आप ही की परिकल्पना एवं सद्प्रेरणा का जीता जागता प्रमाण है। गांधी विद्या मंदिर के संस्थापक श्री कन्हैया लाल जी दूगड (वर्तमान में परमपूज्य स्वामी रामशरण जी महाराज) को इसकी स्थापना की प्रेरणा देने वाले प्रेरणा के स्रोत, कोई अन्य व्यक्ति नहीं, आदरणीय आचार्य श्री गौरीशंकर जी ही हैं। आप इसके प्रेरक ही नहीं योजनाकार भी रहे हैं। आपकी प्रेरणा से लगे इस छोटे से पौधे ने अब शिक्षा के वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया है। यह एक ऐसा संस्थान है, जिसमें प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर सर्वोच्य शिक्षा की

व्यवस्था है। शिशुओं हेतु बालबाडी, किशोरों हेतु बेसिक सीनियर हायर सैकण्डरी स्कूल है वहीं इसके परिसर में दूगड महाविद्यालय कार्यरत है। जिसमें स्नातकोत्तर शिक्षा की व्यवस्था है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय है तो महिलाओं की शिक्षा एवं उत्थान हेतु महिला विद्यापीठ कार्यरत है तो आयुर्वेद की शिक्षा हेतु श्री भंवरलाल दूगड़ आयुर्वेद विश्व भारती की स्थापना की गई है। आज तो इसे केन्द्र सरकार से मान्य विश्वविद्यालय की भी मान्यता प्राप्त हो गई है। इस प्रकार शिक्षण संस्थान रूपी इस वटवृक्ष का विस्तार भी हो गया है। इस संस्था की स्थापना से बेरोजगार बन्धुओं को रोजगार सुलभ हुआ। दुकानदारों की दुकानदारी चली तो कई होटल एवं रेस्टोरेंट आदि इसके परिसर में खुले। मुझे स्व. वैद्यराजहिमकर जी की एक बात याद आती है, आप एक बार पटना जा रहे थे। रेलगाड़ी में किसी सहयात्री ने पूछा "वैद्यजी आप कहॉ से आ रहे हैं और कहॉ जाएंगे।" आपने कहा "मैं सरदार शहर से आ रहा हूँ और पटना जा रहा हूँ।" उस सहयात्री ने कहा, कौनसा सरदार शहर? अरे! जहाँ आयुर्वेद विश्व भारती है। "इस प्रकार आचार्य जी एवं स्वामी जी ने सरदारशहर के नाम को विश्व पटल पर अंकित करा दिया। मैं तो सरदार शहर की जनता एवं गॉंधी विद्या मंदिर के संचालकों से निवेदन करना चाहूँगा कि गांधी विद्या मंदिर परिसर में परम पूज्य स्वामी रामशरण जी महाराज एवं आचार्य श्री गौरीशंकर जी की प्रतिमा उनके जीवन में ही स्थापित कर अनुगृहित हों।

आपने आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त कर आयुर्वेद का प्रचार-प्रसार किया है। प्रचार-प्रसार के दौरान आपने कुछ बन्धुओं को नि:शुल्क आयुर्वेद का कर्माभ्यास कराया है। जो आयुर्वेद से न केवल अर्थोपार्जन कर रहे हैं अपितु श्रेष्ठ औषध निर्माण कर प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर रहे हैं। आपने शिक्षा, सांस्कृतिक, समाज सेवा और आयुर्वेद को उपार्जन का साधन न मानकर उपकार का साधन ही समझा है। मैं तो आपके जीवनवृत से अत्यन्त प्रभावित हूँ। मैंने भी हिन्दी, संस्कृत और आयुर्वेद (चिकित्सा) को आपकी प्रेरणा से उपकार व सेवा का साधन समझा है, न कि अर्थोपार्जन का साधन। मुझे तथा मेरे अनुज चि. श्री निवास को पंजाब मैट्रिक में विशेष योग्यता प्राप्त हुई जो आचार्य जी का ही पुण्य प्रताप है। स्वास्थ्य संबंधी एवं सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में मेरे आलेख प्रकाशित होते रहे हैं। इन आलेखों की भाषा का सौन्दर्य एवं प्रभावशालीनता का कारण आप ही की शिक्षा है। आप ही मेरे प्रेरणा के स्रोत्र हैं। मेरे अन्दर जो गुण व अच्छाईयॉं हैं, उपकारी कृति है सब आप ही की देन है।

योग-आयुर्वेद शोध संस्थान,
आरोग्यधाम, सरदार शहर

डॉ. गौरीशंकर आचार्य को जैसे मैंने देखा

माणिक चन्द बोहरा
अध्यक्ष, नवनीत चिकित्सा अनुसंधान आश्रम,

डॉ. गौरी शंकर आचार्य से पहली मुलाकात श्री कन्हैया लाल जी दुगड़ के साथ महात्मा गॉधी के गाँधीवादी शिष्य आदरणीय श्री किशोर लाल भाई मशरूवाला के घर पर बजाजवाड़ी वर्धा में हुई। यह गांधी विद्या मंदिर के प्रारम्भ करने के आसपास की बात है। उस समय श्री आचार्य जी एवं श्री दुगड जी ने नम्रतापूर्वक किशोरलाल भाई के सम्मुख प्रस्ताव रखा कि हम गांधी विद्या मंदिर की स्थापना के लिए प्रारम्भिक तौर पर रुपये पाँच लाख अर्पित कर रहे हैं। उसी दौरान श्री राधाकृष्णजी बजाज के यहॉ भोजन का कार्यक्रम गोपुरी में रखा था। उसमें उन्होंने विशेष आग्रह से कहा हम तेल नहीं खाते हैं, इसका ध्यान रखें। महाराष्ट्र में तेल न खाने वाली बात सबको आश्चर्य में डालने वाली थी। अतः उनके अनुरूप साग, सब्जियॉ बनाई गई व उन्हें भोजन कराया गया, मैं भी उसमें सम्मिलित था। उसी दौरान गांधी विद्या मंदिर में गौशाला का भी जिक्र आया और गौशाला की स्थापना हुई। उस गौशाला ने राजस्थान में ही नहीं पूरे भारत में राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों में प्रसिद्धी पाई। मैं भी उस गौशाला में दो बार जा चुका हूँ और कन्हैया लाल दुगड के घर पर भी रुका हूँ। आज भी उनका स्नेह मुझ पर है।

उसके बाद काफी अर्सा डॉ. गौरीशंकर जी से मुलाकात नहीं हुई। फिर सन् १९७६ के आसपास पुनः गौसेवा की दृष्टि से हम सम्पर्क में आए और काफी समय तक राजस्थान पिंजरापोल गौशाला संघ जयपुर जिसमें वे अध्यक्ष रहे और राजस्थान गौसेवा संघ में भी वे सक्रिय रहे। इस तरह कई वर्षों तक साथ साथ कार्य किया। उनकी गौसेवा के प्रति प्रबल भावना का दर्शन मुझे हुआ। समय-समय पर मुलाकातें होती रहती थीं और उनके चिन्तन एवं सादगी का लाभ भी हमें मिलता रहता था।

अभी वे ९१वें वर्ष में प्रवेश की तैयारी कर रहे हैं। मेरी ओर से उनके स्वास्थ्य की कामना करते हुए शतायु पूर्ण करें इसी अभिलाषा के साथ मेरा प्रणाम एवं शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

बस्सी-जिला-जयपुर (राज.)

निर्माण के नये क्षितिजों के उद्धारक-
डॉ. गौरीशंकरजी आचार्य

आलेख-वैद्य सोहन लाल दाधीच

जन जन की चेतना में बसे आचार्य श्री गौरीशंकर जी की धवल कीर्ति सरदार शहर के कण-कण में व्याप्त है। आचार्य जी आजादी से पूर्व महामना मदन मोहन मालवीय जी द्वारा संस्थापित हिन्दू विश्व विद्यालय वाराणसी से वेदान्ताचार्य उपाधि प्राप्त कर अपने पूज्य पिताजी के आवास स्थल सरदार शहर पधारे थे। सरदार शहर बीकानेर जनपद का धनाढ्य नगर है। उस समय शैक्षणिक व्यवस्थाओं का अभाव सा था। तीस व चालीस हजार की आबादी वाले इस नगर में केवल एक सैकेण्डरी स्कूल ही था। यहाँ के अधिकांश व्यक्ति बंगाल, गुजरात, आसाम आदि प्रदेशों में व्यवसायरत् हैं। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न क्षेत्र था। राजनैतिक जागृति का पूर्णतः अभाव था।

आचार्य जी का सरदार शहर में आगमन-

सरदार शहर के उतरादा बाजार में एक पुस्तकालय का भव्य भवन है। इस भवन का निर्माण बिडला बन्धुओं ने किया था। यह सार्वजनिक पुस्तकालय इस क्षेत्र का अग्रणी शिक्षा स्थल है और सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु है। प्रायः सभी जाति वर्गों के लोगों का यहाँ निरन्तर आवागमन रहता है। आचार्य जी ने यहीं से अपनी प्रतिभा व संगठन क्षमता प्रसूत योजना का श्री गणेश किया था। सर्वप्रथमे यहाँ एक साहित्य समिति का गठन किया गया, जिसके माध्यम से हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मध्यमा, उत्तमा आदि की पाठ्य प्रवृत्तियों का कुंभारंभ किया गया। पुस्तकालय के समाने बाजार वाली विशाल छत पर रात्रि कालीन पाठशालायें प्रारम्भ की गईं। हिन्दी साहित्य की साधना के साथ साथ प्रतिदिन आचार्य जी द्वारा राजनीतिक प्रशिक्षण व देश की तत्कालीन परिस्थितियों का वैचारिक मंथन हुआ करता था।

आचार्य जी का व्यक्तित्व-

"सादा जीवन उच्च विचार" के आदर्श आचार्य जी के संरक्षण में नगर के प्रायः सभी वर्गों के व्यक्ति सम्मिलित हुये थे। वैसे इस नगर में दस-पन्द्रह हजार की आबादी ओसवाल समाज की है। इन प्रवृत्तियों मे भी उनका ही बाहुल्य रहता था। शनैः शनैः तीस-चालीस की संख्या में शिक्षा प्रेमी युवक सक्रिय भाग लेने लगे। आचार्य जी सच्चे अर्थों में सरदार शहर की शिक्षा चेतना के पुरोधा बने। अनेक युवकों ने आपसे प्रेरणा पाकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मध्यमा व उत्तमा की उपाधियाँ अर्जित कीं।

उन्हीं दिनों बीकानेर साहित्य सम्मेलन का जन्म यहीं किया गया। इस सम्मेलन के द्वारा भी "साक्षर व शिक्षित'' आदि पाठ्यक्रम चलाये जाने लगे और उन परीक्षाओं में सैकड़ों छात्र-छात्राएँ भाग लेने लगे।

आचार्य जी की योजना के अनुसार प्रत्येक सदस्य को यह प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। कि वह अपने विवाह में दहेज नहीं लेगा। इस प्रकार की समाज सुधार की भावना भी युवकों में बहुत तेजी से पनपीं। इस प्रकार की अनेक क्रान्तिकारी योजनाओं का आचार्य जी शंखनाद करते रहते थे। इन्हीं दिनों समिति के माध्यम से देश के शहीदों व साहित्यकारों की जयन्तियाँ मनाई जाने लगी थीं। इससे युवकों में भाषण देने की कला भी विकसित होने लगी। इस प्रकार की प्राणवान प्रवृत्तियों के संचालन से बीकानेर क्षेत्र में सरदार शहर ने अग्रणीयता प्राप्त की। यहाँ के अनेक युवकों में भाषण तथा लेखन की प्रतिभा मुखरित हुई। परिणामत: श्री बुधमल शामसुखा, श्री मूलचन्द सेठिया, श्री दीपचन्द नाहटा, श्री पूर्णचन्द मीमाणी आदि अनेक युवक आगे बढ़े। साहित्य रचना के क्षेत्र में भी एक नई क्रान्ति का श्री गणेश हुआ। राजस्थान के भामाशाह सेठ श्री सोहन लाल दुग्गड फतेहपुर वालों ने रचना प्रवृत्ति के बढ़ते चरणों को बल प्रदान करने के लिए कुछ आर्थिक सहायता भी की थी। जिसके बल पर हिन्दी प्रचार "क्यों और कैसे'', साक्षरता प्रचार "क्यों और कैसे'', स्वास्थ्य प्रचार "क्यों और कैसे'' आदि विभिन्न विषयों पर अनेकों लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ था। जिनसे समाज मे जागृति का शंखनाद हुआ।

इन्हीं दिनों बीकानेर राज्य में एक लोकप्रिय सरकार का गठन हुआ, जिसमें शिक्षामंत्री के रूप में आचार्य जी की सेवाएँ ली गईं। आचार्य जी के मंत्रित्व काल में संस्कृत व हिन्दी भाषा की महत्वपूर्ण प्रगति हुई। संस्कृत व हिन्दी के उपाधी धारी शिक्षकों को अन्य विषयों के शिक्षकों के समान वेतनमान दिये जाने का क्रान्तिकारी निर्णय लिया गया।

१९४४ ई. में बीकानेर के महाराजा श्री शार्दुलसिंह जी अपने राज्य का भ्रमण करते हुए सरदार शहर पधारे उन्होंने नगर की प्रमुख संस्था सार्वजनिक पुस्तकालय का भी निरीक्षण किया। आचार्य जी ने यहॉ शिक्षा क्षेत्र का एक तुलनात्मक चार्ट बनाकर लगाया था। जिसमें भारत के विभिन्न प्रदेशों का शैक्षणिक प्रतिशत अंकित था। केरल राज्य का साक्षरता प्रतिशत सर्वाधिक तथा बीकानेर का सबसे न्यूनतम् प्रतिशत दिखाया गया था। बीकानेर नरेश ने इस चार्ट को देखकर *आचार्य जी को अपने पास बुलाकर यह प्रतिक्रिया व्यक्त की कि तुलना जयपुर, जोधपुर आदि समान* राज्यों से की जानी चाहिए थी और इन राज्यों का प्रतिशत बीकानेर राज्य से कम था।

इन्हीं दिनों सरदार शहर के धनाढ्य परिवार के श्री कन्हैया लाल जी जो वर्तमान में स्वामी रामशरण दास जी के नाम से विख्यात हैं, ने सार्वजनिक क्षेत्र में शैक्षणिक सेवाएँ देने के उद्देश्य से

एक महान् संस्थान महात्मा गाँधी के नाम पर "गॉधी विद्या मंदिर" की स्थापना की थी। उक्त संस्था की प्रगति के लिए आचार्य गौरीशंकर जी भी उनके प्रमुख सहयोगी बने। महात्मा गाँधी की मूर्ति स्थापना के बाद वहॉ विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं का बीजारोपण हुआ। इन संस्थाओं में एक आयुर्वेद विश्व भारती भी थी, जिसमें भीषम्बर और भिषगाचार्य तक का पाठ्यक्रम था गांधी विद्या मंदिर के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री गणेशमल जी दुगड ने इस संस्थान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू करने के उद्देश्य से भारत में चालू आयुर्वेदीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम महाविद्यालयों के निरीक्षण के लिए आयुर्वेद विश्व भारती के परामर्शदाता की अध्यक्षता में एक शिष्ट मण्डल भेजा गया था। सौभाग्य से उन दिनों मैं भी वहॉ प्राचार्य पद पर कार्यरत था। हम दोनों ने संस्कृत विश्वविद्यालय देहली, गुरूकुल महाविद्यालय कांगड़ी, गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, आयुर्वेद महाविद्यालय लखनऊ तथा महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेदीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों का अवलोकन किया। इस यात्रा में मुझे आचार्य जी का दीर्घकालीन सानिध्य व प्रेरक सम्पर्क मिला तदर्थ मैं अपना अहोभाग्य मानता हूँ। उक्त महाविद्यालयों के निरीक्षण काल में सभी संस्थानों में मेरे द्वारा राजस्थान में चलने वाले आयुर्वेद महाविद्यालयों के संक्षिप्त परिचय की प्रस्तुति के बाद आचार्य जी का विद्वतापूर्ण मधुर भाषण हुआ करता था। आचार्य जी प्रत्येक व्यक्ति को उन्नत बनाने का परामर्श देते हैं। आचार्य जी के प्रभावशाली भाषण से वहॉ के आचार्य व विद्यार्थी उनके अनन्य भक्त बन जाते थे।

आचार्य जी का राजनैतिक जीवन-

आचार्य जी का राजनैतिक जीवन भी महान् उज्ज्वल रहा है। वे रतनगढ निर्वाचन क्षेत्र से एक बार प्रबल मतों से राजस्थान विधानसभा के विधायक निर्वाचित हुये। विधानसभा में भी इन्होने संस्कृत व हिन्दी को प्रबल समर्थन प्रदान किया था। राजनीति में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार से विक्षुब्ध होकर शान्त जीवन जीने की शुभकामना से राजनीति का परित्याग कर दिया। आप जीवन पर्यन्त साहित्य, संस्कृत एवं आयुर्वेद की विविध क्षेत्रों की अपूर्व सेवा में संलग्न रहे हैं।

राजस्थान आयुर्वेद परामर्श मण्डल के सदस्य के रूप में भी आपने श्लाघनीय सेवाएँ दी थीं। आप अध्यात्मजीवी, आदर्श तथा शिक्षा जगत के पुरोधा के रूप में ससम्मान चर्चित हैं। वे सम्पूर्ण समाज के उजाले के शिल्पी कहे जा सकते हैं। उत्प्रेरणा के इस शिखर पुरूष को मैं शत् शत् नमस्कार करता हूँ। इनके दीर्घ जीवन जीने की भी शुभकामना करता हूँ।

त्रिवेणी फार्मेसी,
सुजानगढ

आचार्य जी : शिक्षा को समर्पित व्यक्तित्व

वैद्य सूर्यकान्त शर्मा

डॉ. गौरी शंकर जी आचार्य-६५ वर्ष से अधिक का साथ। एक पूरा युग। उनके व्यक्तित्व के किन-किन क्षणों को लिपिबद्ध किया जाए। समाज को समर्पित व्यक्तित्व, निस्वार्थता की प्रतिमूर्ति, सादगी की जीवन्तता, शिक्षा को समर्पित जीवन, आयुर्वेद के उत्थान में सहयोगी, गौ-पालन में समर्पित भाव, गीता के ज्ञान योग, कर्म योग व भक्ति योग की साक्षात् प्रतिमूर्ति किन-किन विशेषताओं को लिखा जाये।

स्मृति के गहन वन में - याद आता है कि उनका प्रारम्भिक शिक्षक जीवन १९३९-४० ईस्वी। उस समय आप शिक्षा से निवृत्त होकर बीकानेर राज्य की अनिवार्य सेवा हेतु सरदार शहर आए थे। वहाँ आपके समर्पण भाव से जो जागृति आई वह आगे चलकर गांधी विद्या मंदिर के रूप में फलित हुई। सरदार शहर में आते ही आपने साहित्य समिति का गठन किया। औंकार नाथ शास्त्री, दीपचन्द नाहटा, बुधमल श्यामसुखा, अनोपचंद छाजेड, हनुमान प्रसाद सर्राफ आदि समर्पित व्यक्तित्व आपके सहयोगी रहे। साहित्य गोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, शिक्षा-जागरण की प्रदर्शनियाँ निरन्तर होती थीं। राजपूताना साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन भी हुआ।

शिक्षा के लिए राजकीय सहयोग हेतु आपका प्रयत्न याद आता है-बीकानेर स्टेट के महाराजा गंगा सिंह जी का सरदार शहर दौरा था। आपने शिक्षा की स्थिति व प्रसार हेतु एक प्रदर्शनी का आयोजन किया और हिज हाईनेस से निरीक्षण की स्वीकृति ली। हिज हाईनेस पधारे, निरीक्षण करते हुए उनका ध्यान एक चार्ट की ओर गया जिसमें बीकानेर राज्य में शिक्षित व्यक्तियों का प्रतिशत मात्र सात प्रतिशत बताया था। हिज हाईनेस का एकदम स्वर बदला और कहा - "भाया ई प्रदर्शनी रो आयोजक कुण है? बीं ने आथण कोठी मैं हाजिर करो। आ तो बीकानेर राज्य री तौहीन करी है।"

सायंकाल शिष्ट मण्डल के साथ आचार्य जी हिज हाईनेस के पास उपस्थित हुए। सभी के मन में भय था कि महाराजा का स्वभाव बहुत तीव्र है, क्या कहेंगे? कहा नहीं जा सकता। हिज हाईनेस के सामने खम्मा अन्नदाता कह उपस्थित हुए। महाराजा के कथनोपरान्त आचार्य ने प्रभावपूर्ण शब्दों में कहा कि हम सीधे आपके सामने वस्तु स्थिति नहीं रख सकते थे इसलिये ध्यानाकर्षण के लिए यह

दिखाया गया है, अपराध क्षमा हो। यह चार्ट किसी दूसरे राज्य में दिखाया जाता तो राज्य की तौहीन थी। प्रार्थना है कि शिक्षा के विषय में ध्यान देवें। महाराजा ने ध्यान से सुन कर कहा "करो भाया शिक्षा रो प्रचार करो, सरकार सहायता देसी।''

राज्य की अनिवार्य सेवा के पांच वर्ष के कार्यकाल में सरदार शहर के बाद श्री गंगानगर में आये और नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना करवाई। साहित्य प्रेमियों को संगठित कर शिक्षा के प्रचार प्रसार में जुटे। अनिवार्य सेवा का कार्यकाल पूरा होने पर जन सेवा में लगे और स्टेट द्वारा शिक्षा मंत्री व रेल मंत्री मनोनीत हुए।

आपकी आयुर्वेद में भी विशिष्ट अभिरूचि रही। आयुर्वेद का भी आपने अध्ययन किया। राजस्थान आयुर्वेद शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे। सन् १९५९ में श्रीगंगानगर में विश्व भास्कर आयुर्वेद फार्मेसी की स्थापना की ताकि जन सामान्य को विशुद्ध औषधियाँ प्राप्त हो सकें।

अभी ९० वर्ष की आयु में भी गंगानगर में धर्मसंघ संस्कृत महाविद्यालय में वेदशास्त्रानुसंधान केन्द्र की स्थापना व गीता विश्वभारती की स्थापना का आपका कार्यक्रम सनातन के प्रति आपकी आस्था व भारतीय वांगमय से सम्पूर्ण विश्व को लाभान्वित करने की आकांक्षा व उसके प्रति निष्ठा का द्योतक है।

श्री गंगानगर।

"विरागी जिसकी इच्छा करते हैं, सन्त जिसका प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं और पूर्ण ब्रह्मज्ञानी जिसमें "अहमेव ब्रह्मास्मि'' की भावना रखकर रमण करते हैं, भक्त जिसका श्रवण करते हैं, जिसकी त्रिभुवन में सबसे पहिले वन्दना होती है, उसे लोग भगवद्‌गीता कहते हैं।''

–सन्त ज्ञानेश्वर

विचारोत्प्रेरण के शिखर पुरूष : श्री आचार्य जी

मांगीलाल पुरोहित
पत्रकार (से.नि. शिक्षा अधिकारी)

आचार्यश्री गौरीशंकरजी के व्यक्तित्व की विशालता में अनेक चारित्रिक विशेषताओं का समावेश है, जिनसे समग्र मानव जाति नई राह ढूंढ पाती है। आप शीतल व प्राणदायिनी ऊर्जा के अखण्ड़ स्रोत रहे हैं। आपके विचारों में थाह, विस्तार व यथार्थ का मिश्रण है। विचारोत्प्रेरण को आपने इतना व्यापक बनाया कि उसमें बुद्धिजीवी, शिक्षक, शिक्षार्थी, व्यवसायी, नौकरीपेशा व श्रमजीवी सभी समाहित हुए हैं। हर समय की नाडी पहचानना, भविष्य की आहट सुनना तथा वर्तमान आवश्यकताओं को जानना आदि ने सभी कार्यों में उन्हें अभूतपूर्व सफलता दिलायी है।

आप व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला कहलाते हैं। आपने युवकों में वक्तृत्व शक्ति का जागरण किया है, सैकड़ों युवकों को रेत के टीलों में ले जाकर भाषण-कला का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। इन्हीं के कई शिष्य राज्य में आज भी श्रेष्ठ वक्ताओं की श्रेणी में गिने जाते हैं। आपके भाषण का एक-एक शब्द श्रोताओं के हृदय-तंत्र के तारों को झंकृत करता है।

सृजनधर्मी के रूप में बीकानेर स्टेट में शिक्षामंत्री, रेलमंत्री आदि विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित रहते हुए आपने अनेक रचनात्मक कार्यों को व्यावहारिक रूप दिया। राजस्थान में हिन्दी और संस्कृत शिक्षकों को बी.ए. के समकक्ष वेतन श्रृंखला स्वीकृत कर आपने एक ऐतिहासिक अध्याय की संरचना की है। रेलवे विभाग में आपकी प्रशासनिक क्षमता के कारण अनेक सुधार हुए जिनमें गाडियों की नियमितता एक उल्लेखनीय उदाहरण रहा।

आपका वनस्पति ज्ञान व आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण भी बेजोड है। विभिन्न वनस्पतियों के सरंक्षण व संवर्द्धन के साथ वृक्षारोपण हेतु चेतना को भी स्फूर्त किया है। आयुर्वेद में भस्म और पिष्टियों के निर्माण में भी आपने अनेक युवकों को तैयार किया जो आज भी जनसेवा कर रहे हैं। श्री सांवरलाल सोनी व श्री बजरंग लाल सोनी शुद्ध भस्में व पिष्टियों का निर्माण कर सरदारशहर में व हमारे प्रदेश में जो जनसेवा कर रहे हैं यह सभी आपकी ही देन है। उस समय पर्यावरण शब्द प्रचलित नहीं था लेकिन वन महोत्सव के अंतर्गत वृक्षारोपण शिक्षण व सार्वजनिक संस्थाओं में किया जाता था। मैंने शिक्षक के रूप में शिक्षा विभाग की सेवा की तथा जिन विद्यालयों में मैं रहा, शिक्षक साथियों व छात्रो के सहयोग से हर वर्ष वर्षा ऋतु में वृक्षारोपण करवाता तथा वृक्षों की रक्षा करता।

यह प्रेरणा मुझे आचार्य जी से मिली जो अब भी मैं लगातार कर रहा हूँ। १९९२ में मैंने "दी फिलाटेलिक सोसायटी'' बनाई व पर्यावरण चेतना हेतु शिक्षकों व छात्र-छात्राओं के आवासीय शिविर लगाये। प्रतिवर्ष निजी पौधशाला में ५००० पौधे तैयार करता हूँ तथा शिक्षण व सार्वजनिक संस्थाओं में जाकर पौधों का नि:शुल्क वितरण तथा रोपण करवाता आ रहा हूँ। इन्हीं से प्रेरणा लेकर आयुर्वेद की अनेक वनौषधियों की कृषि का व्यावहारिक प्रशिक्षण दे रहा हूँ, जिससे किसानो की जड़ी-बूटियों की खेती में रूचि बढी है तथा किसानों की आर्थिक स्थिति भी सुधरी है। इन्हीं की प्रेरणा से वन्यजीव संरक्षण में योगदान देने हेतु एशिया के सुप्रसिद्ध कृष्णमृग अभ्यारण्य, तालछापर के वन्यजीवों की सुरक्षा एवं संबर्द्धन हेतु गत एक दशक से प्रयत्नशील रहा हूँ। इन्हीं की प्रेरणा से मैं गौ सेवा के कार्य में गत कई वर्षों से संलग्न रहा हूँ। अकाल में गौरक्षा हेतु इसी जिले में कई गौशालाएँ स्थापित करवाई तथा वर्तमान में भारतीय गौवंश रक्षण संबर्धन परिषद् के मंत्री का दायित्व भी निभा रहा हूँ।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के स्वर्णिम पृष्ठों में आपका नाम शीर्षस्थ पंक्ति में रहेगा। आपके तत्कालीन भाषणों में क्रान्ति की ज्वाला थी। क्रान्ति की दीप्त मशाल हाथ में लिए आपने आजादी से पूर्व विशेषत: १९४४-१९४७ के मध्य सैंकड़ों सभाओं को उद्‌बोधित किया। इनकी वाणी में अदम्य जोश था, भाषा में प्रवाह था तथा भावों में क्रान्ति की आग थी। पुलिस की निर्मम कार्यवाहियाँ भी श्रोताओं को इनके भाषण सुनने से रोक नहीं पाती थीं। सरदार शहर में जन-जन में साहित्यिक व सांस्कृतिक अलख जगाने में आप शीर्षस्थ रहे। आपने युवकों में स्वाध्याय के प्रति विलक्षण जागृति पैदा की। सैकडों युवकों को साहित्य सृजन की प्रेरणा दी। आपके सतत् प्रयासों से सरदार शहर ही नहीं, सम्पूर्ण बीकानेर स्टेट में प्रतिभाओं का उन्नयन हुआ। राजस्थानी भाषा के उन्नयन में भी आपके प्रयास बराबर रहे।

संक्षेप में आपने बहुत कहा, बहुत लिखा और बहुत दिया। सृजनधर्मी चेतना के धनी और पुरूषार्थी पूज्यवर के चरणों में अपनी श्रद्धापूर्ण प्रणति के साथ विचारों को विराम देता हूँ। आप स्वस्थ रहें दीर्घायु हों और मानवता की सेवा में संलग्न रहें। इसी कामना के साथ।

पाराशर मार्ग, सुजानगढ़-३३१५०७
जिला-चूरू (राज.)

गुरू बिन ज्ञान कहाँ से पाऊँ

सांवरलाल सोनी, आयुर्वेद रत्न
सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी

मैं आज अपने पूज्य गुरूदेव श्री गौरीशंकर जी आचार्य के साथ मेरा जो संबंध रहा, मैंने उनसे जो पाया, जीवन जीने की जो कला सीखी, उसे लिपिबद्ध करने का प्रयास कर रहा हूँ। लिखते समय ऐसा आभास हो रहा है कि मानों गुरू देव मेरे समक्ष आर्शीवाद की मुद्रा में मुस्कुराते हुए खडे हैं। मेरा हृदय आनन्द से ओतप्रोत हो रहा है।

मेरे गुरूदेव का नाम भी ऐसा है जिनका नाम लेने मात्र से पाप में आसक्त जीव भी भय मुक्त हो जाता है। मैं गुरू देव को शत: शत: प्रणाम करके अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ।

बात उस समय की है जब मैं सेठ बुधमल कॉलेज का छात्र था। मेरा मन बेचैन था। मैं अपनेआपको बहुत ही हीन एवं कमजोर व्यक्ति मानता था। मेरा कोई मार्गदर्शक नहीं था। एक दिन आचार्य श्री गौरीशंकर जी कॉलेज में पधारे। इनका ओजस्वी भाषण सुनकर रोंगटे खड़े हो गये। मुझे ऐसा आभास हुआ कि मेरे मार्गदर्शक आज मेरे सामने प्रकट हो गये हैं। मैं जैसा गुरूदेव चाहता था वैसे गुरूदेव भगवान् ने कृपा करके भेज दिए हैं। अब केवल मिलन की देरी है।

मैं उदास मन से एवं आशाओं के साथ ओम कुटीर (गॉधी विद्या मंदिर) पहुँचा। मुझे देखते ही गुरूदेव ने बडे स्नेह से मुस्कुराते हुए कहा आओ आओ अंदर आ जाओ। गुरूदेव बोले-बोलो क्या चाहते हो? मैंने अपनी दुविधा इनके सामने रख दी। मन में इनको गुरूदेव स्वीकार कर लिया।

गुरूदेव ने कहा-परम पिता परमात्मा ने हमें जिस उद्देश्य के लिये धरती पर भेजा है, उसे स्वीकार करो उसे पूरा करो। जैसी जीवन यात्रा प्रभु ने दी है उसे सहज स्वीकार करो। भगवान् भरोसे रहो। अपने कर्त्तव्य का ईमानदारी से पालन करो। भगवान् का हर विधान मंगलमय होता है।

गुरूदेव ने कहा सच्चाई कर्त्तव्य और मौत को हमेशा याद रखो। जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा। गायत्री मंत्र का जाप करो। गायों की सेवा करो। गीता का अध्ययन करो। भगवान् तुम्हारा भला करेगा।

मैंने एक संत, ब्रह्मज्ञानी, तत्ववेत्ता का साक्षात् दर्शन किया। मेरे मन में जो दुख उदासी थी वह खुशी में बदल गई। मुझे एक दिव्य प्रकाश का आभास हुआ।

मैंने इनके बताये रास्ते से जीवन जीना शुरू कर दिया। मैं आगे चलकर अंग्रेजी का अध्यापक

बना। बात सन् १९६९-७० की है। मोमासर में मेरी नियुक्ति हुई। उस साल भयंकर अकाल पडा। मुझे गुरूदेव की बात याद आ गई (गाय की सेवा करो) मैं मानव सेवा संघ का सदस्य था। श्री कन्हैया लाल दूगड अध्यक्ष थे। मैंने कन्हैया लाल जी से प्रार्थना की कि आप मोमासर पधार कर लोगों के दिल दिमाग में गायों की सेवा करने के लिये प्रेरित कर योगदान देवें। श्री कन्हैया लाल जी वर्तमान में स्वामी रामशरण दास जी मोमासर पधारे और उन्होंने लोगों के दिल में गायों की सेवा हेतु योगदान देने की भावना भर दी। नतीजा यह हुआ कि तुरन्त वहाँ मानव संघ की स्थापना की गई। श्री उत्तमचन्द जी सेठिया अध्यक्ष बनाये गये। हमारे प्रधानाध्यापक श्री इन्द्रचन्द जी शर्मा उपाध्यक्ष बनाये गये। मुझे मंत्री बनाया गया। मोमासर के सरपंच श्री दुलीचन्द जी भाम्भू को उपमंत्री बनाया गया। श्री मंगलमल जी पटवारी खजांची बनाये गये।

गायों को एक स्थान पर एकत्र किया गया। एक गौशाला की स्थापना अस्थाई रूप में की गई। करीबन ४००-५०० गायें थीं। आधी सहायता सरकार से मिली। आधी चन्दे से प्राप्त हो गई। गायों की सेवा शुरू हो गई। आज वही गौशाला चूरू जिले की एक शानदार गौशाला के रूप में चल रही है।

मैं जिस स्कूल में पढ़ाता था वहाँ छात्रों को कह देता था कि जो छात्र गायत्री मंत्र को याद करके कॉपी में लिखेगा उसे ५ अंक ज्यादा मिलेंगे। इससे करीबन हर छात्र स्वत: ही गायत्री मंत्र याद कर लेता। नतीजा यह हुआ कि मैंने जीवन में देखा कि मेरे अंग्रेजी विषय का परीक्षा परिणाम शाला में सबसे अधिक रहता और गांव वाले भी मुझे अत्यधिक स्नेह करते थे। यह सब गायत्री मंत्र का प्रभाव था।

गुरूदेव की दूसरी विशेषता मैंने यह देखी कि ये अपने मुख से कभी भी किसी की निन्दा नहीं करते हैं। हम जब इनके सामने किसी की निन्दा करते थे तो ये बीच में बोल पड़ते थे-आज क्या तारीख है, क्या वार है? यानी निन्दा की चलने वाली बात पर विराम चिन्ह लगा देते थे। एक बार इन्होंने मुझसे कहा-निन्दा करने से शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं। दूसरों के गुण देखो-अवगुण नहीं।

मेरा और गुरूदेव का सानिध्य आगे बढ़ता रहा। माताजी एवं गुरूदेव साल में २-३ बार हमारे घर पधार जाते और ५-१० दिन रहते। हमें बड़ा आनन्द आता। माताजी रात को हमें शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाती थीं। हम हंसते-हंसते ही सोते थे। सरकारी नौकर होने के कारण मैं इनका ज्यादा लाभ नहीं उठा पाया। मेरा छोटा भाई है जिसका नाम बजरंगलाल है इसने गुरूदेव से कई रहस्यमय विद्या सीखीं और लाभ उठाया। बजरंग तो इनका परम भक्त है। माता जी लाड़ से इसे तीसरा बेटा कहकर पुकारती थीं। बजरंग और गुरूदेव का संबंध तो एक बाप-बेटे जैसा स्नेहयुक्त रहा है।

हम दोनो भाईयों पर माताजी एवं गुरूदेव की हमेशा कृपा रही है। गुरूदेव के परिवार के हर

सदस्य चाहे भीमसेन जी हों, चाहे बहिन इन्द्रा या श्यामा हो सबका स्नेह एक संयुक्त परिवार की तरह रहा है। जब भी गुरूदेव सरदार शहर पधारते थे तो अन्य लोगो के आग्रह को ठुकराकर कृष्ण की तरह हमारे घर पर रहना पसन्द करते थे। यह सब गुरूदेव की परम कृपा एवं स्नेह का प्रतीक है और हम इनके सानिध्य में बहुत खुश होते थे। हमारे पिता जी श्री भँवरलाल जी गुरूदेव को देखकर कह देते थे लो भई अटषिदेव पधार गये हैं। अब तो घर में आनन्द ही आनन्द की वर्षा होगी।

मैंने गुरूदेव को एक सच्चे वितरागी के रूप में देखा है। इन्होंने धन को कभी महत्व नहीं दिया बल्कि समय आने पर लाखों की जमीन कोडियों के भाव मांगने वालों को सहर्ष प्रदान कर दी। गुरूदेव दानवीर कर्मचारी एवं कोमल हृदय के महान् सच्चे अर्थों में ब्रह्मतेज से युक्त ब्राह्मण है। ऐसे महान् व्यक्ति की तुलना में मेरे दूसरे गुरूदेव श्री राम शर्मा से करता हूँ, जिनकी कृपा से शान्तिकुंज (हरिद्वार) चल रहा है। मैंने गांव-गांव में यज्ञ करने की प्रेरणा गुरूदेव श्री राम शर्मा से प्राप्त की।

मैंने गुरूदेव की अन्य विशेषता यह देखी कि वे कभी क्रोधित नहीं होते हैं। मैंने हमेशा इन्हें सहज भाव में देखा यानि नम्रता, मधुरता, निर अभिमान, सहिष्णुता इनमें झलकते देखी।

हमारे दिल एवं दिमाग में अज्ञात रहस्य के बारे में आत्मा परमात्मा के बारे में कोई विचार उठते थे तो हम गुरूदेव के चरणों में बैठकर सहज ही समाधान प्राप्त कर लेते थे।

इस महान् विभूति का मूल्यांकन करना सहज नहीं है। जो इनके सम्पर्क में आया। चाहे वे श्री कन्हैया लाल जी दूगड हों, चाहे दौलतराम जी हों चाहे रामेश्वर जी टांटिया हों चाहे चन्दन मल जी बैद हों सबने बहुत कुछ पाया है।

इन्होंने सरदार शहर में भारतीय संस्कृति एवं राजनैतिक जागृति की अलख जगाई है जिसने आज भी गांधी विद्या मंदिर के रूप में सारे भारत में ही नहीं विश्व में अपनी एक शानदार पहचान बना ली है।

गुरूदेव ने दिया ही दिया लिया कुछ भी नहीं। सरदार शहर वालों ने गुरूदेव से बहुत कुछ पाया है लेकिन सही अर्थों में इनको जो सम्मान मिलना चाहिए वह नहीं मिला है। ऐसी मेरी मान्यता है। सही अर्थों में हम इस महान् विभूति को पहचान नहीं सके।

मैंने इनसे बहुत कुछ पाया है। मैंने १९७९-८० में आयुर्वेद की उपाधि धारण की और मैंने अपने दो साथियों के साथ सोना बनाने की कोशिश की। पारे की भष्म बनाई लेकिन सफलता नहीं मिली। मैंने गुरूदेव को यह बात बताई। गुरूदेव ने कहा-बेकार में अपनी शक्ति को बर्बाद मत करो अपनी शक्ति आयुर्वेद की सेवा में लगा दो। गुरूदेव ने मेरे छोटे भाई बजरंग लाल को मेरे साथ

इस काम में लगा दिया और कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। हम दोनों भाईयों ने गुरूदेव के सानिध्य में चांदी, ताम्बा, लौह, अभ्रक की भष्म एवं पिष्टी तथा दवा बनाना शुरू किया। समय-समय पर गुरूदेव जब सरदार शहर पधारते तो हमें अन्य वैद्यों के नुख्शे बताते थे।

गुरूदेव ने कहा कि दवा पूर्ण ईमानदारी एवं सही ढंग से बनाओ जिससे हम स्वयं भी सहजता से ले सकें। आज से करीबन १५ वर्ष पहले श्री नथमल जी सेठिया के दवाखाने में सिल्वर जुबली मनाई जा रही थी। मैंने श्री सोहन लाल जी वैद्य एवं डिप्टी डाईरेक्टर ऑफ राजस्थान को हमारे घर पर पधारने की प्रार्थना की और ये दोनों सज्जन शालीनता से पधारे। इन्होंने हमारे द्वारा बनाई गई भष्मों, पिस्टी का अवलोकन किया और श्री सोहन लाल जी तो बोल उठे अरे भाई श्री आचार्य जी के चेले दवा निर्माण में किसी से कम नहीं रह सकते।

डाईरेक्टर साहब जाते वक्त कुछ भष्में पिष्टी साथ में लेते गये और १५ दिनों बाद सरकारी लैटर पैड पर लिखकर भेजा भाई सांवरलाल, बजरंगलाल हम लोगों ने आपकी रसायनशाला का अवलोकन किया। आप द्वारा निर्मित दवा हमने विद्वानों को दिखाई एवं रोगियों को देकर देखा। वे बडी उपयोगी सिद्ध हुई। हम चाहते हैं कि आप राजस्थान के वैद्यों को बुलाकर अपनी दवा भष्में दिखाओ और निर्माण की जानकारी देवों तो हमें खुशी होगी।

उनका पत्र पाकर हम दोनों भाई बहुत खुश हुये। हमने वह पत्र गुरूदेव को दिखाया। गुरूदेव भी बहुत खुश नजर आये। गुरूदेव ने कहा कि तुम्हारी लगन, परिश्रम एवं ईमानदारी देखकर मुझे ऐसा आभास होता है कि तुम लोगों का भविष्य शानदार होगा। आगे आने वाली पीढ़ी तुम लोगों से बहुत कुछ सीखेगी।

एक बार हमारे घर पर मिलाप बाबू दूगड पधारे। हम लोगों द्वारा बनाई गई भष्में देखकर बहुत खुश हुये। इसी क्रम में विश्व भारती के रसायनाचार्य श्री प्रदीप कुमार जी शर्मा एवं प्रिन्सीपल साहब श्री मुकुट बिहारी जी शर्मा पधारे। उस समय मेरे भाई द्वारा चॉदी की भष्म बनाई जा रही थी। शर्मा साहब चॉदी की भष्म देखकर बोल पडे यह चॉदी की भष्म मुझे आप ३०,००० (तीस हजार रुपये) रुपये में दे दो। फिर उन्होंने अन्य भष्मों का अवलोकन किया और खुश होकर बोले-प्रदीप जी आज यह देखकर मुझे खुशी हुई कि आचार्य जी के शिष्य इतनी शानदार भष्में एवं पिष्टी बनाते हैं, फिर शर्मा साहब ने विश्व भारती में मेरे छोटे भाई बजरंगलाल को बुलाकर अन्य लोगों से परिचय कराया और माला पहनाकर अभिनन्दन भी किया।

हमें यह सब उपलब्धि गुरूदेव के आशीर्वाद से ही प्राप्त हुई है। भष्मों का निर्माण मेरा भाई बजरंग लाल ही करता है। इसे सफल चिकित्सक होने का गुरूदेव का आशीर्वाद प्राप्त है। मुझे यह देखकर खुशी होती है कि कई सरकारी डॉक्टर लोग भी मेरे भाई के पास दवा लेने के लिये आते हैं।

गुरूदेव में हमने अनेक गुप्त शक्तियाँ भी देखीं, उनका लाभ भी उठाया। इनका सत्संग करने से शान्ति, सन्तोष, जीवन की परिपूर्णता का ताला खुल जाता है। आप लोग खुशी से जीवन जीना चाहते हो तो हमारे गुरूदेव का सत्संग करो। भगवान् की कृपा से ही ऐसे गुरूदेव का सत्संग प्राप्त होता है। गुरूदेव ने हमें बताया-कि भगवान् ने जीव पर कृपा करके उसको अपना कल्याण करने के लिये ही मनुष्य जीवन दिया है। अपना कल्याण करने के सिवाय मनुष्य जन्म का कोई प्रयोजन है ही नहीं, शरीर, धन, जमीन, मकान, स्त्री, सांसारिक वस्तुऍं हैं, वे सबकी सब मिलने एवं बिछुड़ने वाली हैं। अत: कोई कितना ही बड़ा धनवान बन जाये, बलवान बन जाये, विद्वान् बन जाये, ऊँचे पद वाला बन जाये पर अपने कल्याण के बिना ये सबकी सब वस्तुऍं अपने कुछ काम नहीं आएंगी। बिना दूल्हे की बारात की तरह सम्पूर्ण सांसारिक भोग व्यर्थ हैं, इसलिये मनुष्य का खास कर्त्तव्य है अपना कल्याण करना।

गीता में आवागमन से छुटकारा पाने के लिये तीन मार्ग बताये गये हैं :-

(१) ज्ञान योग (२) कर्म योग (३) भक्ति योग

मैंने गुरूदेव में इन तीनों रूपों के दर्शन किये, वे एक सच्चे योगी हैं। उन्होंने सदा ही निष्काम भाव से संसार की सेवा की है। अत: वे एक सच्चे कर्मयोगी हैं। उन्होंने हमें भक्ति का रहस्य बताया और भक्ति मार्ग की ओर अग्रसर किया। हम दोनो भाई इनके बताये मार्ग पर चलने का प्रयास कर रहे हैं। अपने आपको श्री गौरीशंकर जी का शिष्य बताकर गर्व का अनुभव कर रहे हैं।

संसार क्या है? संसार पदार्थ और क्रिया है। पुराना खत्म हो रहा है, नया पैदा हो रहा है। सनातन काल से यही क्रिया चल रही है जो दिखाई देता है वह सब नाशवान है। आत्मा परमात्मा का अंश है। जो अमर है। ममैवांशो जीलोके (गीता १५/७) भगवान का अंश होने के कारण केवल भगवान् ही हमारे हैं।

मैं गुरूदेव को ॠषि कहूँ या योगी या गुरूदेव, मेरे तो वे पिता-माता, भगवान सब कुछ वे ही हैं। मैंने गुरूदेव में एक विशेषता और देखी-वे समय-समय पर आंख मीच कर ध्यान मग्न हो जाते हैं। मैंने पूछा गुरूदेव आप आंख बंद करके क्या करते हो? उन्होंने कहा-ज्ञान मार्ग, कर्म [illegible] भक्ति मार्ग के अतिरिक्त एक मार्ग और भी है। मैं उसका ही अभ्यास कर रहा हूँ। [illegible] गुरूदेव हमें भी यह मार्ग बताओ।

गुरूदेव ने सुनाया-"सीधा चाल्या देरी लागे ऊबड खाबड़ पैंडी-[illegible] कबीर [illegible] उपराग्या है नेड़ी"

यानि उपराम हो जाओ। मन में कोई विचार आवे तो आने दे, उसमें [illegible]

हो जाओ-धीरे-धीरे आपका ध्यान इस संसार से हट जावेगा- आत्मा परमात्मा का मिलन हो जावेगा। एक विशेष प्रकार की अनुभूति होगी अखण्ड आनन्द की प्राप्ति होगी। एक विशेष प्रकार की आभा एवं प्रकाश की अनुभूति होगी।

अत: संसार की वस्तुओं की कामना छोड़ दो। सबकी सब कामना कभी पूरी नहीं हुई और होंगी भी नहीं लेकिन भगवान् प्राप्ति की लालसा होगी तो भगवान् अवश्य मिल जावेंगे।

क्रिया से भगवान् को प्राप्त नहीं किया जा सकता। भगवान् भक्त के वश में होते हैं। भक्त की पुकार सुनकर वे दौड पडते हैं, भगवान् की शरण में जाने की तीव्र लालसा होने से भगवान अवश्य मिलते हैं। भगवान् ने अर्जुन को एक बार ही गीता सुनाई थी। लेकिन हम तो जब चाहे गीता पढ़ सकते हैं और गीता में बताये मार्ग पर चलकर भगवान् को प्राप्त भी कर सकते हैं।

मैं गुरूदेव के बताये मार्ग पर चल रहा हूँ। गुरूदेव के आर्शीवाद से भगवान से भी मुलाकात होगी। मेरी एक तीव्र कामना है कि ऐसे महापुरूष धरती पर विरले ही होते हैं। अत: लाखों रुपये एकत्र किये जावें, एक फण्ड की स्थापना की जावे और उसके ब्याज से हर वर्ष जरूरतमंद छात्रों को आर्थिक सहयोग दिया जावे। मेरी शक्ति के अनुसार मैं भी इस कार्य में योगदान देना चाहता हूँ। इनके शिष्यों, इनके पुत्रों को मेरा यह संदेश भेजा जावे और मुझे अवगत कराया जावे।

मेरा यह लेख छपने से पहले गुरूदेव के चरणों में रखा जावे। उनकी स्वीकृति होने पर छापा जावे। कोई गलती हो गई हो तो सबसे क्षमा चाहता हूँ।

जय गुरूदेव-चरणों में।

सादर प्रणाम।

सत्यनारायण मंदिर के सामने,
सरदार शहर-३३१४०३ (राज.)

ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में
रहता है और वहीं से अपनी माया के द्वारा
सब भूतों का संचालन करता है।
–गीता

सादगी और सौहार्द की प्रतिमूर्ति

चिंरजी लाल सोनी
भू.पू. अध्यापक

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य का नाम सुनते ही खादी के वस्त्रों में आवृत एक सौम्यमूर्ति बरबस आंखों के सामने प्रकट हो जाती है। सादा जीवन उच्च विचार का जीवन्त रूप, जिसे देखते ही अनजान व्यक्ति के भी हाथ श्रद्धा से नमस्कार की मुद्रा में जुड़ जाते हैं।

श्रद्धेय आचार्य जी और मेरे परिवार का घरेलू संबन्ध रहा है। आचार्य जी के पिता श्री जगनराम जी उस समय के नामी वकील थे और मेरे दादाजी स्व. धनसुखदास जी इस कस्बे के प्रथम अध्यापक थे। जिन्होंने आज से करीब सवा सौ वर्ष पूर्व राजाज्ञा के आधार पर सरदार शहर में सरकारी स्कूल का शुभारंभ किया था। अधिकांश विद्यार्थी प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त कर अध्ययन की इतिश्री कर देते थे। इस विद्यालय को बाद में प्राईमरी से मिडिल स्कूल के रूप में क्रमोन्नत कर दिया गया और यहाँ से तीन विद्यार्थी श्री झम्मन लाल जी शर्मा जी जो आचार्य जी के बड़े भाई थे, श्री छगन लाल जी सोनी जो मेरे बडे भाई थे, श्री रामेश्वर लाल जी माठोलिया जो श्री मोहन लाल जी वकील के बड़े भाई थे। उच्च अध्ययन के लिए पहले बीकानेर और उसके बाद बनारस काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में गये।

आचार्य जी की प्रारम्भिक शिक्षा सरदारशहर से प्रारम्भ हुई और वे भी अपने अग्रज के पदचिन्हों पर चलते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पहुंचे। वहाँ उन्होंने अपने अध्ययन का विषय दर्शनशास्त्र चुना। आचार्य जी मेधावी विद्यार्थी थे, उन्होंने दर्शनाचार्य की परीक्षा में विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आपने अध्यापन का पवित्र पेशा अपनाया और सरदार शहर में गंगा गोल्डन जुबली हाई स्कूल में अध्यापक बन कर आये। उनके आते ही सरदार शहर मे शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्ति सी आ गई। हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसा एक वृहद कार्यक्रम उनके संयोजन में सम्पादित हुआ। बीकानेर स्टेट में वह अपने ढंग का अनूठा और अविस्मरणीय कार्यक्रम था। विद्यार्थी वर्ग में ही नहीं कस्बे वासियों के हृदय में भी इस युवा अध्यापक के प्रति बडी निष्ठा और आदर की भावना थी।

आचार्य जी के अध्यापन काल की एक घटना है, जिसका मेरे परिवार से संबंध रहा है। एक

ग्रीष्मावकाश में आचार्य जी भ्रमणार्थ किसी हिल स्टेशन पर गये थे। सम्भवतया वह स्थान शिमला था। वहाँ उन्हें एक दक्षिण भारतीय ज्योतिषी मिला। उसने इनसे सामान्य शिष्टाचार के वार्तालाप के बाद कहा कि आपके पिताजी काफी अस्वस्थ हैं। आपको तुरन्त घर जाना चाहिए। आचार्य जी ने कहा मैं परसों ही यहाँ आया हूँ और मेरे पिताजी बिल्कुल स्वस्थ हैं। उसने फिर कहा कि मुझे आपसे कुछ लेना नहीं है लेकिन जो घटना घटित होनेवाली है वह मैंने आपको बतला दी। आप घर जायें या न जायें यह आपके ऊपर निर्भर करता है। आचार्य जी कुछ सोच में पड़ गये और बोले यदि आपका कहा सही न निकला तो मुझे व्यर्थ में ही परेशानी होगी। उस व्यक्ति ने उनको अपना पता लिखकर दिया और कहा कि गांव जाने के बाद मुझे इस पते पर सम्पर्क करना। आचार्य जी वहाँ से उसी दिन रवाना हो गये और सरदार शहर पहुंचे तब तक उनके पिताजी का स्वर्गवास हो चुका था। आचार्य जी उस व्यक्ति की भविष्य वाणी से बडे प्रभावित हुए और उन्होने उसे सरदार शहर आने का आमंत्रण दिया।

आचार्य जी के बुलावे पर वह व्यक्ति सरदार शहर आया। वह व्यक्ति उच्च कोटि का हस्तरेखा विशेषज्ञ और ज्योतिषी था। संयोग से वह उस गली में आ गया जिसमें हमारा मकान था। मेरे पिताजी और बडे भाई जी घर के निकट ही अपनी दुकान में जेवरातों पर जडाई का काम किया करते थे। हमारी गली में उन दिनों कुत्ते बहुत हुआ करते थे। उन्होंने जैसे ही एक अपरिचित व्यक्ति को देखा तो भौंकने लगे। मेरे बडे भाई जी ने कुत्तों को डांटकर चुप किया और उस व्यक्ति को दुकान में ले आये। सामान्य शिष्टाचार के वार्तालाप के पश्चात् पिताजी ने उनका परिचय जानना चाहा तो उन्होंने बतलाया कि मैं आचार्य गौरीशंकर के बुलावे पर यहाँ आया हूँ। उस समय सुबह के साढे दस-ग्यारह बजे थे, गर्मी के दिन थे वे सज्जन पसीने से लथपथ हो रहे थे। पिताजी ने उनसे कहा कि आप दूर से चलकर आये हैं, थोड़ी देर सुस्ता लें, फिर आपको उनके घर पहुँचा देंगे। कुछ देर विश्राम करने के बाद उनसे कहा गया कि अब भोजन का समय हो गया है। अतः आप भोजन करके पधारें। उन्होने स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपने बैग से एक आई ग्लास निकाला और बोले कि इसकी डंडी टूट गई है कृपया इसे दुरूस्त करवा दें और वे मेरे भाई जी के साथ घर में भोजन करनेचले गये। जब खाना खाकर वापस दुकान में आये तब तक उनका आई ग्लास भी ठीक कर दिया गया था। उसे देखकर वे बडे प्रसन्न हुए और बोले कि आपने इसे बिल्कुल नया जैसा बना दिया है बताइये इसकी मरम्मत के बदले कितने पैसे आपको दे दूँ। पिताजी ने कहा आप ब्राह्मण देवता हैं हमारा तो सौभाग्य है कि आज आप जैसे सत्पुरूष के दर्शन हुए। उन्होंने कहा आपने बडा स्वादिष्ट भोजन करवाया और मेरा आई ग्लास भी ठीक करवा दिया, किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूं। फिर कहा आपने अपना काम कर दिया अब मुझे भी अपना काम करने दे

कृपया अपना दाहिना हाथ मुझे दिखाइये। हाथ देखने के थोड़ी देर बाद उनका चेहरा उतर गया। पिताजी ने पूछा महाशय क्या बात है, आप चिन्तित नजर आते हैं, उन्होंने संकोच के साथ कहा कि इससे तो अच्छा था कि मैं आपका हाथ देखता ही नहीं। पिताजी ने पूछा ऐसी क्या बात है और उनके बार-बार आग्रह करने के बाद उन्होंने झिझकते हुए कहा कि यह कटु सत्य कहना पडेगा "आज से ठीक छः महिने बाद आपका स्वर्गवास हो जायेगा" पिताजी ने कहा कि इसमें चिन्ता वाली कोई बात नहीं है, जो आया है उसको जाना तो होगा कोई दो दिन पहले और कोई दो दिन बाद में। इसके बाद उनको आचार्य जी के घर पहुँचा दिया गया। ज्योतिषी की कही भविष्य वाणी अक्षरशः सत्य हुई। ठीक छ. महीने पश्चात् पिताजी का स्वर्गवास हो गया।

गाँधी जी के "अंग्रेजो भारत छोडो" और "असहयोग आन्दोलन" के आह्वान पर आचार्य जी ने भी सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और उस आन्दोलन में कूद पडे। राज्यों में प्रजा परिषदों की स्थापना हुई जिसमें कुछ अधिकार जनता के प्रतिनिधियों को दिये गये। बीकानेर राज्य में भी उसका निर्माण हुआ और आचार्य जी को उसमें शिक्षामंत्री का पद सौंपा गया। १५ अगस्त १९४७ को देश स्वतंत्र हुआ। लेकिन स्वतंत्रता के बाद की राजनीति में होने वाले भ्रष्टाचार को देखकर आचार्य जी जैसे ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति का दम घुटने लगा और उन्होंने राजनीति से सन्यास ले लिया।

श्री कन्हैया लाल जी दूगड (वर्तमान में स्वामी श्री रामशरण जी महाराज) ने सन् १९५०-५१ में गांधी विद्या मंदिर नामक संस्था की सरदार शहर में स्थापना की। आचार्य जी को इस संस्था का अध्यक्ष बनाया गया। इनके मार्ग-दर्शन में इस संस्था की रूपरेखा बनाई गई। शिक्षा पद्धति गांधी जी की विचारधारा के अनुरूप अपनाई गई। योजना बनाई गई कि इसे देहाती विश्वविद्यालय का रूप दिया जाये। इसके अन्तर्गत प्रारम्भ में बेसिक स्कूल की स्थापना की गई जिसमें अधिकांश छात्र देहातों से आये थे। आठवीं कक्षा तक पढ़ाई की व्यवस्था थी। छात्रों के लिए छात्रावास बनाये गये। इसके पश्चात् शिक्षक प्रशिक्षण के अन्तर्गत क्रमश एस.टी.सी., टी.टी.सी., बी.एड. और एम.एड. कक्षाऐं प्रारम्भ की गई। मोण्टेसरी पद्धति के आधार पर बाल बाडी के रूप में स्कूल संचालित की गई जो श्री मोहन लाल जी जैन की परिकल्पना थी। जो कभी सुनसान कृषि भूमि थी अब वहाँ बचपन से लेकर युवावस्था तक के छात्रों की कर्मभूमि बन गई। जैसे कोई माली अपने बगीचे में विभिन्न क्यारियों में फूलों की पौध लगाता है उसी प्रकार आचार्य जी ने प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर सर्वोच्य स्तर तक शिक्षा की परिकल्पना को मूर्तरूप दिया। आज यह संस्था विश्वविद्यालय का रूप धारण कर चुकी है। इस पडाव तक पहुँचाने में आचार्य जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मैंने सन् १९५२ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। मेरा एक मित्र श्री परशुराम शर्मा गांधी विद्या मंदिर में लिपिक के पद पर कार्यरत था। मैं उसको दादा कहता था और वह मुझे चाचा कहा करता था। उसने एक दिन पूछा "चाचा आगे क्या विचार है? मैंने कहा दादा घर वालों ने शादी कर दी है, इसलिये अब कोई नौकरी या धंधा करना पड़ेगा। उसने कहा कि गांधी विद्या मंदिर में बाबू व अध्यापक की जगह खाली है तुम्हें इसके लिए आचार्य जी से मिलना चाहिए। उसके सुझाव पर मैं उनसे मिला और नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने उसी वक्त मुझे अध्यापक के रूप में कार्य करने का नियुक्ति पत्र दिलवा दिया और इस प्रकार मैं गांधी विद्या मंदिर परिवार का सक्रिय सदस्य बन गया।

आचार्य जी का संस्था के प्रत्येक कार्यकर्ता के साथ बडा सौहार्दपूर्ण व्यवहार था। सभी कर्मचारी उनको अपने अभिभावक के रूप में मानते थे। वे समय-समय पर प्रत्येक कर्मचारी का व्यक्तिगत रूप से हाल चाल पूछते रहते थे। उनके निर्देश पर सन् १९५४ में मैंने अजमेर बोर्ड से इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसी वर्ष लाईब्रेरी का कार्य करने वाला यू.पी. का रहने वाला कर्मचारी नौकरी छोडकर जा रहा था, उन्होंने मुझे लाइब्रेरियन का कार्य सौंपा लेकिन अगले वर्ष १९५५ में पुन: अध्यापक बना दिया गया। १९५६ में मुझे संस्था की ओर से नोटिस मिला तुम ट्रेण्ड नहीं हो इसलिये ट्रेनिंग करो अन्यथा तुम्हें संस्था छोड़नी पडेगी। इस प्रकार सन् १९५२ से १९५६ तक पांच वर्ष तक मैंने पूर्ण निष्ठा से संस्था की सेवा की। यही कारण था कि जब मैने बीकानेर मे उसी वर्ष खुलने वाले फिजीकल ट्रेनिंग कॉलेज मे पी.टी.आई. के प्रशिक्षण के लिये प्रवेश लिया तो आचार्य जी सहित सभी तत्कालीन अधिकारियों ने यह आश्वासन दिया कि जैसे ही तुम ट्रेण्ड हो जाते हो इस संस्था के द्वार तुम्हारे लिए खुले है। लेकिन मैं दुबारा संस्था में नहीं आ सका क्योंकि वह ट्रेनिंग मैने सरकार के वजीफे पर की थी। इसलिये मुझे प्रशिक्षण के बाद राजकीय माध्यमिक विद्यालय हनुमानगढ टाऊन में पी.टी.आई पद पर नियुक्ति दी गई।

गांधी विद्या मंदिर छोडने के बाद भी आचार्यजी का सरदार शहर आना जाना रहता रहा है। वे जब भी आते हैं श्री सत्यनारायण जी के मंदिर के सामने श्री बजरंग लाल सोनी के घर ठहरा करते हैं। मुझे उनके आगमन की सूचना मिलती है तो मैं उनके दर्शन करने चला जाता हूँ। सामान्य शिष्टाचार के वार्तालाप के बाद अध्यात्म विषय पर चर्चा चलती है। दर्शन का उनका सैद्धान्तिक पक्ष जितना उन्नत है, व्यावहारिक पक्ष भी कोई कम नहीं है। एक दिन मैंने विनम्रता से पूछा ध्यान में मन नहीं लगता, इसके लिए कोई साधना हो तो कृपया बतलाने का कष्ट करें? उन्होंने बडी सुगम विधि बतलाई कि ध्यान बैठकर किया जाये, कमर, गर्दन तक का हिस्सा सीधा

रहे लेकिन कोई तनाव नहीं हो। अब हृदय प्रदेश में-दोनों पसलियों के बीच आन्तरिक दृष्टि से एक गोल प्रकाशित चक्र की कल्पना करें। जब वह स्पष्ट हो जाये तो वैसे ही एक विशाल चक्र की कल्पना बाहर आकाश में करें और धीरे-धीरे हृदयस्थ सूक्ष्म चक्र को उस विशाल बाह्य चक्र में समाहित कर दें। थोड़े अभ्यास के पश्चात् ध्यान की प्रक्रिया सधने लग जायेगी। मैंने उनके कथनानुसार अभ्यास किया, पहले सफलता नहीं मिली लेकिन ज्यों-ज्यों अभ्यास प्रगाढ़ होता गया मेरा ध्यान सधने लगा है। उस अवस्था में कभी-कभी बहुत ही शान्ति और आनन्द की अनुभूति होती है।

अवस्था अपना प्रभाव दिखलाती है। शारीरिक अशक्तता के साथ ही साथ मानसिक दुर्बलता दृष्टि गोचर होने लगती है। आचार्य जी की स्मृति पर भी इसका असर दिखलाई पडता है फिर याद दिलाने पर उनको पुरानी बातें स्मरण हो आती हैं। यदि अच्छा जिज्ञासु श्रोता हो तो प्रत्येक विषय पर वे धारा प्रवाह अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं।

परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आचार्य जी को उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करें, जिससे वे देश व समाज का समुचित मार्ग दर्शन कर सकें।

सरदार शहर, (राज.)

आचार्य श्री गौरीशंकर जी के प्रति एक शब्दांजलि

-: शतशत वन्दन :-

योगेश्वर शर्मा
एम.ए. (द्वय),एम.एड
साहित्य रत्न

गौरीशंकर का मूर्त रूप तू, हम सबके मन को सदा लुभाए।
भारत माँ के सच्चे सपूत को, देख-देख हियरा हरषाए।।
पराधीन भारत में जन्मे, स्वतन्त्रता की अलख जगाई।
मातृभूमि को मुक्त कराने, अंग्रेजों को ललकार लगाई।।
पराधीनता की पीडा हरने, नवयुवकों में एक जोश भरा।
साकार करने सपने गांधी के, जनजन में उन्मेष भरा।।
संस्कृत-संस्कृति के बने प्रचारक, हिन्दी भाषा को अपनाया।
कोटि कोटि कण्ठों की वाणी, हिन्दी का सम्मान बढ़ाया।।
सरल सलौने, सीधे सादे, सौम्य-सहिष्णु स्वभाव पाया।
गंगाजल सी परम पवित्र, खादी को आजीवन अपनाया।।
मनमोहक सी मधुर वाणी में, सेवा त्याग का पाठ पढाया।
गॉव-गॉव में घूम-घूम कर, आजादी का शंख बजाया।
गौ, गीता, गायत्री और ग्रामोत्थान का व्रत लिया।
जन मन मे इनकी सेवा का, एक मन्त्र सा फूंक दिया।।
सरदार शहर की मरूभूमि को, ज्ञानामृत से सिंचित कर।
अज्ञान हलाहल पान किया, हे नीलकण्ठ हे गौरी शंकर।।
गांधी विद्या मंदिर में, गाँधी दर्शन का नव घोष किया।
प्रथम अध्यक्ष बने आप प्रेरक पथ प्रदर्शक का काम किया।।
मानवता के ललाट चन्दन, "गौरी शंकर" का अभिनन्दन।
हे "लक्ष्मीपति" हे "गौरी शंकर" करता मैं शत शत अभिवन्दन।।

सरदार शहर, (राज.)

डॉ. गौरीशंकर आचार्य-मेरी एक स्मृति

नन्दलाल चाण्डक

सन् १९४०-४१ में जब मेरी आयु ग्यारह वर्ष की थी और मैं सरकारी स्कूल, सरदार शहर की छठी कक्षा में पढ़ता था तब मैंने संस्कृत अध्यापक के रूप में आचार्य जी को पहली बार देखा था। बड़ा ही आकर्षक और प्रभावकारी व्यक्तित्व-गौर-वर्ण, मुख पर मुस्कान, चेहरे पर लालिमा, ऑखों में तेज, मितभाषी, धीर-गंभीर, खादी के वस्त्र। सबको बड़े अच्छे लगते थे। इन्होंने हमें छठी से आठवीं कक्षा तक तीन साल पढ़ाया लेकिन अपने विषय संबन्ध में कभी कुछ नहीं बताया। संस्कृत जैसे कठिन विषय को अपनी अनूठी पाठन शैली से एक दम सरल बना दिया। पढाने के साथ-साथ ये हमें अनेक शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाते और जीवन में काम आने वाली बहुत सी बातें भी बताते। इनसे पढ़ना और इनका धारा-प्रवाह भाषण सुनना हम सबको बहुत अच्छा लगता था।

तीन साल कब बीत गए कुछ पता भी नहीं चला। फिर एक दिन वह भी आया जब इनका तबादला हो गया। सब छात्रों को बहुत दु:ख हुआ जिस दिन ये सरदार शहर छोड़ कर जा रहे थे, हम सब छात्र इन्हें विदाई देने स्टेशन पर गए। एक अभूतपूर्व दृश्य था। सारा प्लेटफार्म छात्रों से खचाखच भर गया था। ऐसी विदाई शायद ही किसी शिक्षक को छात्रों से मिली होगी।

इसके कई वर्षों बाद मुझे गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर में इनके पास काम करने का सुअवसर मिला। ये अध्यक्ष थे और मैं एक साधारण क्लर्क। जब ये बुलाते तभी इनसे मिलना होता। अन्यथा इनके पास उपाध्यक्ष, रजिस्ट्रार, प्रबन्ध सचिव, प्रचार मंत्री एवं कार्य समिति के सदस्य बराबर बने रहते और विचार विमर्श चलता रहता।

यद्यपि मुझे आचार्य जी के पास बैठना, उनकी बातें सुनना बहुत अच्छा लगता था लेकिन ऐसा अवसर कभी कभी ही मिल पाता। इनके निवास पर भी मेरा एक दो बार ही जाने का काम पड़ा होगा।

आचार्य ही के ९१वें वर्ष में प्रवेश पर उनके दीर्घ जीवन की कामना के साथ उन्हे नमन करता हूँ। मुझे खेद है कि मैं आचार्य जी के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता क्योकि मेरी इनके साथ कभी निकटता रही ही नहीं। दूर रहते हुए ही इनके बारे में जो कुछ अनुभव किया वह चन्द पंक्तियों में लिखकर भेज रहा हूँ। लेकिन इससे आपकी उम्मीद शायद ही पूरी हो।

अपनी मजबूरी के लिए क्षमा-याचना करते हुए।

एफ-१९-ए, ओम विहार,
उत्तम नगर, दिल्ली-५९

नित्य साक्षात् माता श्री लक्ष्मी देवी आचार्य विदेह गौरी शंकर आचार्य सादर नमन्

श्रीमती अनिता शर्मा

सुख दुख हर्ष शोक से मुक्त
परे इच्छा और लालसा से
इस जीवन में है जो जीवन मुक्त
दूर जागृत स्वप्न सुषुप्ति से
यों जिसका जीवन मरण से भी
कुछ संबंध नहीं
विदेह गौरीशंकर आचार्य - प्रणाम।

मेरी सोच का सिरा वहाँ जुडता है जब मुझे आचार्य गौरीशंकर की पुत्रवधु भीमजी की धर्मपत्नी होने का परम सौभाग्य अवतरित हुआ। एक चर्चा-आचार्य गौरीशंकर आदर्श पुरूष, क्या चाहेंगे ? माता श्री चेतन व्यक्तित्व जो अखरा तो वे खरा कह उठें। सभी अपनी मति के अनुसार बताते, एक ओर शुभ चिन्तक दूसरी ओर सामाजिक जीवन में स्वयं को समर्पित कर चुके- पूज्या सास और पूज्यवर श्वसुर। हमारा अपना स्वच्छ गृहस्थ माता-पिता का स्नेह- सुखी भविष्य के प्रति आश्वस्त दृष्टि।

समय ठहरा हुआ है, मुझे उनके अनुरूप ढलने में क्या-क्या करना होगा? यद्यपि जीवन साथी भीमजी ने आचार्यश्री के विशाल हृदय की बात कही माता श्री के निश्छल आचरण के कई उदाहरण दिए। उनका निर्मल हृदय-तुम सब स्वयं समझ जाओगी?

मेरी मानस स्थिति तद्नुरूप होने का प्रयत्न करती, परन्तु आचार्य जी का धीर-गम्भीर व्यक्तित्व उनकी भावनाओं को इस कदर ढके रहता था कि चाहकर भी उनकी पसन्द या नापसन्द का मुझे पता नहीं लग पा रहा है। वे आते ठहरते व्यस्त रहते बस जो बना है ले आओ-गौशाला की मीटिंग है, देर हो जायेगी-चिन्ता न करना-खाना बनाकर रख देना-यह कैसा अपनापन है-अनीता चाहती है कि आचार्य श्री को गर्म भोजन मिले और आचार्य श्री अधिकार ही न जताएँ-यह न कहें-"हम तुम्हारे हाथ का खाना खाएंगे गर्म-देर सबेर क्या होती है?

भयंकर अन्तर्द्वन्द में एक डेढ़ दशक बीत गया-घर में बच्चों की किलकारियां स्कूल की ओर

मुड गई, एक सुसंस्कारित भविष्य-एक आदर्श का साक्षात् होना चाहिए। घर में एक ऐसा निखार जो प्रकृति को आमंत्रित करे। माताजी का अभिमत स्पष्ट रहा-"माड़ों काम कदैइ ना कर्या नहीं तो मेरो रूप से जाणै है।'' बाकी हम सहज हैं।

मेरी कठिनाई-आचार्य जी यहाँ लम्बा विश्राम करें तो कुछ अगजग को समझने का अवसर मिले-बस अपनी आत्मा की आवाज को सामने रखो कोई अनिष्ट नहीं होगा। आचार्य जी की दृष्टि स्वच्छता से अधिक पवित्रता पर रही और माताजी स्वच्छता का घोण करती हैं। मुझे माताजी से कभी भय नहीं लगा उनके पहचानने में भी स्पष्टता थी-उनकी आवाज चेतावनी भरी होती थी। आचार्य जी से मैं आज भी भय खाती हूँ, जो व्यक्ति इतने आदर्शों मान्यताओं और मर्यादाओं का वाहक है-जिसका अन्त: एवं बाह्य निश्छल है। उनके सामने मैं न साधक हूँ और न ही आदर्शों को जानती हूँ। भौतिक सुख समृद्धि यश अपयश के प्रति सजग मैं उस सम्यक् सौन्दर्य स्वरूप और प्रकृतिमय दिव्यत्व का परिचय भी कहां मिलता है? ठहरते वे नहीं-"चरैवेति चरैवेति'' चले चलो चले चलो- गति गति - चेतन तन मन और कहाँ में गृहस्थ चिन्ता में लीन-भीमजी जापान विशेष अध्ययन हेतु गए हुए थे। आचार्य जी के जीवन कार्यशैली और बौद्धिक स्तर से भी आगे आत्मभाव बोध-खाली कर्मयोगी भी नहीं, भक्त भी नहीं, ज्ञानी भी नहीं, एक ऐसी मिली जुली मनसा सृष्टि गुरूत्वाकर्षण से भरपूर, परंतु आकर्षणमुक्त, पास में पैसे नहीं, और एक अटल विश्वास जितनी जरूरत होगी आ जाएगा। आज शाम को बनारस जाना है। "हिम्मत नहीं हुई पूछ लूँ कुछ पैसे चाहिए ? अभावों में ऐश्वर्य का सृष्टा बने घूमना-आवश्यकताएँ आज भी इस विदेह का हरण नहीं कर सकीं। अत्यन्त मौन में इनकी वाणी को सुना है।

सत्यधर्म से रक्षित हूँ मैं, देव सभी रक्षा करना।
देह सुख मुझे न सतावे, सद्बद्ध रहूँ इतना करना।।

सत्य से भी अधिक दुष्कर है, सहज साधक से पूछना उसे क्या चाहिए-और मेरी यही पीड़ा है आचार्य जी से कैसे पूछूँ।

बी-१९-बी, चौमूं हाऊस,
जयपुर।

अहंकार, काम, क्रोध और परिग्रह का त्याग करो- गीता

शिक्षाविद् से प्रकृतिविद् तक प्रवाहमान एक व्यक्तित्व आयार्य श्री गौरीशंकर जी

प्रोफेसर आशागणपत राम शर्मा

ऋणी हैं हम आचार्य गौरीशंकर की सर्व आयामी विद् दृष्टि के। ऋण शब्द केवल पदार्थ के पुन: लौटाने तक सीमित रह गया। बैंक से ऋण लिया या मित्र, परिवार या साहूकार से, निश्चित अवधि में लौटाकर हम बात के धनी बन जाते हैं, बड़े गर्व से कहते हैं कि कर्ज लिया तो ब्याज सहित लौटा दिया। दूसरी ओर जिससे जीवन में जीना सीखा जिसकी अनुभव क्षमता का सहारा लेकर शिक्षा में अपना स्थान बनाया चालीस वर्ष हम दोनों (मैं और धर्मपत्नी आशा) ने समर्पित भाव से शिक्षण को एक पवित्र व्यवसाय मानकर उसका अन्त:मन से सम्मान किया, पालन किया, इस दृष्टि के पीछे श्रद्धेय माताजी लक्ष्मीदेवी एवं आचार्य गौरीशंकर जी रहे हैं। सरदार शहर गांधी विद्या मंदिर, प्रार्थना सभा और दो शब्द आचार्य जी के-और उसके बाद अपने शिक्षा के कार्यक्षेत्र में आदर्श पुरूष स्वामी केशवानन्द, आचार्य श्री गृहस्थ स्वामी जी साधु अर्थात् जीवन के दो सिरों के मध्य तैरते जीवन को मैंने देखा है।

शिक्षा मे आदर्शवाद, अरस्तु, सुकरात प्लेटो फ्रॉ बेल, उपनिषद् स्मृतियॉं, महर्षि अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द, तिलक, मालवीय, गांधी एक आदर्श की मनसा संरचना करते हैं और उसे व्यवहार में आचरण में लाते हैं। आचार्य गौरीशंकर से परिचय उस समय रहा जब इनकी स्पीड और विचारों की ऊँचाईयॉं आकाश को लांघ रही थीं। जो अच्छा हो उसे प्राप्त करें। सेवा, परहित, "फर्सट् डिजर्व दैन डिजायर" के सूत्र कुछ हमने ऐसे समेटे कि फिर वे अलग नहीं हुए। जॉकट खादी का कमीज, धोती और जूती में यह व्यक्तित्व सबसे भिन्न दिखाई देता है। श्री कन्हैया लाल दूगड़ पं. मिल्खीराम (रजिस्ट्रार) डॉ. कौल जेएन प्राचार्य, सबसे अलग आकर्षण और बोलने लगे तो स्वत: सुनने की प्रेरणा जगे। आदर्श से यथार्थ के धरातल पर लौटते आचार्य अपरिग्रह की चर्चा अवश्य करते-परिग्रह करें तो पर के किस समाज के लिए प्राणी सृष्टि के लिए, इस भूमि के निमित्त। प्रात: सैर चिन्तनमयी हो। हमारे कार्य में गरिमा झलके और प्रकृति खिल उठे और मैं देखता हूँ शिक्षा में प्रकृतिवाद की पैरवी करने वाले की ओर- रूसो दांते फ्रायड-सम्भवत: टाइप्ड (रूढी) रहे होंगे और यहाँ आचार्यश्री की वाणी-जैसे हम विशाल वन मे आ गए। झाड़-झंखाड कोई रास्ता नहीं, दिशाएँ ही जहाँ निर्देश करें, अण्डज सृष्टि की चर्चा सर्प से मगरमच्छ तक हो जाएगी, सोच भी नहीं पाते कि अति संरक्षण के विरोधी।

शिक्षा में प्रगतिवाद की बात विज्ञान की चमत्कारिक खोजें और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डॉ. दौलतराम कोठारी के विचार सामने ही नहीं आए-यह कमीशन स्वयं गांधी विद्या मंदिर आया। अभिप्रेरण और अधिगम जैसी आधार बातें मूल प्रवृत्तियों के साथ जोडकर बतादें, अनौपचारिक शिक्षा मीरां से आरम्भ हो कबीर, दादू नानक तक पहुँच जाए। पुस्तकालय, समाचार पत्र, और शिक्षक मिलकर क्रान्ति ला सकते हैं। अतिरक्षणीय है संस्कृति, वेदों से वर्तमान तक, भारत है तो संस्कृति के बल पर।

अनुशासन स्वाभाविक होना चाहिए, दण्डात्मक या दमनात्मक दृष्टि आक्रान्ताओं की होती है। घर की नहीं। अनुवांशिकता और पर्यावरण, अनुकूलन देते हैं, इससे शिक्षण में स्थायित्व आता है। स्वाध्याय हमारा (शिक्षक का) लक्ष्य हो। श्रीमती एनीबेसेन्ट से आचार्य भी प्रभावित हैं, इग्लैण्ड निवासी काशी में सैन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना करें। हम कहाँ है? सृजन और सौन्दर्य दो भिन्न वस्तु नहीं हैं। ये मिलकर मनुष्य में देवत्व प्रदान करती हैं। चरित्र निर्माण पर बल देती आचार्य वाणी आज भी सक्रिय है। जड से चेतन की ओर चलें स्त्री शिक्षा के संबंध में आचार्य गौरीशंकर स्पष्ट रहे हैं। स्त्री शिक्षा के बिना प्रजातंत्र भी अर्थहीन है। युवा शिक्षित शपथ ले वे शादी करेंगे तो शिक्षित लड़की से और ऐसी शपथ दिलाते भी थे।

मैकाले की शिक्षा विचारधारा में स्पष्ट कहते थे-मैकाले को याद मत रखिए। अब हम स्वतंत्र हैं, स्वदेश में हैं, कुछ ऐसा करें जिससे पश्चिम सीखने आए? हमारा उद्देश्य है आत्म निर्भरता, विश्वसनीयता और विधिसम्मतता, गांव इतना सक्षम हो कि वह बाहर का सहारा ही न ले। शिक्षा का प्राथमिक स्तर (गांव) इतना हो कि अनपढ़ कोई न रहे।

ब्रिटिश कालीन शिक्षा के पीछे जो उद्देश्य था वह समाप्त हो जाना चाहिए। मेरे समक्ष स्वतंत्र भारत में शिक्षा के प्रयासों और आयोगों का परीक्षा पास करने की दृष्टि से एक सिलसिला है। उसे याद करना है, केवल परीक्षा के लिए, जीवन में उसका क्या उपयोग होगा, जान रहा हूँ, यह नकारात्मक अध्ययन ही है। मिशनरी प्रयास अपने उद्देश्यों में आज भी सफल है। आचार्य जी कहते हैं, राजस्थान शौर्य का ही नहीं, शिक्षा, धर्म, स्थापत्य, चित्रकला, संगीत, प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण का क्षेत्र है। शिक्षा और शौर्य के क्षेत्र में चारण भाटों ने बडा काम किया है। राजस्थान बलिदानी भूमि है।

आज जब इस महामानव की गाथा के कुछ विस्मृत और कुछ श्रुत कुछ सहज बिताए गए क्षणों को स्मरण किया जा रहा है। ऐसे में एक विचार जागता है, हमने कभी ऐसे तत्वज्ञो की निष्णात सेवाएँ प्राप्त नहीं कीं। काश इन्हें अपनी शैक्षिक विचारधारा को कोई प्रयोग स्थल मिलता तो शिक्षा जगत कुछ ऋण मुक्त हो जाता। जिस बात का आरम्भ मैंने किया, इन तत्वज्ञों से जो जन-जन

का शोधन और बोधन हुआ है, वह ऋण कैसे उतरेगा? वास्तविक संसार में कदम रखने से पूर्व इनकी वाणी ने कितना चेताया और सजग किया कि बेदाग बेलाग शिक्षणरत रहे। देश विचारों को सुनता है, उन्हें व्यवहार में लाने की बात नहीं करता। विद्वान विचार प्रगट कर रहे हैं और स्वयं उन विचारों का दैनिक जीवन में मजाक उडाते हैं। जिनका जीवन आचारहीन है वे शिक्षा को आदेशित करते हैं। साक्षरता अभियान आदेशों के बल पर बढ़ता है। जिसमें औपचारिकताएँ पूरी होती हैं। एक विद्यालय में वन महोत्सव की रिपोर्ट, विद्यालय की उच्च छवि बनाने में सफल रही। किसी ने यह नहीं जाना कि जितने वृक्ष लगे हैं, उतनी जगह भी विद्यालय के पास नहीं है?

मेरा निर्देशन एवं परामर्श पर विशेष अध्ययन, मेरे द्वारा किसी पुस्तक का राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशन व मुझे मिला सम्मान के आधार स्तम्भ हैं, मेरे जीवन को अप्रत्यक्ष चेतन रखने वाले आचार्य गौरीशंकर हैं, स्वामी केशवानन्द हैं। सेवा निवृत्ति के पश्चात् शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्र में साक्षरता और जीवन मूल्यों के क्षेत्र में अनेक अनुभवी समर्पित शिक्षकों के अनुभव मानद उपयोग भी न करना एक बहुत बड़े सद् प्रयत्न को नकारने जैसा रहा है।

आचार्य गौरीशंकर और माताश्री लक्ष्मीदेवी को मैंने चलते फिरते शिक्षा संस्थान के रूप में देखा है, जो बिना किसी औपचारिकता के समाज का आधारभूत मार्गदर्शन कर रहा है। अपनी जीवन यात्रा का सार्थक चिन्ह छोडकर माताश्री ब्रह्मलीन हो गई। आचार्य जी प्रकृति प्राण निस्पृह रहे। उनके जीवन के अतक्त को शिक्षा और समाज दोनों ने नहीं छुआ और वे देह से देव की ओर उन्मुख हो गए। आज नब्बे वर्ष की अवस्था में सरस्वती, गणेश, लक्ष्मी, शिव से वार्तालाप करें, वह भी वैखरी वाणी में, वर्तमान उन्हें अपने अज्ञान के कारण भ्रमित-अवस्था का प्रभाव कह सकता है, परन्तु सत्य यही है कि वे अपनी मनस चेतना में देवों से सत्संग करते है, उन कृपाओं के हम ऋणी हैं, जिन कृपाओं का प्रतिदान नहीं हो सकेगा। वे शतायु हों कामना है।

मकान नं. ९, जेल के पीछे,
हाउसिंग बोर्ड, हनुमानगढ़ जंक्शन।
हनुमानगढ, (राज)

डॉ. गौरी शंकर आचार्य-एक विभूति

नित्यानन्द शर्मा,
निदेशक,
राजस्थान भूदान ग्रामदान बोर्ड

९१ वर्ष के हो गए गौरीशंकर जी तो इसमे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मैं तो उन्हे कहा करता था कि १०० साल तो आपको पार करने ही है। मेरा आकलन मजाक के भाव से नहीं उनके मन की चेतना, आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति के साथ-साथ उनके खान-पीन को देखकर अभिव्यक्त होता था। आचार्यजी को देखकर, सुनकर और उनका सानिध्य पाकर, हर कोई यह आश्चर्य करता है कि इतनी गौरवशाली प्रतिभा का धनी व्यक्ति, इतना सरल, सहज रूप से मिलनसार कैसे बना हुआ है।

"डॉक्टर साहब'' उनको शायद ही कोई कह पाया हो। "आचार्य'' जी ही उनकी सही पहिचान है। गौरीशंकर जी कहने की कभी किसी ने जरूरत ही नहीं समझी। पारिवारिक रिश्तों में भी इन्हें आचार्य जी ही कहा जा रहा है तो मानना पडेगा कि ये नाम के मोहताज नहीं रहे, नाम ही इनका मोहताज रहा।

मै इनके साथ जुडी स्मृतियों में लौटूं तो आज मुझे अपनी ७२ वर्ष की इस आयु में करीब ३५-४० वर्ष पीछे लौटना पडेगा। मैं लौट रहा हूँ और मुझे दिखाई दे रहा है कि अखिल भारतवर्षीय गुर्जर गौड़, ब्राह्मण महासभा के मंच से, आचार्य जी, अध्यक्ष पद से अपना भाषण दे रहे हैं। ऐसा विलक्षण, धाराप्रवाह, सारगर्भित भाषण कि जिसमें प्रखर ओजस्विता झलक रही थी, सुनकर मुझे प्रथम दृष्टया ही, इनके प्रति आस्था का अनुभव हुआ। उन दिनों की सामाजिक गतिविधियों से जुडे रहने के कारण मेरी इनसे भेंट होना तो स्वाभाविक था ही था। ऐसे मिले, ऐसे मिले कि मिलकर आपस में खोते ही चले गए। इस निकटता ने पारिवारिक निकटता को भी इतना बढा दिया कि आचार्य जी का जयपुर आगमन मेरे निवास (आनन्द भवन) के आगमन से अनवरत जुडा रहा। आचार्य जी जयपुर आयें और आनन्द भवन नहीं आये यह असम्भव था।

आचार्य जी को बच्चों की हस्तरेखा देखने का शौक था। बच्चे इनके फैन हो जाते थे। आते ही घेर लेते थे। ये स्वयं भी अपने हाथों की हथेलियो को बराबर देखा करते थे। उस गंभीर मुद्रा में इन्हे देखकर लगता था कि इसमें भी इनका कोई गंभीर चिन्तन छिपा हुआ है।

मुझे पता नहीं अब वृद्धावस्था में आजकल इनका खान-पीन कैसा चल रहा है, पर मैंने जो देखा, उस समय इनको दही बहुत प्रिय था। कभी भी किसी भी समय, सर्दी हो या गर्मी, ये दही को लाभकर मानते थे। मेरे यहाँ मद्रासी भोजन उन्हें अति प्रिय था। आर्डर देकर बनवाते थे।

मुझे इनके हनुमानजी के प्रत्यक्ष-दर्शनवाली घटना पर आश्चर्य होता था तो इसे ये सदैव ही अधिक जोरदार ढंग से प्रमाणित करते थे। इनका कहना है कि इन्होंने हनुमानजी को अपनी लम्बी पूंछ का अँडाकार, ऊँचा आसन बनाकर उस पर बैठे हुए प्रत्यक्ष देखा है। मेरी अनास्था भी इनके इस आत्मविश्वास को कभी झूठ, प्रमाणित करने में सफल नहीं हो पाई क्योंकि इनका आँखों देखा वर्णन स्वयं में प्रभावशाली होता था।

आचार्य जी सामाजिक नेता थे, लेकिन राजनीति के दायरे में भी इनका स्थान व प्रभाव प्रभावशाली रहा। ये विद्वान अधिक माने जाते रहे हैं, नेता कम। मैं नहीं समझता ऐसा व्यक्तित्व आज तक यानि ९१ वर्ष की आयु तक भी किसी की आलोचना का शिकार क्यों नहीं हो पाया ? कोई अँगुली क्यों नहीं उठी?

आचार्य जी को सात्विकता की प्रतिमूर्ति कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं है। आचार्य जी उन लोगों में से है, जिन्हें पूज्यनीय, प्रात: स्मरणीय कहने में गौरव की अनुभूति होती है।

आचार्य जी शतायु हों, यह तो कोई कामना नहीं मानी जानी चाहिए क्योंकि ९१ वर्ष तो इन्होंने सहजता से ही पार कर लिए। कामना है कि ईश्वर सौ साल के बाद भी इनसे सहमति लेकर ही, इन्हें अपने पास बुलावें।

मैं आचार्य जी के तपस्वी जीवन को नमन करता हूँ कि जिसने अपने सुपुत्र श्री भीमसेन जी को भी वही यशस्वी चरित्र प्रदान किया है कि जिसने इनके स्वयं के जीवन को वन्दनीय बनाया है।

□

> श्रद्धा रखने वाले को ही ज्ञान मिलता है। यदि वह श्रद्धालु और जितेन्द्रिय है तो कहना ही क्या? ज्ञान को प्राप्त प्राणी शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त करता है।
>
> –गीता

मेरे अग्रगण्य : डॉ. आचार्य गौरी शंकर जी

आचार्य पं. हरिसिंह त्यागी, विद्याभास्कर,
एम.ए., साहित्याचार्य, शास्त्रचूड़ामणि
पूर्व प्राध्यापक-गुरूकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर,
संस्थापक-महर्षि कणाद विद्यापीठ, सिसौना, जिला-बिजनौर (उ.प्र.)

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य सन् १९२० ई. में गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रविष्ट हुए और सन् १९३५ ई. में गुरूकुल की "रजत जयन्ती" के शुभावसर पर "विद्याभास्कर" उपाधि से अलंकृत हुए। इस बीच आपने अपने शैक्षिक जीवन में अनेक आधि-व्याधियों से पीडित रहते हुए भी विद्योदधि को बडी कुशलतापूर्वक पार किया। मुझे वह दृश्य आज भी भुलाये नहीं भूलता जब डॉ. गौरीशंकर जी सहित पांच स्नातक उस वर्ष दीक्षान्त समारोह के बाद गुरूकुल से विदा हो रहे थे। डॉ. गौरीशंकर जी उन स्नातकों में दैदीप्यमान सूर्य के समान अपनी प्रभा से प्रकाशित हो रहे थे तथा "कुन्देन्दुतुषारहारधवल" चन्द्र के समान वह आह्लादित हो रहे थे। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं "रजत जयन्ती" महोत्सव के अवसर पर गुरूकुल में प्रवेश पा रहा था। उस समय मुझे प्रतीत हो रहा था कि एक सूर्य अपनी आभा से परिपूर्ण तिमिराच्छन्न संसार का तिमिर दूर करने के लिये उदित हो रहा है और मैं अपनी टिमटिमाती दीप्ति लिये विद्या प्राप्ति के लिये अग्रसर हूँ। उस समय राष्ट्रोन्नायक आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ नवस्नातकों को प्रतिज्ञा (शपथ-ग्रहण) करा रहे थे। उनके मुख्य वाक्य-'सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमद' इत्यादि आज भी मेरे कर्णकुहरों में गुंजायमान हो रहे हैं। मुख्यरूप से नवस्नातकों के प्रतिनिधि रूप में डॉ. गौरीशंकर जी ने स्वीकारोक्ति में कहा था कि-'हम आचार्य श्री (गुरूजी) के उपदेशों का आजीवन यथावत् पालन करेंगे और मातृभूमि को अपने आचरण से कभी दाग न लगने देंगे।' उस समय नव स्नातकों को विदाई देते समय अन्य ब्रह्मचारियों ने विदाई गान 'जाते हो जाइये पर मन को न लेके जाना' आदि के द्वारा अपना स्नेह प्रकट किया था। उक्त प्रतिज्ञाओं के अनुसार ही सदैव डॉ. गौरीशंकर जी को देखता रहा हूँ और देखता रहता हूँ तब से निरन्तर आपसे मेरा सानिध्य बना हुआ है। आप अभी तक भी सभी के लिये प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

सौम्य-सरल स्वभाव के कारण आपके सभी गुरूजन तथा विशेषरूप से पं. कांचीदत्त जी शर्मा (आश्रमाध्यक्ष) का वात्सल्य पूर्णरूप से आपको मिला। गुरूजनों के प्रयत्न और आर्शीवाद से ही विद्याभास्कर उत्तीर्ण करके समावर्तन के पश्चात् गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया। उस समय प्रथम

श्रेणी से लेकर विद्याभास्कर (बी.ए.) तक पार करना चौदह वर्षों के वनवासव्रत के समान था। स्नातक होने से दो वर्ष पूर्व किन्हीं मानसिक उत्पीडन के कारण एक या दो वर्ष आपको घर पर ही रहने को बाध्य होना पड़ा। किन्तु 'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' के अनुसार उस वैषम्यकाल में भी आप घबराये नहीं और आपने अपने लक्ष्य को पूर्ण किया! महाविद्यालय से आपको हार्दिक प्रेम था और आज भी आप तन-मन-धन से जुड़े हुए हैं।

वक्तृत्वकला में आप निपुण हैं। मधुर-प्रांजल-ललित शब्दावली में आप किसी भी विषय पर सारगर्भित भाषण देते है। इस विद्वत्तापूर्ण भाषण देने की क्षमता ने ही आपको नेतृत्वशक्ति प्रदान की और राजनीति में भी उसी वक्तृत्व क्षमता के कारण उच्च स्थान को आपने प्राप्त किया है। आपकी राजनीति छल, दंभ, द्वेष से कोसों दूर रही, यही कारण है कि आपने राजस्थान में रेलमंत्री एवं शिक्षामंत्री के पद को भी अलंकृत किया है।

आपकी स्मरणशक्ति इतनी तीव्र है कि आपको कुशाग्र बुद्धि कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी। आयुर्वेद, साहित्य, दर्शन जैसे शास्त्रों के साथ ही साथ ज्योतिष विद्या का ज्ञान भी पर्याप्त मात्रा मे आपको है। यह मैंने स्वयं भी अनुभव किया है। बच्चों से आपको पंडित नेहरू जी के समान ही प्रेम है। बच्चे आपके प्रेमपिपासु के रूप में सदैव निकट लगे रहते हैं। अध्यात्म एवं योग का ज्ञान जो डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य में मैने देखा है, या उनके भाषणों से अनुभव किया है, सम्प्रति अन्यत्र देखने में नहीं आता है।

आप गुरूकुल के आचार्य के रूप में, कुलपति के रूप में, प्रधान के रूप में और संरक्षक के रूप में गुरूकुल से सदैव जुडे रहे। आपने राजस्थान में अनेक शिक्षालय, गौशाला आदि की स्थापना भी की है।

उज्ज्वल यश के धनी डॉ गौरीशंकर जी आचार्य के गुणों का बखान करना 'सूर्य को दीपक दिखाना मात्र' है। आचार्य जी के गुणों का वर्णन निम्न श्लोकान्तर्गत भाव के समान ही है :-

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुर-तरुवर-शाखा-लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश: पारं न याति।।

फिर भी आप कैसे हैं दिग्दर्शनमात्र कराने को मेरी लेखनी उत्सुक है। आप सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्र के समान आह्लादक, गंभीरता के सागर, सरलता की मूर्ति, सत्य और अहिंसा के

पुजारी, साक्षात् धर्म के अवतार, विद्वत्ता में बृहस्पति, मृदुलवाणीवान्, क्रोध से सर्वथा दूर, उपकारप्रिय, उन्नति करने-कराने में अग्रगण्य, नि:स्वार्थ जननेता तथा अजातशत्रु कहे जा सकते हैं।

मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत् दुरात्मनाम् के सिद्धान्त को तिलांजलि देते हुए 'मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्' के सिद्धान्त को ही सदैव आपने अपने जीवन में अपनाया है तथा भर्तृहरि के नीतिशतक के निम्न श्लोक को तो आपने अपने जीवन में अंगीकार ही किया हुआ है-

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथ: प्रवचलन्ति पदं न धीरा:।।

आप ऐसे ही धीर पुरूष हैं जो सदैव न्याय के पथ पर चलते रहते हैं। न्याय के लिये आप निन्दा-स्तुति तथा लक्ष्मी के आगमन और पलायन आदि को महत्त्व नहीं देते। ऐसे महापुरूष संसार में दुर्लभ होते हैं और आचार्य गौरीशंकर जी इन्हीं विरले महापुरूषों में से एक हैं।

वस्तुत: आपके व्यक्तित्व में जो महानता है वह अन्यत्र देखने को आसानी से नहीं मिलती। विद्या के प्रति, देश की संस्कृति के प्रति, देश की स्वतंत्रता के प्रति, स्वालंबन के प्रति आपके विचार अनिर्वचनीय हैं। ऐसे महत्त्वशील तपस्वी विद्वान् सरल स्वभाव, निरभिमानी, अक्रोधी, निरालस्य, नि:स्वार्थ, लोभरहित डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य के प्रति मेरी अगाध श्रद्धा है। मैं आचार्य प्रवर के प्रति शतायु और उससे भी अधिक आयु प्राप्त करने की कामना करता हूँ।

□

"मेरा शरीर माँ के दूध पर जितना पला है उससे कहीं अधिक मेरा हृदय व बुद्धि दोनों गीता के दूध से पोषित हुए हैं।" "जीवन के विकास के लिए आवश्यक प्राय: प्रत्येक विचार गीता में आ गया है। इसलिये अनुभवी पुरूषों ने यथार्थ ही कहा है कि गीता धर्म ज्ञान का एक अमर कोष है।"

-सन्त विनोबा

प्रेरणा पुरूष डॉ. गौरी शंकर जी आचार्य

आर.के. जैन,
महामंत्री राजस्थान समाचार पत्र सम्पादक कॉन्फ्रेन्स

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की लोकसेवक की अवधारणा को आत्मसात कर रचनात्मक कार्यों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण के लिए अपने आपको समर्पित करने वाले लोगों में अग्रणी हैं-डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य। राजनीति, आध्यात्म और समाज सेवा की त्रिवेणी में रचे-बसे व्यक्तित्व के धनी डॉ. आचार्य ने मानो गांधी के आदर्शों और जीवन मूल्यों को अपने जीवन में उतार लिया। अध्ययन, अध्यापन, महिला शिक्षा, सामाजिक जागृति, सदाचार, स्वाध्याय, वैदिक संस्कृति और आयुर्वेद आदि के प्रचार-प्रसार के लिए आप युवावस्था से ही सक्रिय हो गये और जीवन के अंतिम पडाव में लगभग ९० वर्ष की अवस्था में भी इस दिशा में निरन्तर चिन्तनरत रहकर आज की पीढ़ी के लिए एक आदर्श मार्गदर्शक और प्रेरणा पुरूष बने हुए हैं।

डॉ.आचार्य को आपके पिताश्री पण्डित जगनरामजी से बाल्यावस्था में ही अध्ययन, ज्ञान और समाज सेवा के संस्कार मिले। पंडित जगनराम जी चूरू जिले के सरदारशहर में एक प्रतिष्ठित वकील और प्रखर समाजसेवी थे। पारिवारिक परिवेश से मिले संस्कारों के कारण डॉ.आचार्य विद्यार्थी जीवन से ही रचनात्मक कार्यों में जुड़ गये। आपने गुरूकुल कांगड़ी में प्रारम्भिक शिक्षा ली तथा उच्च शिक्षा के अध्ययन के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस गये।

बनारस में अध्ययन के दौरान महामना मदनमोहन मालवीय जी का आपको विशेष आर्शीवाद मिला। इस विश्वविद्यालय से आपने वेदान्त आचार्य सहित चार विषयों में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। आपकी योग्यता, व्यवहार कुशलता एवं संगठनात्मक कार्य प्रणाली से प्रभावित होकर मालवीय जी ने आपको अपना निजी सचिव नियुक्त किया। ऋषि पुरूष मालवीय जी का आचार्य जी की योग्यता और कुशलता पर विश्वास कर उन्हें अपनी निजता का दायित्व सौपना आचार्य जी के जीवन की अद्‌भुत और विलक्षण घटना है। इसी तरह गुरूकुल कांगड़ी जहॉ आचार्य जी इस बडे शिक्षण संस्थान के कुलपति भी बने जो अपने आप में एक बडी उपलब्धि है। आपमें अध्ययन की प्रवृत्ति अनवरत रूप से बनी रही। यही कारण रहा कि ६० वर्ष की उम्र मे आपने स्नातकोत्तर परीक्षा संस्कृत विषय में उत्तीर्ण ही नहीं की, अपितु कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि भी प्राप्त की। पी.एच.डी. में आपका शोध का विषय "न्याय और वैशैषिक दर्शन में आत्मा'' था।

चौथा दशक देश की स्वतंत्रता के लिए उद्वेलित जन ज्वार का दशक था। उस दौर में एक तरफ राजपूताना की रियासतों में प्रजा परिषद् के माध्यम से राजनैतिक जागरण का कार्य चल रहा था, वहीं दूसरी ओर साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संगठनों के माध्यम से सामाजिक चेतना और नवजागरण का कार्य किया जा रहा था। डॉ.आचार्य सरदारशहर क्षेत्र में सामाजिक जागरण के अग्रदूत बनकर उभरे। उन्होंने कई संस्थाओं का गठन किया और सरदारशहर में बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों और संस्कृत विद्वानों के सम्मेलन आयोजित कर लोगों को समाज विकास के कार्यों के लिए प्रेरित करने का अनूठा कार्य किया। डॉ.आचार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं मातृभाषा संस्कृत के प्रबल हिमायती रहे हैं। आपने सरदारशहर में साहित्य समिति और हिन्दी विद्यापीठ जैसी संस्थाओं का नेतृत्व कर उन्हें गतिशील बनाया। इन संस्थाओं के माध्यम से हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग की परीक्षाओं का केन्द्र संचालित कर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अपने अनुराग को उजागर किया। डॉ. आचार्य के संकल्प और कठिन परिश्रम का ही यह सुफल रहा कि चालीस के दशक में सरदारशहर में बीकानेर राज्य साहित्यकार सम्मेलन पहली बार आयोजित हो सका। यह विडम्बना ही रही कि इन संस्थाओं द्वारा आयोजित साहित्यिक गतिविधियों पर रियासती पुलिस की पूरी नजर रहती थी, लेकिन आचार्य जी की सूझबूझ से सदैव प्रशासन के साथ टकराव की स्थिति को टाला गया। साहित्यिक वातावरण को देखकर रियासती प्रशासन को इन गतिविधियों पर संदेह होने लगा, कारण कि साहित्यकारों का प्रजा परिषद् के कार्यकर्ताओं से भी जीवन्त सम्पर्क था। डॉ.आचार्य को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा और उन्हें सरदारशहर से संस्कृत शिक्षक पद से श्रीगंगानगर स्थानान्तरित कर दिया गया। जनता ने उन्हें भावभीनी विदाई दी, जो ऐतिहासिक थी। चूंकि मेरा ननिहाल (मेरे पिताजी का ससुराल) सरदारशहर था, इसी कारण मेरे पूज्य पिताजी समाज रत्न स्व.श्री मालचन्द जी छाजेड का आचार्यजी से मिलन हुआ, जो घनिष्ठता में बदला तथा पारिवारिक बन गया। मेरे पिताजी श्रीआचार्य जी की धर्मपत्नी को बहन समान मानते थे तथा यह रिश्ता श्री गंगानगर मे भी प्रगाढता से कायम रहा।

साहित्य से डॉ. आचार्य ने राजनीति में प्रवेश लिया और वे प्रजा परिषद् से सक्रिय रूप से जुड गये। सन् १९४६ में प्रजा परिषद् की स्थानीय शाखा के पुनर्गठन में आपका सक्रिय योगदान रहा। परिषद् के माध्यम से आप आजादी और राजनैतिक जागृति की अलख जगाने गांव-गांव निकल पडे। तब रियासत में उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर प्रजा परिषद् ने अनुकूल वातावरण बना दिया था। इस वातावरण का दबाव रियासती शासन पर भी पडा और राज्य में लोकप्रिय मंत्रिमण्डल गठित करने का निर्णय लिया गया। रियासत के इस पहले मंत्रिमण्डल में डॉ.आचार्य जी को शिक्षा, रेल और डाक-तार मंत्रालय का दायित्व सौपा गया। लगभग ३४-३५ वर्ष की उम्र में मंत्री पद की जिम्मेदारी

संभालने वाले डॉ आचार्य ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया। आपने संस्कृत शिक्षकों को सामान्य शिक्षको के अनुरूप वेतनमान एवं अन्य सुविधाएँ प्रदान कर संस्कृत भाषा के प्रति अपने लगाव को उजागर किया। प्रजा परिषद् के नेता मंत्रिपरिषद् में प्रजा परिषद् के नेतृत्व को लेकर नाराज थे और उन्होने मंत्रिमण्डल से बाहर रहने का निर्णय लिया, तब आचार्य जी भी मंत्रिमण्डल से बाहर आ गये।

राजस्थान के गठन के बाद हुए पहले आम चुनाव १९५२ में कांग्रेस पार्टी के टिकट पर रतनगढ विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लडा, जिसमें श्री माधवप्रसाद शर्मा के हाथों पराजित हुए। लगभग दो वर्ष के अंतराल पर श्री माधवप्रसाद के निधन से रतनगढ विधानसभा क्षेत्र में उप चुनाव हुये, जिसमें आचार्यजी विजयी हुये।

डॉ. आचार्य से संबंधित स्मृतियॉ मेरे मानसपटल पर आ जा रही हैं। चूंकि मेरे पिताजी सेठ स्वर्गीय श्री मालचन्द छाजेड़ के साथ आचार्यजी का गहरा पारिवारिक संबंध था, वे आचार्य जी के साथ आध्यात्म एवं राजनीति पर चर्चारत रहते थे। रतनगढ के उपचुनाव में मेरे पिताश्री ने आचार्य जी की जीत के लिए उनकी भरपूर मदद की। रतनगढ विधानसभा क्षेत्र में राजलदेसर बड़ा कस्बा है, जहॉ ओसवाल समाज बहुसंख्या में है। मेरे बडे भाईसाहब (दैनिक यंगलीडर के प्रधान सम्पादक) श्री जिनेन्द्र जी का ससुराल राजलदेसर में होने के कारण मेरे पूज्य पिताजी ने अपने समधी श्री गुमानमल जी सुराणा एवं श्री फतेहचन्दजी सुराणा दोनों को ही आचार्यजी के पक्ष में चुनाव कार्य करने का आग्रह किया। इनके घर में ही कार्यालय बना तथा लगातार २५ दिन वहाँ पर रहकर इनके चुनाव प्रचार में लगे रहे तथा इस कारण राजलदेसर से आचार्यश्री के पक्ष में भारी मतदान हुआ और विजयश्री मिली।

मेरे पिताजी आचार्य जी को राजनीति में समयानुसार परिवर्तन की सलाह देते। कई बार गुस्से मे भी हो जाते। इसमें आचार्य जी की धर्मपत्नी मेरे पिताजी का साथ देतीं, परन्तु आचार्य जी स्वयं ना गुस्से में आते ना अपने जीवन में बदलाव का वायदा करते, अतः इस राजनीति में आचार्य जी अनफिट हो गये। ईमानदार राजनीति के कारण ५७ का चुनाव धन-बल के अभाव में हार गये, लेकिन आचार्य जी ने अपने उसूलों के खिलाफ कभी समझौता नहीं किया।

राजनीति की उठापटक और गुटबंदी से आचार्यजी धीरे-धीरे राजनीति से विमुख होने लगे और रचनात्मक कार्य में अपना अधिक समय लगाने लगे। आचार्यजी की प्रेरणा से फिर से कई संस्थाएँ गतिशील हुईं। आपने आयुर्वेद विश्वविद्यालय स्थापना समिति के माध्यम से विशेष योगदान दिया। अखिल भारतीय गुर्जर-गौड महासभा के अध्यक्ष के रूप में सामाजिक सुधार के लिए वातावरण

बनाया। आपकी प्रेरणा से १९५० में सेठ कन्हैयालाल दूगड़ ने गांधी विद्या मंदिर की स्थापना की और आचार्यजी पहले अध्यक्ष बनाये गये।

डॉ.आचार्य अपने आप में ऋषि पुरूष हैं। प्रवृत्ति से निवृत्ति उनका जीवन संदेश है। आप अपनी बाल्यावस्था से लेकर ९० वर्ष की अवस्था तक निरन्तर स्वाध्याय और अध्ययन से अपने जो जोडकर विभिन्न प्रवृत्तियों में सक्रिय योगदान करते रहे हैं। गीता उन्हें कंठस्थ है, गायत्री मंत्र का जाप करते हैं, भगवत आस्था के साथ मानवता का कल्याण ही उनका ध्येय है। वयोवृद्ध अवस्था में आज भी वे युवकों जैसा मन रखते हैं और चाहते है कि ऐसा कुछ किया जाये, जिससे समाज और प्रदेश का हित हो सके।

मेरा यह सौभाग्य रहा है कि पिताश्री के कारण मुझे अनेकानेक बार आचार्य जी के सानिध्य मे बैठकर उनके साथ चर्चा-परिचर्चा करने का अवसर मिला है। उनका प्रेम और वात्सल्य तथा जीवन के प्रति उनकी दृष्टि का प्रसाद मिला है। आचार्य जी अद्‌भुत व्यक्तित्व के धनी, उत्कृष्ट विद्वान, सहज सरल और संवेदनशीलता के साथ जन-जन को आत्मीयता देने वाले हैं। जो कहते हैं, उसे पूरा करने का संकल्प रखते हैं। खादी की धोती, कुर्त्ता, कोट के पहनावे के साथ सादगीपूर्ण जीवन उनकी पहचान है। उनके प्रति समर्पण सम्मान के साथ मैं तो केवल इतना ही कहूँगा कि-

वन्दना के इन स्वरों में।
एक स्वर मेरा भी मिला लो।।

सी-३१/बी, जगनपथ, चौमूं हाउस, जयपुर।

आत्मा अमर है, शरीर के नाश होने पर भी यह नष्ट नहीं होती है, इसलिये देह के नष्ट होने पर शोक मत करो।

-गीता

ऋषि तुल्य मनीषि : श्रद्धेय आचार्य जी

पं. सुखदेवप्रसाद कौशिक
व्याख्याता
पं. बालकृष्ण कौशिक
व्याख्याता
एम.ए. संस्कृत हिन्दी, एम.कॉम, एम.एड.

भारतीय संस्कृति से चिर अनुप्राणित, ऋषि तुल्य, संतहृदय, प्रज्ञापुरूष मनीषि डॉ. पण्डित श्री गौरीशंकर जी आचार्य अपने जीवन सोपान में प्रति पद पर समवयस्कों के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। अपने यौवनकाल में जहॉ शिक्षार्थियों व युवकों के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। अपने प्रौढत्व में समाज को सशक्त नेतृत्व संबलन दिया, उत्तरावस्था में अपने संचित ज्ञान से जन जन को निरन्तर प्रेरित करते रहते हैं। सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न आचार्य जी का कार्यक्षेत्र वैसे तो समग्र मर्वचल प्रदेश रहा है, परन्तु उनके शिखर कर्तव्य काल का मकरन्द पान सरदार शहर वासियों को चिर स्मरण रहेगा।

आचार्य जी का सरदार शहर आगमन सरदार शहर वासियों के लिए बसन्तागमन वत् हुआ। साहित्य समिति का गठन करके नगर में साहित्यिक चेतना का नया सूत्रपात किया। बीकानेर संभागीय साहित्य सम्मेलन हुआ। अनेक विद्यार्थी व युवकों को सत्साहित्य पठन व लेखन का प्रेरणा पथ मिला।

गांधी विद्या मंदिर को आपके शैक्षिक चिन्तन का बहुआयामी लाभ मिला आप एक कुशल शिक्षाविद् ही नहीं अपितु भविष्य दृष्टा शैक्षिक नियोजक रहे, जिसका पुष्प पल्लवन सम्प्रति मान्य विश्वविद्यालय के रूप में दृष्टव्य है।

कई बार यह विचार उत्पन्न होता है कि यदि आचार्य जी जैसे भारतीय मनीषि राज्य सरकार में शिक्षामंत्री होते तो महात्मा गांधी का स्वप्न व भारतीय संस्कृति की उज्ज्वल पताका का राजस्थान में स्वर्णिम सूत्रपात चार पांच दशक पूर्व ही हो जाता, लेकिन यह भारतमाता की भाग्य विडम्बना ही है कि ऐसे शिक्षा मनीषियों का राजनीति से शीघ्र मोहभंग हो गया। काश कुछ श्रेष्ठ सत्पुरूष गौरीशंकरवत् गरल पान करके राजनीति के हलाहल विष से मरूभूमि को अमृत पान करवाते।

आचार्य जी का सरदार शहर प्रवास नगर के सांस्कृतिक साहित्यिक इतिहास में गौरवपूर्ण ही कहा जाएगा, जहॉ एक ओर साहित्य संगीत नाट्यकला मर्मज्ञ जनजन के प्रेरक प्रातः स्मरणीय श्रद्धेय बाबू श्री शोभाचन्द जी जयमड सांस्कृतिक साहित्यिक चेतना के साथ-साथ आध्यात्मिक चेतना

का सूत्रपात कर रहे थे, वहीं श्रद्धेय गौरीशंकर जी आचार्य युवावर्ग व विद्यार्थियों को शिक्षा साहित्य एवम् समाजसेवा के पथ पर अग्रसर कर रहे थे। मातृभूमि व राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देने वाले पुरानी पीढ़ी के लोगों की आज एक पीढी अपनी उत्तरावस्था में है।

स्व. बाबू शोभाचन्द जी जयमड़ का जब स्मृति ग्रंथ प्रकाशित हुआ, आचार्य जी ने बाबू के प्रति अपने हार्दिक उद्गार व्यक्त करते हुए उस महापुरूष को अद्वितीय बताया। श्री लोक जन परिषद् सरदार शहर (स्थापित सन् १९२५) से डॉ. आचार्य जी का घनिष्ठ संपर्क रहा है।

कुछ वर्षों पूर्व एक सार्वजनिक समारोह से आपका सरदार शहर आगमन हुआ। शुभ्र भारतीय वेशभूषा, सादा जीवन, उच्च विचार, भारतीय आदर्श के चरितार्थक, दीर्घ काय गौर वर्णाभ, चेहरे पर उभरी वृद्धावस्था की रेखाएँ जैसे अपने जीवन काल में ही राष्ट्र की दुर्दशा को देखकर राष्ट्रोत्थान के स्वप्नमिथक की अवसाद आभा के समान सुशोभित हो रही थी। वृद्धावस्था जैसे स्वतंत्रता संग्राम को देख चुके, शहीदों की शहादत की मृतप्राय गाथा का उपहास कर रही थी।

पंडितजी न केवल हिन्दी, संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र के निष्णात विद्वान हैं अपितु आयुर्वेद में भी आप सिद्धहस्त चिकित्सक एवं भैषज विद हैं। औषधि निर्माण, संरक्षण एवं उपयोग में आप विशेष अनुभव रखते हैं। पराविद्या में भी आपकी गहन रूचि रही है। आत्मा एवं जीव के संबन्ध में पुनर्जन्म के बारे में आपने काफी चिन्तन व खोज की है। आप भविष्य दृष्टा हैं, ऐसा अनुभव होता है। *ईश्वर आपको शतायु करे इसी शुभकामना के साथ शत् शत् नमन अभिनन्दन।*

अभिवन्दन है अभिनन्दन है,
हे शिक्षाविद् शत् वन्दन है।
दर्शनशास्त्र के उद्भटज्ञाता,
मां भारती के दृढ़ आख्याता,
ऋषिसंस्कृति के हे उद्गाता,
वन्दन है अभिनन्दन है।

युवा शक्ति के पथ प्रदर्शक,
शिक्षा संस्थानों के नव सर्जक
ज्ञान सूत्र के चिर दिग्दर्शक
प्रणमन है अभिनन्दन है।।

सौम्य प्रकृति गौरीशंकर वत्
गौरीशंकर वत् सौम्य स्वनामी
मृदुस्वभाव योगीपथ गामी
धन्वन्तरि के अनुव्रतगामी
शतवन्दन है, शत वन्दन है।

डॉ. आचार्य गौरी शंकर जी-मेरे विचार

लक्ष्मेन्द्र कुमार शर्मा
भूतपूर्व प्रवक्ता-टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज गाँधी विद्या मंदिर

मैं गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर के टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में अध्यापक था, तब से पंडित जी के विषय में सुना करता था कि गांधी विद्या मंदिर की स्थापना में श्री गौरीशंकर जी का महत्त्वपूर्ण एवं विशेष हाथ था।

मेरे स्व.ससुर श्री डी.डी. भारद्वाज जी जो उस समय राजस्थान में अंग्रेजी के समाचार पत्र "स्टेट मैन'' के विशेष संवाददाता थे को वे उन्हें अच्छी प्रकार से जानते थे। यह बात एक बार उन्होंने बताई थी।

पंडित जी कभी कभी हमारे घर पर भी आ जाते थे तथा हरे धनिये और आलू के पराठे शौक से खाते थे।

उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि क्या तुम 'हनुमान रक्षा कवच, का भी पाठ करते हो', क्योंकि पंडित जी स्वयं हनुमान भक्त थे।

श्री आचार्य जी आदर्श शिक्षक, भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक, हिन्दी भाषा के विद्वान तथा समर्थक, सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

परम पिता परमात्मा उन्हें दीर्घायु प्रदान करे तथा उन्हें मेरा तथा धर्मपत्नी का शत-शत प्रणाम।

सरदार शहर।

हर समय ईश्वर का स्मरण करते हुए
अपने जीवन संग्राम का संचालन करो।
-गीता

शिक्षा संस्कृति संस्कार से नवयुग लाने वाले

डॉ. विद्या सागर शर्मा

उज्ज्वल कुल में जन्म हुआ, तुम संस्कार में पले।
बी.एच.यू. से शिक्षा पा, इन्सान बने तुम भले।।

मालवीय के सचिव रहे, शिक्षक सम्पूर्णानन्द।
दर्शन का आधार रहा, चिन्तन था बड़ा स्वच्छन्द।।

डिगरियाँ पायीं बहुत, बुढापे में पी.एच.डी. पाई।
शिक्षक तुमने आजादी की व्यापक अलख जगाई।।

ज्वालापुर के गुरूकुल में, ज्ञान का बना आधार।
संस्कृत दर्शन न्याय सांख्य वेदान्त का सीखा सार।।

वेदान्ताचार्य सांख्यतीर्थ साहित्यशास्त्री आप।
एम.ए.,पी.एच.डी., शिक्षा में छोडी गहरी छाप।।

सर्विस छोडी अरु अपनाया स्वतंत्रता-संग्राम।
अपने घर पर लिखवाया, 'स्वाधीन भारत'नाम।।

स्वतंत्रता सैनानी स्वर्णाक्षर में अंकित नाम।
शिक्षा और रेलमंत्री बन किए थे व्यापक काम।।

धन्य रतनगढ की जनता, एम.एल.ए. तुमको चुना।
गांधी विद्या मंदिर का सपना तूने ही बुना।।

हिन्दी विश्वभारती और ज्वालापुर के कुलपति रहे।
महिला विद्यापीठ डाबडी से सेवा के स्त्रोत बहे।।

तुम समाजभूषण गुर्जर गौडों के रहे प्रधान।
सारे भारत में अभिनंदित हो, पाया शुभ सम्मान।।

गौ गीता गायत्री को निज जीवन का माना संबल।
तेरे जोशीले भाषण युवकों में कर देते हलचल।।

शिक्षा संस्कृति संस्कार से नवयुग लाने वाले।
हिन्दी के संस्थान बहुत से, संरक्षक बन पाले।।

गौ संवर्धन-संस्थाओं में भारी भागीदारी।
बतलाया हो आयुर्वेद पुनः कैसे गुणकारी।।

भाषण और लेख, आपके दिखलाते पांडित्य।
'गीता पंचदशी' प्रसिद्ध हैं, पढ़ें इसे हम नित्य।।

देखे नब्बे हैं बसंत, प्रेरक व्यक्तित्व लिए गुरूवर!
आप शतायु हों ईश्वर से करते विनय सभी मिलकर।।

४-एफ-१७, जवाहर नगर,
श्री गंगानगर, (राज.)

पुजवती भवः

आचार्य गौरीशंकर सचमुच गौरीशंकर है। एक बार आप सरदार शहर के एक मन्दिर में दर्शन करने गए वहाँ आपको प्रसाद रूप में दो बेर (बोर) मिले जो आपने कुर्ते की जेब में डाल लिए वहाँ से वह गौशाला के मैनेजर बी.डी. शर्मा के घर गए। शर्मा जी को उदास देखकर आचार्य जी ने पूछा- शर्मा जी उदास क्यों हो? इस पर शर्मा जी ने बताया कि भाई जी हमारे लडकियाँ ही लडकियाँ हैं, लडके नहीं। तब आचार्य जी ने बडे सहज भाव से कहा- ये बात है पहले अच्छी सी चाय पिलाओ फिर हम तुम्हें लडका होने की दवा देंगे। उन्होंने बी.डी शर्मा जी को प्रसाद रूप में मिले वे दोनों वेर देकर कहा ये दवा लो तुमको जरूर लड़का होगा। उन दो वेरों में से एक वेर गौशाला के कर्मचारी शिवलाल की पत्नी जो उस समय वहीं पर थी ने चुरा कर खा लिया तथा एक स्वयं शर्मा जी की पत्नी ने खा लिया। समय आने पर उन दोनों को एक-एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इससे सिद्ध होता है कि आचार्य जी वाकई सिद्ध पुरुष है।

सेवा संकल्प के प्रेरक डॉ. आचार्य गौरी शंकर

सुबोध कुमार अग्रवाल
लोक संस्कृति शोध संस्थान नगर-श्री चूरू ट्रस्ट,

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से दर्शनाचार्य की सर्वोच्य उपाधि प्राप्त कर मरूधर प्रदेश के तत्कालीन बीकानेर राज्य की सरकारी सर्वोच्च सेवा का प्रस्ताव अस्वीकार कर सामाजिक जागरण के जरिये शिक्षा की ज्योति प्रज्ज्वलित करने शिक्षक के रूप में समाज सेवा का व्रत लेने वाले आचार्य श्री गौरीशंकर जी ने चूरू मण्डल के कस्बे सरदार शहर को अपना कार्यक्षेत्र चुना था। ममता मयी मां के कोमल संस्कारों वाले आचार्य गौरीशंकर जी के विरल व्यक्तित्व का प्रभाव युवा पीढी को सेवा संकल्प लेने के लिए प्रेरित करनेवाली शक्ति का जादुई करिश्मा अनुभव हुआ। सरदार शहर के हम उम्र युवाओं में समाज सेवा, शिक्षा, साहित्य और देश प्रेम की भावना के प्रति स्फुरना प्रस्फुटित हुई। सरदार शहर के युवाओं के लिए आचार्य गौरीशंकर जी प्राण समान थे। मैंने उन के प्रथम दर्शन वहीं सरदार शहर की साहित्य समिति में किये थे जहाँ मैं अपनी कविता कहने के लिए ले जाया गया था।

श्री आचार्य जी की बोली अत्यन्त मधुर, गुरूत्वाकर्षण वाली और स्वभाव सहज सरल। जिन के हृदय में कुछ कर दिखाने की भावुकता भरी कुवांरी कल्पनाएँ हिलोरें मार रही थीं। आचार्य जी गांधी जी के विचार की स्वावलम्बी जीवन सिखाने वाली शिक्षा संस्थान बनाना चाह रहे थे। उनकी गांधी विद्या मंदिर की परिकल्पना प्रसार पा रही थी और उसको मूर्त रूप देने के लिए सरदार शहर की ही प्रतिष्ठित फर्म प्रख्यात दुगड़ घराने के श्री कन्हैयालाल जी दुगड (फिर स्वामी श्री रामशरण जी) ने पांच लाख रुपयों से श्री गौरीशंकर जी के निर्देशन में श्री गांधी विद्या मंदिर का निर्माण करवाया और उन्हें अध्यक्ष कुलपति बनाया था। आचार्य गौरीशंकर जी गांधी विद्या मंदिर के ५ वर्ष तक अध्यक्ष रहे फिर मुझे अधिक जानकारी नहीं है, क्योंकि मेरा आज तक कभी गांधी विद्या मंदिर के संबंध में जानने व देखने का काम नहीं पडा, पर उस के बाद तक आचार्य जी उस में पूरी रूचि ले रहे थे। और आज गांधी विद्या मंदिर सरदार शहर के मान्य विश्वविद्यालय के रूप में चल रहा है।

आचार्य गौरीशंकर जी के आरंभिक प्रयत्न से भरी भावना में आनन्द यह सोच कर उमड रहा था कि राजस्थान में एक और मरूधर प्रदेश को परम पूज्य पं.मदन मोहन मालवीय और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मिलेगा पर स्वप्न वहीं वृद्ध होकर जरजर हो गया। यद्यपि आचार्य जी अपने निश्चयानुसार शिक्षक रूप में आज समाज शिक्षा साहित्य की सेवा करते ९० सोपान चढ गए हैं, पर मेरा सोच अपूर्ण रहा। मेरे हृदय में आचार्य जी के प्रति बडी हार्दिक श्रद्धा और पूज्य भाव है और मैं उनकी दीर्घायु के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

चूरू (राज.)

महात्मा गांधी ग्रामीण विश्वविद्यालय के प्रेरक और प्रणेता आचार्य श्रीगौरीशंकरजी

डॉ. डी. एल. शर्मा
पूर्व प्राचार्य, उच्च अध्ययन, शिक्षा संस्थान,

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का केन्द्र बिन्दु ग्रामीण विकास

महात्मा गांधी ने अपने शिक्षा संबंधी विचारों को अभिव्यक्त करते हुए साफ कहा है "गॉवों की दस्तकारियों की तालीम को शिक्षा का मध्य बिन्दु समझने की आवश्यकता और महत्व के विषय में मुझे जरा भी शंका नहीं है। हिन्दुस्तान की शिक्षा संस्थाओं में जो प्रणाली अख्तियार की गई है, उसे मै शिक्षा नहीं कहता, वह मनुष्य की बुद्धि के सर्वोच्च अंश को विकसित करने वाली शिक्षा नहीं है। बुद्धि का सच्चा व्यवस्थित विकास तो शुरू से ही गांव की दस्तकारियों द्वारा बुद्धि को शिक्षा देने वाली प्रणाली से होगा। गांधी के विचार सात वर्ष की बुनियादी शिक्षा तक ही सीमित नहीं रहे उन्होने उच्च शिक्षा के संबंध में भी अपना मत व्यक्त किया है, उच्च शिक्षा के संबंध में गांधीजी ने लिखा है कि "कॉलेज की शिक्षा में भी मैं जबरदस्त क्रांति कर देना चाहूँगा। उसे मैं राष्ट्रीय जरूरतों से जोड दूँगा। यंत्रों तथा ऐसी ही अन्य कस्य-कौशल संबंधी निपुणता की कुछ उपाधियॉ होगी। वे भिन्न-भिन्न उद्योगों से संबंध रखेगी। यही उद्योग अपने लिए आवश्यक विशारदों को तैयार करने का खर्च बर्दाश्त करेंगे। अब रह जाते हैं, साधारण ज्ञान "आर्ट्ज" आयुर्वेद और खेती। साधारण ज्ञान के लिए राज्य को अपना कोई स्वतंत्र कॉलेज खोलने की जरूरत नहीं होगी। आयुर्वेद संबंधी महाविद्यालयों को प्रमाणित औषधालयों के साथ जोड दिया जाएगा। धनिक लोग चन्दा करके इन विद्यालयों को चलावें। अब रहे खेती के विद्यालय, सो अगर इन्हें अपने नाम की लाज रखनी हो तो इन्हे स्वावलम्बी बनाना ही पडेगा।

महात्मा गांधी के शिक्षा एवं उच्च शिक्षा संबंधी उपरोक्त विचारों को निम्नांकित रूप में सारांशित किया जा सकता है।

१. शिक्षा का केन्द्र-बिन्दु गॉव एवं गॉव की दस्तकारी/उद्योग हों।
२. उच्च शिक्षा राष्ट्रीय जरूरतों मुख्यत: गॉववासियों की जरूरतो से संबद्ध हो।
३. उच्च शिक्षा का संबंध यंत्रों तथा ऐसी ही कस्य कौशल संबंधित निपुणताओं एवं उद्योगों से हो।
४. उद्योग क्षेत्र के लोग ही उच्च शिक्षा के माध्यम से उद्योग-विशारद तैयार करे।
५. गांधी जी की दृष्टि में उद्योग के बाद स्वास्थ्य, शिक्षा आती है। इस संबंध में उनका मत था

कि उच्च शिक्षा क्षेत्र में आयुर्वेद महाविद्यालय खोले जाएं इन्हें प्रामाणिक औषधालयों से संबद्ध किया जाए। देश का धनिक वर्ग इनका संचालन करे।

६. गांधीजी ने उच्च शिक्षा क्षेत्र में तीसरा क्षेत्र खेती संबंधी महाविद्यालयों का माना जो राष्ट्र की/गॉवों की जरूरतों की पूर्ति करने वाले हों।

७. साधारण ज्ञान (आर्ट्स) के कॉलेजों के राज्य द्वारा खोले जाने की जरूरत गांधीजी ने महसूस नहीं की।

सारांश यह है कि गांधी जी भारत देश के प्राण गॉवों की जरूरतों को पूरे करने वाली उच्च शिक्षा के पक्षधर थे। इस संबंध में उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया कि "अगर हम ऐसी शिक्षा देना चाहते हैं जो गॉवों की आवश्यकताओं के लिए सबसे अधिक उपयुक्त हो तो विद्यापीठ को हमें गॉवों में ले जाना चाहिये।

आचार्य गौरीशंकर जी द्वारा महात्मा गॉधी के शिक्षा संबंधी विचारों को कार्यरूप देने का प्रयास सन् १९५०

गांधीवादी विचारक स्वतंत्रता सैनानी एवं राजस्थान के बीकानेर राज्य के पूर्व शिक्षा मंत्री आचार्य गौरीशंकर जी देश के उन गिने चुने विचारकों में से हैं जिन्होंने गांधी जी के शैक्षिक विचारों को गांधीजी द्वारा बताये गए रूप में ही क्रियान्वित करने का बीडा उठाया। उन्होंने गांधीजी की शिक्षा संबंधी नीति के अनुसार महाविद्यालयों/ विद्यालयों के संचालन के आर्थिक भार का दायित्व उठाने के लिए धनिक वर्ग को प्रेरित किया, उन्हें साथ लिया इनमें प्रमुख रहे सरदार शहर नगर के प्रतिष्ठित धनिक परिवार के दो भाई स्व.श्री कन्हैया लाल दूगड़ एवं स्व. श्री भॅवरलाल जी दूगड।

२ सितम्बर, १९५० को गांधी विद्या मंदिर की योजना पर सार्वजनिक रूप से प्रकाश डालना

गांधीजी की शैक्षिक संकल्पना के अनुसार आचार्यजी ने गांधी विद्या मंदिर नामक संस्थान की एक योजना बनाई जिसे राजस्थान के सरदार शहर नगर में २ सितम्बर, १९५० को सार्वजनिक किया गया। इस योजना को नगर के प्रतिष्ठित धनिक वर्ग ने सराहा स्व.सेठ श्री सुमेरमल जी के सुपुत्र स्व. श्री कन्हैयालालजी दूगड ने पाँच लाख रुपये दिये और दस वर्ष तक इस योजना से संबद्ध रहने का संकल्प लिया और आचार्य जी से मार्ग-दर्शन करने और संस्थान के अध्यक्ष का कार्यभार संभालने का निवेदन किया।

महात्मा गांधी की स्मृति में २ अक्टूबर, १९५० को गांधीवादी संस्थान गांधी विद्या मंदिर की स्थापना होने पर उसकी प्रारम्भिक शैक्षिक योजना को अन्तिम रूप देकर प्रकाशित करवाना।

२ अक्टूबर १९५० को प्रसारित गांधी विद्या मंदिर की अग्रांकित शैक्षिक योजना आचार्य श्री गौरीशंकरजी के नेतृत्व में तैयार की गई। परिणामत: इसमें गांधी जी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा के सभी प्रमुख अवयवों को सम्मिलित किया गया और तदनुरूप ही शिक्षण संस्थानों की रूप रेखा प्रस्तुत की गई जो कि इस प्रकार है :-

१. उद्योग धन्धों की शिक्षा प्रधान सर्वोदय महाविद्यालय :- इस महाविद्यालय का लक्ष्य था-ऐसे स्वावलम्बी नागरिक तैयार करना जो शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक तथा नैतिक दृष्टि से पूर्ण योग्य एवं राष्ट्रसेवी हों। दो प्रकार के उद्योगों का प्रावधान इस महाविद्यालय के विषयों में रखा गया।

अनिवार्य उद्योग :- कृषि, गौ पालन, खादी आदि।

ऐच्छिक उद्योग :- चमडा कार्य, तेलघाणी, बढ़ई, लुहार, कुम्हार, मिस्त्री का कार्य आदि। उद्योग-प्रधान इस महाविद्यालय में भाषाओं के शिक्षण, गांधी विज्ञान समाजशास्त्र, आत्म-विज्ञान, शिक्षण-विज्ञान, उद्योगों से संबंधित गणित आदि विषयों के शिक्षण का प्रावधान भी रखा गया।

२) आयुर्वेद महाविद्यालय :- गांधीजी ने उदर पोषण हेतु आजीविका उपार्जन के लिए जहाँ उद्योग-प्रधान शिक्षा को प्राथमिकता दी। वहाँ आजीविका उपार्जन के माध्यम शरीर को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया और इस दृष्टि से जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है, आयुर्वेद महाविद्यालयों की स्थापना की बात की। आचार्य जी ने भी उसी क्रम में गांधी विद्या मंदिर की प्रारम्भिक योजना में आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना का प्रावधान रखा जिसने सन् १९५५ में आयुर्वेद विश्व भारती के नाम से कार्य करना भी शुरू कर दिया।

३) वाणिज्य महाविद्यालय :- उद्योग तथा व्यापार संबंधी व्यावहारिक ज्ञान के लिए वाणिज्य महाविद्यालय का प्रस्ताव रखा।

४) लोक शिक्षण संघ :- स्वतंत्रता के समय भारत निरक्षरों का देश था। १९५१ में ५० वर्ष एवं उससे अधिक आयुवर्ग के मात्र १२.१० व्यक्ति देश में साक्षर थे। इनमें महिला साक्षरता का प्रतिशत मात्र ४.८७ था। इस संस्थिति को दृष्टिगत रखकर प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर करने, प्रौढ शिक्षक तैयार करने, प्रौढ शिक्षा की समस्याओं पर अनुसंधान करने की दृष्टि से लोक-शिक्षण संघ की स्थापना का प्रस्ताव रखा गया।

योजना को अंतिम रूप देने हेतु गांधी वादी विचारकों से वर्धा में विचार-विमर्श

आचार्य गौरीशंकरजी ने पूर्वोक्त गांधीवादी शिक्षा संस्थान की रूपरेखा को साकार रूप देने की दृष्टि से स्व. श्री कन्हैयालालजी दूगड के साथ गांधीवादी शिक्षा की जन्मभूमि वर्धा जाकर

गांधीवादी शैक्षिक विचारक श्री आर्यनायकम् एवं श्रीमती आर्य नायकम् श्री मन्नारायण जी अग्रवाल, श्री किशोरीलाल जी मशरूवाला एवं श्री कृष्णदास जी जाजू से विचार-विमर्श किया।

सन् १९५१ ई. ग्रामीण विश्वविद्यालय की रूपरेखा को स्वरूप प्रदान करना

देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में महात्मा गांधी ग्रामीण विश्वविद्यालय वर्धा के अतिरिक्त शांति निकेतन, गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तथा जामिया मिलिया जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं में जाकर, उनकी गतिविधियों का निरीक्षण करके वहाँ के विद्वानों से विचार-विमर्श कर ग्रामीण विश्वविद्यालय की रूपरेखा को स्वरूप प्रदान किया।

जुलाई १९५१ ई. : ग्रामीण विश्वविद्यालय की रूपरेखा का प्रकाशन एवं बजट-प्रावधान

१९५२ विभिन्न संस्थानों की योजनाओं का क्रियान्वयन :- आयुर्वेद महाविद्यालय की योजना बनाना एवं क्रियान्वयन पर कार्य आरम्भ-इस कार्य का दायित्व आचार्य जी ने स्व. श्री भँवरलाल जी दूगड़ को सौंपा।

सर्वोदय महाविद्यालय का शिलान्यास

गांधीवादी विचारक एवं अजमेर के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरिभाऊजी उपाध्याय से सर्वोदय महाविद्यालय का शिलान्यास करवाया।

प्रौढ़ शिक्षा महाविद्यालय

लोकनायक जयनारायण व्यास द्वारा प्रौढ शिक्षा महाविद्यालय का शिलान्यास करवाया।

१९५३ ग्रामोदय विभाग का शुभारंभ

प्रस्तावित ग्रामीण विश्व विद्यालय के मुख्य उद्देश्य ग्राम विकास की दृष्टि में सरदार शहर तहसील के ५३ ग्रामों का चयन किया गया उनमें स्वास्थ्य शिक्षा, ग्रामीण उद्योगों की स्थापना आदि के कार्य ग्रामोदय विभाग के माध्यम से किये गए। ग्रामोदय विभाग का उद्घाटन भारत सरकार के तत्कालीन गृहमंत्री डॉ. कैलाशनाथ जी काटजू ने ३ अप्रैल, १९५३ को किया और ग्रामीण विश्वविद्यालय की दिशा में बढ़ते हुए कदमों की सराहना करते हुए इसका श्रेय आचार्य जी को दिया।

बुनियादी शिक्षण-प्रशिक्षण महाविद्यालय का शुभारंभ भी १९५३ में भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार हुमायूं कबीर एवं राजस्थान के तत्कालीन शिक्षामंत्री मास्टर भोलानाथ जी से करवाया गया।

१९५३-५४ में महिला विद्यापीठ बालबाड़ी, ग्राम ज्योति केन्द्र आदि की स्थापना

१९५५ में ग्रामीण विश्वविद्यालय की संकल्पना ने साकार रूप लिया। ग्रामीण विश्वविद्यालय की संकल्पना ने जिसका पाठ्यक्रम आचार्य जी के नेतृत्व में मई १९५३ में ही तैयार हो गया

"महात्मा गांधी देहाती विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर सरदार शहर के प्रवेश नियम तथा पाठ्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रकाशित कर दी गई।

वर्ष १९५५ में साकार रूप

जनवरी १९५५ में भारत सरकार की उच्च ग्राम्य शिक्षा समिति द्वारा गांधी विद्या मंदिर का निरीक्षण आचार्य जी के प्रयास से संभव हुआ, जिससे ग्रामीण विश्वविद्यालय की स्थापना को और गति मिली।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के द्वारा भारत के प्रथम देहाती विश्वविद्यालय के मुख्य भवन का शिलान्यास करवाकर आचार्य जी ने अपने सहयोगियों के साथ ग्रामीण विश्वविद्यालय के कारवां को आगे बढ़ाया।

इस आगे बढते हुए कारवां में आचार्य जी ने महिला शिक्षा के संस्थान का मीरा निकेतन, परिसर में सेठ बुधमल डिग्री कॉलेज पंचायती राज प्रशिक्षण केन्द्र, आयुर्वेद विश्वभारती आदि को जोड़ा तथा गौशाला के गौवंश को राष्ट्रीय पुरस्कार की ख्याति से संस्थान का नाम आगे बढाने में भी आचार्य जी ने अहम भूमिका अदा की।

आचार्य श्री गौरीशंकरजी ने १९५० से १९६२ तक अहर्निश कार्य कर, अपना तन,मन एवं बुद्धि लगाकर, अपने प्रभाव से तत्कालीन मंत्री कुंभाराम जी के माध्यम से ११९० एकड भूमि संस्थान के लिए अवाप्त करवाकर देश के एवं प्रान्त के शीर्षस्थ लोगों को संस्थान में लाकर, नगर के प्रतिष्ठित धनी मानी सेवाभावी नागरिकों को संस्था के विभिन्न दायित्व सौंपकर, भारत के प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय का जो स्वरूप प्रस्तुत किया वह राजस्थान के ही नहीं भारत के शैक्षिक इतिहास का स्मरणीय अंश है। आचार्य जी ने गांधीजी के शैक्षिक विचारों के अनुरूप, देश की आवश्यकताओं के अनुरूप, देश के प्राण ग्रामों की जरूरतों की पूर्ति के लिए जिस ग्राम विकास शिक्षा संस्थान का विकास किया। वह इस महान आत्मा का, इस महान व्यक्तित्व का महान कार्य है। यह महान कार्य ग्रामीण विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्तकर सम्पूर्ण देश में अपने को प्रतिष्ठापित कर देश की सीमाओं को लॉघकर यह वैश्विक संस्था बन सकती थी किन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि परिस्थितियोंवश आचार्यजी इस कार्य को अधिकारिक रूप में सक्रिय रहकर आगे बढाने में असमर्थ हो गए।

जो भी हो आचार्य जी का त्याग एवं तपस्या अनुकरणीय है। मैं आचार्य श्री के ऋषितुल्य व्यक्तित्व को सम्पूर्ण श्रद्धेय शत् शत् नमन करता हूँ, जिसने ग्रामीण विश्वविद्यालय के उस स्वरूप को साकार रूप दिया जिसके बारे में देश की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने आचार्य जी के प्रयासों के ३६ वर्ष बाद सन् १९८६ में बात की और जो बात सिमिट कर समितियो तक ही रह गई। अभी भी दक्षिण में गांधी ग्राम शिक्षा-संस्थान को छोडकर देश में ग्रामीण विश्वविद्यालयों की स्थापना की दिशा में सक्रिय कदम आगे नहीं बढ़े हैं।

गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर, चूरू।

गुरू शिष्य रौ अटूट संबंध

जवरीमल शर्मा (गुरू)

गंगा री नगरी म जनम् लेवंणियों गंगा री तरियाँ पवित्र आपरे शिक्षा रूपी जल स्यूं मरूभूमि ने, शिक्षा बिना सूकी पडी, बीने हरी-भरी करणेवालो समाज सेवी त्रिवेणी बंण कर आयो। ई मरूभूमि ने हरी भरी कर गौरीशंकर जी नाम ने सही साबित कर दिखायो। शायरां साची कही है!

पूत पीछाणै पालणै, का बैरी का मीत।
का बोझ मारसी धरती नै, का जग ने लेसी जीत।।

शिक्षा बिना बंजर पड़ी इंण मरूभूमि ने हरी-भरी करणै वास्ते ही एक अवतार रै रूप मे आया। आं बां आखरां नै साचा कर दिखाया।

नारायण नर रूप म, आयो घर हरी रूप

ईश्वर री रचना ने कुण वडै?

भाग सुभागियो जलंमसी, लाल-लाड़ला सा पूत।
कुमाणंस-कुभागियो, जलमें-गूंगो का उत।।

नर रूप में नारायण बंण इण सरदारशहर परिवार रा भाग जगावंण आया जकि आपां आज सामपडतै शिक्षा जगत म देखंण लाग रैया हाँ। गांधी विद्या मंदिर आचार्य जी री देन है। बालवाड़ी से शिक्षा शास्त्री बंण र जाणै री सुविधा पाई है। शिक्षा जगत री धडकंण हा। एक ऊँच्चा विचार रखना जै परिवार म जन्म लेकर जन जन म सादा जीवन उच्च विचार भर्‌या।

बंण भागी भू पर उतरे, उण रो मोटो भाग।
गौरीशंकर जां घर अवतरे, तां घर ना काळो दाग।।

मिठास से भरपूर वाणी, ओजस्वी वक्ता, गांधीवादी-आजादी री लालसा जन-जन म फूंकर आपरो मिसन पूरो कर्‌यो।

छीपी न छिपै-छिपाइयां, जा आकाशा पार।
किस्तूरी ना छानी रहवै, चाहे ताळा दिज्यो मार।।

प्रतिभा स्यूं भरपूर लगन रा धणी कथनी अर करनी समान। सगळा चैहन भगवान् लीला सी लागै। हमेशा आईज बात कहावत रूप म बतावता।

अरे भणियां घोड़ी चढ़ै, अंणभणियां मागे भीख।
ज्ञान शरीरां नीपजै, गुरूवांरी मानै सीख।।

आज आ कहावत चाहे उल्टी हुगी पर बांरा शिष्य आपरै परिवार न संवार नै म लाग रैया है। आज बांरे बताए रास्ते पर चाल र आज बालिकाओं ने शिक्षित कर एक क्रांति ला दी है। आ बात आपरे शिष्यां सामने रखी उंण टैम नारी जाति नै शिक्षा देणी रूढ़ीवादी बुजर्गा रो कोप क्रोध सहन करणो खांडे री धर ही। आपरी बहिन बेटियॉ न अनपढ़ राखणी मंजूर ही। उंण टैम आचार्य जी ने आपरे शिष्यां म आ भावना कूट-कूट कर भर दी कै आप शादी उस लड़की से करो जोकि शिक्षित हो। यह आंदोलन घर-घर म हवा दांई फैल ग्यो। जिको आज आपाँ देख रैयां हॉ कै लडका स्यूं लड़कियॉ हर क्षेत्र म आगे बढ रही है। ई आंदोलन री देन आचार्य जी हा।

लीला जाणी न लाल री, अग्यानी नर नार।
ब्रिमयानी बिरला हुवै, बातां चालै लार।।

आचार्य जी रै जाति-पांति रै भेद से कोसां दूर हा। बाको एक ही आदर्श हो

"जात-पात झंझट मान्नो। हरिभजै सो हरि का जानो''।।

वे हमेशा ई बात नै महत्व दियो :-

मीनख सवीसा मीनखड़ा, बंणारंण वालो एक।
अपणें सारथ कारणै, जाति बंणी अनेक।।

चिंतनशील विचार। हमेशा जन शिक्षा रै बारे म सोचता रैया। वां ई दोहे न साचो कर दिखायो।

दुख पराये दुबलो, निस दिन करै विचार।
औरन का भला करे, तिर ज्यावै भवपार।।

सरदार शहर म आचार्य जी धूणों-धुकार शिक्षा री अलख जगाई इणै कोई नकार नहीं सकै। आपरो जीवन ई नीमित समरपित कर आज सरदार शहर बासी बारां गुणं-गान करै। आपां जांणा कै गुणां रो गाडा को छलिजै नी। भगवान् कोई न कोई रूप म जन सेवा करने वास्ते जन सेवा रो चौलो पहरार भेजै। आज इसे जन सेवक री कमी खटकंण लाग रई है। जन-जन ने सही मारगियो हमेशा दरसावं ता।

आज माणस भटकंण लाग रैयो है। युवा पीढी उझड़ चालंण लग रही है। आज कलजुग री सी बाता नजर आवंण लाग रही है।

पग-पग छेड़ै कपट भरी,कपट रो रैसी जोर।
मीनख पंणो सै भूलसी, आग्यो कलू महाघोर।।१।।
बाप जिकारा दे पूत नै, पूत गिणै ना बाप।
धरमी-धससी धरतीम, आकाश चढ़ैलो पाप।।२।।

मांणस मार बड़ो बंणै, पूजै नर और नार।
उरता रैसी राजरा, मुन्सी थाणै दार।।३।।
हाथ-हाथ नै खायसी, मीनख-मीनख नै मार।
नार-पति रै जीवंता, जासी दूजै लार।।४।।

ईश्वर से यही कामना है कै ई विपदा से छुटकारो पानो कै वास्तै पुनः आचार्य जी इस धरा को पुनीत बनाने के लिए आगमन कर जन-जन ने सही मार्ग पर चालवौ री शिक्षा देवैं।

म्हारां अै भाव विद्वाना से कमजोर हुवैला पंण आ बात बारों शिष्य होणै रै नातै आपरी सेवा में पेश करी हूँ। गुरू शिष्य रो अटूट संबंध हुवै आ बात आचार्य जी रग-रग में भर दी। आज भी बांरा शिष्य वृद्धावस्था म गुरू री कृपा से बडी शान से जीवंण बसर कर रैया है। बां इत्ता एकलव्य त्यार कर्‌या जियां द्रोणाचार्य रो शिष्य एकलव्य हो।

आचार्य जी क्रांतिकारी हा। बां जकि ठानली बा कर दिखाई। बारे पीछे एकलव्यां री फौज ही जद ही अंग्रेजी रजवाड़ों म बीकानेर नरेश इतो करडो, जिकै सें अंग्रेज कांपता। बी जमानै म गंगा जयन्ति न मनाकर, गांधी जयन्ति मनवाई। हर एकलव्य म क्रान्ति भावना कूट-कूट कर भर दी। आजादी री आग म धी रो काम कर्‌यो। आजादी मिली अर लोक प्रिय सरकार म शिक्षामंत्री व रेल मंत्री रै पद पर बीराज्या। बांरी यादां लिखता जावां तो कोई अंत नहीं आवै। जियां ....
....

धरती रो कागज बंणै, समुन्दर स्याही बंणाय।
लिखतो-लिखतो थक ज्या, कागज ओछो पड़ जाय।।

□

गौ सेवक-डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

बसन्ती लाल छाबड़ा
सेवानिवृत्त निदेशक
पशुपालन एवं डेयरी विभाग, राजस्थान

श्री गौरीशंकर जी आचार्य से मेरा गत ४ दशक से भी अधिक समय से सम्पर्क रहा है। गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर (बीकानेर) की स्थापना तथा विकास में भी इनका बडा योगदान रहा है। सन् १९६५ से ही इस शिक्षण संस्था की गौ-सम्बर्द्धन एवं डेरिंग (गौशाला व दुग्ध उत्पादन केन्द्र) इकाई का तकनीकी सलाहकार होने के नाते आचार्य जी से मेरा उसी समय से घनिष्ठ संबन्ध रहा है।

आचार्य जी १५-२० वर्षों तक राजस्थान गौशाला फैडरेशन के अध्यक्ष रहे हैं और मैं भी इसका वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं तकनीकी सलाहकार रहा हूँ। इस फैडरेशन की साल में कई बार समय-समय पर राजस्थान में मीटिगें तथा राजस्थान के बाहर भी गौ सम्मेलन होते रहे हैं और उसमें हमारा बराबर सम्पर्क तथा आपस में विचारों का आदान प्रदान होता रहा है। राजस्थान मे गौशालाओ व गौ सदनों के पुनर्गठन व उनके सर्वांगीण विकास में हमने साथ साथ काम किया है। उनके इस कार्यकाल में उनकी सलाह पर ही उपरोक्त गौशाला फैडरेशन की कार्यकारिणी कमेटी ने सर्व सम्मति से मुझे तकनीकी सलाहकार चुना था और श्री आचार्य जी ने उनके पत्र दिनांक ३१.०५.१९७७ के जरिये मुझे इसकी सूचना भेजी थी।

बाद में श्री आचार्य जी ने उनके पत्र दिनांक ०३.०८.१९८९ के जरिये मुझे सूचित किया था कि आज फैडरेशन की प्रबन्धकारणी कमेटी के सदस्यों की इच्छानुसार तथा उनकी सलाह पर फैडरेशन का कार्य सुचारू रूप से चलाने हेतु मुझे कार्यवाहक अध्यक्ष का भार दिया जाता है।

सन् १९७४ में निदेशक, पशुपालन व डेरिंग विभाग राजस्थान सरकार के पद से सेवा निवृत्त हुआ हूँ। उसके बाद से ही जन कल्याण कार्यों में नि:शुल्क लगा हुआ हूँ। कृषि के क्षेत्र में तथा समाज सेवा के मेरे द्वारा किये गये प्रशंसनीय कार्यों के उपलक्ष में श्री आचार्य जी ने आवश्यक सिफारिश करके गुरूकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार) से मुझे अप्रैल, सन् १९९१ मे "विद्यावाचस्पति'' की उपाधि (डिग्री) प्रदान कराई है।

दिनांक १२ अप्रैल, १९९१ को उपरोक्त महाविद्यालय में सर्व श्री चन्द्रशेखर जी, प्रधानमंत्री, भारत सरकार की अध्यक्षता में सम्पन्न कानवोकेशन के शुभ अवसर पर मुझे सम्मानित किया गया

तथा उत्तर प्रदेश की सरकार के शिक्षामंत्री जी के करकमलों द्वारा मुझे "विद्यावाचस्पति'' की डिग्री प्रदान करके सुशोभित किया गया।

श्री आचार्य जी के सार्वजनिक जीवन तथा उनके द्वारा किये गये समाज सुधार कार्यों से प्रेरणा लेकर मैं भी गत तीन दशकों से भी अधिक समय से गौ-सम्बर्द्धन, ग्रामीणों के सर्वांगीण विकास, विधवा पेन्शनरों संबंधी तथा अन्य प्रकार के जन कल्याणकारी कार्यों में लगा हुआ हूँ। मेरे द्वारा इतने समय से किये जा रहे समाज सेवा के सक्रिय एवं उल्लेखनीय योगदान के उपलक्ष में राज्य सरकार ने मुझे सर्वश्रेष्ठ समाजसेवी घोषित किया है एवं गत गणतंत्र दिवस २६ जनवरी २००५ के राष्ट्रीय पर्व पर मुझे राजकीय अवार्ड देते हुए राजस्थान की महामहिम राज्यपाल महोदया द्वारा सम्मानित किया गया है।

श्री आचार्यजी जैसे बडे विद्वान, सरल स्वभाव वाले समाजसेवी एवं मिलनसार महानुभाव के सकल जीवन के ९० वर्ष पूरे होने के शुभ अवसर पर जो ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है, वह बड़ा ही श्रेष्ठ कार्य है और उसकी सफलता की मैं हृदय से कामना करता हूँ। परम परमात्मा परमेश्वर से हमारी प्रार्थना है कि आदरणीय आचार्य जी के स्वस्थ दीर्घायु जीवन के १११ वर्ष पूरे होने पर भी उनके सम्मान करने का शुभ अवसर हमें प्रदान करें।

□

विवाद मिटाने में माहिर

बात उस समय की है जब गायत्री देवी समाज कल्याण बोर्ड की चेयरमैन थीं और आचार्य जी सदस्य थे। राजमहल (सिटी पैलेस) में बोर्ड की बैठक चल रही थी। बोर्ड की सदस्य कमला बेनीवाल पर गायत्री देवी किसी बात को लेकर गर्म हो रही थीं। आचार्य जी ने बात को बदलते हुए कहा– क्या आप के महल में चाय वगैरा की कोई व्यवस्था नहीं है? जिसे सुनकर गायत्री देवी एकदम शान्त हो गई इस तरह आचार्य जी ने चल रहे विवाद को सहज में ही समाप्त कर दिया।

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य से एक रिश्ता

रामनिवास करवा

उम्र के अन्तराल के कारण बचपन में नजदीकी सम्पर्क नहीं सधा पर उनके साथ पारिवारिक रिश्ता उनके यशस्वी के साथ मेरे पिताजी एवं हमारे परिवार के बीच बराबर बना रहा।

बाद में आचार्य जी के व्यक्तित्व के बारे में अपने पिताजी से चर्चा के दौरान बहुत जानकारी मिली, जिससे उनकी विद्वता, निश्चितमना का मर्म स्पर्शी परिचय पाया।

सरदार शहर के सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सम्बर्द्धन में इनका अपूर्व योगदान रहा। संस्कार की शिक्षा हमारी पीढी से पहले वाली पीढ़ी के छात्रों को इनके मार्गदर्शन में प्राप्त हुई। शहर में राजनैतिक चेतना के सम्प्रेषण के वे संवाहक रहे।

सत्तर के दशक के पूर्वाद्ध में आसाम दौरे के दौरान उनका आतिथ्य मेरा सौभाग्य एवं संबन्ध फिर से हरे हुए। उन्होंने प्रसंगवश अपने एक स्वप्न का जिक्र किया तब इमरजेन्सी लगी हुई थी, उन्होंने जल्दी ही इमरजेन्सी के हटने एवं इलेक्शन में कांग्रेस की हार का इजहार किया। कुरदने पर उन्होंने मां भगवती के दर्शन कर इस भविष्यवाणी को निसृत बताया तब यह भविष्य कथन समझना मेरे लिये अप्रत्याशित रहा पर बाद में वैसे ही घटित हुआ।

आज भी शहर की पुरानी पीढी के लोग सश्रद्ध याद करते है, जिसका समीचीन उल्लेख "सरदार शहर परिदर्शन'' में श्री छगनलाल शास्त्री एवं उनके शिष्य श्री मूलचन्द जी सेठिया ने अपने आलेखों में उजागर किया है, बहुत सी बातें अपने जयपुर प्रवास के दौरान श्री पूर्णचन्द जी मीमाणी ने उनका कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करके बताई जिससे कि उनके व्यक्तित्व के उपरानो का निकट से परिचय हुआ।

सरदार शहर अपने सांस्कृतिक सम्बर्द्धन के लिये उनका चिर ऋणी रहेगा।

उनके सर्वग्राही सौम्य व्यक्तित्व के लिये आदरभाव से उन्हें याद करते हुए अपनी श्रद्धा निवेदन करके मुझे अपूर्व खुशी हो रही है।

डी-६१-ए-२,
एस. एम. एस. सर्किल,
जयपुर-६

सुरसत थान

ठा. सवाईसिंह धमोरा

टीबां के विच मैं हरियाली,
हरियाली विच वा किलकारी।
देव रमै जी धरती ऊपर,
रामों, कानों, राधा न्यारी।।

सुरसत की गोदी चढ चढ़ नै
श्रात को पडर्यो छै पड़नाळो।
स्रम-सीकर मैं सांयउबा नैं,
चाल्यो देवां मैं भी की चाळो।।

देव उतरिया जद भू आकर,
आमै सूं धरती आंगणिये।
मोहन नै भी आणों पडिलो,
भल भस्म रूप हो तामणिये।।

वन मैं विद्या मंदिर बणगो,
ई धरती मैं दमां आखर।
गौरीशंकर भी आजमिया,
कान कन्हैया के इण चक्कर।।

ई चक्कर संग घण-चक्कर बण,
मंगेजी मानव भी आग्यो।
रूखां की करी रूखाली भी,
वो रात-दिवस चक्कर खाग्यो।।

बजै वैद्य औषध देवण,
अध्यापक अध्यापन साख।
ओ अनाथ को आसरियो,
सासरियो दे मरवण साख।।

छोरी-छोरां की पोसाळा,
हवै सियाराम को जयकारो।
गोपाळां की गायां उछरै,
दे दे पूंछां को फटकारो।।

सांड़ धड़ूकै गायां रामैं,
टोडाडिया भी टांडै सामा।
गोकुल सो लागै गांवडियो।,
कानां सू हवै रामा श्यामा।।

संता की वाणी गूंज रही,
द्यो गावांळा फेरूं हलकारो।
आंयण लागो आयू-आदित,
बाकी छै की दिन चिलकारो।।

भेद भाव की फोडी भीतां,
प्रौढां भी पोथ्यां ले धारी।
घर-घर मैं चरखो चरख चढयो,
रोजी रोटी ले दे सारी।।

दोहा

धोरां की धरती विषै, पायो सुरसत धान।
मरमी आरतियो अठै, अंबा सिरामी आन।।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

समता ममता दृढता जागी,
त्यागी करडाई अकडायी।
नीचा नमगा छै ऊँचोडा,
नीचोडा सूं मिलबा तांयी।।

कृष्ण सुदामा मिलण हुयो,
मिलगा गुह नै अब रघुराई।
कानां नै श्रीदामां मिलगा,
बलदाऊ नै मनसुख भाई।।

भगती सूं जुगती जद मिलगी,
सुरसत संग लिछमी भी आगी।
संकर कै गरल उतरतांही,
सोयी सगती भी अब जागी।।

गण गणेस अब आ पूज्या,
गांवां-गांवां मैं आवण नै।
रिध-सिध अबं धूमण लागी,
दाळद कै देर न जावण मैं।

दोहा

सिदि साधन साधक सजै, सध्य साधना साग।
जंगल मंगल देस मैं, जाग्या जग का भाग।।

रजत पथ, मानसरोवर
जयपुर

आयुर्वेद-उन्नायक डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

वैद्य उमाशंकर शर्मा
अध्यक्ष
वैद्य रामप्रताप शर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट

डॉ.गौरीशंकर जी आचार्य का व्यापक व्यक्तित्व एवं कृतित्व श्लाघनीय है। आयुर्वेद के प्रति इनकी निष्ठा गहरी एवं आयुर्वेद के विकास हेतु इनका योगदान विपुल है।

पूज्य पिताजी वैद्य श्री रामप्रताप जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य के पास वे पधारते रहते थे। दोनों की चर्चा शास्त्रीय एवं जनोपयोगी होती थी। आचार्य जी के आयुर्वेद संबंधी व्यापक एवं उच्चस्तरीय लक्ष्य होते थे। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुर्वेदीय गतिविधियों पर व्यापक परिवेश में विचारविमर्श किया करते थे।

एक बार आचार्य जी ने बताया कि रात्रि के लगभग डेढ़ बजे इनकी धर्मपत्नी बीमार हो गईं। उस समय चिकित्सकीय उपचार अथवा दवा का प्रबंध संभव नहीं था। आचार्य जी ने कहा अब बस हनुमान जी व देवी को याद करते रहो। ऐसा करने पर कुछ ही क्षण में वे सामान्य एवं स्वस्थ हो गईं। आचार्य जी देवीय उपासना तथा मंत्र चिकित्सा से जुडी चिकित्सा में विश्वास रखते हैं एवं प्रचार भी करते हैं।

कुछ वर्ष पूर्व आचार्य जी का औषधविक्रेता संघ ने अभिनन्दन किया। आचार्य जी ने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में आयुर्वेद की महत्ता, प्राचीनता, सर्वसुलभता के साथ औषध की विशुद्धता, अनुसंधान एवं जड़ी बूटी की पहचान पर बल दिया। ऐसी विभूतियां ही आयुर्वेद का कल्याण एवं भारतीय संस्कृति का उत्थान कर सकती हैं।

१-के ब्लॉक, गौशाला रोड़, श्री गंगानगर (राज.)

सर्वदर्शना गुरू देवाय नमः श्री आचार्य जी

दौलत राम जी सारण
भू.पू. केन्द्रीय मंत्री

आदरणीय डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य ५नवम्बर २००५ को अपने जीवन के नब्बे वर्ष पूरे कर इक्यानवें वर्ष में प्रवेश कर गए। इस शुभ अवसर पर आचार्य जी का अभिनन्दन करने और अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का अभिनन्दन समिति का निश्चय स्वागत योग्य है। यह कार्य बहुत पहले होना चाहिए था परन्तु अब भी विशेष महत्त्व का होगा।

आचार्य जी जीवन पर्यन्त समाज और देश के लिए विभिन्न क्षेत्रों में समर्पित होकर कार्य करते रहे हैं। उनका व्यक्तित्व सदा बहुत आकर्षक एवं प्रेरणाप्रद रहा है। अपनी आकर्षक कार्यशैली मधुर व्यवहार एवं उच्च आदर्श के कारण श्री आचार्य जी सदा सब के प्रेरक रहे हैं।

अपनी उच्च शिक्षा पूरी करके आचार्य जी सरदार शहर में संस्कृत शिक्षक बन कर आये। सरदार शहर में इनके पिताजी तहसीलदार थे। सरदार शहर में उस समय राष्ट्रीय भावना, सामाजिक चेतना, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति विशेष अभिरूचि का वातावरण बन रहा था। सार्वजनिक पुस्तकालय, साहित्य समिति, ओसवाल हितकारिणी सभा उस कार्यक्रम के सहयोग में कार्यरत थीं। उसी समय आचार्य गौरीशंकर जी के आगमन प्रेरक सम्पर्क से इस परिस्थिति की प्रगति को विशेष गति मिली। सरदार शहर में राजनैतिक, शैक्षिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में विशेष जागृति पैदा हुई।

मैं उस समय पांचवी कक्षा में पढता था। अपनी कक्षा का मॉनिटर एवं सर्वप्रथम छात्र था। सरदार शहर के सार्वजनिक पुस्तकालय साहित्य समिति, ओसवाल हित कारिणी सभा के द्वारा आयोजित कार्यक्रमों
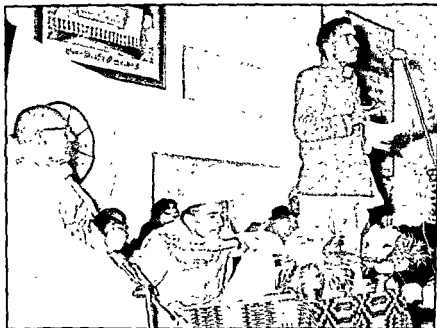
में सक्रिय भाग लेता था और उनके कार्यकर्ताओं से जुड़ा हुआ था। मैंने पांचवी कक्षा में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा उत्तीर्ण की थी। मेरी कक्षा में सभी विषयों में मेरा प्रथम स्थान था परन्तु मेरी ड्राईंग काफी अच्छी थी। कक्षा के छात्र साथियों से मेरा बहुत लगाव था। कई छात्र साथियों को मैं उनके घर जाकर पढ़ाता था और कई मेरे पास आकर पढ़ते थे। इसी समय आचार्य गौरीशंकर जी संस्कृत अध्यापक बन कर आये। छठी कक्षा से संस्कृत पढाना प्रारंभ होता था। सरदार शहर के सार्वजनिक कार्यकर्ता और प्रमुख छात्र मुखिया आचार्य जी के अच्छे सम्पर्क में आ गये और उनसे बहुत प्रभावित थे।

मैं भी एक छात्र मुखिया और कार्यकर्ता होने के कारण आचार्य जी से प्रभावित होकर सम्पर्क में आ गया था। छठी कक्षा में ड्राईंग को छोड़कर आचार्य जी के संस्कृत अध्यापक होने के कारण और हिन्दी में अच्छी गति रखने के कारण संस्कृत विषय लेने का निश्चय किया। मेरे साथ कक्षा के सभी छात्र संस्कृत विषय लेने के लिए तैयार हो गये। कोई ड्राईंग लेने के लिए तैयार नहीं था। मुझे हैडमास्टर सी.पी.कपूर ने कार्यालय में बुलाया और बहुत समझाया कि संस्कृत तेरे किसी काम नहीं आयेगी ड्राईंग तेरे लिए लाभप्रद रहेगी और कहा जाओ सोच कर जवाब देना। मैंने सोचकर संस्कृत लेने का ही निश्चय प्रकट किया। हैडमास्टर बहुत नाराज हुआ। और मुझसे कहा कि कक्षा के आधे छात्र ड्राईंग के लिए तैयार करके दोगे तभी तुम्हें संस्कृत लेने की अनुमति दी जायेगी। मैंने कक्षा के साथी छात्रों से सम्पर्क किया। उन्हें समझाकर आधे छात्रों को ड्राईंग के लिए तैयार करके सूची हैडमास्टर को दी। संस्कृत विषय लेने का इतना आकर्षण केवल आचार्य गौरीशंकर जी संस्कृत के शिक्षक होने के कारण ही था। तबसे लेकर आज तक आचार्य जी के साथ अनेक संस्थाओ में कार्य किया है। आचार्य जी से घनिष्ट सम्पर्क रहा और उनसे सदा प्रेरणा पाई। आचार्य जी निश्छल, विनम्र, भावनाशील उच्च विचार वाले स्वप्नदृष्टा व्यक्ति रहे हैं। वे गंभीर विचारक, प्रभावशाली वक्ता सादा जीवन उच्च विचार में आस्था रखने वाले सादगी और सरलता से विभूषित हैं।

डॉ.गौरीशंकर आचार्य देश, प्रदेश की अनेक शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्थाओं के संस्थापक, मार्गदर्शक, उच्चाधिकारी रहे हैं।

गांधी विद्या मंदिर सरदार शहर की स्थापना के प्रेरक, पथ प्रदर्शक एवं प्रथम अध्यक्ष रहे हैं। मैं (दौलत राम सारण) भी प्रथम कार्यकारिणी से लेकर आज तक विद्या मंदिर से जुड़ा हूँ। आचार्य जी गुरूकुल महाविद्यालय (मान्य विश्वविद्यालय) ज्वालापुर के प्रधान तथा उप-कुलपति रहे। स्वामी केशवानन्द जी के ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया मरूभूमि सेवा कार्य शिक्षा योजना से भी जुड़े रहे हैं।

आदरणीय आचार्य जी शैक्षिक साहित्यिक गतिविधियों के प्रेरणा स्रोत, सफल शिक्षक, समाज

सुधारक, हिन्दी, आयुर्वेद, भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर गौ-गीता, गायत्री के परम उपासक रहे हैं। स्वाधीनता संग्राम के बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् आन्दोलन के अंतरंग सहयोगी रहे हैं। बीकानेर राज्य की प्रथम लोकप्रिय सरकार में शिक्षा एवं रेल्वे मंत्री रहे हैं। *रतनगढ विधानसभा क्षेत्र से एक बार विधायक भी रहे है।*
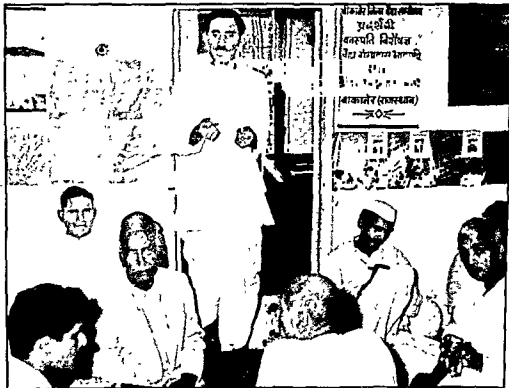
आचार्य जी राजस्थान गौशाला पिंजरापोल संघ के अध्यक्ष रहे और सहयोगी रूप में भी उन्होंने अच्छा काम किया।

राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् के भी अध्यक्ष रहे। प्राकृतिक चिकित्सालय बापू नगर जयपुर से भी आचार्य जी जुडे रहे हैं। मैंने (दौलत राम सारण) आचार्य गौरीशंकर जी के साथ प्रजापरिषद्, गांधी विद्या मंदिर सरदार शहर, स्वामी केशवानन्द जी की ग्रामोत्थान विद्यापीठ, मरूभूमि सेवाकार्य संगरिया राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्, प्राकृतिक चिकित्सालय, बापू नगर, जयपुर, राजस्थान गौशाला पिंजरा पोल संघ में काम किया है। आचार्य जी हमेशा विशाल स्तर पर काम करना पसंद करते थे और उसी के लिए प्रेरणा देते रहते थे। विभिन्न स्तरों पर आचार्य जी के साथ काम करने में सदा रूचि और सहयोगी रहा।

आचार्य जी निश्छल स्वभाव के विनम्र, भावनाशील, उच्च विचार वाले स्वप्नदृष्टा व्यक्ति हैं। वे गंभीर चिन्तक प्रभावशाली वक्ता, सादा जीवन उच्च विचार में आस्था रखने वाले महान व्यक्ति हैं। हमारी यही कामना है कि भगवान उन्हें शतायु करे।

□

आचार्य गौरीशंकर जी

अज़ीम* गुफ़्तगू-एक बेनज़ीर शख़्शियत से

डॉ. जया एल.डी. भारद्वाज

फ़राएज़[१] और ज़ज़्बात[२] जहाँ लिए हैं पनाह[३]।
ताज़गी नफासत[४] और नब्बे साल
उसकी निगाहें, जिन्होंने नापा है आलम
बदन पे जिसके रूहानी[५] सकून
चन्द शब्द और हकीकत का आकाश
जो कहता है प्रभु की हस्ती चाहते हो देखना
बस खुद ही अपने वजूद[६] में तलाशना
जो मुझे छोड सकता नहीं (हंसकर)
मैं जिसे छोड सकता नहीं।
बजाहिर है, उसके करिश्मे[७]-मगर आदमी के जरिये
आदमी हो तो आदमियत को सम्भालो,
यह मेरा नहीं-उस मालिक का कहना है।
अपरा और परा प्रकृति उसी का जुहूर है।
खयाले अहंकार को दफ़न[८] कर
जन्म और मरण के दरम्यां है जिन्दगी
गर यह तेरी है तो संभाल- (जिन्दगी)।
और उस परवरदिगार की है दी हुई,
तो यह अ़मानत[९] है-प्यारे,
लौटानी है उसे-ज्यो की त्यों विचारकर
ये पांचो तत् जो बाहर करे बसर
ये समझ की तेरी भी अंदर ज्यो के त्यों
ये माया का खेल है-जो फैला हुआ है

बच-देख अज़ल से खुदा की हस्ती
खुद में खुदा को पैदा कर,
खुदा लिबास[१०] नहीं जो चाहे बदला करे
बचपन जवानी बुढ़ापा-ये सैर है
मकाम-ए-जिन्दगी नहीं-समझ
माया में लिपटी है लालसा
ख्वाबे[११]-गफलत समझ इसे
यह शरीर मकीं है उस परवर दिगार का, यादकर।
मुसाफिर जो ठहरा है इसमें
फक्त कुछ वक्त के लिए-बात को समझ
न कर तआज्जुब ने हैरान हो
शौक-ए-हवालात की कैद से बाहर हो
यह पाकीजा[१२] है नूर जिसका तेरे चेहरे पर
उसकी तलाश कर उससे मिल
देखना फिर तुझे न होगी-
-इज्जत की ख़्वाहिश[१३] और न ज़िल्लत[१४] की परवाह
सुन सब जगह है-वह
तेरे बाहर भीतर कहॉं नहीं है,
खुद को मजबूर समझने की भूल न कर
सुनाता हूँ-सूफी फरीद की बात,
कहा जब किसी ने उसे-
उठ फरीदा, दुनियां वेखण चलिए।
और फरीद कहता है क्या-
जे मैं बेखां अपणौ अम्लां वल्लो
कुछ नहीं मेरे पल्ले,
अर जे मैं बेखां ओहदी रहमत वल्लो।।
।। बल्ले बल्ले बल्ले।।
फिर कहा-साफ़गोई[१५]-अमल-फिर भक्ति

गीता का उसूल-ज्ञान से दाता को जानले
मन भागे तो बाग[16] उसकी मोड़दे-
जाना है जिधर तुझे उस रास्ते की पहचान कर
अम्ल कर - अम्ल कर - अम्ल कर
................और आज का पाठ हो गया। (एक हंसी)।

(१) कर्त्तव्य	(२) भावना	(३) शरण	(४) कोमलता
(५) आत्मिक	(६) अस्तित्व	(७) चमत्कार	(८) गाडना
(९) धरोहर	(१०) वस्त्र	(११) असावधानी	(१२) पवित्र
(१३) इच्छा	(१४) बदनामी	(१५) स्पष्टवादिता	(१६) घोड़े की बागडोर

* परम चर्चा

श्री गंगानगर, (राज.)

आचार्य गौरीशंकरजी के प्रति भावोद्गार

डॉ. बुधमल शामसुखा

सत्यं, शिवं, सुन्दरं संगम
दर्शन-चिन्तन-दाता।
'रसो वै स:' ऋषि-वाणी के
श्रुतधर तुम उद्गाता।

मन-मरूवन में उतरे बन कर
सुरभित शीतल चन्दन।
हे ज्योतिर्धर! गौरीशंकर!
मेरे शत शत वन्दन।।

बी-४/१५८, सरदारगंज एन्क्लेव,
न्यू दिल्ली-११००१९०

दर्शन साहित्य एवं आयुर्वेद के मर्मज्ञ मनीषी डॉ गौरीशंकर आचार्य

मुन्ना लाल सेठिया
मंत्री मंगल आयुर्वेदिक फार्मेसी

कुल परम्परा से हमारे परिवार में विद्वज्जनों, साहित्यकारों, समाजसेवियों, कवियों एवं संगीतकारों के प्रति बड़ा ही आदर एवं सम्मान का भाव रहा है। मेरे पूज्य पितामह श्री सेठ जयचन्द लाल जी सेठिया अपने बचपन से ही बड़े विद्यानुरागी और कलाप्रेमी महानुभाव थे। वे स्वयं बडे अध्ययनशील थे। उन्होंने लगभग ७ दशाब्द पूर्व सरदार शहर में अपने युवा मित्रों के सहयोग के साथ नवयुवक मण्डल नामक संस्था की स्थापना की, जो साहित्यिक जागृति एवं सामाजिक चेतना का लक्ष्य लिए वर्षों तक कार्यशील रही।

पूज्य पितामह जी को विद्वानों से मिलने, उनका सानिध्य पाने तथा उनके साथ चिंतन-विमर्श करने की बडी अभिरूचि रहती थी। अपने समय के विख्यात, ऋषिकुल हरिद्वार व हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक पं. चन्द्रशेखर शास्त्री जैसे विद्वानों से उनका घनिष्ठ संबंध रहा है। आयुर्वेद विशारद पं. रामप्रसाद दीक्षित, आयुर्वेद भास्कर पं. हिमकर शर्मा, आयुर्वेदाचार्य पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा, संस्कृत के उद्‌भट विद्वान् पं. ओंकारनाथ लाटा, व्याकरण-साहित्य-आयुर्वेदाचार्य, कविवर श्री बन्ने खां मांगलिया, आशु कवि श्री लूनकरण विद्यार्थी आदि से उनका बहुत ही स्नेहपूर्ण संबन्ध रहा। वे आयुर्वेद के अनुभवी ज्ञाता, सफल चिकित्सक थे औषध निर्माण में उन्हें अद्‌भुत कौशल प्राप्त था। इसलिये आयुर्वेद जगत् के और भी बड़े-बडे विद्वानों का उनके साथ सम्पर्क रहा। राष्ट्र विश्रुत विद्वान् डॉ. छगन लाल शास्त्री तो उनके साथ अनेक सार्वजनिक संस्थाओं मे कार्यशील रहे। पूज्य पितामहश्री प्राय: अध्यक्ष पद संभालते थे और डॉ. शास्त्री मंत्री पद।

पूज्य पिताश्री भँवरलाल जी सेठिया, पितृव्य श्री मोहन लाल जी सेठिया भी विद्वानों का सदैव सम्मान करते रहे, उनका सानिध्य लाभ लेते रहे।

इसी श्रृंखला में डॉ. गौरीशंकर आचार्य आते हैं। वाराणसी में अपना अध्ययन पूरा कर जब उन्होंने सरदार शहर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया, तभी से पूज्य पितामहश्री के साथ उनका नैकट्यपूर्ण संबंध निरन्तर बना रहा। आचार्यजी ने जब आयुर्वेदिक अनुसंधान का कार्य हाथ में लिया, तब तो वे हमारे बाग परिवार के और भी निकट आ गए। पूज्य पितामहश्री ने मेवाड के

सुप्रसिद्ध रसायन शास्त्री पं. नीलकण्ठ शर्मा के निर्देशन में जो पारद आदि का महत्त्वपूर्ण अनुसंधान कार्य संचालित किया, उसमें पूज्य आचार्य जी का निरन्तर परामर्श प्राप्त होता रहा।

आचार्य जी की वाणी में अप्रतिम माधुर्य है। उनका हृदय भी माधुर्य रस से छलाछल भरा है हमारे परिवार के प्रति उनके मन में बड़ा ही स्नेहपूर्ण स्थान रहा है, आज भी है। जब भी वे आते हैं, बाग में मिलने हेतु अवश्य पधारने का कष्ट करते हैं। वे कहते हैं कि यह सेठिया परिवार आयुर्वेद की जिस निष्ठा व लगन से सेवा कर रहा है, यदि देश के आयुर्वेदिक संस्थान इस प्रकार श्रद्धा के साथ आयुर्वेद के उत्थान एवं विकास में लग जाएँ तो आयुर्वेद अपना पुरातन गौरव प्राप्त कर ले। वे हमारे फार्मेसी में शास्त्रीय विधि से निर्मित औषधियों की बड़ी प्रशंसा करते रहे हैं।

आचार्य जी इस बात से बड़े दुखी हैं कि जिस आयुर्वेद ने संसार को चिकित्सा का मार्ग बताया, वह इस देश में आज बहुत नगण्य बनता जा रहा है। आज एलोपैथिक डाक्टरों के समक्ष वैद्यों की क्या गणना। वास्तविकता यह है कि आयुर्वेद में सैद्धांतिक दृष्टि से कोई कमी नहीं है किन्तु सिद्धान्तों के आधार पर सूक्ष्म दृष्टिकोण के साथ नवाभिनव अनुसंधान एवं शोध कार्यों की आवश्यकता है।

मुझे यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि आचार्य जी मुझे अपने पुत्र के तुल्य मानते रहे हैं। आज पूज्य पितामहश्री, पिताश्री, पितृव्यश्री विद्यमान नहीं हैं किन्तु आचार्यजी का मेरे पर, हमारे सारे परिवार पर बड़ा ही अनुग्रहपूर्ण भाव है। जब भी वे मेरे यहाँ पधारते हैं तब आयुर्वेद के साथ ही साथ जीवन की और भी महत्त्वपूर्ण बातें बताते हैं, जो मेरे लिए बड़ी ही उद्‌बोधप्रद सिद्ध होती हैं।

शिक्षा जगत् में आचार्य जी ने जो कार्य किया, वह किसी से छिपा नहीं है। उन्होंने सरदार शहर में साहित्यिक चेतना की एक ऐसी लहर प्रवाहित की कि इस दिशा में विद्यार्थी, युवाजन अग्रसर हुए, अध्ययनशील बने, लेखक, कवि एवं वक्ता बने।

साहित्य समिति, बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन तथा गाँधी विद्या मंदिर आदि अनेकानेक संस्थाओं की सेवा के रूप में जो उनकी देन रही, वह सदा स्मरणीय रहेगी। ज़ीवन के नवम् दशाब्द में पहुँचे आचार्य जी आज भी सामाजिक एवं साहित्यिक सेवा क्षेत्र में सक्रिय हैं, यह हमारा परम सौभाग्य है।

मेरी परमपिता परमात्मा से करबद्ध प्रार्थना है, आचार्य जी सर्वथा आरोग्यमय, शतायुर्मय जीवन प्राप्त करें, हमें उनका निरन्तर पथ-दर्शन प्राप्त होता रहे।

इन महामनीषी के चरण-कमलो में मेरे शत्-शत् प्रणाम। □

ज्वालापुर आर्य समाज गुरूकुल की महान विभूति वैदिक शिक्षा शिरोमणि डॉ गौरीशंकर आचार्य

यशवन्त सिंह एडवोकेट
महासचिव, स्वामी केशवानन्द स्मृति,
चैरिटेबल ट्रस्ट संगरिया, जिला हनुमानगढ़,
प्रधान आर्य समाज, भादरा,
जिला-हनुमानगढ़ (राज.)

भादरा भूमि को गुर्जर गौड़ ब्राह्मण पिरगावत परिवार में डॉ. गौरीशंकर आचार्य जैसे शिक्षा रत्न पैदा करने का गौरवमय सौभाग्य प्राप्त है। इनके पिताश्री प्रात: स्मरणीय पं. जगनराम जी तत्कालीन बीकानेर स्टेट के परोपकारी युग पुरूष और विधिवेत्ता थे। उन्होंने अपनी बौद्धिक दूरदर्शिता से परिवार व स्वजनों को सत्संस्कारी शिक्षा प्राप्ति के अवसर प्रदान करा कर सम्मान जनक रोजगारोन्मुखि रास्ता दिखाया जिससे वे अपने पैरों पर खड़े होकर स्वावलम्बी बन सकें।

पंडित जगनराम जी बीकानेर हाईकोर्ट के वकीलों की अग्रिम पंक्ति में थे। देश के स्वतंत्रता प्राप्ति संग्राम में वकीलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। बीकानेर कान्सप्रेसी केस से इंग्लैण्ड के हाउस ऑफ कामन्स में तहलका मच चुका था। इस केस में स्वतंत्रता सैनानी लाला खूबरामजी सर्राफ व उनके भतीजे लाला सत्यनारायण जी सर्राफ के मुकदमों में उनकी पैरवी में बाहर से आने वाले वकीलों के साथ पं. जगनराम जी का योगदान सर्वविदित है जिसके उल्लेख की आवश्यकता नहीं है। ऐसे महामहिम बाप के पुत्ररत्न गौरीशंकर का महान विभूति होना स्वाभाविक है।

मान्यवर डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य ने अपने मौलिक चिन्तन से अनुभव किया कि शिक्षा की ज्योति जगे बिना अनपढ़ गांव गरीब समाज से अज्ञान का अंधकार दूर होना असंभव है। अत: आचार्यजी ने मरूप्रदेश के शिक्षा संत स्वामी केशवानन्द जी का पथानुगामी बनकर सरदार शहर में गांधी विद्या मंदिर का बिरवा लगाया। कालान्तर में परिश्रम पूर्वक इसे विश्वविद्यालय का रूप प्रदान करा इस अभागे पिछड़े क्षेत्र के गांव गुवाड़ तक शिक्षा प्रसार की गंगा बहाई।

बीकानेर स्टेट में प्रजा परिषद् की अल्प अवधि सरकार में शिक्षा व रेल मंत्री का दायित्व संभाल कर मान्यवर डॉ. गौरीशंकरजी का इस मंत्रिमण्डल के उपप्रधान मंत्री चौधरी हरदत्त सिंहजी

व राजस्व मंत्री चौधरी कुंभाराम जी आर्य के साथ मिलकर किसानों को खातेदारी हक दिलाने व शोषण मुक्ति की गरीबोन्मुखी योजनाएँ लागू कराने का जो योगदान रहा है उसे स्मरण करके लोग गदगद होते देखे गये हैं। रतनगढ़ विधानसभा क्षेत्र से डॉ. गौरीशंकर जी के चुनाव मैदान में आने पर भादरा के सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने वहाँ चुनाव अभियान में परिश्रम करके आचार्य जी की विजय श्री से भागीदारी का पुण्य प्राप्त किया था।

मान्यवर डॉ. गौरीशंकर जी ने अपनी जन्म भूमि में भी एक विशाल शिक्षण संस्थान की स्थापना करने के संकल्प से यहाँ एक महिला बाल कल्याण संस्था का श्री गणेश किया था। इनके चचेरे भाई श्री बनवारी लालजी ने इस योजना हेतु अपना पूरा खेत दान कर दिया था। समाज सेवा के संस्कार विहीन तहसील क्षेत्र व पिरगावत परिवार की सुस्ती और इच्छा शक्ति की कमजोरी से आचार्यश्री का यह स्वप्न साकार नहीं हो पाया है। ईश्वर से प्रार्थना है इस भूभाग में सकारात्मक सोच के मानव कल्याणी संस्कार जागृत हों जिससे देव ऋषि डॉ. गौरीशंकरजी आचार्य की मनोकामना पूर्ण हो सके। □

मंत्री और इतने सरल

बात उस समय की है, जब आचार्य जी शिक्षा एवं रेलमंत्री थे। वे फर्स्ट क्लास की टिकट लेकर कहीं जा रहे थे, रात्रि का समय था, फर्स्ट क्लास के डिब्बे में टी.टी. आया, उसने आचार्य जी की ग्रामीण वेशभूषा देखकर टिकट मांगा। आचार्य जी ने उसे टिकट दे दिया। टी.टी. ने उनको फटकारते हुए कहा कहाँ से चुराकर लाये हो, चलो सैकण्ड क्लास में जाकर बैठना और उन्हें अगले स्टेशन पर उतार दिया। अगले स्टेशन पर टी.टी. ने स्टेशन मास्टर से कहा मीमो काट देना। लेकिन उनकी सज्जनता को देखकर उठने मीमो नहीं काटा। तब आचार्य जी वहीं अपने साथ लाये छोटे से बिस्तरे को बिछाकर सो गये। सुबह उठने के बाद नहा धोकर पूजा कर रहे थे तब उन्हें देखकर स्टेशन मास्टर को उन पर दया आ गयी। उसने कहा आदमी तो सज्जन लगता है और उसने उन्हें नाश्ता पानी करवाकर अपने पास बैठाया और बातें की। बातों-बातो में आचार्य जी ने उसका हाथ देखकर कुछ बातें बताई जो एकदम सटीक थी। दुःखदर्द की बातों के बाद आचार्य जी ने उसने पूछा कि तुम कुछ परेशान दिख रहे हो। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि एक मंत्री आ रहा है। पता नहीं कहाँ रह गया! बार-बार में उसी का मैसेज आ रहा है। इस पर आचार्य जी ने कहा मैं ही मंत्री हूँ। जिसे सुनकर स्टेशन मास्टर की हालत खराब हो गई। लेकिन आचार्य जी ने उसे ढांढस बंधाया और कहा- आप नाहक परेशान न हों मैंने छोटे स्टेशन की समस्याओं को समझ लिया है। आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। स्टेशन मास्टर उनके चरणों में गिर पड़ा।

दया, करूणा, ममता की मूरत
डॉ. गौरीशंकर आचार्य

मधु सूदन द्विवेदी
प्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य, एक महान विभूति हैं इनके संस्मरण कहाँ से शुरू करूँ, कुछ समझ में नहीं आता। आपका जीवन ही संस्मरण है, मेरा आपसे २७ वर्षों से रिश्ता है, इस दौरान मैंने जो महसूस किया, समझा एवं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि आप एक परिपक्व, समर्पित, शांत निष्ठावान युग पुरूष हैं। सादगी इनके रोम-रोम में समाई हुई है। आपके बारे में मुझे शब्द नहीं मिल पा रहे हैं, जिनके द्वारा मैं कुछ लिखूं हाँ एक शब्द जहन में अभी-अभी आया है। कम्प्लीट मैन (सम्पूर्ण पुरूष)

आचार्य जी ने स्वयं "कभी यह नहीं कहा कि मैं क्या था", मैंने वो किया। जीवन पर्यन्त समाज सेवा की,पद पर रहते हुए कभी पद का दुरूपयोग नहीं किया श्रीमती आचार्य जिन्हें सभी "बाई" कहा करते थे ने एक बार बीकानेर प्रवास के दौरान एक संस्मरण सुनाया।

आचार्य जी तब बीकानेर रियासत में शिक्षा एवं रेलमंत्री थे। आपको राजकीय कार्यवश रियासत में निरीक्षण हेतु जाना था, उसी दौरान बाई को भी पारिवारिक कार्य हेतु भादरा जाना था, अतः यात्रा का कार्यक्रम साथ ही बनाया गया। स्टेशन पर मंत्री जी के लिए विशेष बोगी ओ सी खड़ी थी। बाई व आचार्य जी घर से रवाना होकर स्टेशन पहुँचे तब बाई से आचार्य जी ने कहा 'देवी ओ.सी. मंत्री व स्टॉफ के लिए है, यह नियम मैंने ही बनाया है। अतः आप दूसरे दर्जे में यात्रा करें। बाई यह सुनकर अबाक रह गईं, तुरन्त ही समझ गईं। बाई व बच्चे दूसरे दर्जे में बैठ गए। जहाँ भी गाड़ी रुकती आचार्यजी स्वयं बोगी तक आकर हालचाल पूछते, सुलभ नारी प्रकृति के अनुसार बाई बोलतीं आप तो जाइए ओ.सी. में हम ठीक हैं।

ऐसे हैं आचार्य जी नियम के पक्के समर्पित पूर्ण पुरूष। दया प्रेम-समस्त प्राणी मात्र के लिए कूट-कूट कर भरा हुआ है। इसका में चश्मदीद गवाह हूँ, करीब १५ वर्ष पूर्व की बात है, मैं परिवार सहित हरिद्वार गया। आचार्य जी, बाई भी वहाँ थे, गुरूकुल महाविद्यालय के विश्रामगृह में हम भी वहीं ठहरे। मई माह की गर्मी अपनी चरम सीमा पर थी, दोपहर का समय अचानक बिजली चली गई, बाई की तबीयत ठीक नहीं थी, अतः वो बाहर बरामदे में लेटी हुई थीं। बाई ने आचार्य जी

से कहा "गर्मी तेज लग रही है जरा पंखे से हवा कर दीजिये। आचार्य जी कुर्सी पर बैठ गए व हवा करने लगे तभी देखते हैं कि गर्मी से त्रस्त एक कुत्ता पास में आकर जमीन पर लेट गया। यह अक्सर परिसर में घूमता था। उसे मक्खियाँ तंग कर रही थीं, आचार्य जी ने उस ओर मुख किया व कुत्ते को हवा करने लगे। कुछ देर बाद जब बाई को पसीना आया व नींद खुली तो देखा नजारा अजीब था, वो बोलीं "मेरी तबीयत ठीक नहीं और आप हवा किसे कर रहे हैं"।

आचार्य जी बोले 'देवी यह बहुत परेशान हो रहा था, मुझ से देखा नहीं गया तुम तो स्वयं भी देखभाल कर सकती हो परन्तु इस बेचारे का कोई नहीं।"

यह था प्राणीमात्र के लिए दयाभाव मैंने पूर्व में भी कहा है। युग पुरूष का जीवन ही संस्मरण है। एक शायर की चन्द लाइनें याद आ रही हैं, हजारों बरस नरगिस अपनी बेनूरी पै रोती है, तब जाकर पैदा होता है, चमन में दीदावर ऐसा।

शुभकामओं सहित।

नवलखा, इन्दौर (म.प्र.)

अग्रणी क्रांतिकारी

आचार्य श्री गौरीशंकर गुरुकुल महाविद्यालय के स्नातक थे। तब प्रकाशवीर शास्त्री, रघुवीर शास्त्री के साथ उनकी अन्तरंगता ये ज्वालापुर से विद्यार्थियों को लेकर मेरठ छावनी जाते थे और वहाँ क्रांतिकारी गतिविधियों में सदैव आगे-आगे रहते थे। कई बार उन सभाओं में गोलियाँ भी चली थीं जो इनके सिर के ऊपर होकर निकल जाती थीं, पुलिस वाले बाद में इन्हें भगा देते थे। इस तरह आप विद्यार्थी जीवन से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में अग्रणी रहे हैं।

गुरू को श्रद्धा सुमन

बजरंगलाल सोनी

सर्वप्रथम मां शारदा को नमन करते हुए पूज्य गुरूदेव के प्रति अपनी श्रद्धा अक्षरों द्वारा व्यक्त कर रहा हूँ। पूज्य गुरूदेव डॉ.गौरीशंकरजी आचार्य मेरे पिताश्री भंवर लाल जी सोनी के अभिन्न मित्र थे। मेरी उनसे प्रथम भेंट भी पिताश्री के द्वारा ही हुई। सन् १९६३-६४ में मुझे ऐसे लगने लगा कि कोई आत्मा है जो मुझसे यह कहती है, तुम मेरे साथ चलो। जब यह दिनचर्या कई दिनों तक अनवरत चलती रही तो एक दिन पिताश्री ने मुझसे कहा कि बजरंग! तुम इसी समय गांधी विद्या मंदिर में ओम कुटीर जाओ और आचार्य जी से मिलो, मैंने ऐसा ही किया। स्मरणानुसार उस दिन मंगलवार था, मैं गया एवं आचार्य जी से मिला। उन्हें देखते ही मेरे मुख से प्रथम शब्द यही निकले, गुरूजी प्रणाम। आचार्य जी के आस-पास खड़े सभी महानुभाव एवं श्रेष्ठजन मेरी ओर विस्मित नजरों से देखने लगे कि आचार्य जी को कोई गुरूजी भी कहता है एकान्त में मैंने अपनी व्यथा गुरूजी को बताई। गुरूजी ने अपना हस्त मेरे मस्तक पर रखकर कहा जाओ बेटा तुम ठीक हो। आश्चर्य! मैं उसी पल अपने आपको उस आत्मा से मुक्त महसूस करने लगा। तब से आज तक मेरी उनके प्रति अटूट श्रद्धा है एवं गुरूदेव भी मुझे पुत्र तुल्य महत्त्व देते हैं। इसका एक उदाहरण पूज्य स्वर्गीय रामशरणदासजी महाराज (पूर्व नाम कन्हैयालाल जी दूगड़) द्वारा १९८६-८७ मे अपने श्रीमुख से कहे शब्द:-आचार्य जी आपके तो तीन बेटे और तीन घर हैं। पहला जयपुर, भीमसेन, दूसरा बजरंगलाल, सरदारशहर, तीसरा किशनलाल, श्रीगंगानगर। ये शब्द स्वामीजी ने अपने निवास स्थल पर ही विश्राम करने की प्रार्थना की तो आचार्यजी ने सिर्फ इतना ही कहा कि रहूँगा तो बजरंग के ही घर।

गुरूदेव एवं माताजी (गुरूदेव की धर्मपत्नी) मेरे यहॉ जो भी मांगलिक कार्य होता उसमें हमेशा ही सम्मिलित रहे एवं अपने सिंचित ज्ञान से मेरा सपरिवार मार्गदर्शन करते रहे। माताजी की जब भी इच्छा होती कहती रसोई का कार्यभार आज मेरा! एक बार जब मैं दुकान में स्वर्णाभूषण बना रहा था तब दुकान पर गुरूदेव के एक शिष्य पन्नालालजी पेड़ीवाल बैठे थे, अचानक माताजी आई और कहा:- बजरंग, आज मैंने तुम्हारे लिए स्वयं रसोई बनाई है। चलो और खाना खाओ। पन्नालालजी ने काफी देर माताजी को देखकर कहा "माताजी आप' (क्योंकि उन्होंने माताजी को करीब २५-३० वर्षों के बाद देखा था। आज यह लेख लिखते समय ममतामयी माताजी के वे शब्द कानों में आज भी गूंज रहे हैं। उस देवी को पुन: प्रणाम।

सम्पूर्ण राजस्थान में शायद ही कोई वैद्य हों। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप आयुर्वेद कॉलेज में अपना अनुभव भावी वैद्यों को समर्पित करें ताकि ये छात्र भी आजीवन स्मरण रखें कि हमने सरदार शहर में किताबी ज्ञान के अतिरिक्त आपके निजी अनुभव की भी शिक्षा ली थी। अकस्मात् उन्हें यहाँ से जाना पड़ा।

गुरूदेव परमात्मा संबंधित ज्ञान भी रखते हैं उनके एक शिष्य डॉ.महेन्द्र, जो आत्मा को प्लेनचिट द्वारा बुलाते हैं, उन्होंने भी अपने हर साक्षात्कार में कहा है कि यह विद्या मैंने डॉ. गौरीशंकर आचार्य से प्राप्त की है।

गुरूदेव एक असाधारण पुरूष हैं। इन्होंने सर्वदा सभी को कुछ दिया है किसी से लेने की लालसा नहीं रखी। जब भी जरूरत पड़ी, गुरूदेव मेरे पास हो या ना हो तब मैं उनका और अपने पिताश्री का ध्यान कर रात्रि को सो जाता हूँ। स्वप्न में मेरा संशय, व्याधि जो भी हो उसका निवारण इन दोनों द्वारा हो जाता है। यह कोई मिथ्या वचन नहीं है। मेरी उन दोनों के प्रति सच्ची निष्ठा है।

भास्कर को दीपक ना दिखाकर चन्द शब्द और लिखकर लेखनी को विराम देता हूँ।

आप हो यंत्री, मै यंत्र,
काठ की पुतली मैं, आप सूत्रधार।
आप करवाये, कहलाये,
मुझे नचाएं, निज इच्छा अनुसार।।
क्या करूं, क्या नहीं करूं,
करूं इसका मैं क्यों कुछ विचार।
आप करें सदा स्वच्छन्द सुखी,
जो करे आप सो प्रिय विहार।

गुरूदेव द्वारा दिये अपने अनुभव और मार्गदर्शन के लिए मैं उन्हें धन्यवाद नहीं देना चाहता क्योंकि धन्यवाद देने का अर्थ है मुझे इनसे आगामी भविष्य में और कुछ प्राप्त नहीं करना, ऐसा मेरा विचार है।

सत्यनारायण मन्दिर के सामने,
सरदार शहर-३३१४०३,
जिला चूरू (राज.)

आदर्श व्यक्तित्व के धनी आचार्य पंडित गौरीशंकर जी!

रंजना भीष्म कौशिक

सौभाग्य से कभी-कभी ऐसे व्यक्तित्व मिल जाते हैं जिनके उदान्त अपनत्व और औदार्य्य की प्रशंसा करने के लिए कोई शब्द ढूंढे भी नहीं मिलता। आचार्य पडित गौरीशंकर जी उन मनीषि विद्वानो में से एक हैं जिनके सार्वजनिक जीवन से संबंधित सुकार्यों को शब्दों में बांधना नितान्त कठिन है। आपने एकबार चर्चा के दौरान बताया था कि उनके अध्ययनकाल में ही वाराणसी में किसी एक महापुरूष ने कहा था कि जीवन की सुदृढ़ नींव की रीढ "चरित्र" है। हमने देखा कि आदरणीय आचार्य श्री ने उसे मन्त्रवत् हृदयंगम करते हुए अपने चरित्र में उतारकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। इनके जीवन की नींव "चरित्र" रहा है, जिसके पहले पुस्त "सत्यनिष्ठा" को स्थाई एव उजागर करने के लिए सदैव तत्पर रहते आये हैं। संतुलित जीवन, संतुलित आकांक्षा, संतुलित मस्तिष्क और संतुलित महत्वाकांक्षा इनके जीवन की विशिष्टताऐं रही हैं।

हमने अनुभव किया है कि मंगलोन्मुखी वैदिकशास्त्र में वर्णित गुणों से आपूरित आपका गुरूत्व जीवन शिक्षा जगत मे सदैव श्राध्य एवं अनुकरणीय रहा है। बीकानेर का सरदार शहर नगर आपकी प्रारम्भिक कर्मस्थली रही है, जहॉ आपकी सक्रिय भूमिका की अमिट छाप आज भी सजीव मूर्तिवन्त है।

आपकी सत्प्रेरणा, निर्देशन और सक्रियता संभागिता के फलस्वरूप स्वनाम धन्य, उदारचेता दूगड परिवार द्वारा सरदार शहर में संस्थापित गांधी विद्या मदिर (ग्राम विश्वविद्यालय) आपके कृतित्व एव व्यक्तित्व का सजीव कीर्त्ति स्तम्भ है जिसके माध्यम से आज भी विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक प्रवृत्तियां संचालित हो रही हैं।

जनमानस को झंकृत करने वाली आपकी ओजपूर्ण वाणी की सौम्यता, सरलता शिष्टता से संपुटित वक्तृत्व शैली इतनी प्रभावोत्पादक है कि जिससे कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। साहित्य सेवा के पर्याय सारस्वत साहित्य साधक आचार्य श्री का पृथ्वी की विपुलता सा व्यक्तित्व दर्शनीय है, वन्दनीय है। वात्सल्य, करूणा की प्रतिमूर्ति विद्वतजगत् में प्रकाश स्तम्भ पं. गौरीशंकर जी के मानस मे भारतीय लोक संस्कृति के प्रति असीम श्रद्धा है। आपके जीवन में छिपाने वाली कोई बात नहीं है। चिन्तन, मनन, स्वाध्याय प्रयोग इनकी जीवन पद्धति रही है। आचार्य श्री ने अपने ज्ञान, आचरण और सौदार्य्य के सांस्कृतिक अवतरण से आगे बढकर कभी पीछे मुडकर नहीं देखा।

साहित्य समिति सरदारशहर के संस्थापन एवं बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन जैसे सशक्त संगठनों के माध्यम से साहित्य, संगीत, संस्कृति के अतिरिक्त अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति के क्षेत्र में आपने जिस प्रकार की भूमिका वहन की वह बेजोड़ है। आपके कई शिष्य तत्कालीन सरकार के

क्षोभ के पात्र भी बने किन्तु दण्ड सहकर भी अटल रहे, जो आज के युग में भी गुरू-शिष्य संबंधों एवं प्रदत्त शिक्षा को सर्वोच्चता की सीमा तक ले जाता है।

देववाणी संस्कृत के इस अमर साधक में भारतीय साहित्य की शास्त्रीयता की क्षमता, लौकिकता की रमता प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित है। आप अग्रिम पंक्ति में मूर्धन्य विद्वान् और प्रखर चिन्तक तो हैं ही, राष्ट्रभाषा हिन्दी पर आपका स्वत्वाधिकार है, वहीं आंग्ल एवं अन्य अनेक भाषाओं पर भी आपका पूर्णाधिकार है।

आचार्य श्री का जीवन भण्डार जहाँ जीवनोपयोगी विषयों से विभूषित रहा है वहीं राजनैतिक समृद्धता से भी सृज्जित रहा है। जिस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में सोत्साही बने रहकर जन-जीवन को अनुप्राणित करते रहे उसी तरह राजनैतिक जीवन में भी कभी पीछे नहीं रहे। यद्यपि राजनीति इन्हें पारिवारिक देन रही तथापि राजनैतिक जीवन का समारम्भ आपके सरदारशहर शुभागमन के साथ ही शुरू हुआ। वह संतुमणकालीन वेला थी, जबकि राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश करने वालों की गतिविधियों पर हुकूमत की जैसी वक्रदृष्टि थी उससे आप भी अछूते नहीं रहे। समय ने करवट ली और बीकानेर राज्य में गठित अन्तरिम सरकार में आपने शिक्षामंत्री के दायित्व को न केवल अंगीकार ही किया अपितु भलीभांति निर्वहन भी किया। आज के युग में दक्ष राजनीतिज्ञ वे होते है जिनमें कुटिलता के साथ चाटुकारिता एवं दूसरी बुराईयों का बाहुल्य हो। आचार्य जी इस कला मे दक्ष नहीं रहे अस्तु इन्हें राजनीति रास नहीं आई, तदुपरान्त आप साहित्य, संस्कृति, शिक्षा एवं गौ संवर्द्धन संरक्षण की ओर अभिमुख हुए जिन्हें आजीवन निर्वहन करने का संकल्प लिया जिसे इस वार्द्धक्यावस्था में भी अपनाये हुये हैं। गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रधान एवं विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर आरूढ रहे आचार्य श्री के निर्देशन में आज भी अनेकों शिक्षण संस्थाएँ संचालित हो रही हैं।

हमारी मान्यता है कि लोक चेतना से स्पन्दित, मंगलोन्मुखी समाज की कल्याणी सृष्टि के कुशल संवाहक अन्तः सलिला सरस्वती के समर्पित साधक आचार्यश्री एक व्यक्ति के रूप में संस्था सदृश रहे हैं। इसी संदर्भ में हमारी यह भी मान्यता है कि जीवन मूल्य बदलते नहीं हैं उनका ह्रास होता है, ऐसे समय में जब लोग कह रहे हैं कि जीवन मूल्य बदल रहे हैं किसी ऐसे व्यक्ति के जीवन पर प्रकाश डालना जो जीवन मूल्यों के साथ जीया है, आज के समाज की बहुत बडी सेवा है। यही कार्य आप प्रातः स्मर्णीय आचार्य श्री गौरीशंकर जी का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करके कर रहे हैं।

अन्त में लिखना चाहूँगा कि अजातशत्रु आचार्य श्री इस मरूधरा का वह पुष्प "पुष्पराज" है, इसकी सौरभ को शब्दों में बांधकर ऐसा पुष्पाहार बनायें कि यह माँ मरूधरा का कण्ठहार बन जाये।

मेरी दृष्टि में इस महापुरूष का अभिनन्दन करते हुये अभिनन्दन ग्रन्थ भेंटकर स्वयं अभिनन्दन ग्रन्थ समिति अपने आपको गर्वान्वित, गौरवान्वित अनुभव करेगी।

श्रीगंगानगर, राज.

अविस्मरणीय - आयाम
आचार्य गौरीशंकर - शतायु हों

शिक्षाविद् प्रिन्सीपल - लालचन्द शर्मा
(राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)

गांधी विद्या मंदिर रजत जयन्ती सप्ताह ५ फरवरी १९७८ से ११ फरवरी १९७८ सरदारशहर चूरू राजस्थान

अविस्मरणीय

गांधी विद्या मन्दिर सरदार शहर कार्य समिति १९७७-८०

कुलपति श्री अटल बिहारी वाजपेयी (तत्कालीन विदेश मंत्री भारत सरकार)

श्री कन्हैयालाल दूगड़ - अध्यक्ष

डॉ. आचार्य श्री गौरीशंकरजी - सदस्य

* मेरी स्मृति लौटती है - (आचार्य डॉ. गौरीशंकर सत्तावन वर्ष पूर्व) - ४८ मे महात्मा गांधी का देहावसान - दु:खद घटना थी, राष्ट्र के लिए - उन दिनों शायद मैं बीकानेर राज्य का शिक्षा और रेलमंत्री था। बात गांधी विद्या मन्दिर योजना की थी - तुम्हें याद है - मैं उसमें - चर्चा के केन्द्र में था।
* हां - २ सितम्बर १९५० (प्रथम संस्थापक अध्यक्ष)
  फिर एक कार्य समिति बनी मुझे अध्यक्ष बनाया गया - बस
  गांधी विद्या मन्दिर का बीजारोपण हो गया - गांधी जयंती से।
* अच्छा बताओ कौनसा वर्ष था - कार्यालय दूगड जी के घर में ही था - १९५० अक्टूबर २ (गांधी जयन्ती) हंसी - बस रूरल यूनिवर्सिटी का विचार बन गया - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने यूनिवर्सिटी भवन - का शिलान्यास किया - बी.एड. में गए थे छात्राध्यापकों ने सडक से कालेज तक दस फुट चौड़ा रास्ता बना दिया था - कली-वली किनारे पर डालकर।
* वे पूछें इससे पूर्व बता दिया - १९५५ अगस्त १८ (हंसी) - संस्था के विधान की रूप रेखा - वर्धा में आचार्य विनोबा भावे - आर्यनायकम भी अपनी धर्मपत्नी के साथ थे। मशरूवाला, थे (रूककर) जाजू .... (कृष्णदास ....) हां, हां।
* कन्हैयालाल दूगड ने कहा था - आचार्य जी हम आपकी सेवाएं लेंगे। वह जो रास्ते में हनुमान जी का मन्दिर है - बस हनुमान जी महाराज के हुक्म को सबने मान लिया - अब सब जुट

गए। दूगडजी ने पांच लाख रूपये और दस वर्ष की सेवाएं दीं - कितनी पुरानी बात है। याद है!

* और कुछ - कुछ विशेष महानुभावों के नाम बताएं? - नाम, बड़ा मुश्किल है - यूं समझो देश का कोई ऐसा आदमी जहां गांधी विद्या मन्दिर का नाम नहीं पहुंचा। गांधी जी की प्रतिमा जो उनकी जयन्ती थी उतनी ऊंची लगाई। बताओ ......? ८३ इंच ऊँची प्रतिमा की चर्चा इसलिए थी कि ८३वीं जयन्ती है। हरिभाऊ उपाध्याय, काटजू, व्यास जी (जयनारायण - हां, हां) हुमायूं कबीर आए थे। वो सर्वोदयी नेता गोकुल भाई मेरी बडी इज्जत करते थे।
* हुमायूं कबीर ने एक बात हमारी पसन्द की कही थी - तालीम का काम आब हवा पैदा करना है - जिन्दगी बेहतर हो - तालीम लेनी हो तो भिखारी बनकर और देनी हो तो ऋषि बनकर। लोकनायक जयप्रकाश तो कई बार हमारे निमन्त्रण पर सरदार शहर आए। कालूलाल श्रीमाली - (ग्राम्य शिक्षा समिति के संयोजक) के साथ कोई एक विदेशी (डॉ. फोस्टर - टास्की यूनिवर्सिटी-अमेरिका)। एक खान साहब थे - तब हम सब पास में गांव (बरडासर) गए थे। सुखाड़िया जी से तो घर की बातें भी हो जाती थीं। वो तुम्हारे बहुत बडे *सिद्धयोगी (स्वामी शरणानन्द महाराज) भी कई बार आए* - चर्चा *रही - बस शिक्षा और* संस्कार की बातें होती थीं। गुलजारी लाल नन्दा भी आए थे - बडा सधा आदमी कम बोलता था। ठहरो ठहरो कुछ भले से नाम याद आ रहे हैं।
* बहन मदालसा, पुरी के शंकराचार्य, हनुमानप्रसाद पोद्दार।
* रामसुखदास महाराज - गीता तो जैसे कण्ठस्थ है - इस संत को कोई लाग लपेट नहीं। सम्पूर्णानन्दजी से हमारी अच्छी जान पहचान रही। ....पता नहीं कब की बात है - हरिभाऊ उपाध्याय ने हमसे सर्वोदय के लिए जीवन मांगा - हमने साफ कह दिया - कुछ समय दे सकता हूँ - जीवन नहीं। मेरी साफ बात का उन्होंने अपने भाषण में भी जिक्र किया।
* मुझे दो आदमी के नाम-सरदार शहर में एक दानवीर झाबरमल थे - और दूसरे भंवरलाल दूगड़ - बड़ी लम्बी सोच के व्यक्ति थे। - अगर भंवरलाल की दुर्घटना में मृत्यु नहीं होती तो सरदार शहर विश्व के नक्शे पर होता। वहीं एक भोजक था। बाद में प्रिन्सीपल हुआ - बड़ा सात्विक था - क्या नाम - 'बजरंगलाल भोजक' - बडी मेहनत की उसने - मेरा ख्याल है ॐ (प्रणव) कुटीर में वो दो खेजडियां जरूर होंगी - एक तो कृष्ण मन्दिर के अन्दर ही है। गणेश जी महाराज सब ध्यान रखना।

सरदार शहर (चूरू - राजस्थान)

डॉ. छगनलाल शास्त्री द्वारा अनूदित, संपादित एवं व्याख्यात तथा मुनिश्री हजारीलाल स्मृति प्रकाशन, ब्यावर द्वारा सन् 1982 में प्रकाशित 'जैन योग ग्रंथ चतुष्ट्य', नामक ग्रंथ से उद्धृत

योग विद्या पर गहन अनुसंधान हो

डॉ. गौरीशंकर आचार्य

एम.ए.पी-एच.डी. विद्या भास्कर,

शास्त्राचार्य, वेदान्तवारिधि, सांख्ययोगतीर्थ

हरिद्वार, उत्तर प्रदेश

मंगल-भावना

योग मेरे जीवन का विषय है और मैं जानता हूँ कि इस विद्या का हमारी पुण्यभूमि भारत में जो विकास हुआ, वह सचमुच जगत् को उसकी अद्वितीय देन है। योग वह विद्या है, जो समय, स्थान आदि की सीमा मे बंधी नहीं है। उस द्वारा ससीम आत्मा अपने असीम विराट् स्वरूप को अधिगत कर सत्-चित्-आनन्दमय बन अकल्प्य, जाती है। गगन-मण्डल में एक अकल्प्यअतर्क्य और अभेद्य ज्ञान राशि परिव्याप्त है, वह अप्राप्य नहीं है। प्राप्य हो जाए तो व्यक्ति क्या से क्या बन जाए। उसकी प्राप्यता का मार्ग योग है। योगी विश्वगत ज्ञान को साधना-बल द्वारा अपने में उतार पाता है। स्वयं उसकी दिव्य रसानुभूति तो करता ही है, अखण्ड भूमण्डल को उससे लाभान्वित भी कर सकता है। यह जो मै लिख रहा हूं, केवल शास्त्र-ज्ञान के आधार पर नहीं, हिमाद्रि की गहन कन्दराओं में साधनारत योगियों में जो मैंने पाया और यत् किन्चित स्वयं भी अनुभूत किया, वह भी उसका एक आधार है।

मेरी भावना है, योग विद्या पर गहन अध्ययन हो, शोध-कार्य हो, अनुद्घाटित या विलुप्त सत्य उद्घाटित हों, इसके नाम पर चलती विडम्बनाएं, प्रवन्चनाएं एवं छलनाएं निरस्त हों। इसके लिये मैं यह परम आवश्यक समझता हूं, हमारे ऋषि, महर्षियों ने, योगियो ने, अध्यात्मिक महापुरूषों ने जो सत्य शब्दबद्ध किया, उसे हम यथावत समझें स्वायत्त करें। योगी परंपराबद्ध नहीं होता, वह साधनाबद्ध होता है। इसलिये मेरी दृष्टि में पतंजलि, व्यास, गोरख, हरिभद्र, नागार्जुन, सरहप्पा, कण्हप्पा, हेमचन्द्र, शुभचन्द्र, योगीन्दुदेव, आनन्दघन आदि सभी योगिवर्य योगमणिमुक्ताग्रथित अमूल्य माला के मनोज्ञ मनके हैं। इनके विचारों की अनिर्वचनीय दीप्ति से हमें अपना अन्तरतम उद्भासित करना है। इसके लिए यह नितान्त वान्छनीय है, इनका साहित्य हमें उपलब्ध हो। थोडा सा उपलब्ध

है, बहुत सा अनुपलब्ध है, आज भी अप्रकाशित पडा है। कितना अच्छा हो, कोटि-कोटि भारतवासियों की राष्ट्रभाषा हिन्दी में वह समुपस्थापित हो सके।

मुझे यह जानकर अत्यधिक हर्ष हुआ कि श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के युवाचार्य विद्वद्रत्न, बहुश्रुत मनीषी परमश्रद्धेय श्री मधुकर मुनि जी म० की छत्रच्छाया में भारतीय विद्या, जैन आगम आदि के सन्दर्भ में हो रहे विराट् कार्य के अन्तर्गत योगवाङ्मय का कार्य भी चल रहा है। उन्हीं के धर्मसंघ की परम विदुषी, योगनिष्ठ आदर्श साधिका, समादरणीया महासती श्री उमरावकुंवर जी म. 'अर्चना' के मार्गदर्शन तथा संयोजन में मेरे अनन्य आत्मीय विद्वान डॉ. छगनलाल जी शास्त्री एम.ए, पी.एच.डी. ने, जिनकी प्रतिभा एवं वैदुष्य पर मुझे गर्व है, महान ज्ञानी, महान् योगी, स्वनामधन्य आचार्य हरिभद्र सूरि के योग पर दो संस्कृत-ग्रन्थ-योगदृष्टि समुच्चय तथा योगबिन्दु एवं दो प्राकृतग्रन्थ-योगशतक व योगविंशिका का राष्ट्रभाषा हिन्दी में सम्पादन, अनुवाद और विवेचन किया है, जो इस ग्रन्थ द्वारा प्रस्तुत है।

डॉ. शास्त्री को उनके बाल्यकाल से ही मैं देखता रहा हूँ, उन्हें प्रज्ञा, विद्या तथा साधना संस्कार से प्राप्त हैं। भारतीय विद्या के क्षेत्र में जो उन्होंने उपलब्धियां की हैं, वे वास्तव में स्तवनीय तथा वृर्द्धापनीय हैं। उनके अध्ययन, ज्ञान एवं चिन्तन से समाज उपकृत तथा लाभान्वित हो, यह मेरी हार्दिक भावना है। उन्होंने योग को अपने प्रमुख अध्येय और विवेच्य विषय के रूप में स्वीकार किया है, यह मेरे लिए और हर्ष की बात है। अपनी सशक्त लेखिनी द्वारा योग वाङ्मय के उन विस्मृत या विस्मर्यमाण सत्यों को वे शब्दबद्ध करेंगे, प्रकाश में लाएंगें, जिनसे मानव-जाति का बहुत बडा उपकार संभाव्य है, ऐसा मुझे विश्वास है।

मैं साधकोत्तम, परम पूज्य युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म० तथा योगशक्ति रूपा महासती श्री उमरावकुंवर जी म. 'अर्चना' से यह विनम्र अनुरोध करूंगा वे योग वाङ्मय के कार्य को कृपया विशेष बल प्रदान करते रहें और डॉ. शास्त्री जैसे प्रौढ़ अध्येताओं व मनीषियों को सत्प्रेरित करते रहें ताकि योगतत्व के प्रकाश द्वारा अज्ञानावृत लोकमानस में ज्ञान की दिव्य ज्योति उद्भासित हो सके।

पाठक प्रस्तुत ग्रन्थ से अधिकाधिक लाभान्वित हों, यह मेरी अन्त: कामना है।

□

डॉ. छगनलाल शास्त्री द्वारा संपादित एवं कलकत्ता से प्रकाशित अणुव्रत पाक्षिक 1-101959 से प्रकाशित।

उपासना : आत्म-दर्शन

श्री गौरीशंकर आचार्य

उपासना का तात्पर्य आत्म-दर्शन से है। इसके साथ-साथ या आगे पीछे, आत्मा के इधर-उधर लगे हुए आनात्म-पदार्थों का क्षय या दूरीकरण आत्म-दर्शन की प्रक्रिया का प्रधान अंग है। इसलिए उपासना से दो फलितार्थ मिलते हैं-एक अभीष्ट की प्राप्ति और दूसरा अनिष्टकारी तत्वों से छुटकारा। शास्त्र का एक वाक्य इस प्रकार है-क्षीयन्ते चास्य कर्माणि, तस्मिन दृष्टे परावरे।

इसकी अत्यन्त आवश्यकता बताते हुए एक दूसरा वाक्य भी है-

तमेव दृष्ट्वा अतिमृत्युमेति, नान्यः
पन्था विद्यते अयनाय।

इस प्रकार आत्म-दर्शन प्राप्त करना, अनात्म-वस्तु के छुटकारा पाना और जीवन को सफल बनाना उपासना ही के द्वारा सम्भव है।

जब दार्शनिक भौतिक जगत् से विराम करने के लिए उपदेश देता है अथवा व्यक्ति सांसारिक दुःखों से परेशान होकर दूसरी राह की खोज में निकलता है अथवा सुखार्थी है-भौतिक सुखों की तुलना में और अधिक अच्छे सुख की चाह रखता है, तब सिवाय आत्म-दर्शन के और कोई दूसरा मार्ग नहीं हो सकता। उसका साधन उपासना ही है।

शब्द-ज्ञान होने पर, उससे केवल सन्तोष न पाकर जिज्ञासा मे लगा प्राणी सुख की खोज की ओर जब बढ़ता है तो उसके लिए आत्म-नदी-प्रवाह में स्नान के सिवाय और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। योग-भाष्य में लिखा है-केवल दो ही मार्ग हैं-एक आत्म-कल्याण का और एक आत्म-विनाश का, शब्द भी बड़े सुन्दर और स्पष्ट हैं-

चित्तनाम नदी उभयथा वाहिनी,
वहति कल्याणयं वहति पापाय च।

आत्म-स्रोत की प्राप्ति के लिए उपासना एक साधन है। उपासना से चिरकाल से लगी हुई हृदय की ग्रन्थियां विशृंखलित हो जाती हैं और अज्ञान का पर्दा छिन्न- भिन्न हो जाता है। इस अर्थ को बड़े सुन्दर शब्दों में गीता तथा उपनिषदों मे कहा है-

भिद्यते हृदय-ग्रन्थि:, छिद्यन्ते सर्वसंशया: ।

आज उपासना का रूप विकृत हो गया है। जिस प्रकार आम व्यक्ति भौतिक जगत् का उपासक हो गया, उसी प्रकार धार्मिक व्यक्ति भी असली आत्म-तत्व से दूर रहकर, मात्र बाह्य आडम्बर में लिप्त रह गया। इसलिए वह आत्म-तत्व के निकट नहीं पहुंच पाता। यही कारण है कि आज दार्शनिक की वाणी में और उसके चरित्र में और उसके जीवन में शाश्वत सत्य की आभा नहीं है। जीवन में आनन्द का स्रोत नहीं है और आत्म-शक्ति का प्रकाश भी नहीं है। इसी कारण विश्व की अध्यात्म-उन्नति नितान्त अवरूद्ध नजर जा रही है। जहॉ हम भौतिक उपासकों को कोसते हैं, वहॉ हम आत्मनिरीक्षण करके देखें तो पाएंगे कि आत्म-जगत् के अत्यन्त बाह्य आवरण में हम अपने आपको इतना लिप्त बना चुके हैं कि न हम भूत का आनन्द ले सके और न आत्मा के आनन्द के पास हमारी गति है। इसलिए हम त्रिशंकु की तरह बीच में लटकते ही रह गए। अत: जरूरी है कि हम उपासना के सही अर्थ को समझें, और बाह्य आडम्बर-जिसमे विभिन्न प्रकार की पूजाएं, विभिन्न प्रकार की चर्चाएं और विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन व आचार सम्मिलित हैं, से अपने आपको कुछ आगे पहुंचाने की चेष्टा करें तथा आत्मा की शाश्वत ज्योति के पास पहुंचने में जीवन को लगाएं। ताकि *जीवन में आनन्द का स्रोत बहे, अज्ञान निवृत्त हो जाए और संशय दूर हो जाएं।*

इस प्रकार हम अपने तथा समाज और राष्ट्र के नए जीवन का निर्माण कर सकें और परिणाम-स्वरूप शाश्वत सत्य की ज्योति में विहार करते हुए जीवन के परम लक्ष्य का मार्ग प्राणी मात्र के लिए सुलभ बना सकें। इसी में जीवन की सार्थकता है, इसी में शास्त्र की उपादेयता है, इसी के लिए सन्तों का आदेश है, इसी के लिए ऋषियों की वाणी है और यही चिरकाल से दु:खी मानव के लिए एक मात्र सहारा है।

स्वामी श्री केशवानन्द जी अभिनन्दन ग्रन्थ के
संस्मरण खण्ड से पृष्ठ ४६-४७

□

डॉ. छगनलाल शास्त्री द्वारा संपादित एवं कलकत्ता से प्रकाशित अणुव्रत पाक्षिक 1-101959 से प्रकाशित।

उपासना : आत्म-दर्शन

श्री गौरीशंकर आचार्य

उपासना का तात्पर्य आत्म-दर्शन से है। इसके साथ-साथ या आगे पीछे, आत्मा के इधर-उधर लगे हुए आनात्म-पदार्थों का क्षय या दूरीकरण आत्म-दर्शन की प्रक्रिया का प्रधान अंग है। इसलिए उपासना से दो फलितार्थ मिलते हैं-एक अभीष्ट की प्राप्ति और दूसरा अनिष्टकारी तत्वों से छुटकारा। शास्त्र का एक वाक्य इस प्रकार है-क्षीयन्ते चास्य कर्माणि, तस्मिन दृष्टे परावरे।

इसकी अत्यन्त आवश्यकता बताते हुए एक दूसरा वाक्य भी है-

तमेव दृष्ट्वा अतिमृत्युमेति, नान्यः

पन्था विद्यते अयनाय।

इस प्रकार आत्म-दर्शन प्राप्त करना, अनात्म-वस्तु के छुटकारा पाना और जीवन को सफल बनाना उपासना ही के द्वारा सम्भव है।

जब दार्शनिक भौतिक जगत् से विराम करने के लिए उपदेश देता है अथवा व्यक्ति सांसारिक दुःखों से परेशान होकर दूसरी राह की खोज में निकलता है अथवा सुखार्थी है-भौतिक सुखों की तुलना में और अधिक अच्छे सुख की चाह रखता है, तब सिवाय आत्म-दर्शन के और कोई दूसरा मार्ग नहीं हो सकता। उसका साधन उपासना ही है।

शब्द-ज्ञान होने पर, उससे केवल सन्तोष न पाकर जिज्ञासा में लगा प्राणी सुख की खोज की ओर जब बढता है तो उसके लिए आत्म-नदी-प्रवाह में स्नान के सिवाय और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। योग-भाष्य में लिखा है-केवल दो ही मार्ग हैं-एक आत्म-कल्याण का और एक आत्म-विनाश का, शब्द भी बडे सुन्दर और स्पष्ट हैं-

चित्तनाम नदी उभयथा वाहिनी,
वहति कल्याणयं वहति पापाय च।

आत्म-स्रोत की प्राप्ति के लिए उपासना एक साधन है। उपासना से चिरकाल से लगी हुई हृदय की ग्रन्थियां विश्रृंखलित हो जाती हैं और अज्ञान का पर्दा छिन्न- भिन्न हो जाता है। इस अर्थ को बडे सुन्दर शब्दो मे गीता तथा उपनिषदों में कहा है-

भिद्यते हृदय-ग्रन्थि:, छिद्यन्ते सर्वसंशया: ।

आज उपासना का रूप विकृत हो गया है। जिस प्रकार आम व्यक्ति भौतिक जगत् का उपासक हो गया, उसी प्रकार धार्मिक व्यक्ति भी असली आत्म-तत्व से दूर रहकर, मात्र बाह्य आडम्बर में लिप्त रह गया। इसलिए वह आत्म-तत्व के निकट नहीं पहुंच पाता। यही कारण है कि आज दार्शनिक की वाणी में और उसके चरित्र में और उसके जीवन में शाश्वत सत्य की आभा नहीं है। जीवन में आनन्द का स्रोत नहीं है और आत्म-शक्ति का प्रकाश भी नहीं है। इसी कारण विश्व की अध्यात्म-उन्नति नितान्त अवरूद्ध नजर आ रही है। जहाँ हम भौतिक उपासकों को कोसते हैं, वहाँ हम आत्मनिरीक्षण करके देखें तो पाएंगे कि आत्म-जगत् के अत्यन्त बाह्य आवरण में हम अपने आपको इतना लिप्त बना चुके हैं कि न हम भूत का आनन्द ले सके और न आत्मा के आनन्द के पास हमारी गति है। इसलिए हम त्रिशंकु की तरह बीच में लटकते ही रह गए। अत: जरूरी है कि हम उपासना के सही अर्थ को समझें, और बाह्य आडम्बर-जिसमें विभिन्न प्रकार की पूजाएं, विभिन्न प्रकार की चर्चाएं और विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन व आचार सम्मिलित हैं, से अपने आपको कुछ आगे पहुंचाने की चेष्टा करें तथा आत्मा की शाश्वत ज्योति के पास पहुंचने में जीवन को लगाएं। ताकि जीवन में आनन्द का स्रोत बहे, अज्ञान निवृत्त हो जाए और संशय दूर हो जाएं।

इस प्रकार हम अपने तथा समाज और राष्ट्र के नए जीवन का निर्माण कर सकें और परिणाम-स्वरूप शाश्वत सत्य की ज्योति में विहार करते हुए जीवन के परम लक्ष्य का मार्ग प्राणी मात्र के लिए सुलभ बना सकें। इसी में जीवन की सार्थकता है, इसी में शास्त्र की उपादेयता है, इसी के लिए सन्तों का आदेश है, इसी के लिए ऋषियों की वाणी है और यही चिरकाल से दु:खी मानव के लिए एक मात्र सहारा है।

स्वामी श्री केशवानन्द जी अभिनन्दन ग्रन्थ के
संस्मरण खण्ड से पृष्ठ ४६-४७

□

प्रधान सम्पादक : पं. बनारसीदास चतुर्वेदी

शिक्षा-शास्त्रियों की दृष्टि में:

महाराज मेरी दृष्टि में

श्री गौरीशंकर आचार्य

मंत्री स्वामी श्री केशवानन्द ग्रन्थ समिति

आदरणीय स्वामी केशवानन्द जी महाराज से मिलने का मुझे कई बार अवसर मिला है। महाराज द्वारा किए हुए कार्यो को पास में जाकर देखने का भी मुझे सौभाग्य मिला है। संगरिया ग्रामोत्थान विद्यापीठ और अबोहर के साहित्य सदन में तो कई दिन तक रह कर वहां के कार्यों का परिचय प्राप्त किया है।

महाराज एक सीधे सादे सौम्य प्रकृति के साधु पुरूष हैं। शरीर सुदृढ और लम्बा चौडा है। आपकी आकृति भव्य और चेहरा ओजस्वी है। चौडी छाती और लम्बे हाथों वाला यह व्यक्ति अपने प्रभाव की छाप प्रथम दर्शन पर ही डाल देता है।

बातचीत करने के बाद मालूम पडता है कि इस महापुरूष में अदम्य उत्साह और कार्य करने की महान् शक्ति भरी हुई है। विषय की गम्भीर नुक्ताचीनी की अपेक्षा वस्तु का व्यावहारिक दृष्टिकोण आपको विशेष पसन्द है। कुछ कर दिखाने की प्रबल इच्छा रखने वालों का महाराज हमेशा स्वागत करते हैं।

रचनात्मक कार्य ही आपको विशेष पसन्द हैं। लडाई झगडा और पार्टीबाजी से आप कोसो दूर रहने का प्रयत्न करते हैं। व्यक्तिगत ईर्ष्या, दूसरों में दोषदर्शन और किसी का बुरा करना आपने कभी भी पसन्द नहीं किया। निरन्तर सच्चे मन से अपने आदर्श की ओर प्रगति करते रहना ही आपके जीवन का ध्येय रहा है। कर्मयोग द्वारा ही ईश्वर प्राप्ति पर आपको विश्वास है। साधुओं को भी आप समय समय पर यही उपदेश देते रहते हैं कि ज्ञान और भक्तिपूर्वक कर्म करना अर्थात् प्राणीमात्र की सच्चे दिल और दिमाग से सेवा करना ही ईश्वर प्राप्ति का सच्चा मार्ग है। इसी ओर आपने बहुत से संसार त्यागी व्यक्तियों को प्रेरित किया।

विद्यार्थियों में उत्साह की भावना भरना और उनको त्यागपूर्वक विद्या अध्ययन की ओर लगाना आपने अपने प्रधान कर्तव्यों में से एक बना रखा है।

पुस्तकालयों और संग्रहालयों से आपका विशेष प्रेम है। जहां कहीं भी अच्छी पुस्तक और पुरानी सामग्री, शिलालेख व मूर्ति मिली आपने उसे जैसे तैसे कीमत देकर खरीदना और उपयोगी स्थान पर उसे सजा कर रखना अपना जीवन ध्येय बना रखा है। इसी कारण से आज संगरिया और अबोहर का पुस्तकालय तथा संग्रहालय जनता के लिए दर्शनीय स्थान बने हुए हैं। वहां दर्शक जाकर

एक नई प्रेरणा, एक नया ज्ञान और एक नया अनुभव लेकर आता है। मेरे विचार से ये दोनों स्थान आज विद्या तीर्थ बन गए हैं। विशेषकर किसानों, मजदूरों, देहातियों और महिलाओं के क्षेत्र में आपको कार्य करने की विशेष रूचि है।

शहरी जीवन की तडक-भडक आपको बिल्कुल पसन्द नहीं है। शहरी व्यक्तियों को अपने विचार और क्रिया शुद्ध रखने का उपदेश आप हमेशा देते रहते हैं।

आपका भोजन सादा और पवित्र रहता है। आपके वस्त्र शुद्ध खादी के बने हुए और भगवे रंग के होते हैं। हाथ में एक डण्डा और पानी के लिए एक कमण्डल या लोटा हमेशा आपके पास मिलेगा। एक कम्बल और आवश्यक सामान अपने कन्धों पर ही रख कर दूर-दूर तक आप पैदल ही देहातों का दौरा करते रहते हैं।

मरूभूमि के निवासियों की आपने जो सेवा की है उसके लिए इधर की जनता हमेशा आपकी आभारी रहेगी।

हिन्दी प्रचार और आयुर्वेद की सेवा में काफी ध्यान महाराज देते रहे हैं। हरिजनों को अपनाने में आपने कोई कसर बाकी नहीं छोडी। इनकी कृपा से ही हरिजन भाई आज शिक्षित होकर देश की सेवा में लगे हुए हैं।

मेरी भगवान से प्रार्थना है कि वह महाराज को चिरायु बनावें साथ ही देशवासियों से भी नम्र निवेदन है कि वे महाराज को अपना पूरा सहयोग ईमानदारी के साथ देते रहें ताकि इस देश के नव निर्माण में वे हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते रहे।

□

पं. श्री गौरीशंकरजी आचार्य

एम.ए. श्रीगंगानगर

श्रीगंगानगर जिले के प्रमुख कस्बे भादरा, के गुर्जर गौड ब्राह्मण वंश भूषण पं.जगनरामजी के घर राजस्थान के सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री गौरीशंकरजी आचार्य का जन्म हुआ। आपकी शिक्षा दीक्षा उत्तर भारत के प्रमुख आर्यशिक्षा केन्द्र गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) व हिन्दू विश्वविद्यालय काशी में हुई। गुरूकुल से आपने संस्कृत वाङ्मय के साथ-साथ न्याय, सांख्य एवं वेदान्त आदि दर्शन शास्त्रो का सांगोपांग अध्ययन किया है, आप सांख्य तीर्थ, वेदान्ताचार्य एवं साहित्य-शास्त्री के अतिरिक्त आंग्ल भाषा में एम.ए हैं।

सरदारशहर के गांधी विद्यामंदिर, बीकानेर के हिन्दी विश्व भारती एवं डाबडी की महिला विद्यापीठ प्रभृति प्रसिद्ध शिक्षण संस्थाओं के आप संस्थापक है।

बीकानेर राज्य के लोकप्रिय मंत्रिमंडल में आप शिक्षा मंत्री थे तथा राजस्थान विधानसभा के सदस्य भी रह चुके हैं।

आप संस्कृत व हिन्दी के प्रखर वक्ता हैं आप के प्रयत्न से काशी की संस्कृत परीक्षाओं का नवीनीकरण हुआ था। आपको देश पूज्य महामना मदनमोहन मालवीयजी के निजि सचिव रहने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस समय आप हिन्दी विश्व भारती बीकानेर के कुलपति, गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रधानमंत्री एवं अ.भा. गुर्जरगौड ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष पद से सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक सेवाओं से देश को लाभ पहुंचा रहे हैं।

□

'ग' कार चतुष्टय

गाय, गीता, गांधी विद्या मंदिर और आचार्य श्री गौरीशंकर

सौर चिन्तक परमसौर-विद्या ब्र.ना. कौशिक
भू.पू. प्रिन्सीपल-सेठ गिरधारीलाल मीमानी कॉलेज

गोपाष्टमी, गांधी विद्या मंदिर सरदार शहर, गौशाला के प्रांगण में नगर के प्रतिष्ठित सज्जन, छात्राध्यापक प्राध्यापक प्राचार्य-बोला, इकहरी यष्टि के धवल वस्त्रधारी चेहरे से झलकता अदम्य संयम श्रेयस वाणी कौन है यह-

ओजस्वी वाणी में इतनी सौम्यता कि संस्कार भी स्वयं को सुसंस्कारित करने लगें। सुनने वालों का यह आलम कि सुन तो बाद में भी लेंगे, अप्रतिम आभा फिर कब देखने को मिलेगी। तन मन और वाणी तीनों ही सधे हुए, सत्परामर्श में उठे हाथ-विचारों का अजस्र प्रवाह-बेजोड़ परिक्रमा जिधर दृष्टि दौड़ाए लोग उधर देखने लगें।

स्वर उभरता है-ऋषि अथर्वा का-

आ गावो अग्मन्न् उत भद्रम् अक्रन्त्।
सीदन्तु गो-ष्ठे रणयन्त्व अस्मे।
प्र+जा-वती: पुरु रूपा इह स्युर।
इन्द्राय पूर्वीर् उषसो दुहाना:।। (अथर्व ४-२१-१)

अर्थात्

जिस घर में गायें आती जाती हैं,
भद्र कहाता वही घर वही शुभ श्रेयस है,
गोष्ठ में हमारे गाय नित वास करें।
उनका दर्शन, रम्भन, दोहन-घर हित सदा रहे।

...............और समय ठहर गया एक पल को इस वक्ता के साथ। उषाकाल में गाय का दोहन सौभाग्य प्रदाता है, ऐसा घर ऐश्वर्य युक्त रहेगा। श्रीयुक्त बनना है, गायों का संरक्षण करो। रम्भा श्रवण-सुना है-सुनिए, गायें रम्भा रही थी, यह सुनना पूरी प्रार्थना है। लाखी गाय की कमर पर हाथ फेरा गर्म हाथ को सूंघा दमा गायब। पन्चगव्य का सेवन और मोक्ष-इनके लिए गोचर भूमि हमारी पहली प्राथमिकता है। उत्तम खल और ग्वार देने का अर्थ है, प्रकारान्तर से अपना ही

सम्पोषण। गौ दुग्ध से स्वत: जीवन में संयम उतरता है। दूध, साक्षात् अमृत है। गाय का रम्भाना-भद्रवाच: गृहंभद्रं कृणुथ समय स्वयं बात सुने तो आचार्य गौरीशंकर जी जैसा वक्ता कहाँ रूके। पूरा वातावरण वाणी जल से आप्लावित था। सार रहा - "गावो विश्वस्य मातर:'' (गाय ही विश्व की माता है)। आज दशकों का अन्तराल-कटती पिटती तडफती गायें, सोच बदला, गाय नकारा पशु हो गया। इन्जैक्शन दो दूध निकालो, आदमी की भूख ने उसे भी नकारा कर दिया। देश की बीस प्रतिशत आबादी भूखी सोती है-कैसे? बढ़ते नशे अपराध तृष्णा रोग स्मृति में एक सिरा साफ हुआ।

"अच्छा तुम कुछ मत करो-गौशाला में जहाँ गायें हैं, वहाँ नंगे पैर दस मिनट घूम लो, स्वास्थ्य की गारंटी मैं लेता हूँ। ऋषि परम्परा और जिस श्रद्धा से पन्चगव्य का सेवन होता होगा? कृमि गायों के रम्भानें से नष्ट हो जाएं। गौधूलि (हंसी) देखी है, यह धूलि गौ की देह के धूलि स्थान से निस्सृत है, पूरे वातावरण को स्वच्छ कर देती है। गाय की महिमा बताना तैंतीस कोटि देवों के वश की बात भी नहीं है। इनसे लो-इन्हें भी दो-स्वच्छ जल, घास, खल सब स्वच्छ हो (एक पॉज) गुणी से गुण मिलेंगे-जानते हो गुण का विस्तार-गुणा किए जाओ गुण लिए जाओ............''। '... ....गौमाता की जय' ध्यान टूटा।

गांधी विद्या मंदिर (सरदार शहर) का तब जन्म ही हुआ था, पांच छ: वर्ष का बचपन-श्रेष्ठि कन्हैया लाल दूगड से मंत्रणा हो रही है। शिक्षा से शिक्षा को बढाओ शिक्षक तैयार हो, विश्वविद्यालय एवं विभागीय नियमों के अनुसार जिससे उनके समक्ष आजीविका और सदाचार का जीवन सम्मान से भरा हो सुरक्षित हो। शिक्षा विभाग की ओर से बेसिक एस.टी.सी. (बिसिक सीनियर टीचर्स सर्टिफिकेट) और शिक्षा स्नातक (बी.एड) राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्ध-यहाँ कहाँ ठहरना है-ग्राम्य विश्वविद्यालय की बात और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा शिलान्यास आज की ड्रीम्ड यूनिवर्सिटी, अद्भुत संयोग है, स्वप्न को साकार करने वाले संस्थापक श्री कन्हैया लाल दूगड, आज संत हैं, श्री रामशरण दास महाराज और उनके सुपुत्र श्री मिलापचंद दूगड कुलपति हैं, उसी भवन में बैठते हैं, जिसकी नींव का पत्थर महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने रखा था। वर्तमान का शिक्षा महाविद्यालय- जहाँ डॉ. राजेन्द्र बाबू ने एक विद्यार्थी की भांति चलकर उसे पुष्पित और पल्लवित होने का आर्शीवाद दिया था।

बेसिक एसटीसी स्कूल-कृषि आधारित आत्म निर्भरता परक शिक्षण-बदलते परिवेश में कम्प्यूटरीकृत हो गया। एक दृष्टि जो आचार्य गौरीशंकर ने दी- यहां से पीएचडी होगी भव्य पुस्तकालय होगा, शिक्षा की ज्योति पूरे देश में फैलेगी- यही प्रतिष्ठा चिन्ह है, दो हंसों के मध्य उदय होता सूर्य और वेद वाक्य "तमसो मा ज्योतिगर्मय'' ।

आचार्य प्रवर डॉ. कौल, डॉ. सिंघल और एक समर्पित व्यक्तित्व प्रो. बजरंग लाल भोजक

जिसकी विकास यात्रा दूगड़ परिवार द्वारा दिए गए भौतिक कलेवर में प्राणवत हो आरम्भ हुई, अध्यापक, प्रवक्ता, प्राध्यापक, प्राचार्य डीन राजस्थान विश्वविद्यालय (शिक्षा संकाय) एक सधा तथा समर्पित आध्यात्म और शिक्षा का बसन्त- निदेशन और परामर्श दे तो मातृभाषा राजस्थानी में और पढ़ाए लिखाए तो धारा प्रवाह अंग्रेजी में। एक बार इस तथ्य का रहस्यपूछा उत्तर आया-भाईया, बाजरी खांवा जिकैगी बैंगा ढोल बैंयाइ बजाणा पड़ै।

यह पूछने पर कि सरदार शहर में तो ऐसे व्यक्तित्व हैं नहीं आप पर यह किसकी छाप पड़ी (टाल दी बात) दो एक बार पूछा तो बोले- बैठ।

आचार्य जी ऊँ मिल्यो के, नहीं तो मिली, झूंपड़ी कै बारै बैठ्या मिल ज्यासी, कीं पूछण गी जरूरत कोनी, जै नहीं हुयै तो माताजी मिलसी। आप मतैइ बतला लेसी, गीता पर सवाल कर लेई पाछै क्लासां लागण लाग ज्यासी, दो चार साथ हुवै तो और ठीक है। गीता पढणिया मिले, आचार्य जी गीता ने गुणणियां हैं। गीता गे दूसरे अध्याय गो सत्तरवों श्लोक जे अर्थ समझणों हुवै तो आचार्य जी ने देख लेई -

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।। , (गी २.७०)

अर्थात्

समन्दर में सगा ज्यावै ज्यूं नदियां धणी
के छलकै के उलथै? कर बिचलित हुवै?
आई, इंयूंइ गंभीर धीर संयम रा धणी हुवै
बां मैं बिकार अंर भोगरी लाधै कोनी अणी।।

आचार्य गौरीशंकर धणाई जवान है,बात कर्यां यूं लागै कोई ऋषि हुवै-"ऋषि'' की नै बताई ना लोग हांस सी-कारण सगला दुनियां नै आप जिस्या इ समझै! (पाज) माताजी रो पक्स आंस्यूं भिन्न है-सिफारस करवाणी हुवै तो आचार्य जी कहसी, आपरो पक्स प्रेम स्यूं, बता देस्यां जे आगलै री मजबूरी नहीं हुई तो काम हो जाएगा और जे माताजी स्यूं बात हुवै तो बैठकर कै स्यूं कहसी, " औ काम है करणो है, कद तोई बेरो लाग सी? जे नहीं हुए तो हूँ थारै स्यूं मोरे स्यूं बात करूँ?

आचार्य जी ने देख्यां जी ठरै-भाव अर भासा पर इसी पकड .... (अब चाल) कॉलेज री टाइम हो रह्यो है।''

और एक रोज मैं, प्रो.जी.आर. शर्मा, हाथीराम मिश्र, धरणीधर शर्मा प्रातः पहुँच गए, (हम सभी बीएड के छात्र थे) दूर से देखकर हंसे कहीं परीक्षा लेने तो नहीं आ रहे हो, मन्तव्य समझ

कर बैठाया, मिष्ठान मंगवाया, खाया और खिलाया। अब मीठी बात होगी, गीता-गीता क्या है, क्या करोगे जानकर बस एक बात समझ लो-

गीता तुम्हें तुम्हारे अन्दर क्या है, मतलव समझ गए तुम्हें ही तुम्हें बताती है। यह हमारी कमजोरी है, शिक्षा की दुर्बलता है, सब दूसरों को जानने में लगे हैं। हमारे बारे में कोई दूसरा हमें बताता है। व्यवस्था ही ऐसी है। डिग्री मिलेगी पढाने के पात्र हो जाओगे। हमें दादी ने शिष्टाचार की शिक्षा दी मॉ ने परिवार और समाज का सम्मान करना सिखाया-बताओ। कौनसी डिग्री थी। पशु पक्षी अपने बच्चों का पालन पोषण, रक्षण, संरक्षण और मुक्त कर देते हैं, विचरण को। गीता में एक बडा अच्छा श्लोक है, मोक्ष सन्यास योग अठारवें अध्याय का, वह तुम्हें तुम्हारी असलियत बताता है।

ईश्वरः सर्व भूतानां हृदेशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। (गी १८-६१)

समस्त प्राणियों के हृदय में वास करता ईश्वर ही माया कर्म के सहारे सबको भटकाता है। -अचानक- कॉलेज के समय के बाद गीता जैसे स्वाध्याय ग्रन्थों पर चर्चा के लिए एक आधा घण्टा रूक जाया करो, अच्छे-अच्छे विद्वानों को बुलावो चर्चा करो।

यह उस समय की बात है जब आचार्य जी की आयु पैंतीस चालीस के मध्य रही होगी। विचारों की इतनी प्रांजलता पूर्व और वर्तमान संस्कारों की शुभ्र देन लगी।

आगे कहने लगे दसवां और ग्यारहवां अध्याय तबियत से पढो, बिना अर्थ जाने, अरे प्रभु स्वयं अपना परिचय दे रहे हों। खुद ही स्वरूप दर्शन करायें इससे बढिया बात क्या हो सकती है? दुनिया भगवान की प्रशंसा करे, या ईश्वर के बारे में बताए वह तो भाव बुद्धि की सीमा में ही होगी, कहाँ हमारी बुद्धि कहॉ भगवान? और जब स्वयं भगवान ही अपना परिचय दे रहे हों, वहॉ क्या शेष रहेगा, श्रवण से चाक्षुष चेतना तक।

खेजडी अपने अनुरूप धूप छांव दे रही थी। कहने लगे बडा पवित्र वृक्ष है।

पन्चतत्वों में उनके भाव प्रवाह को सबने अनुभव किया गिलास पानी में एक चम्मच शहद डालकर पिया। उठे बोले अब कुछ पत्रों के उत्तर लिखने हैं, काफी इकठ्ठे हो गए हैं। कुछ गौशाएं स्थापित करनी हैं। सरकार से भी गोचर भूमि की बात करनी है। सुखाडिया (मुख्यमंत्री) से मिलने पर स्थिति साफ होगी। घर पर सब कुशल मंगल है। प्रार्थना सभा में जाया करो।

विश्व दानीं सुमनसः स्याम। ऋग् की वाणी में -अच्छे मन वाला- विश्व को कुछ देने वाला एक- आर्यन व्यक्तित्व सीधी-सधी देह, मन के संकल्प को दर्शाती खड़ी नासिका तप और श्रम में रसाबसा इकहरा शरीर, किसी सुदूर साध की संसिद्धि मे आत्मधृत सम्प्रेरक उदात्त चेतना लिए दृढवृत्ति कभी प्रचार और पहचान के चक्कर में नहीं है।

बड़े पुत्र भीम ने पीएचडी की "अच्छा है कुछ करते रहना चाहिए। डॉ. भीम की शादी और अनीता सी बहू पाकर एक चटक मुस्कान। सरसता सरलता, मैंने भीम से कहा था, आचार्य जी को किसी माध्यम से स्मरण करने की आवश्यकता है, इनकी बातें ही इनकी उपस्थिति है, एक विचार जागा।

" अविस्मरणीय '' या " वि-स्मरणम्''

नब्बे वर्ष दस्तक दें और देह लोक में विश्वविद्यालय खोलने की बात घूमें, उन्हें देखकर यह सोचना भी दुष्कर है कि वे संन्यासी हैं, वानप्रस्थी हैं या गृहस्थी, कल जब मिला तो बोले - "योग मंदिर से आ रहा हूँ'' 'अकेले' (पाज)-"पूरा आकाश मेरे साथ चलता है, सडकें बाजार शोर हवा सब साथ होता है'' (अचानक) महात्मा शरणानन्द जी का स्मरण करते हुए पूछते हैं-सुना है-शरणानन्द महाराज को- वे कहते हैं, साधक मन स्थिर और शान्त हो-निर्मल देह बुद्धि और क्या चाहिए, यह भक्ति के लक्षण हैं। मेरे पवित्र गीता का भक्ति योग बाहरवां अध्याय है:-

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभ परित्यागी भक्तिमान्य: स मे प्रिय:।। (गी १२-१७)

अनपेक्ष: शुचिर्दक्ष:................ (गी १२-१६)
हर्षामर्ष भयोद्वेग: मुक्त:........ .... (गी १२-१५)
सन्तुष्ट: यतात्मा...... .... गी १२-१४
सर्व भूतानामं अद्वेष्टा............... ..... गी १२-१३

जिन श्लोकों को समझना बुद्धि से परे है। मन शंकामय हो वहाँ आचार्य गौरी शंकर को देखने मात्र से अर्थ स्वाभाविकता जाग जाती है। अद्भुत है-'ग' चतुष्टय का साम्य-'बात सारी मन की है-अ-मन हो जाओ अमन हो जाएगा सु+मन हो जाओ।

प्राणाचार्य वैद्य लेखराम शर्मा ने कहा-वर्तमान में आचार्य जैसे सत्व प्रधान राजनीति में जी नहीं सकते। वही हुआ, स्वयं आचार्य जी ने बताया-'ये उठा पटक मेरे बूते से बाहर थी, शिक्षा और सेवा का संकल्प लिया है, सेवा में गौ सेवा और स्वाध्याय में गीता, कमाल हो जाता है।''

शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द ने कहा था, हम चाहते हैं आचार्य गौरीशंकर यहां सेवा दें, अच्छी सोचवाला आदमी है। कोई लाग लपेट नहीं, कुछ समय आचार्य जी प्रबन्ध समिति में रहे। विराम आचार्य जी के लिए नहीं गुरूकुल की ओर चल पडे जब जहां अवसर मिला प्रवचनों से गगन को नतमस्तक किया है। हमारी शिक्षा पद्धति ने अनुभव को नकारा है-आदेश दिया है।

मैने अनुभव किया है-अनुभव के सदुपयोग के मामले में हमारा अहं आगे आ जाता है। अनुभव मानव जाति की धरोहर है। आचार्य गौरीशंकर का चेतन अनुभव जिन मूल्यों पर रहा-'सदाचरण' सात्विक जीवन, युक्ताहार राजस्थान में कभी सतत् शिक्षा, प्रौढ शिक्षा, अनौपचारिका

ने शिक्षा के संदर्भों को सबल बनाने के लिए ज्ञान और आचरण के गौरीशंकर की शरण में नहीं आए। अनुभव को हमने स्वीकारना नहीं सीखा। सत्ता में आने वाला एक क्षण में मुख्य अतिथि हो जाता है। जिसने कृपा की है और कुर्सी से हटते ही दूसरा कल सम्मानित अतिथि हो जाता है। जिस तत्ववेत्ता ने शिक्षा में श्वास लिए, एक पंक्ति तक आचार्य गौरीशंकर के सद्प्रयत्नों को मिल नहीं सकी। चाहे वह चूरू (राज.) या श्री गंगानगर (राज.) जनपद में साक्षरों के लिए पहली पोथी हो। इस अनुभव को नकारने ने-एक आदेशित व्यवस्था दी "जाओ सबको पढाओ'' ऐसे ?

मानवीय जीवन मूल्यों को आचार्य जानते हैं-अत: जीते हैं। शैक्षिक जीवन मूल्यों की कसौटी उनका पारस शरीर है। शिक्षा विभाग भाग करता है-विभा नहीं जानता। साक्षरता के परिदृश्य में आचार्य स्वयं गौरीशंकर (हिमालय की शीर्ष चोटी) हैं।

इस स्थित प्रज्ञ का जीवन कहता है,
चले हमारे साथ जो कांटो से पैर घिराए।।

गौरीशंकर आचार्य

भूतपूर्व मंत्री

चौधरी कुम्भाराम आर्य अपने समय के महान् नेता थे। दो उदाहरण मुझे याद आते हैं। एक बार जब वे हनुमानगढ़ में ठहरे हुए थे तो मैं उनसे मिलने गया। तब उन्होंने मुझसे पूछा। आचार्यजी आजकल क्या कर रहे हो? मैंने कहा, कुछ नहीं। तब उन्होंने कहा कि मैं हनुमानगढ़ से जीतकर विधानसभा का सदस्य बना हूँ। यहाँ डिग्री कॉलेज खुलवाने मे लग जावो। तब तीन साल लगा पर यहॉ डिग्री कॉलेज उनके कहने से खुल गया।

दूसरा उदाहरण गॉधी विद्या मंदिर, सरदारशहर के पास जो तीन मील लम्बी व दो मील चौड़ी भूमि है वह रेवेन्यू मिनिस्टर कुम्भाराम आर्य की सदिच्छा का ही फल है। महान् व्यक्ति इशारों से ही बडे-बडे काम करा देते हैं। प्रभु उनकी आत्मा को शांति मिले।

किसानों के मसीहा, चौधरी कुम्भाराम आचार्य स्मृति ग्रन्थ के पृष्ठ-२८९ से साभार-संस्मरण एवं अभिमत

वे कौन है?

श्री पं. जगनराम जी वकील

आज हमें अपने प्रिय पाठकों की सेवा में महाविद्यालय के परम हितैषी आदर्श मूर्ति श्री पं. जगनराम जी शर्मा वकील की जीवनी रखते हुए परम हर्ष हो रहा है। आप का जीवन प्रत्येक मनुष्य

के लिए आप केवल एक नहीं हैं अपितु आपका जीवन लोकोपयोगी हो रहा है।

आपका शुक्ला द्वादशी को बीकानेर भादरा गांव (जो जंक्शन हो गया आपके पिता एक नागरिक थे, पार करके अपने पढने प्रबन्ध किया। अपने बलबूते वकालत पास की अर्थात् सन् आपने राज्य की
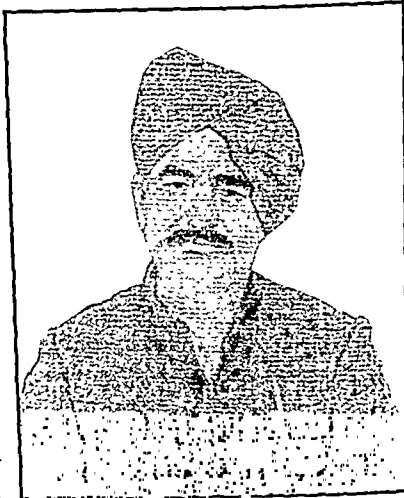
अनुकरणीय है। योग्य वकील ही आप हितकारी हैं, सब प्रकार कार्यों में व्यतीत

जन्म कार्तिक संवत् १९४७ वि. राज्य में स्थित अब तहसील एवं है) में हुआ था। प्रतिष्ठित बाल्यावस्था को आपने स्वयं लिखने का सब और शनैः शनैः पर ही आपने संवत् १९६२ वि. १९०५ ई. में सर्विस प्रारंभ

की। आप अपने सद्व्यवहार और कार्य चातुर्य्य से सबके प्यारे बनते चले गये। यों आप शीघ्र ही चमकने लगे। दो साल तक आप गुमाश्ता रहे। १९०० ई. से लेकर १९१५ तक आप खजानची रहे। बाद १९१९ तक क्लर्की भी की १९२० ई. में पेशकर निजामत और फिर पेशकार रेवन्यू कमिश्नर

नियुक्त हुये। १९२१ ई. में नायब तहसीलदार और १६२४ ई. में तहसीलदार (बीकानेर राज्य) पद पर नियुक्त हुवे। १९२५ ई. में गवर्नमेन्ट से मुलाजमत का पारितोषित लेकर सार्वजनिक कार्यों के करने में वाधा पडने के कारण सर्विस छोड़ दी; और तभी से लेकर आज तक आप स्वतंत्र वकालत कर रहे हैं। आपकी वकालत का दायरा विशेषकर सरदार शहर सुजानगढ़, रतनगढ और बीकानेर है। स्टेट में (राज्य) आपकी गणना प्रसिद्ध वकीलों में है।

जहाँ आप राज्य में प्रतिष्ठित हैं वहाँ आप स्वाध्याय के भी बड़े प्रेमी हैं जब आपको राज्य के कार्यों से कुछ अवकाश प्राप्त हुआ तभी विशेष अध्ययन में संलग्न हो गये। जिस प्रकार आपकी रूचि विद्यानुराग में है, उसी प्रकार आपकी सन्तान भी विद्याध्ययन में अधिक अनुराग रखती है। आपके तीन पुत्र और ५ पुत्रियाँ हैं सभी सुशिक्षित हैं। आपके बड़े पुत्र बी.एस.सी., एल.एल.बी. हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारस से पास कर आजकल हनुमानगढ़ तहसील (बीकानेर राज्य) में जज हैं। विद्या भास्कर श्री पं. गौरीशंकर जी शर्मा शास्त्री वेदान्ताचार्य साँख्य योग तीर्थ एम.ए सुयोग्य स्नातक महाविद्यालय ज्वालापुर आपके दूसरे सुपुत्र हैं। आप अच्छे वक्ता और सुलेखक हैं। और आजकल युक्त प्रान्तीय संस्कृत छात्र संघ के आप सभापति हैं। महाविद्यालय के आप आजीवन सभासद हैं, और महाविद्यालय को आप ५००) एक साल के अतिरिक्त प्रतिवर्ष बहुत सी सहायता करते हैं। महाराजा कॉलेज में आजकल आप प्रोफेसर हैं। तीसरे सुपुत्र विद्याध्ययन में संलग्न हैं। आर्य गुरूकुल गुजराँवाला से इस वर्ष हाई स्कूल पास किया है। इसी प्रकार आपने अपनी कन्याओं को भी शिक्षा दी है। सभी कन्याएँ विदुषी हैं। ४ विवाहित हैं, शेष छोटी कन्या अभी पढ़ रही हैं। अपने बहनोइयों को भी आपने इसी प्रकार पढ़ाया। बड़े बहनोई आपकी कृपा से ही बी.ए एल.एल.बी. हुये हैं और अब वे वकालत कर रहे हैं। शिक्षा के लिये आपने बड़े-बडे दान किये हैं। गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को आपने समय-समय पर पूरी सहायता पहुँचाई है। हजारों रुपये का दान अब भी बराबर देते ही रहते हैं। अन्य भी शिक्षा संस्थाओं, आर्य समाज सनातन धर्म सभा, अनाथालय अजमेर, सेवासमिति और पुस्तकालयों को बराबर देते ही रहते हैं। अभी पिछले वर्ष १० हजार की लागत का अपनी माता जी की यादगार में एक मकान भादरा में बनाया है, जिसकी दूसरी मंजिल में कन्या पाठशाला और नीचे पुस्तकालय तथा औषधालय है। साथ ही एक कूप भी है। औषधालय और पुस्तकालय से प्रतिदिन जनता अधिकाधिक संख्या में लाभ उठाती है। इसी प्रकार सभी सार्वजनिक कामों में हिस्सा बांटते रहते हैं। सरदार शहर में पब्लिक लायब्रेरी, साहित्य समिति और हरिजन पाठशाला के कई वर्षों से आप ही प्रधान हैं। स्वयं सहायता करते और धनी वर्ग से सहायता दिलवाते रहते हैं आप अपनी सम्पत्ति को सदा ही सार्वजनिक हितों में व्यय करते रहते हैं और अपनी सम्पत्ति को बढ़ाते भी इसीलिये हैं कि वह जनता के हित में लगाई जाय भादरा में एक आटा दाल की मिल

है-नई नहर (गंग नहर) के पास आपकी काफी जायदाद है। किसानों के केवल लाभ के लिये आपने किसान बैंक भी खोल रखा है। आर्य ख्यालातों के होते हुये भी आपने केवल किसानों की इच्छा पर पूजापाठ के लिये नहरी इलाकों में तहसील पड़पुर में एक हनुमान जी का मंदिर भी बनवा रखा है। एक आप का निजी वैदिक पुस्तकालय भी है, सैकड़ों मनुष्य उससे लाभ उठाते हैं। आप बराबर राष्ट्रीयता से भी प्रेम रखते हैं। रचनात्मक-कार्यों में विशेष दिलचस्पी रखते हैं। स्वयं तो पूर्णत. खादी पहनते है परिवार में भी अधिकतर खादी का ही प्रयोग होता है। आप जिस प्रकार धर्मात्मा, पुण्यआत्मा और दानी हैं। उसी प्रकार आप अपूर्व स्वावलम्बी भी हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति कुछ नहीं मिली थी, सब कुछ आपने स्वयं ही कमाया। अपना मकान, अपनी शादी सब कुछ अपनी कमाई के आधार पर ही किया है। लाखों रुपये कमाए और लाखों ही लोकोपकारी कार्यों में व्यय कर डाले। कमाया भी खूब और खर्च भी हाथ खोलकर किया और सद्व्यय ही किया। आपको इसका परम संतोष है। अगर आप अपनी पूंजी को इकठ्ठा करने पर तुलते तो आज करोड़पति बन जाते, लेकिन आपका कहना है कि मैं करोड़पति बनकर उतना सुखी और प्रसन्न न होता जितना कि आज सुखी और प्रसन्न हूँ। आपने जिस प्रकार अपने बच्चों के पढ़ने और शादी आदि करने में व्यय किया उसी प्रकार अपने भाईयों आदि के बच्चों की भी शादी आप ही ने कराई है। आपकी सब सफलताओं का कारण ईश्वर भक्ति, ईमानदारी, परिश्रम, अध्यवसाय, सादगी और दान ही है वृद्ध होने पर भी आप यात्रा करने के अधिक प्रेमी हैं। दिन रात सफर से बिल्कुल नहीं घबराते। वकालत का, मिल का, लेन देन का, जमीदारी का तथा लोकोपकार का कार्य बडे परिश्रम से करते हैं। गर्मियों में उत्तराखण्ड, गंगोत्री एवं जमनोत्री भी यात्रा करके लौटे हैं। अभी आप दक्षिण और पूर्व भारत की भी यात्रा करने वाले हैं। ईश्वर ऐसे महानुभावों को चिरायु रखे।

□

गीता पंचदशी

विद्या भास्कर
डॉ. गौरीशंकर आचार्य
एम.ए.,पी.एच.डी.,
साहित्य रत्न

प्रकाशक :
योग संस्थान
बी.-१९, चौमू हाऊस, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर-३०२००१

मोक्ष प्राप्ति के चार मार्ग

हमारे शास्त्रों में मोक्ष प्राप्ति के लिये चार मार्ग बताए गए हैं :-

(१) कर्म योग, (२) ज्ञान योग, (३) ध्यान योग, (४) भक्ति योग

गीता ने इन चारों ही मार्गों का अपूर्व समन्वय कर दिया है। इससे पहिले इतना सुन्दर समन्वय कहीं देखने को नहीं मिला है। यह समन्वय गीता की अपनी स्वयं की विशेषता है। दो श्लोकों में गीताकार ने इस समन्वय को स्पष्ट किया है-

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मनमात्मना।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्म योगेन चापरे।।
अन्ये त्वेवम जानन्तः श्रुत्वाऽन्येभ्य उपासते।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः।। १३/२४.२५

अर्थात् कोई तो आत्मा को अपने में ध्यान से देखते हैं, कोई सांख्य योग द्वारा और कोई कर्मयोग से। पर कई एक जिन्हें ऐसा ज्ञान नहीं है वे दूसरों से सुनकर ही आत्मा की उपासना में लगे रहते हैं। श्रुति के बनाए मार्ग पर चलते हुए ये सभी मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

साधारणतया जो जिस मार्ग का अनुयायी हो गया है, वह उसी को सर्वश्रेष्ठ समझता है और उसी मार्ग के अवलम्बन करने का अन्यों से आग्रह भी करता है। गीता के भाष्य कारों में लोकमान्य तिलक कर्म योग के उपासक हैं। भगवान् शंकराचार्य ज्ञान योग को महत्त्व देते हैं। सन्त ज्ञानेश्वर ध्यान योग पर जोर देते हैं और अन्य बहुत से विद्वान भक्ति योग को सर्वश्रेष्ठ मानकर चलते है। हम तो अपने को समन्वय वादी मानकर चलते हैं क्योंकि भगवान् का सही आशय हमें यही मालूम पडता है पर हम सभी आचार्यों और विद्वानों का हृदय से आदर करते है।

इस विषय में श्री जयदयालजी गोयन्दका के नीचे लिखे विचार मुझे अति सुन्दर लगे हैं। मैं समझता हूँ कि उनके ये विचार दीर्घकालीन साधना, अध्ययन, मनन और विवेक के बाद बने हैं। इन पर विचार पूर्वक आचरण करने में साधक का कल्याण अवश्य हो सकेगा ऐसा मेरा निश्चित मत है।

"ॐ श्री परमात्मने नमः।" शास्त्रों का अवलोकन और महापूरूषों के वचनो का श्रवण करके मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि संसार में श्रीमद्भगवद्गीता के समान कल्याण के लिये कोई भी उपयोगी ग्रन्थ नहीं है। गीता में ज्ञान योग, ध्यान योग, कर्म योग भक्ति योग आदि जितने भी साधन बताए गए हैं, उनमें से कोई भी साधन अपनी श्रद्धा, रूचि और योग्यता के अनुसार करने से मनुष्य का शीघ्र कल्याण हो सकता है।

अतएव उपर्युक्त साधनों का तथा परमात्मा का तत्व रहस्य जानने के लिये महापुरूषों का और

उनके अभाव में उच्चकोटि के साधकों का श्रद्धा प्रेम पूर्वक संग करने की विशेष चेष्टा रखते हुए गीता का अर्थ और भाव सहित मनन करने तथा उसके अनुसार अपना जीवन बनाने के लिए प्राण पर्यन्त प्रयत्न करना चाहिए।''

-जयदयाल गोयन्दका

गीता महिमा-पन्द्रह विचार

१.

"विरागी जिसकी इच्छा करते हैं, सन्त जिसका प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं और पूर्ण ब्रह्मज्ञानी जिसमें "अहमेव ब्रह्मास्मि'' की भावना रखकर रमण करते हैं, भक्त जिसका श्रवण करते हैं, जिसकी त्रिभुवन में सबसे पहिले वन्दना होती है, उसे लोग भगवद्गीता कहते हैं।''

-सन्त ज्ञानेश्वर

२.

"गीता कामधेनु की भांति है, जो सारी इच्छाओं को पूरी करती है। अत: वह माता कहलाती है।'' "जो गीता का भक्त है, उसके लिये निराशा की कोई जगह नहीं। वह हमेशा आनन्द में रहता है।'' "अनासक्ति पूर्वक सब काम करना ही गीता की प्रधान ध्वनि है।''"मैं तो अपनी सारी कठिनाईयों मैं गीता के पास दौड़ता हूँ और अब तक आश्वासन पाता आया हूँ।''

-महात्मा गाँधी

३.

"कर्तव्य क्या है और क्यों करना चाहिए? वह गीता में बताया गया है।''

-लोकमान्य तिलक

४.

"मेरा शरीर माँ के दूध पर जितना पला है उससे कहीं अधिक मेरा हृदय व बुद्धि दोनों गीता के दूध से पोषित हुए हैं।''"जीवन के विकास के लिए आवश्यक प्राय: प्रत्येक विचार गीता में आ गया है। इसलिये अनुभवी पुरूषों ने यथार्थ ही कहा है कि गीता धर्म ज्ञान का एक अमर कोष है।''

-सन्त विनोबा

"श्रीमदभगवद्गीता वास्तव में एक अत्यन्त तेजस्वी और निर्मल हीरा है, जो आत्म विद्या के गूढ और पवित्र तत्वों को स्पष्ट रूप से प्रकाशित करके पुरूष को पूर्ण ज्ञान और शान्ति देने वाला है। .... समस्त संसार के साहित्य में भी गीता के समान बाल बोध ग्रन्थ कोई और दिखाई नहीं देता। ....इस समय यह ग्रन्थ एक पन्चम वेद है और समस्त संसार में अद्वितीय प्रसिद्ध है।''

-श्री नारायण स्वामी (पट्ट शिष्य स्वामी रामतीर्थ)

"गीता सुगीता करने योग्य है, अर्थात् गीता जी को भली प्रकार पढ़कर अर्थ और भाव सहित अन्तः करण में धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं श्री पद्मनाभ विष्णु भगवान् के मुखार विन्द से निकली हुई है।''

-श्री वेद व्यास

'दो ही सिद्धान्त गीता में कहे गये हैं-सांख्य योग और कर्म योग। कर्म योग साधन है और सांख्य योग साध्य अर्थात् कर्म योग के द्वारा प्राणी के अन्तः करण की शुद्धि होती है।''

-श्री करपात्रीजी महाराज

'श्री मदभगवद्गीता हमारे धर्म ग्रन्थों में एक परम उज्ज्वल और जगमगाता ऐसा ज्ञान है कि जिसके प्रकाश में आध्यात्मिक ज्ञान, कर्म-अकर्म बोध, योग एवं संन्यास के सिद्धान्त, शान्ति प्रदायिनी भक्ति और हिन्दू धर्म के गूढ तत्व मनुष्यमात्र को संक्षेप में किन्तु स्पष्ट रीति से दिखाई देते हैं।''

- पण्डित दीन दयालु शर्मा

'गीता एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है। इसमें सम्पूर्ण वेदों का सार-सार संग्रह किया गया है, इसका संस्कृत इतना सुन्दर और सरल है कि थोडा अभ्यास करने से मनुष्य उसको सहज ही समझ सकता है, परन्तु इसका आशय इतना गम्भीर है कि आजीवन निरन्तर अभ्यास करते रहने पर भी इसका अन्त नहीं आता। प्रतिदिन नए नए भाव उत्पन्न होते रहते हैं, इससे यह सदा ही नवीन बना रहता है।''

-गीता प्रेस गोरखपुर

'संसार के थके हुए यात्रियों को विश्राम का स्थल देने के लिये यह गीता श्लोकाक्षर रूपी द्राक्षावल्ली का मण्डप बन गई है।''

-सन्त ज्ञानेश्वर

११

गीता शास्त्रमिदं पुण्यं यः पठे त्प्रयतः प्रमान्।
विष्णोः पदमवा प्रोति भय शोकादि बर्जितः।।

१२

गीताध्ययन शीलस्य प्राणायामपरस्पच।
नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्म कृतानिच।।

१३

मल निर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने।
सकृद्गीताम्भसि स्नानं संसार मल नाशनम्।।

१४

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्र विस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद्विनिसृता।।

१५

भारतामृत सर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनिसृतम्।
गीतागंगोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

गीता की महत्त्वपूर्ण शिक्षाएं

जीवन के लिए गीता के १५ उपदेश

१. आत्मा अमर है, शरीर के नाश होने पर भी यह नष्ट नहीं होती है, इसलिये देह के नष्ट होने पर शोक मत करो। २/२०, २५, ३०

२. अपने मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखो। २/६७, ६८

३. हृदय की दुर्बलता को छोड़कर खड़े हो जावो। २/३

४. संसार में प्रसन्नता के साथ रहो, और अपने में धीरे धीरे ब्रह्मभाव पैदा करो। ५/२४

५. श्रद्धा रखने वाले को ही ज्ञान मिलता है। यदि वह श्रद्धालु और जितेन्द्रिय है तो कहना ही क्या? ज्ञान को प्राप्त प्राणी शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त करता है। ४/३९

६. आत्मा को दुःखी मत करो। न आत्मानम् अवसादयेत्। ६/५

७. आत्मशुद्धि के लिये योग का अभ्यास करो।
युंजात् योगम् आत्म विशुद्धये।। ६/१२

८. यज्ञ, दान और तप का आचरण करते रहो। १८/५

९. हर समय ईश्वर का स्मरण करते हुए अपने जीवन संग्राम का संचालन करो। तस्मात् सर्वेषु कालेषु माम् अनुस्मर युध्य च। ८/७

१०. दैवी सम्पत्ति से मोक्ष मिलेगा और आसुरी सम्पत्ति से संसार में बन्धन मजबूत होगा। दैवी सम्पद् विमोक्षाय निबन्धाय आसुरी मता। १६/५

११. अहंकार, काम, क्रोध और परिग्रह का त्याग करो। १८/५३

१२. ईश्वर का साक्षात्कार करो। १८/५५

१३. ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में रहता है और वहीं से अपनी माया के द्वारा सब भूतों का संचालन करता है। १८/६१

१४. ईश्वर की शरण में जाओ और उनमें ही अपना मन लगाओ। १८/६२, ६५, ६६

१५. ध्यान के द्वारा अपनी आत्मा को देखो और अपने असली स्वरूप को पहिचानो तथा तदुपरान्त ब्रह्मस्पर्श से होने वाले अक्षय्य सुख का अनुभव प्राप्त करो। १३/२४, ५/२१, ६/२८

गीता से मेरा सम्बन्ध

प्रथम घटना :-

जब में काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में अद्वैत वेदान्त में शास्त्री पास कर शास्त्राचार्य में पढ रहा था तब एक बार माननीय बिडलाजी ने श्रद्धेय मालवीय जी महाराज की देखरेख में एक गीता प्रतियोगिता कराई थी। इस प्रतियोगिता की परीक्षा लिखित रूप में ली गई थी और बाद में कुछ एक व्यक्तियों की मौखिक परीक्षा भी ली गई थी। इस बडी प्रतियोगिता में हजारों व्यक्तियों ने भाग लिया था। भाग्य से दोनों तरह की प्रतियोगिताओं में मैं सर्व प्रथम रहा और इसी उपलक्ष में किए गए समारोह में मालवीय जी महाराज ने पारितोषिक स्वरूप सौ रूपये नकद एक लाल कपडे की थैली में मुझे दिए थे। साथ में एक प्रमाण पत्र भी दिया था तथा महाराज ने यह सब देकर कहा था कि "गीता के अनुसार अपना जीवन बनाना।" बस यह मेरा गीता के साथ प्रथम सम्बन्ध हुआ था।

दूसरी घटना:-

बहुत दिनों पहिले की बात है, जब में राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड का काम देखने हेतु बीकानेर से एक बार श्री डूंगरगढ गया सायंकाल गाड़ी वहाँ पहुंची। स्टेशन से जीप द्वारा घर पहुंचा। एक सेठ साहब की नई बनी हवेली में मुझे ठहराया गया था। भोजन करने के बाद कार्यकर्ताओं से बातचीत करके मैं अपनी रात्रिकालीन साधना में लगा और उसके बाद में नये गद्दे और चादर बिछे ढोलिए पर मैं सो गया।

ब्रह्म मुहूर्त में प्रात: चार बजे स्वप्न में गंगा स्नान हुआ और फिर नींन्द खुल गई। देखता हूं कि सामने से एक रोशनी आती हुई दिखाई दे रही है। नजदीक आने पर उसमें साक्षात् चतुर्भुज भगवान विष्णु के दर्शन हुए। कुछ देर बाद जब वे वापिस जाने लगे तो मैंने कहा कि आप बहुत जल्दी जा रहे हैं। तब उनका कहना था कि मुझे संसार की भलाई के लिये लोगों के न जाने कितने काम करने हैं, तुम अपने स्वार्थ के लिये मुझे क्यों रोकना चाहते हो? इस पर मैंने कहा कि अच्छा आप जाइए तो जरूर, पर अपनी कुछ निशानी तो मुझे देते जाइए। इस पर उन्होंने कहा कि खडे होकर अपना थैला टटोलो। मैंने उनके कहने पर वैसा ही किया, पर उसमें मुझे निशानी लायक

कोई चीज नहीं मिली। इस पर मैंने कहा कि यहां तो निशानी लायक कुछ नहीं है। इस पर उन्होंने कहा कि फिर अच्छी तरह से देखो।

वैसा करने पर मैंने कहा कि आपकी निशानी लायक कोई वस्तु तो मुझे इस थैले में नहीं दीखती है। तब उन्होंने पूछा कि यह क्या है? इस पर मैंने उत्तर दिया कि यह गीता है। इस पर उन्होंने अपने श्रीमुख से फरमाया-

"गीता ही मेरी निशानी है, इसमें मैं नित्य प्रतिष्ठित रहता हूं।'' कह कर वे जिधर से प्रभायुक्त होकर आये थे, उधर ही रवाना हो गए। दूर तक जाती हुई यह रोशनी मुझे दीखती रहीं। इस अत्यन्त प्रसन्तादायक दृश्य को स्थायी रूप से स्मरण रखने के लिए मैंने एक सप्ताह तक केवल फल व दूध लेकर काम चलाया। राजलदेसर और रतनगढ़ के अपने समाज कल्याण बोर्ड के काम भी करता रहा। गंगानगर में घर आकर अन्न ग्रहण किया। इस घटना के बाद मेरा गीता से विशेष अनुराग हो जाना स्वाभाविक बात थी।

तीसरी घटना :-

जब मैं कुरूक्षेत्र विश्व विद्यालय के छात्रावास में एक कमरा ४५) रू० मासिक पर लेकर रह रहा था, तब एक प्रातःकाल सूर्य उदित हो जाने पर जब में अपनी प्रातः कालीन साधना में लगा था तो सामने भगवान् शंकर, भगवती पार्वती तथा तेजस्वी वृषभ तीनों ही दृष्टि गोचर हो गये।

काफी लम्बी बातचीत के बाद एक प्रश्न के उत्तर में भगवान् शंकर ने अपने श्रीमुख से कहा कि-

"गौ, गीता और गरीब की सेवा का व्रत लेलो।'' ऐसा करने पर मृत्यु के समय तुम्हें कोई अफसोस नहीं हो सकेगा। मैंने पूछा था कि कई क्रान्तियों में मैंने भाग लिया है। काफी समय मैंने समाज सेवा और स्वाध्याय में लगाया है। और अब क्या काम करना चाहिये? जिससे मृत्यु के समय यह अफसोस न रहे कि यह काम नहीं किया? तब उनका कहना था कि मृत्यु तो हर एक की होनी ही है। तुम्हारी भी होगी ही पर सेवा का व्रत लेने से किसी प्रकार का मृत्यु के समय तुम्हें अफसोस नहीं रहेगा।

एक बात इस सिलसिले की कहना आवश्यक समझता हूं कि श्रीमुख से भगवान् शंकर ने फरमाया था कि तुम मेरे बनाए दोनों शास्त्रों का लगन से अध्ययन कर रहे हो, सो मैं और मेरा समस्त परिवार तुम पर प्रसन्न है।

उन दिनों में मैं भगवान् के बनाए न्याय और वैशेषिक दर्शनों का तथा तत्सम्बन्धी साहित्य का विशेष लगन से अध्ययन कर रहा था। क्यों कि मेरा पी.एच.डी. का विषय था:-

"न्याय-वैशेषिक में आत्मा''

इसकी तैयारी के लिये दस बारह घन्टे लगातार कुछ मध्यकालीन विश्राम के साथ लगाने पड़ते थे। चटाई बिछा रक्खी थी और उस पर १५-२० किताबें पडी रहती थीं। यह मेरा गीता से तीसरा सम्बन्ध था।

चौथी घटना:-

यह घटना विशेष महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसने मेरे जीवन की धारा ही बदल दी। ज्येष्ठ पूर्णिमा वि.स. २०३६ रविवार तदनुसार १० जून सन् १९७९ ई० की रात्रि में मेरे गंगानगर वाले मकान की छत पर पूर्ण चन्द्रमा की रोशनी में भगवान् सत्यनारायण से चर्चा हुई। उनके कहने पर मैंने उनके दरबार में तीन वर्ष के लिये नौकरी करना स्वीकार कर लिया। यह काल १५ अगस्त ७९ ई० से प्रारम्भ होकर ८२ ई० तक रहेगा। इस अर्से में जो काम करने को मुझे कहा गया था वह इस प्रकार है:-

१. गीता विश्व भारती
२. गीता ज्ञान परिषद्
३. राजस्थान गीता प्रतिष्ठान
४. भगवान् सत्यनारायण का आश्रम
५. गीता पंचदशी

मैंने अपना शौक उन्हें बताया कि गंगा के किनारे बैठकर गायत्री मन्त्र का जाप करने में मुझे विशेष आनन्द आता है। प्रतिवर्ष बरसात में पूर्ण पक कर टपके हुए देशी आम खाने का मुझे बचपन से शौक है। इस पर उन्होंने कहा कि अपने दोंनो शौक पूरे कर आओ और फिर इस काम में लग जाओ इस पर में १५ अगस्त से गीता प्रचार के इस काम में जी जान से लग गया हूँ।

इस प्रकार बार बार गीता प्रचार के लिये प्रेरणा मिलने से मैने अपने पिछले सब काम धीरे धीरे सलटाने शुरू कर दिये और गीता प्रचार के काम में लगना शुरू कर दिया। इस कार्य में आते ही मैंने देखा कि काम तो भगवान् ने पहिले ही तैयार कर रखा है। मैं तो निमित्त मात्र ही हूं।

इसके बाद मैंने अपने मित्रों से और परिचितों से चर्चा की और जो भी मिलने आये उनसे भी जिक्र किया। सभी ने सहयोग और सुझाव देने का आश्वासन दिया।

गीता प्रचार की रूपरेखा पर सर्व प्रथम मैंने संक्षेप में "गोविकास'' के अगस्त अंक में लिखा था। उसी के सितम्बर अंक में गीता विश्व भारती पर लिखा है। अब गीता पंचदशी की तैयारी कर रहा हूँ। मेरा कोई किसी काम में आग्रह नहीं है। भगवान् का काम मानकर करता हूं और करता रहूंगा। कमियों के प्रति मेरी जुम्मेवारी है। सफलता के लिए स्वयं भगवान् उत्तरदायी रहेंगे।

यह पुस्तक क्यों लिखी?

आपने गीता पर लिखे अनेक ग्रन्थ देखे होंगे। ये ग्रन्थ माननीय विद्वानों पूजनीय सन्तों और श्रेष्ठ महात्माओं ' द्वारा लिखे गए हैं। उनमें से कुछ को आपने पढ़ा भी होगा। प्रत्येक आचार्य ने अपनी बुद्धि और लेखनी का उसमें पूरा उपयोग किया है। ये महान् ग्रन्थ विश्व साहित्य की अमूल्य निधि हैं। हर पुस्तकालय में इनका रखना जरूरी है।

इन तक धीरे-धीरे आप पहुँच सकें, ऐसा हमारा प्रयत्न होगा। सफलता तो आप सबके सहयोग पर निर्भर करेगी। आज तो यह छोटी सी पुस्तक इसलिए लिखी जा रही है, ताकि इसके द्वारा आपके सामने गीता के कुछ नमूने पेश कर सकूं। जिनका स्वाद लेकर आप स्वयं गहरे गीता ज्ञान के समुद्र में गोता लगाने की इच्छा जागृत कर सकें। अपने जीवन को सुखी व आनन्द से विभोर बनाने के लिये गीता से कुछ मार्ग दर्शन ले सकें।

आप का परिवार भी गीता के अभ्यास से कुछ नया जीवन पा सके। मिलने जुलने वाले भी इस प्रसाद को प्राप्त कर अत्यन्त सुखी हो सकें। इस प्रकार सारे समाज को ही नवजीवन प्रदान कर रस विभोर बनाना इस गीता रूपी ज्ञानामृत का काम है। हमारी इच्छा है कि यह ज्ञानामृत गांव-गांव, गली-गली,घर-घर हर शहर और हर कस्बे में व्यापक रूप से स्थान बना लेवे। यह जिस तरह से दूर दूर तक फैल सके वैसा प्रयत्न किया जाता रहेगा। अगर इतना काम इस छोटी सी पुस्तक के द्वारा होगया तो में अपना प्रयत्न सफल समझूंगा।

गीता का सामान्य परिचय

गीता भगवान् द्वारा गाया हुआ, अत्यन्त उपयोगी और रस भरा मधुर संगीत है। यह भगवद्गीता शब्द से ही मालूम होता है। यह उपनिषदों का सार है। इसलिये गीताध्यान व पुराणों में वर्णन है कि "सब उपनिषदें गौरूप हैं'' और गीता उन गौओं का मधुर अमृत रूप दूध है। दूध दुहने वाला स्वयं गोपाल श्रीकृष्ण है। उपनिषदों की सभी मुख्य मुख्य बातें गीता में आ गई हैं। यह गीता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में लिखे-

"श्रीमत् भगवत् गीतासु उपनिषत्सु'' से भी स्पष्ट है। इसी के आगे दो शब्द और हैं:- "ब्रह्म विदयायाम्'' तथा "योग शास्त्रे'' इससे स्पष्ट है कि गीता में ब्रह्म सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान भरा है। ब्रह्म को समझने और पाने के लिये साधन भूत योगविद्या का गीता में पर्याप्त निवेचन है।

इसके वक्ता स्वयं श्रीकृष्ण भगवान् हैं और श्रोता महारथी अर्जुन हैं। साथ में अर्जुन के रथ की ध्वजा पर बैठे श्री हनुमानजी भी गीता का उपदेश भगवान् के श्रीमुख से सुनकर आनन्द ले रहे हैं।

महाभारत के अध्ययन से यह जानकारी मिलती है कि गीता के प्रथम लेखक श्री गणेशजी महाराज ही हैं। प्रथम लिखाने वाले भी स्वयं महर्षि वेद व्यास हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चतुर्थ अध्याय के प्रारम्भ में[1] कहा है कि गीता रूपी योग को उन्होंने कल्प के आदि में भगवान् सूर्य को कहा है। भगवान् सूर्य ने यह ज्ञान महर्षि मनु को दिया और मनु ने यह ज्ञान अपने पुत्र इक्ष्वाकु को दिया था। इस प्रकार परम्परा से प्राप्त[2] इस योग विद्या को राजर्षियों ने जाना

यह योग पृथ्वी पर बहुत काल से नष्ट हो गया था। वही पुरातन[3] योग भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के अवसर पर वीर अर्जुन से कहा है। क्योकि अर्जुन भगवान् का भक्त और प्रिय सखा है। यही अन्त में भगवान् ने स्वयं स्पष्ट किया है कि यह गीता ज्ञान एक उत्तम रहस्य है। अठारहवें अध्याय के अन्त में भगवान् ने कहा है[4] कि यह अति गोपनीय ज्ञान मैं तुझसे कह रहा हूँ। क्योकि तू मेरा अतिशय प्रिय है। यह ज्ञान तेरे लिए अत्यन्त हितकारी है।

गीता में कुल मिलाकर १८ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अर्जुन के विषाद योग का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में आत्म ज्ञान और स्थित प्रज्ञ का विवेचन है। तृतीय अध्याय में इष्ट प्राप्ति के लिए यज्ञ का विधान और कर्मयोग का उल्लेख है। चतुर्थ अध्याय में ज्ञान योग और कर्म संन्यास तथा यज्ञ आदि का वर्णन है। पाचवें अध्याय में अक्षय्य सुख और ब्रह्म प्राप्ति के उपायों का विस्तार है। छठे अध्याय में आत्म संयम और ध्यान योग का वर्णन है। सातवें अध्याय में ज्ञान और विज्ञान की चर्चा है। आठवें अध्याय में अक्षर ब्रह्म का वर्णन है। नवम् अध्याय में अत्यन्त गोपनीय विज्ञान सहित ज्ञान अर्थात् राज गुह्य राज विद्या का विस्तृत विवेचन है। दसवें अध्याय में परमात्मा की विभूतियों का दिग्दर्शन है। ग्यारहवें अध्याय में भगवान् ने अर्जुन को अपना विराट् स्वरूप दिखाया है। बारहवें अध्याय में भक्ति योग का वर्णन है। तेरहवें अध्याय में क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का वर्णन है। चौदहवें अध्याय में सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का सुन्दर विश्लेषण है। पन्द्रहवें अध्याय में अश्वत्थ, जीव और पुरूषोत्तम का वर्णन है। सोलहवें अध्याय में दैवी सम्पत्ति और [illegible]री सम्पत्ति का विस्तार से विवेचन है। सतरहवे अध्याय में श्रद्धात्रय की व्याख्या है। अठार[illegible] कर्म, ज्ञान और सन्यास का विस्तार पूर्वक वर्णन है और इसी में [illegible] उपसंहार [illegible] कहा गया है।

गीता महाभारत का अंग है और भीष्म पर्व के पच्चीसवें अध्याय से लेकर बयालीसवें अध्याय में समाप्त हुई है। इसी पर्व के तेंतालीसवें अध्याय के प्रारंभ में अर्थात् गीता की समाप्ति के बाद कुछ श्लोकों में गीता महात्म्य का वर्णन किया गया है, जिसमें गीता श्लोकों की संख्या के विषय में ऐसा कहा गया है:-

"गीता में केशव के ६२० श्लोक अर्जुन के ५७ संजय के ६७ और धृतराष्ट्र का एक श्लोक है।"[१] 'महाभारत के इस कथन से स्पष्ट होता है कि भगवद्गीता के सारे ७४५ श्लोक हैं, परन्तु वर्तमान समय की सब पोथियों में केवल ७०० श्लोक ही पाए जाते हैं। आजकल महाभारत में भी ७०० श्लोक की गीता छपी हुई पाई जाती है। भगवान् शंकराचार्य ने भी अपने गीता भाष्य के प्रारम्भ में स्पष्ट रूप से कह दिया है कि "जिस गीता का मैं भाष्य करता हूँ, उसमें ७०० श्लोक हैं।

कुछ विद्वानों का कहना है[२] कि युद्ध क्षेत्र में इतना ग्रन्थ नहीं कहा जा सकता है। वहाँ तो संक्षेप में केवल ७० श्लोक ही कहे गये होंगे पर उनकी व्याख्या में भगवान् वेद व्यास ने इतने श्लोकों की रचना की है। पर हमें तो साधारणतया जो ग्रन्थ आज उपलब्ध है उसे आदर के साथ पढ़ना चाहिए और उसे ही भगवान् की वाणी मानकर अपने लिए आत्मसात् करना चाहिए। क्योंकि भगवान् शंकराचार्य तथा लोकमान्य तिलक आदि उच्च कोटि के विद्वानों ने ऐसा ही मान्य किया है।

१. 'षद् शतानि सविंशानि श्लोकानां प्राह केशव.।
अर्जुन: सप्त पंचाशत् सप्तषष्टिं तु संजय:।
धृतराष्ट्र: श्लोकमेकं गीताया मानमुच्ते।।"

२ प्राचीन भगवद् गीता (बाली द्वीप से प्राप्त) लेखक मंगलानन्दपुरी, प्रकाश गोविन्दराम हासानन्द ४४०५ नई सडक, दिल्ली। संस्करण १९७५ ई. मूल्य १।। रुपये।

गीता की भाषा

गीता जी की भाषा संस्कृत है, पर यह काफी आसान है। कहीं कहीं सन्धियों और समास के कारण कुछ कठिनता आ गई है। अर्थानुसार शब्द विन्यास न रखने से भी संस्कृत कविता में कुछ कठिनाई रहती है। इसलिए अर्थ को स्पष्ट करने के लिए पदच्छेद के बाद अन्वय करना भी जरूरी हो जाता है, उससे काफी आसानी अर्थ समझने में हो जाती है।

ग्रन्थकार के असली अर्थ को समझने के लिए उसी भाषा का सामान्य ज्ञान करना जरूरी होता है। वैसे हिन्दी तथा अंग्रेजी में और विश्व की विभिन्न भाषाओं में गीता पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है, पर सही बात तो यह है कि संस्कृत भाषा और उसका सामान्य व्याकरण जाने बिना गीता का असली मर्म आत्मसात् नहीं हो पाता है। इसलिए गीता प्रेमी पाठकों को संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक है। यह सामान्य ज्ञान एक दो मास के प्रयत्न से ही प्राप्त हो सकता है।

महाभारत के अध्ययन से यह जानकारी मिलती है कि गीता के प्रथम लेखक श्री गणेशजी महाराज ही हैं। प्रथम लिखाने वाले भी स्वयं महर्षि वेद व्यास हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चतुर्थ अध्याय के प्रारम्भ में[1] कहा है कि गीता रूपी योग को उन्होंने कल्प के आदि में भगवान् सूर्य को कहा है। भगवान् सूर्य ने यह ज्ञान महर्षि मनु को दिया और मनु ने यह ज्ञान अपने पुत्र इक्ष्वाकु को दिया था। इस प्रकार परम्परा से प्राप्त[2] इस योग विद्या को राजर्षियों ने जाना

यह योग पृथ्वी पर बहुत काल से नष्ट हो गया था। वही पुरातन[3] योग भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के अवसर पर वीर अर्जुन से कहा है। क्योंकि अर्जुन भगवान् का भक्त और प्रिय सखा है। यही अन्त में भगवान् ने स्वयं स्पष्ट किया है कि यह गीता ज्ञान एक उत्तम रहस्य है। अठारहवें अध्याय के अन्त में भगवान् ने कहा है[4] कि यह अति गोपनीय ज्ञान मैं तुझसे कह रहा हूँ। क्योंकि तू मेरा अतिशय प्रिय है। यह ज्ञान तेरे लिए अत्यन्त हितकारी है।

गीता में कुल मिलाकर १८ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अर्जुन के विषाद योग का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में आत्म ज्ञान और स्थित प्रज्ञ का विवेचन है। तृतीय अध्याय में इष्ट प्राप्ति के लिए यज्ञ का विधान और कर्मयोग का उल्लेख है। चतुर्थ अध्याय में ज्ञान योग और कर्म संन्यास तथा यज्ञ आदि का वर्णन है। पाचवें अध्याय में अक्षय्य सुख और ब्रह्म प्राप्ति के उपायों का विस्तार है। छठे अध्याय में आत्म संयम और ध्यान योग का वर्णन है। सातवें अध्याय में ज्ञान और विज्ञान की चर्चा है। आठवें अध्याय में अक्षर ब्रह्म का वर्णन है। नवम् अध्याय में अत्यन्त गोपनीय विज्ञान सहित ज्ञान अर्थात् राज गुह्य राज विद्या का विस्तृत विवेचन है। दसवें अध्याय में परमात्मा की विभूतियों का दिग्दर्शन है। ग्यारहवें अध्याय में भगवान् ने अर्जुन को अपना विराट् स्वरूप दिखाया है। बारहवे अध्याय में भक्ति योग का वर्णन है। तेरहवें अध्याय में क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का वर्णन है। चौदहवें अध्याय में सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का सुन्दर विश्लेषण है। पन्द्रहवें अध्याय में अश्वत्थ, जीव और पुरूषोत्तम का वर्णन है। सोलहवें अध्याय में दैवी सम्पत्ति और आसुरी सम्पत्ति का विस्तार से विवेचन है। सतरहवें अध्याय में श्रद्धात्रय की व्याख्या है। अठाहरवें अध्याय में कर्म, ज्ञान और सन्यास का विस्तार पूर्वक वर्णन है और इसी में गीता का उपसंहार तथा महात्म्य भी कहा गया है।

इन अठारह अध्यायों में कुल मिलाकर श्लोकों की संख्या ७०० है। इनमें से घृतराष्ट्र के द्वारा कहा गया श्लोक १ है। संजय द्वारा कहे गए श्लोक ४१ अर्जुन द्वारा कहे गए श्लोक ८४ और श्रीकृष्ण द्वारा कहे गए श्लोकों की संख्या ५७४ है।

३ स एवाय मया तेऽद्य ४-३

४. सर्व गुध्यतमं भूय. शृरणु मे परमंवच.। इष्टोऽसिमेदृढ मिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।। १८/६४

गीता महाभारत का अंग है और भीष्म पर्व के पच्चीसवें अध्याय से लेकर बयालीसवें अध्याय में समाप्त हुई है। इसी पर्व के तेंतालीसवें अध्याय के प्रारंभ में अर्थात् गीता की समाप्ति के बाद कुछ श्लोकों में गीता महात्म्य का वर्णन किया गया है, जिसमें गीता श्लोकों की संख्या के विषय में ऐसा कहा गया है:-

"गीता में केशव के ६२० श्लोक अर्जुन के ५७ संजय के ६७ और धृतराष्ट्र का एक श्लोक है।"[1] 'महाभारत के इस कथन से स्पष्ट होता है कि भगवद्गीता के सारे ७४५ श्लोक है, परन्तु वर्तमान समय की सब पोथियों में केवल ७०० श्लोक ही पाए जाते हैं। आजकल महाभारत में भी ७०० श्लोक की गीता छपी हुई पाई जाती है। भगवान् शंकराचार्य ने भी अपने गीता भाष्य के प्रारम्भ में स्पष्ट रूप से कह दिया है कि "जिस गीता का मैं भाष्य करता हूँ, उसमें ७०० श्लोक हैं।

कुछ विद्वानों का कहना है[2] कि युद्ध क्षेत्र में इतना ग्रन्थ नहीं कहा जा सकता है। वहाँ तो संक्षेप में केवल ७० श्लोक ही कहे गये होंगे पर उनकी व्याख्या में भगवान् वेद व्यास ने इतने श्लोकों की रचना की है। पर हमें तो साधारणतया जो ग्रन्थ आज उपलब्ध है उसे आदर के साथ पढ़ना चाहिए और उसे ही भगवान् की वाणी मानकर अपने लिए आत्मसात् करना चाहिए। क्योंकि भगवान् शंकराचार्य तथा लोकमान्य तिलक आदि उच्च कोटि के विद्वानों ने ऐसा ही मान्य किया है।

१. 'षद् शतानि सविंशानि श्लोकानां प्राह केशव:।
अर्जुन: सप्त पंचाशत् सप्तषष्टिं तु संजय:।
धृतराष्ट्र: श्लोकमेकं गीताया मानमुच्ते।।"

२ प्राचीन भगवद् गीता (बाली द्वीप से प्राप्त) लेखक मंगलानन्दपुरी, प्रकाश गोविन्दराम हासानन्द ४४०५ नई सडक, दिल्ली। संस्करण १९७५ ई. मूल्य १।। रुपये।

गीता की भाषा

गीता जी की भाषा संस्कृत है, पर यह काफी आसान है। कहीं कहीं सन्धियों और समास के कारण कुछ कठिनता आ गई है। अर्थानुसार शब्द विन्यास न रखने से भी संस्कृत कविता में कुछ कठिनाई रहती है। इसलिए अर्थ को स्पष्ट करने के लिए पदच्छेद के बाद अन्वय करना भी जरूरी हो जाता है, उससे काफी आसानी अर्थ समझने में हो जाती है।

ग्रन्थकार के असली अर्थ को समझने के लिए उसी भाषा का सामान्य ज्ञान करना जरूरी होता है। वैसे हिन्दी तथा अंग्रेजी में और विश्व की विभिन्न भाषाओं में गीता पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है, पर सही बात तो यह है कि संस्कृत भाषा और उसका सामान्य व्याकरण जाने बिना गीता का असली मर्म आत्मसात् नहीं हो पाता है। इसलिए गीता प्रेमी पाठकों को संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक है। यह सामान्य ज्ञान एक दो मास के प्रयत्न से ही प्राप्त हो सकता है।

महाभारत के अध्ययन से यह जानकारी मिलती है कि गीता के प्रथम लेखक श्री गणेशजी महाराज ही हैं। प्रथम लिखाने वाले भी स्वयं महर्षि वेद व्यास हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चतुर्थ अध्याय के प्रारम्भ में[१] कहा है कि गीता रूपी योग को उन्होंने कल्प के आदि में भगवान् सूर्य को कहा है। भगवान् सूर्य ने यह ज्ञान महर्षि मनु को दिया और मनु ने यह ज्ञान अपने पुत्र इक्ष्वाकु को दिया था। इस प्रकार परम्परा से प्राप्त[२] इस योग विद्या को राजर्षियों ने जाना

यह योग पृथ्वी पर बहुत काल से नष्ट हो गया था। वही पुरातन[३] योग भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के अवसर पर वीर अर्जुन से कहा है। क्योंकि अर्जुन भगवान् का भक्त और प्रिय सखा है। यही अन्त में भगवान् ने स्वयं स्पष्ट किया है कि यह गीता ज्ञान एक उत्तम रहस्य है। अठारहवें अध्याय के अन्त में भगवान् ने कहा है[४] कि यह अति गोपनीय ज्ञान मैं तुझसे कह रहा हूँ। क्योंकि तू मेरा अतिशय प्रिय है। यह ज्ञान तेरे लिए अत्यन्त हितकारी है।

गीता में कुल मिलाकर १८ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अर्जुन के विषाद योग का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में आत्म ज्ञान और स्थित प्रज्ञ का विवेचन है। तृतीय अध्याय में इष्ट प्राप्ति के लिए यज्ञ का विधान और कर्मयोग का उल्लेख है। चतुर्थ अध्याय में ज्ञान योग और कर्म संन्यास तथा यज्ञ आदि का वर्णन है। पाचवें अध्याय में अक्षय्य सुख और ब्रह्म प्राप्ति के उपायों का विस्तार है। छठे अध्याय में आत्म संयम और ध्यान योग का वर्णन है। सातवें अध्याय में ज्ञान और विज्ञान की चर्चा है। आठवें अध्याय में अक्षर ब्रह्म का वर्णन है। नवम् अध्याय में अत्यन्त गोपनीय विज्ञान सहित ज्ञान अर्थात् राज गुह्य राज विद्या का विस्तृत विवेचन है। दसवे अध्याय में परमात्मा की विभूतियों का दिग्दर्शन है। ग्यारहवें अध्याय में भगवान् ने अर्जुन को अपना विराट् स्वरूप दिखाया है। बारहवें अध्याय में भदित योग का वर्णन है। तेरहवें अध्याय में क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का वर्णन है। चौदहवें अध्याय में सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का सुन्दर विश्लेषण है। पन्द्रहवें अध्याय में अश्वत्थ, जीव और पुरूषोत्तम का वर्णन है। सोलहवें अध्याय में दैवी सम्पत्ति और आसुरी सम्पत्ति का विस्तार से विवेचन है। सतरहवे अध्याय में श्रद्धात्रय की व्याख्या है। अठाहरवें अध्याय में कर्म, ज्ञान और सन्यास का विस्तार पूर्वक वर्णन है और इसी में गीता का उपसंहार तथा महात्म्य भी कहा गया है।

इन अठारह अध्यायों में कुल मिलाकर श्लोकों की संख्या ७०० है। इनमें से धृतराष्ट्र के द्वारा कहा गया श्लोक १ है। संजय द्वारा कहे गए श्लोक ४१ अर्जुन द्वारा कहे गए श्लोक ८४ और श्रीकृष्ण द्वारा कहे गए श्लोकों की संख्या ५७४ है।

३. स एवाय मया तेऽद्य ४-३

४. सर्व गुध्यतमं भूय. शृरणु में परमंवच:। इष्टोऽसिमेद्दढ मिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।। १८/६४

गीता महाभारत का अंग है और भीष्म पर्व के पच्चीसवें अध्याय से लेकर बयालीसवें अध्याय में समाप्त हुई है। इसी पर्व के तेंतालीसवें अध्याय के प्रारंभ में अर्थात् गीता की समाप्ति के बाद कुछ श्लोकों में गीता महात्म्य का वर्णन किया गया है, जिसमें गीता श्लोकों की संख्या के विषय में ऐसा कहा गया है:-

"गीता में केशव के ६२० श्लोक अर्जुन के ५७ संजय के ६७ और धृतराष्ट्र का एक श्लोक है।"[1] 'महाभारत के इस कथन से स्पष्ट होता है कि भगवद्गीता के सारे ७४५ श्लोक है, परन्तु वर्तमान समय की सब पोथियों में केवल ७०० श्लोक ही पाए जाते हैं। आजकल महाभारत में भी ७०० श्लोक की गीता छपी हुई पाई जाती है। भगवान् शंकराचार्य ने भी अपने गीता भाष्य के प्रारम्भ में स्पष्ट रूप से कह दिया है कि "जिस गीता का मैं भाष्य करता हूँ, उसमें ७०० श्लोक हैं।

कुछ विद्वानो का कहना है[2] कि युद्ध क्षेत्र में इतना ग्रन्थ नहीं कहा जा सकता है। वहाँ तो संक्षेप में केवल ७० श्लोक ही कहे गये होंगे पर उनकी व्याख्या में भगवान् वेद व्यास ने इतने श्लोकों की रचना की है। पर हमें तो साधारणतया जो ग्रन्थ आज उपलब्ध है उसे आदर के साथ पढ़ना चाहिए और उसे ही भगवान् की वाणी मानकर अपने लिए आत्मसात् करना चाहिए। क्योंकि भगवान् शंकराचार्य तथा लोकमान्य तिलक आदि उच्च कोटि के विद्वानों ने ऐसा ही मान्य किया है।

१ 'षद् शतानि सविंशानि श्लोकानां प्राह केशव.।
अर्जुन: सप्त पंचाशत् सप्तषष्टिं तु संजय.।
धृतराष्ट्र: श्लोकमेकं गीताया मानमुच्ते।।''

२. प्राचीन भगवद् गीता (बाली द्वीप से प्राप्त) लेखक मंगलानन्दपुरी, प्रकाश गोविन्दराम हासानन्द ४४०५ नई सडक, दिल्ली। सस्करण १९७५ ई मूल्य १।। रुपये।

गीता की भाषा

गीता जी की भाषा संस्कृत है, पर यह काफी आसान है। कहीं कहीं सन्धियों और समास के कारण कुछ कठिनता आ गई है। अर्थानुसार शब्द विन्यास न रखने से भी संस्कृत कविता में कुछ कठिनाई रहती है। इसलिए अर्थ को स्पष्ट करने के लिए पदच्छेद के बाद अन्वय करना भी जरूरी हो जाता है, उससे काफी आसानी अर्थ समझने में हो जाती है।

ग्रन्थकार के असली अर्थ को समझने के लिए उसी भाषा का सामान्य ज्ञान करना जरूरी होता है। वैसे हिन्दी तथा अंग्रेजी में और बिश्व की विभिन्न भाषाओं में गीता पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है, पर सही बात तो यह है कि संस्कृत भाषा और उसका सामान्य व्याकरण जाने बिना गीता का असली मर्म आत्मसात् नहीं हो पाता है। इसलिए गीता प्रेमी पाठको को संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक है। यह सामान्य ज्ञान एक दो मास के प्रयत्न से ही प्राप्त हो सकता है।

हिन्दी का अर्थ और कविता

मैंने पहिले संस्कृत का श्लोक लिखा है। फिर स्पष्टता के लिए पदच्छेद किया है उसके बाद गीता प्रेस की छपी गीताओं में जो हिन्दी अर्थ है, वही लिखा है ताकि सब जगह एक रूपता बनी रहे।

गीता पर हिन्दी कविताओं के कई अनुवाद देखने को मुझे मिले हैं। हमारे मित्र श्री रामकृष्ण भारती जी का अनुवाद[1] कविता में मेरे पास है, पर गाने में विशेष अच्छा लगने के कारण साथियों ने हरि गीता[2] का छन्दोबद्ध अनुवाद अधिक पसन्द किया। इसलिए प्रारम्भ में वही हर श्लोक के साथ लिखा गया है।

उसके बाद में भारती जी का पदयानुवाद भी लिख दिया है ताकि अर्थ बिल्कुल स्पष्ट हो सके और कविता के दोनों प्रकारों का पाठक आनन्द ले सकें। दोनों ही पदयानुवाद किसी सम्प्रदाय विशेष से संबंध नहीं रखते हैं। इसलिए विशेष आदरणीय हैं।

१ गीता हिन्दी अनुवाद, मुनि प्रकाशन, करोल बाग दिल्ली-५।

२ श्री हरि गीता, श्री पं. दीनानाथ भार्गव 'दिनेश' दिल्ली।

पन्द्रह श्लोक

पन्द्रह ही श्लोक क्यों लिखे? इस पर तो इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि ऐसी ही भगवान् की प्रेरणा थी। इसलिए इसका नाम "गीता पंचदशी" रखा गया है। भगवान् का कहना है कि "पूर्णिमा को भगवान् सत्यनारायण का जो व्रत रखते हैं, उन्हें तो उस दिन गीता के पन्द्रह श्लोक अवश्य पढने चाहिये।" प्रतिदिन भी कम से कम पन्द्रह श्लोक पढना तो जरूरी होना चाहिए। इससे अधिक पढ सकें तो और भी अच्छा रहे। गीता का पाठ तो जितना भी व्यक्ति कर सके उतना ही अच्छा है। अर्थ और भाव समझकर ही गीता का पाठ करना श्रेष्ठ रहेगा।

१५ श्लोकों का गीता में स्थान

१	कार्पण्यदोष	२/७
२	क्लैव्यम्	२/३
३	सुख-दु:खे	२/३८
४	विहाय कामान्	२/७१
५	कामक्रोध	५/२६
६	तेषा मेव	११/११
७	ब्रह्मणोहि	१४/२७
८	यज्ञ दानतप:	१८/५

९	एतान्यपितु	१८/६
१०	यत: प्रवृत्ति:	१८/४६
११	ईश्वर:	१८/६१
१२	तमेव शरणम्	१८/६२
१३	मन्मनाभव	१८/६५
१४	सर्वधर्मान्	१८/६६
१५	नष्टो मोह:	१८/७३

इन श्लोकों का चुनाव

इन पन्द्रह श्लोकों का चुनाव मेरा अपना है। कुछ का तो मैं प्रतिदिन काफी समय से पाठ करता रहा हूँ इसलिए मेरा उनके प्रति प्रेम था। कुछ विद्वानों से इस विषय में चर्चा हुई थी तो मालूम हुआ कि हर एक कि पसन्द अलग-अलग है। कुछ श्लोक तो सभी को पसन्द होते हैं, पर अधिकतर अपने-अपने स्वभाव, ज्ञान, परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार अलग-अलग ही श्लोकों को पसन्द करते हैं। तब यह निर्णय रहा कि प्रत्येक विद्वान अपनी-अपनी पसन्दगी की पंचदशी लिखकर प्रकाशित करते रहें तो ठीक है। कालान्तर में कभी विद्वानों की गोष्ठियों में सब पर एक मति हो गई तो उन्हें ही पंचदशी में स्थान दिया जा सकेगा। मैं तो इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि प्रत्येक पाठक को अपनी-अपनी पसन्द के पन्द्रह श्लोक छांटकर अपनी कॉपी में लिख लेने चाहिये और उनका अर्थ, पदच्छेद, अन्वय, कविता और भावार्थ भी लिख लेना चाहिये तथा प्रतिदिन पाठ के लिये उन्हें याद कर लेना चाहिये। धीरे-धीरे आत्मीयता होने से उनके प्रति अधिक लगाव हो सकेगा।

प्रतिदिन प्रयत्न तो यह होना चाहिए कि हृदय में भगवान् की उपस्थिति का अनुभव कर उन्हीं के श्रीमुख से गीता के कुछ श्लोक सुने जावें। पर यह प्रक्रिया अति प्रयत्न से साध्य हो सकेगी। इतना तो होना ही चाहिए कि गीताकार की उपस्थिति का आनन्द लेते हुए गीता का पाठ किया जावे, तभी गीता पाठ का पूरा लाभ मिल सकेगा।

गीता की सिद्ध गायत्री

इन पन्द्रह श्लोकों में सर्वप्रथम का एक श्लोक और अन्त का एक श्लोक इस प्रकार दो श्लोक अर्जुन द्वारा कहे हुए हैं। प्रथम श्लोक में अर्जुन ने भगवान् श्रीकृष्ण से अपने लिए निश्चित कर्तव्य जानना चाहा है और अन्तिम श्लोक मे सब कुछ सुनकर अपना संतोष, परिस्थिति और निर्णय भगवान् श्रीकृष्ण से अर्जुन ने कहा है।

बाकी तेरह श्लोक भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा कहे हुए हैं। इनमें करीब करीब सारी गीता का सार आ गया है। अर्जुन द्वारा कहा हुआ यहाँ प्रथम श्लोक गीता में दूसरे अध्याय का सातवां श्लोक है।

इसके विषय में महात्माओं ने बताया है। यह श्लोक गीता की सिद्ध गायत्री है इसका विधिवत् पाठ करने से चमत्कार से भरी विशेष उपलब्धियां होती हैं। कई स्थानों पर मुझे भी इसकी सफलता देखने को मिली है, पर एक आध स्थान पर असफलता भी पाई गई है।

आगे चलकर इस पर पूरा अनुसंधान किया जावेगा तभी कुछ विशेष कह सकेंगे। उसके पश्चात् ही उपयुक्त विधि का स्पष्ट उल्लेख किया जा सकेगा।

इस श्लोक में अर्जुन ने भगवान् से अपनी असमर्थता और कमी दिखाते हुए अपने लिए निश्चित रूप से करने योग्य मार्ग जानना चाहा है। क्योंकि अर्जुन ने भगवान् के आगे अपनी शिष्यता और शरणागति इस श्लोक में स्पष्ट की है। भगवान् से मार्ग दर्शन चाहने वाले हर व्यक्ति को इसी प्रकार सच्चे हृदय से अपनी कमी और उसे दूर करने के लिये भगवान् की शिष्यता और शरणागति स्वीकार करनी होगी।

श्लोकों के विषय में

यहाँ भगवान् द्वारा कहे हुए प्रथम श्लोक में हृदय की दुर्बलता छोड़कर अर्जुन को उठकर कर्तव्य कर्म करने की ओर भगवान् ने प्रेरणा दी है। यह पंचदशी का दूसरा श्लोक है। तीसरे श्लोक में सुख दुःख और हानि लाभ में समान रहकर युद्ध में प्रवृत्त होने को भगवान् ने अर्जुन से कहा है। अगले चौथे श्लोक में सब कामनाओं को छोड़ने के लिए कहा गया है। पाँचवें श्लोक में काम और क्रोध को छोड देने से ज्ञानियों को क्या उपलब्ध होता है यह बताया गया है। छठे श्लोक में उन साधना करने वालों के लिए स्वयं भगवान् क्या करता है यह स्पष्ट किया गया है।

सातवें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण किस आधार पर ऐसा कर सकते हैं यह बताया गया है यहाँ यह भी स्पष्ट किया गया है कि वे ही पर ब्रह्म के, अव्यय अमृत के, शाश्वत धर्म के तथा ऐकान्तिक सुख के अन्तिम आधारभूत हैं।

आठवें श्लोक में मनुष्य को पवित्र बनने के उपाय बताए गए हैं। नवम् श्लोक में आसक्ति और फल की इच्छा को छोडकर कर्म करने का उपदेश दिया गया है। दशम् श्लोक में बताया गया है कि सब कर्म भगवान् को सौंप देने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त करता है।

ग्यारहवें श्लोक में बताया गया है कि ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में रहता है और वहाँ रहते हुए ही वह अपनी माया के बल पर सारे भूतों का संचालन करता है बारहवें श्लोक में कहा गया है कि ईश्वर की शरण मे जाने से पुरूष परम शान्ति का अधिकारी हो जाता है। तेरहवें श्लोक में

प्रेम से गद्-गद् होकर भगवान् ने अपनी विशेष भक्ति का उपदेश दिया है। ग्याहरवें से चौदहवें तक के चार श्लोकों को गुह्य से गुह्यतर ज्ञान और अन्त में उपसंहार करते हुए गुह्यतम ज्ञान की संज्ञा स्वयं भगवान् ने दी है।

इसलिए इनका विशेष महत्त्व स्पष्ट है गीता का यह उपसंहार है। चौदहवें श्लोक में शरणागति के लिए कहकर भगवान् ने सब पापों से मुक्ति दिलाने का आश्वासन दिया है और अर्जुन को शोक न करने को कहा है। अन्तिम श्लोक में अर्जुन ने भगवान् को विश्वास दिलाया है कि श्री मुख से गीता का उपदेश सुनकर उसका मोह नष्ट हो गया है और प्रभु की कृपा से उसके सब सन्देह दूर हो गये हैं इसलिए अब वह भगवान् का ही कहा मानता रहेगा। प्रथम श्लोक में अर्जुन का प्रश्न और अन्त में उसका आश्वासन पाकर संतुष्ट होना उचित ही है।

इस प्रकार इन पन्द्रह श्लोकों में एक प्रकार से सारी गीता का सार आ गया है। इन उपदेशों पर आचरण करने से पुरूष गीता के पूरे फल को प्राप्त करने में सफल हो सकता है। इतना पढने पर साधक को सम्पूर्ण गीता पढ़ने की इच्छा भी बलवती हो जायेगी और वह अन्त में अपने जीवन को गीता के अनुसार चलाकर अन्तिम पुरूषार्थ का अधिकारी भी बन सकेगा। इति शम्।

समर्पण

त्वमेव माता च पितात्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।
त्वदीयं वस्तु गोविन्द। तुम्यमेव समर्पये।

गीता के पन्द्रह श्लोक

पदच्छेद हिन्दी अर्थ और गद्यानुवाद सहित

अर्जुन उवाच

कायण्य दोषो पहत स्वभावः पृच्छामि त्वां धर्म संमूढ़ चेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निच्श्रित ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।। २/७

पदच्छेद :-

कार्यण्य-दोष-उपहत्त-स्वभावः पृच्छामि, त्वाम्, धर्म-संमूढ़-चेता, यत्, श्रेयः, स्यात्, निश्चितम्, ब्रूहि, तत्, मे, शिष्यः ते अहम् शाधि, माम्, त्वाम्, प्रपन्नम्।।

अर्थ :-

इसलिये कायरता रूप दोष करके उपहत हुए स्वभाववाला और धर्म के विषय में मोहित चित्त हुआ, मैं आपको पूछता हूँ जो कुछ निश्चय किया हुआ कल्याणकारक साधन हो वह मेरे लिये कहिये; क्योकि मैं आपका शिष्य हूँ, इसलिये आपके शरण हुए मेरे को शिक्षा दीजिये।।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

कायरपने से हो गया सब नष्ट क्षात्र स्वभाव है।
मोहित हुई मति ने भुलाया धर्म विषयक भाव है।।
आया शरण हूँ आपकी मैं शिष्य शिक्षा दीजिए।
निश्चित कहो कल्याणकारी कर्म क्या मेरे लिए ।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

कायरपने के दोषों से पीडित,
धार्मिक विषय में संमूढ़ चेता।
जो श्रेय निश्चित, वह ही बतावें,
हूँ शिष्य, दीजै उपदेश-शिक्षा।।

श्री भगवानु वाच :-

क्लैव्यं मा स्म गयः पार्थ नैत त्वय्युपपदये।
क्षुद्रं हृदय दोर्बल्यं त्यक्त्वो त्तिष्ठ परंतप।। २/३

पदच्छेद :-

क्लैव्यम्, मा, एम, गमः, पार्थ, न, एतत्, त्वयि उपपदयते, क्षुन्द्रम्
हृदय-दौर्बल्यम्, त्यक्त्वा, उत्तिष्ठ, परंतप।।

अर्थ :-

हे अर्जुन नपुंसकता को मत प्राप्त हो। यह तेरे में योग्य नहीं है। हे परन्तप तुच्छ हृदय की दुर्बलता को त्यागकर युद्ध के लिए खड़ा हो।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

अनुचित नपुंसकता तुम्हें हे पार्थ! इस में मत पड़ो।
यह क्षुद्र कायरता परंतप! छोड़कर आगे बढ़ो।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

अर्जुन, प्राप्त न क्लैव्य करो तुम, तेरे योग्य नहीं यह सब।
परम् तपस्विन्, दुर्बलता तज, होओ खडे, युद्ध प्रस्तुत।।

सुख दुःख समे कृत्वा लाभालाभौ जया जयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।२/३।।

पदच्छेद :-

सुख दुःखे, समे, कृत्वा, लाभालाभौ, जयाजयौ, ततः, युद्धायः युज्यस्व, न, एवम्, पापम् अवाप्स्यसि।।

अर्थ :-

सुख दुःख लाभ हानि (और) जय पराजय को समान समझकर उसके उपरान्त युद्ध के लिए तैयार हो। इस प्रकार (युद्ध करने से तू) पाप को नहीं प्राप्त होगा।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

जय हार लाभालाभ, सुख दुखः सम समझकर सब कहीं।
फिर युद्ध कर तुझको धनुर्धर। पाप यों होगा नहीं।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

सुख हो, दुःख हो, हानि लाभ हो,
जय हो, होवे हार अगर।
इन सबको तुम जानो सम ही,
युद्ध करो नहिं पाप गहो।।
विहाय कामान्यः सर्वा न्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छतिः।२/७१।

पदच्छेद :-

विहाय, कामान् यः, सर्वान् पुमान्, चरति, निष्पृहः, निर्मम, निरहंकारः स, शान्तिम्, अधिगच्छति।।

अर्थ :-

जो पुरूष सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर ममता रहित (और) अहंकार रहित स्पृहारहित हुआ वर्तता है वह शान्ति को प्राप्त होता है।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

सब त्याग इच्छा कामना जो नर विचरता नित्य ही।
मद और ममता हीन होकर, शान्ति पद पाता वही।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

जो मनुष्य सब काम छोड़कर निःस्पृह बन जग में रहता।
निर्मम अहम्भाव से छूटा, शान्ति प्राप्त है वह करता।।

काम क्रोध वियुक्तानां यतोनाम यतचेतसां।
अभितो ब्रह्म निर्वाणं वर्तति विदितात्मनाम्। ५/२६

पदच्छेद :-

काम-क्रोध-वियुक्तानाम्, यतीनाम् यतचेतसाम्, अभितः, ब्रह्म निर्वाणम्, वर्तति, विदितात्मनाम्।।

अर्थ :-

काम क्रोध से रहित जीते हुए चित्त वाले पर ब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार किए हुए ज्ञानी पुरूषो के लिए सब ओर से शान्त पर ब्रह्म परमात्मा ही प्राप्त है।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

यति काम क्रोध विहीन जिनमें आत्म-ज्ञान प्रधान है।
जीता जिन्होंने मन उन्हें सब और ही निर्वान है।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

काम, क्रोध से रहित यति जो, जीत लिया है मन जिसने।
प्राप्त ईश सब और स्वयं है, सब कुछ पाया है उसने।।

तेषामेवा नुकम्पार्थम हम ज्ञानजं तमः।
नाशयाम्यात्म भावस्थो ज्ञान दीपेन भास्वता। १०/११

पदच्छेद :-

तेशाम्, एव, अनुकम्पा-अर्थम्, अहम्, अज्ञानजम् तमः, नाशयामि, आत्मभावस्थः ज्ञानदीपेन, भास्वता।।

अर्थ :-

उनके (ऊपर) अनुग्रह करने के लिए ही मैं स्वयम् (उनके) अन्तःकरण में एकी भाव से

स्थित हुआ अज्ञान से उत्पन्न हुए अन्धकार को प्रकाशमय तत्वज्ञान रूप दीपक द्वारा नष्ट करता हूँ।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

उनके हृदय में बैठ पार्थ! कृपार्थ अपने ज्ञान का।
दीपक जलाकर नाश करता तम सभी अज्ञान का।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

उन पर कृपा भाव से ही मैं, उनके मानस में स्थित हूँ।
अज्ञानोद्भ व अन्धकार को ज्ञान दीप से नष्ट करूँ।।

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्या व्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च।। १४/२७

पदच्छेद :-

ब्रह्मणः, हि, प्रतिष्ठा, अहम्, अमृतस्य अव्ययस्य, च, शाश्वतस्य, च धर्मस्य, सुखस्य, ऐकान्तिकस्य, च।।

अर्थ :-

अविनाशी पर ब्रह्म का और अमृत का तथा नित्य धर्म का और अखण्ड एकरस आनन्द का मैं ही आश्रय हूँ।।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

अव्यय अमृत मैं और मैं ही ब्रह्म रूप महान् हूँ।
मैं ही सनातन धर्म और मोद निधान हूँ।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

अर्जुन, मैं ही हूँ आश्रय उस ब्रह्म, अमृत और अव्ययका।
शाश्वत धर्म तथा एकान्तिक, सुख का, इस सारे जग का।

यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।। १८/५

पदच्छेद :-

यज्ञ-दान-तपः, कर्म, न, त्याज्यम् कार्यम्, एव, तत्। यज्ञः, दानम्, तपः, च, एव, पावनानि, मनीषिणाम्।।

अर्थ :-

यज्ञ दान और तप रूप कर्म त्यागने योग्य नहीं है। (किन्तु) वह निःसन्देह करना कर्त्तव्य है। (क्योंकि) यज्ञ दान और तप (यह तीनों) ही बुद्धिमान् पुरूषों को पवित्र करने वाले हैं।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

जिससे प्रवृत्ति सब जीवों की तथा जग व्याप्त है।
निजकर्म से नर पूज उसको सिद्धि करता प्राप्त है।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

जिस प्रभु से प्रवृत्ति प्राणियों की, यह सारा व्याप्त जगत्।
उस प्रभु को स्वाभाविक कर्मों से होता है प्राप्त मनुज।।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८/६१

पदच्छेद :-

ईश्वरः, सर्वभूतानाम्, हृत्-देशे, अर्जुन, तिष्ठति, भ्रामयन् सर्वभूतानि, यन्त्र-आरूढानि मायया।

अर्थ :-

क्योंकि-हे अर्जुन शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से (उनके कर्मों के अनुसार) भ्रमाता हुआ सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।

दिनेश जी का पदयानुवाद :-

ईश्वर हृदय में प्राणियों के बस रहा है नित्य ही।
सब जीव यन्त्रा रूढ़ माया से घुमाता है वही।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

अर्जुन, ईश्वर सभी प्राणियों के मन में स्थित रहता है।
निज माया से, यन्त्रारूढ़ सभी जीव भर माता है।।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादा त्परां शान्ति स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।। १८/६२

पदच्छेद :-

तम्, एव, शरणम्, गच्छ, सर्वभावेन, भारत, तत्-प्रसादात्, पराम्, शान्तिम्, स्थानम्, प्राप्स्यसि, शाश्वतम्।

अर्थ :-

हे भारत सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही अनन्य शरण को प्राप्त हो। उस परमात्मा की कृपा से (ही) परम शान्ति को (और) सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

दिनेश जी का पदयानुवाद :-

इस हेतु ले उसकी शरण सब भांति से सब ओर से।
शुभ शान्ति लेगा नित्य-पद, उसकी कृपा भी कोर से।।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

यज्ञ दान तप ये कर्म करने योग्य त्याज्य नहीं कभी।
यज्ञ दान तप विद्वान् को भी शुद्ध करते हैं सभी।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

यज्ञ, दान, तप कर्म नहीं है त्याज्य, सभी कर्त्तव्य सखे।
यज्ञ, दान, तप-ये तीनों पावन-गुण हैं विद्वानों के।।

एतान्यपितु कर्माणि संग त्यक्त्वा फलानिच।
कर्त्तव्यानीति में पार्थ निश्चितं ममभुत्तमम्।। १८/६

पदच्छेद :-

एतानि, अपि, तु, कर्माणि, संगम् त्यक्त्वा, फलानि, च, कर्तव्यानि, इति में पार्थ निश्चितम्, मतम्, उत्ततम्।।

अर्थ :-

हे पार्थ यह यज्ञ दान और तप रूप कर्म तथा और भी सम्पूर्ण श्रेष्ठ कर्म आसक्ति को और फलों को त्याग कर (अवश्य) करने चाहिये। ऐसा मेरा निश्चय किया हुआ उत्तम मत है।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

ये कर्म भी आसक्ति बिन हो, त्याग कर फल नित्य ही।
करने उचित हैं पार्थ! मेरा श्रेष्ठ निश्चित मत यही।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

यज्ञ, दान, तप, रूप कर्म सब श्रेष्ठ कर्म अर्जुन, करणीय,
कर्मा सक्ति और त्याग फलों का मेरा निश्चय वांछनीय ।।

यत: प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्व मिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानव:।। १८/४६

पदच्छेद :-

यत:, प्रवृत्ति, भ्तानाम्, येन, सर्वम्, इदम्, ततम्, स्व-कर्मणा, तम, अभ्यर्च्य, सिद्धिम्, विन्दति, मानव:।

अर्थ :-

जिस परमात्मा से सर्व भूतों की उत्पत्ति हुई है (और जिससे यह सर्व (जगत्) व्याप्त है। उस परमेश्वर को अपने स्वाभाविक कर्म द्वारा पूज कर मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त होता है।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

जिससे प्रवृत्ति सब जीवों की तथा जग व्याप्त है।
निजकर्म से नर पूज उसको सिद्धि करता प्राप्त है।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

जिस प्रभु से प्रवृत्ति प्राणियों की, यह सारा व्याप्त जगत्।
उस प्रभु को स्वाभाविक कर्मों से होता है प्राप्त मनुज।।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८/६१

पदच्छेद :-

ईश्वरः, सर्वभूतानाम्, हृत्-देशे, अर्जुन, तिष्ठति, भ्रामयन् सर्वभूतानि, यन्त्र-आरूढानि मायया।

अर्थ :-

क्योंकि-हे अर्जुन शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से (उनके कर्मों के अनुसार) भ्रमाता हुआ सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।

दिनेश जी का पदयानुवाद :-

ईश्वर हृदय में प्राणियों के बस रहा है नित्य ही।
सब जीव यन्त्रा रूढ़ माया से घुमाता है वही।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

अर्जुन, ईश्वर सभी प्राणियों के मन में स्थित रहता है।
निज माया से, यन्त्रारूढ़ सभी जीव भर माता है।।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादा त्परां शान्ति स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।। १८/६२

पदच्छेद :-

तम्, एव, शरणम्, गच्छ, सर्वभावेन, भारत, तत्-प्रसादात्, पराम्, शान्तिम्, स्थानम्, प्राप्स्यसि, शाश्वतम्।

अर्थ :-

हे भारत सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही अनन्य शरण को प्राप्त हो। उस परमात्मा की कृपा से (ही) परम शान्ति को (और) सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

दिनेश जी का पदयानुवाद :-

इस हेतु ले उसकी शरण सब भांति से सब ओर से।
शुभ शान्ति लेगा नित्य-पद, उसकी कृपा भी कोर से।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

भारत, पूर्ण रूप से उस प्रभु की ही चरण शरण में जा।
कृपा, उसी से मिलेगी, शाश्वत परम धाम को पा।।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।। १८/६५

पदच्छेद :-

मन्-मना, भव मद्-भक्त, मद्-भाजी, माम् नमस्कुरु, माम्, एव एस्यसि सत्यम्, ते, प्रति जाने, प्रिय: असि, मे।।

अर्थ :-

मुझ परमात्मा में ही निरन्तर अचल मन वाला हो (और) मुझ परमेश्वर को भजने वाला हो। (तथा) मेरा पूजन करने वाला हो। (और) मुझ वासुदेव को भक्ति सहित प्रणाम कर। ऐसा करने से (तू) मेरे को ही प्राप्त होगा। (यह मैं) तेरे लिए सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ। क्योकि (तू) मेरा अत्यन्त प्रिय (सखा) है।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

रख मन मुझी में, कर भजन, मम भक्त बन, कर वन्दना।
मुझ में मिलेगा, सत्य प्रण तुझ से, मुझे तू प्रिय घना।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

समर्पण कर मन अपना, बन भक्त व कर पूजन, प्रणाम।
मुझ को प्राप्त करेगा निश्चय, सत्य, प्रतिज्ञा, सत्य आन।।

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।
अह त्व: सर्वपापेभ्यो मोक्षपिष्यामि मा शुच:।। १८/६६

पदच्छेद :-

सर्व-धर्मान्, परित्यज्य, माम्, एकम्, शरणम् ब्रज, अहम् त्वा, सर्व-पापेभ्य: मोक्षयिष्यामि, मा, शुचा।।

अर्थ :-

सब धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के आश्रय को त्याग कर केवल एक मुझ परमात्मा की ही शरण को प्राप्त हो। मैं तेरे को सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा। तू शोक मत कर।।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

तज धर्म सारे एक मेरी ही शरण को प्राप्त हो।
मैं मुक्त पापों से करूंगा तू न चिन्ता व्याप्त हो।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

सब धर्म कर्मों को तज कर, एक ईश का आश्रय ले।
ईश तुझे सब पाप-मुक्ति दें, शोक-दुःख को त्याग, अरे।।

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृति लब्धा त्वत्प्रसादान्मयायुत।
स्थितोऽस्मिगत सन्देहः करिष्ये वचनं तव।। १८/७३

पदच्छेद :-

नष्टः, मोहः, स्मृतिः, लब्धा, त्वत् प्रसादात्, मया, अच्युत, स्थितः, अस्मि, गत-सन्देहः, करिष्ये, वचनम् तव।।

अर्थ :-

हे अच्युत आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है। (और) मुझे स्मृति प्राप्त हुई है। (इसलिये मैं) संशयरहित हुआ स्थित हूँ। (और) आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।

दिनेशजी का पदयानुवाद :-

अर्जुन ने कहा :-

अच्युत! कृपा से आपकी अब मोह सब जाता रहा।
संशय रहित हूँ सुधि मुझे आई, करूंगा हरि कथा।।

भारतीजी का पदयानुवाद :-

नष्ट हुआ मोह, प्राप्त हुई स्मृति, अच्युत तेरी कृपा हुई।
दूर हुए संदेह सभी है, पालूंगा आज्ञा तेरी।।

गीता प्रसार योजना

आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्रान्ति का श्री गणेश किया जा सके इसके लिए गीता प्रचार की एक संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत है। इसमें आपका सहयोग और सुझाव आमंन्त्रित हैं।

अपने देश में तथा देश से बाहर और विशेषकर समस्त राजस्थान प्रान्त में गीता प्रचार की एक योजना बनी है। इसके पांच प्रकार होंगे -

(१) गीता ज्ञान परिषद्
(२) *गीता विश्व भारती*
(३) राजस्थान गीता प्रतिष्ठान
(४) गीता पंचदशी

(५) भगवान् सत्यनारायण का आश्रम।

गत जेष्ठ पूर्णिमा के पुण्य अवसर पर देवी प्रेरणा हुई कि अब मुझे अन्य सब कामों से धीरे-धीरे छुट्टी लेकर गीता प्रचार के काम में जोरों से लगना चाहिये। इस प्रेरणा पर मैंने यह निर्णय कर लिया है कि १५ अगस्त १९७९ से कुछ वर्षों के लिए गीता प्रचार का कार्य जोरों से किया जाये। तदनुसार इस विषय में आप सबका सहयोग और सुझाव आमन्त्रित हैं।

(१) गीता ज्ञान परिषद् :-

भारतवर्ष में गीता प्रचार का जो भी कार्य कहीं भी चालू है, उसकी जानकारी प्राप्त करना और उससे लाभ उठाना तथा संभव हो तो उसमें सहयोग देना गीता ज्ञान परिषद् का कार्य होगा।

(२) गीता विश्व भारती :-

यह एक छोटा सा गीता संबंधी विश्व विद्यालय होगा। इसके द्वारा गीता के विशिष्ट विद्वान तैयार करना होगा। अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान प्रकाशन और परीक्षा संबंधी कार्य इस संस्था द्वारा हो सकेगा। उचित समय पर एक पत्र भी इसके द्वारा प्रकाशित किया जा सकेगा।

(३) राजस्थान गीता प्रतिष्ठान :-

समस्त राजस्थान के गांव-गांव और शहर-शहर में गीता ज्ञान का संदेश पहुँचाना और उसके लिए उपयुक्त और व्यापक संगठन बनाना होगा जो इस कार्य को सफलता के साथ विभिन्न प्रकारों से आगे बढ़ा सके।

(४) गीता पंचदशी :-

गीता के पन्द्रह श्लोक छांटकर उनका अर्थ वगैरहा लिखना और एक भूमिका लिखकर एक छोटा सा ग्रंथ तैयार कर छपवाना है जिसे प्रत्येक पूर्णिमा को भगवान् सत्यनारायण का व्रत करने वाले उस दिन तो अवश्य पढ़ें। वैसे तो सारी गीता ही पढ़नी चाहिये पर ये पन्द्रह श्लोक तो प्रतिदिन अवश्य पढे जा सकें यह प्रयत्न भी होगा।

(५) भगवान् सत्यनारायण का आश्रम :-

इन सब कामो को सफल बनानें के लिये एक आश्रम की कल्पना की गई है जहॉ ठहर कर कार्यकर्ता ये सब काम कर सकें। इस आश्रम का नाम भगवान् सत्यनारायण का आश्रम होगा। यह आश्रम कहां बने? यह अभी सोचना है और सोच विचार कर तय करना है। जिस स्थान पर पर्याप्त भूमि, भवनों की सुविधा तथा साधन सामग्री उपलब्ध हो सकेगी वहीं आश्रम बनाने की योजना है। एक बार तो प्रारंभ में कार्य शुरू करने के लिये जयपुर में गौमाता भवन, बजाज नगर, हनुमानगढ टाऊन में भारतीय विद्या मंदिर तथा गंगानगर का स्वाधीन भारत भवन और हिसार का एक स्थान सामने है ताकि कार्य प्रारंभ किया जा सके। बाद में उपयुक्त अवसर पर अन्य स्थायी निर्णय लिये

जा सकेंगे। सभी भाई-बहिनों के उपयुक्त सुझाव एवं सहयोग पत्र आने पर तथा सभी कार्यकर्ताओ, विद्वानों और सहयोगियों से पूरा परामर्श कर शेष प्रश्न तय किये जा सकेंगे।

एक और सुझाव

कई दिनों से यह विचार था कि एक ऐसा आश्रम बने जहाँ रहकर साधकगण अपने इष्ट को प्राप्त करने के लिए साधना कर सकें। साधक की योग्यता के अनुसार ४० दिन से ८० दिन तथा १२० दिन की साधना गुरूदेव ने ईष्ट दर्शन के लिये बताई थी। ७ दिन ११ दिन और पन्द्रह दिन की विशिष्ट साधना मंत्र सिद्धि के लिये बताई गई है तद्नुसार अपना-अपना इष्ट मंत्र सिद्ध किया जा सके। इसके लिए भी एक आश्रम की आवश्यकता है। इष्ट देव का दर्शन और इष्ट मंत्र की सिद्धि के विभिन्न प्रयोगों पर अनुसंधान की बडी आवश्यकता है ताकि कुछ मार्ग निश्चित कर इधर-उधर भटकते मानव समाज को सही और कल्याणकारी मार्ग बताया जा सके। सम्प्रदायवाद तथा रूढ़ियों से कुछ ऊपर उठकर अध्यात्म और धर्म के असली तत्व पर पहुँचना और औरों को पहुँचाना आश्रम का असली लक्ष्य होगा।

दूसरा सुझाव

आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्रान्ति का प्रतीक एक साप्ताहिक पत्र निकालना प्रारंभ में ही जरूरी मालूम होने लगा है। ताकि दूर-दूर तक सामान्य जनता को अपना संदेश और गीता का ज्ञान पहुँचा सकें। इसके साथ-साथ विविध प्रकार के संगठन और सस्थाएँ बनती रहें ताकि काम की शुरूआत ठीक तरीके से हो सके। इस पत्र के ग्राहक तीन हजार प्रारंभ में होने चाहिए और धीरे-धीरे यह संख्या १५ हजार तक पहुँच जावे। इसका वार्षिक चन्दा २४) रुपये, आजीवन सदस्य शुल्क ५००) रुपये, संरक्षक १०००) रुपये और एक प्रति ५० पैसे रहे। पत्र का नाम-

१. ज्ञानदीप
२. धर्म चक्र
३. गीता ज्ञान

इन तीनों में से जो मिल जायेगा वही रह सकेगा।

हमारी अगली योजना
गीता विश्व भारती

धर्म, दर्शन अध्यात्म और संस्कृति के क्षेत्र में यह एक छोटा सा विश्व विद्यालय होगा। इसमें अध्ययन अध्यापन अनुसंधान, परीक्षा, प्रचार और प्रकाशन इस प्रकार पांच विभाग होंगे। इसके साथ ही गीता संबंधी विस्तृत अध्ययन केन्द्र होगा। जहां गीता संबंधी सम्पूर्ण साहित्य तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। परीक्षा विभाग के अन्तर्गत चार परीक्षाएं होगी।

१. गीता प्रवेशिका २. गीता विशारद
३. गीता रत्न ४. गीता वाचस्पति

गीता वाचस्पति :-

उपाधि उन व्यक्तियों को दी जा सकेगी जो गीता रत्न सफलता से प्राप्त कर चुके होंगे और गीता संबंधी किसी एक विषय पर अनुसंधान का कार्य करेंगे। जो किसी विश्व विद्यालय से संस्कृत और दर्शन में एम.ए पास हैं उन्हें भी गीता संबंधी अनुसंधान के कार्य में प्रवेश मिल सकेगा।

योग्य और अनुभवी साहित्यकारों तथा विद्वानों को यह उपाधि सम्मान के रूप में भी दी जा सकेगी। इसका निर्णय गीता विश्व भारती की विद्या समिति कर सकेगी।

गीता रत्न :-

इसमें ८ प्रश्न पत्र होंगे। इन प्रश्न पत्रों को दो वर्ष में पूरा करना होगा।

वेद और गीता :-

१ वेद, ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय, चार वेदों में से लगभग १०८ विभिन्न विषयों के मंत्रों का अर्थज्ञान।

भारतीय दर्शन और गीता :-

२. भारतीय दर्शनों का संक्षिप्त परिचय और तर्क संग्रह, सांख्य कौमुदि और योग दर्शन, व्यास भाष्य हिन्दी अनुवाद।

कर्म योग :-

३. लोक मान्य तिलक का कर्मयोग शास्त्र।

ज्ञान योग :-

४. स्वामी शंकराचार्य का गीता भाष्य।

भक्ति योग :-

५. मधूसूदन सरस्वती तथा अन्य भक्ति प्रधान आचार्यों का गीता भाष्य।

ध्यान योग :-

६. ज्ञानेश्वरी सम्पूर्ण और गीता के छठे अध्याय का विस्तृत अध्ययन।

आधुनिक लेखक :-

७. महात्मा गांधी, विनोबा भावे, राजगोपालाचार्य, एनिबिसेन्ट आदि आधुनिक विद्वानो के गीता संबंधी विचार।

इतिहास व निबन्ध तथा संस्कृत का सामान्य ज्ञान :-

८. महाभारत का ऐतिहासिक अध्ययन, गीता संबंधी काल निर्णय, गीता पर देशी तथा

विदेशी विद्वानों की आलोचनाएँ, गीता संबंधी किसी विषय पर निबंध एवं संस्कृत का सामान्य ज्ञान।

गीता विशारद :-

इनमें छः प्रश्न पत्र होंगे। यह एक वर्ष का पाठ्यक्रम होगा।

१. वेद और दर्शन।

२. कर्म योग।

३. ज्ञान योग।

४. भक्ति योग।

५. ध्यान योग।

६. प्रधान आचार्यों और उनके सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय। आधुनिक विचार व आलोचना तथा इतिहास व निबन्ध।

गीता प्रवेशिका :-

इसमें चार प्रश्न होंगे। यह भी एक वर्ष का पाठ्यक्रम होगा।

१. १ से ६ अध्याय, अन्वय-पदछेद और अर्थ।

२. ७ से १२ अध्याय, अन्वय-पदछेद और अर्थ।

३. १३ से १८ अध्याय, अन्वय-पदछेद और अर्थ।

४. गीता की उपयोगिता और आलोचना।

नोट :-

१. समस्त परीक्षाओं का माध्यम राष्ट्र भाषा हिन्दी रहेगी।
विद्वानों से परामर्श कर विस्तृत विवरण बाद में प्रकाशित किया जा सकेगा।

२. इस कार्य की देखभाल श्रीयुत जे.डी. वैश्य भूतपूर्व डिप्टी डायरेक्टर, शिक्षा विभाग, राजस्थान, करेंगे।
उनका पता है :-

कार्यालय हिन्दी विश्व भारती
योग संस्थान, पदमा निकुंज,
बी-१९, चौमू, हाउस, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर (राज.)

संघर्ष और उत्तरदायित्व

पं. गौरीशंकर शास्त्री विद्याभास्कर,
साहित्यवेदान्तशास्त्री सांख्ययोगतीर्थ, (बनारस)

एक समय था जब विश्व में शान्ति थी, भारत स्वतन्त्र था, विश्व को ज्ञान का सन्देश देने में लगा था। जनसंख्या इतनी अधिक न थी, बस्तियाँ इतनी घनी न थीं, जंगलों का आधिक्य था, नदियों के किनारे छायादार वृक्षों के नीचे महर्षि तपस्या करते थे, शिष्यों को वेद और शास्त्र, दर्शन और राजनीति, समाज शास्त्र और सेवा शास्त्र का उपदेश देते थे। वह समय था शान्ति का, सुख का, चैन का। प्रकृति सतोगुण का प्रदर्शन कर रही थी। मानवता रजोगुण से दूर थी। आनन्द का प्रवाह था। तब इतनी चिन्ता न थी। दूध घी के लिये जंगलों में गौएं चराना और जल क्रीडा के लिए नदी का पानी पर्याप्त था। भगवान कृष्ण जैसे ग्वाले भी इसी जीवन में रहे और अपने वशी के मधुर रव से मानवता का, शान्ति का, सुख का, प्रेम का, माधुर्य का, संसार को पाठ पढ़ाते रहे। तभी का प्रतिविम्व आज हमारे प्राचीन साहित्य मे निहित है। खूब सोच विचार कर सहस्रो वर्षो की तपस्या से सचाई की खोज कर साक्षात्कार करके ऋषियों और मुनियों ने बड़े संक्षेप में अपनी भावी सन्तानों के लिए, या कहिए, प्राणीमात्र के लिए वही निःसंदिग्ध "सत्यं शिवं सुन्दरम्" की विचारधारा अपने ग्रन्थों में अकित की, पर आज मानवता अपने विकराल रूप में प्रस्तुत है। प्रकृति भी अपने रजोगुण का ताण्डव दिखा रही है। शान्ति और चैन, आनन्द और माधुर्य दूर बहुत दूर-कहीं किसी किसी के पास उषा और संध्या में या हिमाचल की कन्दराओं में बिल्कुल छिप गया है। आज संघर्ष युग है। अर्न्तराष्ट्रीय एवं भारतीय राजनीति का संघर्ष तो स्पष्ट ही है। पर इन संघर्षो के पीछे और इनसे भी विशेष महत्व के कई और भी संघर्ष हैं जिन मे से सभ्यता एवं संस्कृति का भी एक संघर्ष है। आज समस्त भूतल पर प्राचीन एवं नवीन सभ्यता का भयंकर संघर्ष चल रहा है। अर्वाचीन संस्कृति अपने सुन्दर दिखावटी तथा खर्चीले रूप में विश्व को मुग्ध करने में लगी है। इसके पेट में दावानल जल रहा है अहंमन्यता की, दूसरों को हड़पने की, मानवता को सहार करने की सामग्री इसके अन्दर छिपी है। दूसरी तरफ प्राचीन संस्कृति इने गिने महात्माओं उनके प्रेमियों या श्रद्धालुओं के मस्तिष्कों में या हमारे प्राचीन साहित्य मे छिपी पड़ी है। इसका अन्तःरूप सुंदर है पर तपस्वी और सेवक या अपने स्वार्थ को परार्थ मे अर्पण करने वाला ही उसके सौन्दर्य से अपने हृदय को सुखी बना सकता है। हरेक प्राणी नहीं। इस प्राचीन संस्कृति में त्याग और तपस्या, सादगी और रमणीयता समाज सेवा और अहिंसा अपने शुद्ध रूप मे वर्त्तमान है। इन दिनो संस्कृतियों का भयंकर संघर्ष है देखना है किसकी विजय दुंदुभी भविष्य बजायेगा। एक के प्रतिनिधि हम हैं क्योंकि उस संस्कृति के जन्मदाताओ की हम संतान हैं। दूसरी संस्कृति के उपासक विश्व को इस समय पर्याप्त संख्या में मिले हुए हैं। देखिए- भविष्य में क्या होता है। झोपड़ियाँ बचती हैं या राज प्रासाद मलमल या खद्दर टोप या गाँधी टोपी, बूट या चप्पल, पाउडर या यज्ञभस्म गृह-उद्योग या बडे बड़े कारखाने। □

साम्यवाद क्या है?

पं. गौरीशंकर जी शास्त्री विद्याभास्कर,
बीकानेर

संसार में अब तक जितनी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रांतियां हुई हैं उनमें सब से अधिक शक्तिशाली तथा महत्वपूर्ण १९१७ की रूस की साम्यवादी-क्रांति है। दूसरी कांतियों का प्रभाव एक या कुछ अधिक देशों पर ही हुआ पर साम्यवाद का शंखनाद चारों दिशाओं में व्याप्त है। बड़ी से बड़ी सरकारें इससे सदैव सशंकित रहती हैं। सीन्यौर, मुसोलिनी, जो अभी हाल ही में अबीसीनियों के वीरों को दासाता की बेड़ियां पहना चुका है, इसके नाम से कांपता है हरहिटलर, जिसके नाजीनाद की आड़ में यहूदियों पर किये गये घोर अत्याचार के कारनामे भुलाये नहीं जा सकते साम्यवाद को अपना प्रबल शत्रु समझता है। ब्रिटिश-साम्राज्य भी, जिसने मार्शल-लॉ के दिनों में बहादुर पंजाबियों के खून से अमृतसर में नदियां बहा दीं थीं, आज साम्यवाद के बढ़ते हुए प्रभाव से भयभीत है।

यह क्रांति मजदूरों और किसानों से सम्बन्ध रखती है क्योंकि वह हजारों वर्षों के पीड़ित किसानों और मजदूरों की आहों से उठी हुई क्रांति है। यह सब दावानल है जो यूरोप और एशिया को ही नहीं अपितु समस्त भूमण्डल को जलाकर शुद्ध रूप से फिर से पेश करेगी। साम्यवाद की कोई गंभीर परिभाषा नहीं है। इसका सीधा सादा अर्थ यह है कि मनुष्य-समाज बराबर है। न कोई किसी का महाराज, न स्वामी न सेवक। पृथ्वी किसी व्यक्ति विशेष की नहीं है उस पर सबका समान अधिकार है प्रकृति सबके लिए समान है, जो परिश्रम करेगा वही उसका फल खावेगा।

आजकल यद्यपि संसार में भोजन-सामग्री तथा जीवन के आवश्यक अन्य पदार्थों की भरमार है तथापि संसार की आबादी का एक बहुत बड़ा भारी भाग बेकार दुःखी और दरिद्र है। एक तरफ आलीशान अट्टालिकाएं और सुन्दर सुन्दर होटल बने हुए हैं लेकिन उन्हीं के पिछली तरफ फूस की बनी हुई झोपडियां खड़ी हैं। जो बरसात में टपकती हैं और गर्मियों में लू से उखड़ जाती हैं। एक तरफ इतना नाज पड़ा है जो समुद्रों में फैंका जा रहा है- इसलिए कि कहीं बाजार भाव में मन्दी न आ जाय और दूसरी तरफ बेचारे किसान जिन्होंने कि उसे अपने खून को पसीने के रूप में बहाकर पैदा किया था भूख के मारे तड़प रहे हैं। और अपने पेट पर पत्थर बांध कर अपने भूखे बच्चों को गले से चिपटाकर पौष की रातें गुजारते हैं। एक तरफ एक व्यक्ति के पास इतने सूट

है कि रोज नये नये बदलने पर भी खत्म नहीं होते और दूसरी तरफ उन गरीब मजदूरों के बच्चे शीतकाल में नंगे फिर रहे हैं जिन्होंने अपने परिश्रम से हजारों मन कपास पैदा किया था। उन किसानों की धोतियाँ घुटनों से नीचे नहीं उतरती जो अपने खेतों में लाखों मन रुई प्रति वर्ष पैदा करते हैं। इतना ही नहीं यहाँ तो बेकारी की भीषणता के कारण देश के होनहार नवयुवक विवश होकर आत्महत्या का आश्रय ले रहे हैं। संसार की इस विषम और भयंकर परिस्थिति को मिटाने के लिये केवल साम्यवाद ही वह प्रणाली है जो सम्पूर्ण विषमता को मिटा कर समता में परिणत कर सकती है। आचार्य कार्ल मार्क्स के इस आर्थिक सिद्धान्त को पहले पहल रूस के भाग्य विधाता निकोलायलेनिन ने रूस में व्यापारिक रूप दिया, जिसके फलस्वरूप आज वहाँ सुख और शान्ति का राज्य है, बेकारों की समस्या नहीं है, मजदूरों की हड़तालें नहीं, और किसानों के विद्रोह भी नहीं हैं। जहाँ के जेल और न्यायालय सुधार के सच्चे नमूने हैं, जहां बेड़ियों और फांसी के तख्तों ने प्रेम और सहानुभूति का शुद्ध चोला पहन रक्खा है। तभी तो आज उसे सारी दुनियां आश्चर्य से देख रही है।

साम्राज्यवाद, जनतन्त्रवाद, नवीन सैनिकवाद (फैसिज्म) सारे के सारे केवल समाज के एक विशेष वर्ग को लाभ पहुँचाते हैं, वह वर्ग भी समूचे मानव-समाज का एक क्षुद्रतम अंश है, इसीलिये जहां प्रजातन्त्र फैसिज्म तथा साम्राज्यवाद है, वहाँ पर भी मजदूरों की हड़तालें और आत्महत्या के भीषण नजारे दृष्टिगोचर होते हैं, क्योंकि पूंजीपतियों के स्वार्थों को पूर्ण करना ही वहाँ की सरकारों का प्रधान कर्तव्य है और ठीक भी है क्योंकि उन्हीं की पूंजियों पर वहाँ की सरकारें स्थिर है।

इसीलिए पण्डित जवाहरलाल नेहरू स्वतन्त्रता के साथ-साथ साम्यवाद को भी भारत में लाना चाहते हैं। वे साम्राज्यवाद और पूंजीवाद को भारत से निकाल फैंकना चाहते हैं। उनका किसी पूंजीपति से वैयक्तिक द्वेष नहीं है बल्कि भारत के गरीबों और बेकारो की आहें उनके कोमल हृदय को चैन नहीं लेने देतीं। वे उनके दुःख से दुःखी हैं। वे साम्यवाद को ही इस दुःख का इलाज समझते हैं। क्योंकि देश की दशा विज्ञान और तर्क इसी का अनुमोदन करते हैं।

□

विकास पुरुष - डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

- किशनलाल बैद

सामान्य जन को प्यार व आत्मीयता लुटाते हुए जो व्यक्ति सच्चे मन व लगन से समाज व राष्ट्र सेवा में अपना सर्वस्व अर्पित कर देता है, ऐसे महा मनीषी को वक्त के लम्बे अंतराल के बाद भी जन मानस अपनी यादों में पूजनीय की तरह संजोकर रखता है। डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य हमारे समाज की ऐसी विभूति हैं जिन्होंने शिक्षा के प्रसार, राष्ट्रीय व सामाजिक समस्याओं के निवारण, नैतिक जागरण व आध्यात्मिक विकास को गतिशील करने हेतु नि:स्वार्थ भाव से अपना जीवन एक युगसृष्टा की तरह राष्ट्र व समाज को अर्पित कर दिया।

बीकानेर संभाग व विशिष्ट रूप से सरदारशहर तहसील का ग्रामीण अंचल आचार्य जी की योजनाओं व कल्पनाओं का प्रयोगात्मक क्षेत्र रहा है। इस मरुभूमीय क्षेत्र का ग्रामीण अज्ञानता, अंधविश्वास, अशिक्षा, बीमारी व गरीबी के पाश में आकंठ जकड़ा हुआ था। ग्राम्य जीवन यातनाओं व अकाल की काली छाया में आबद्ध था। गांवो की जरजर स्थिति ने आचार्यजी के संवेदनशील दिल पर चोट पहुँचाई। इस भयंकर त्रासदी वाली परिस्थिति से ग्रामीण क्षेत्र को उबारने के लिए उन्होंने गांधी दर्शन पर आधारित रोजगारोन्मुखी बुनियादी शिक्षा को कारगर माना। क्षेत्रीय विकास के लिए आचार्य जी ने अपने साथियों के साथ विचार मंत्रणा करने के बाद राष्ट्र के प्रथम 'ग्रामीण विश्व विद्यालय' का प्रारूप गांधी विद्या मंदिर के रूप में तैयार किया। वृहद् योजना इसके लिए सारी व्यवस्थायें उसी अनुरूप चाहिए, जन सहयोग से विशाल भू-भाग ११७५ एकड़ संस्था को मिलने के पश्चात् उस बड़े भू भाग जो कि रेतीली बंजर व बीहड जंगलाती भूमि थी उसको विकसित करने की चुनौती थी। आचार्य जी व उनके नजदीकी साथियों ने उस जंगल में ही कुटिया बनाकर परिवार सहित रहना शुरु कर दिया। साथी व सहयोगी आचार्य जी के चुम्बकीय व्यक्तित्व के साथ जुडे हुए थे। उनकी वाणी में सरस्वती अवतरित थी। वाक्पटुता, समझने-समझाने मे दक्षता, परस्परिता व सहकारिता की भावना, साथियों में गुण व अच्छाइयों को उभारना तथा धीर व धैर्य ने आचार्य जी को जनता की नजर में बहुत उच्च पद दिलाया। आचार्य जी के जीवन के अनेक पहलू हैं। एक आदर्श शिक्षक, उच्चकोटि के भाषाविद् संस्कृत के तलस्थ विद्वान, आयुर्वेद ज्ञाता व दार्शनिक। आपका चिन्तन ज्ञान गहराइयों से सिक्त होता है इसलिए व्यावहारिक धरातल पर खरा उतरता है।

राष्ट्रीय शिक्षा के मानचित्र में गांधी विद्या मदिर अग्रणी शिक्षण संस्थान है, सरदारशहर का

ग्रामीण क्षेत्र भी निरन्तर विकासशील है। आचार्यजी का स्वभाव रहा है कि प्रोजेक्ट के प्रगति पर आने के बाद उसके प्रबन्धन भार से मुक्त हो जाते हैं। इस प्रकार भारत में अनेकों अनेक उच्च स्तरीय संस्थान इनके सतत् प्रयास व योगदान से गठित हैं जो निरन्तर प्रगतिशील हैं।

आचार्य जी के बारे में हमारे क्षेत्र में आम बात सुनने को मिलती है कि ऐसा सनकी, जूनूनी व जुझारू व्यक्ति खोजने से भी अन्यत्र नहीं मिलेगा। सुन्दर-सलौनी गौरवर्णी काया वाला सुदर्शन युवक, जिसकी पहली झलक ही प्रभावित करती थी वह बिना किसी भौतिक सुख व भौतिक प्राप्ति के इन कांटों भरे रास्तों में परिवार सहित क्यों तकलीफ पाता है? आचार्य जी बड़े जीवट वाले व्यक्ति हैं- जिस परिकल्पना को उनके दिल व दिमाग ने स्वीकृति दे दी उस योजना को मूर्तरूप देने के लिए एक तपस्वी योगी की तरह साधना की धूनी रमा लेते थे, उनके नेक व पवित्र उद्देश्य वाले कार्यों से बाधाएँ स्वयं दूर होनी शुरु हो जाती थी। ऐसे तपे मंजे, निष्ठावान व समर्पित राष्ट्र व समाज सेवी तो मिसाल ही रह गए है। डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य अपने जीवन के ९१ वे वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। हम सभी के लिए अत्यन्त गौरव व आनन्द का प्रसंग है। आप हमारे समाज की धरोहर हैं - आप शतायु व दीर्घायु हों तथा समाज व राष्ट्र को लंबे समय तक मार्गदर्शन देते रहें। इस मंगल अवसर पर श्रृद्धावत् होकर मैं आपको अपनी शुभकामना प्रेषित कर रहा हूँ।

ए-५३/५४, सैक्टर-१६,
विद्युत नगर, नोएडा

"गीता कामधेनु की भांति है, जो सारी इच्छाओं को पूरी करती है। अत: वह माता कहलाती है।'' "जो गीता का भक्त है, उसके लिये निराशा की कोई जगह नहीं। वह हमेशा आनन्द में रहता है।'' "अनासक्ति पूर्वक सब काम करना ही गीता की प्रधान ध्वनि है।''"मैं तो अपनी सारी कठिनाईयों मैं गीता के पास दौडता हूँ और अब तक आश्वासन पाता आया हूँ।''

-महात्मा गॉधी

मेरे गुरु : आचार्य गौरीशंकर जी

- डॉ. बुधमल शामसुखा
निदेशक

आचार्य गौरीशंकर जी मेरे गुरु हैं। उनके श्री चरणों में श्रद्धा विनीत शत:शत: प्रणाम। मेरे लिए पांच पुरुष गुरु-भाव से प्रणम्य हैं।

१. मास्टर श्री खेतूलाल जी शर्मा
२. आचार्य श्री गौरीशंकर जी
३. मेरे मामा श्री बालचन्द जी नाहटा
४. डॉ. श्री नथमलजी टांटिया
५. वन्दनीय श्रीमद्जैनाचार्य तुलसी

आचार्य गौरीशंकर जी ९१ वे वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। उनके प्रत्यक्ष मंगलाशीष का सतत् अनुभव करता हूँ। मेरे अन्य चारों गुरु कीर्तिशेष दिवंगत हो गए हैं। उनकी अप्रत्यक्ष सत्प्रेरणा सदैव मेरे साथ है।

कौन गुरु ? कैसा गुरु ?

गुरु विषयक मेरी धारणाऐं सामान्य से कुछ भिन्न हैं। भारतीय चिन्तन में गुरु की अवधारणा विस्तार बहुल है। शास्त्रों में गुरु की अपार महिमा बताई गई है। कहा गया है, "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर:। गुरु साक्षात परब्रह्मा तस्मै श्रीगुरुवे नम:।'' इस कथन में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और साक्षात् परब्रह्म तुल्य बताकर उसके आध्यात्मिक स्वरूप को इंगित किया गया है। कहते हैं कि गुरु कृपा के बिना भगवत्दर्शन और आत्मसाक्षात्कार दुर्लभ है। हमारे धर्म-गुरु, योग-गुरु, ध्यान-गुरु आदि इसी कोटि में आते हैं। इनमें से अधिकांश गुरु-दीक्षा, गुरु-मंत्र तथा गुरु-धारणा देते दिलाते हैं। अपने शिष्य बनाते हैं और अपने अपने धर्म-संघों एवं धर्म-सम्प्रदायों का विस्तार करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य अपने अनुयायियो को संसार से उदासीन रहकर मोक्ष-मार्ग का उपदेश देना और स्व-कल्याण के लिए आत्म-साधना की शिक्षा देना होता है।

ये गुरुजन रहते तो इसी संसार में हैं, लेकिन इस संसार के लिए जीते नहीं हैं। उनके लिए संसार असार है। यह उनका घर नहीं है, बल्कि परमार्थ-सिद्धि के मार्ग का सोपान मात्र है। इनके लिए इस संसार की सुख-शान्ति एवं समृद्धि का अर्थ ऐसी स्थिति मात्र से होता है जिसमें इन की साधना निर्विघ्न चलती रहे। भौतिक प्रगति इनकी साधना का प्रासंगिक फल हो सकता है, उनके जीवन

का लक्ष्य नहीं है। शास्त्रों में वर्णित गुरु महात्म्य का दुरुपयोग कर स्वयं को सद्गुरु और दूसरों को कुगुरु सिद्ध करने वाले पाखण्डी भी कम नहीं हैं। ऐसे गुरुओं का काम मनुष्य और मनुष्य के बीच भेद की दीवार खडी करना और सम्प्रदाय बोध जगाना एवं अन्धविश्वास उत्पन्न करना होता है। वे मेरे गुरु कैसे हो सकते हैं ?

सामान्य व्यवहार में पट्टी पाठशाला में ककहरा पढाने वालों से लेकर विश्व-विद्यालय की उच्च कक्षा के प्राध्यापक तक को गुरु कहने का रिवाज है। मेरे प्रारम्भिक शिक्षा काल से लेकर विश्व-विद्यालय तक के अध्ययन काल में मुझे अनेक स्नेहशील, सहृदय एवं विद्वान शिक्षकों से पढने का मौका मिला है। उनके मैंने बहुत कुछ सीखा, पाया है और उनके प्रति मेरे मन में अगाध श्रद्धा सम्मान है लेकिन गुरु-भाव का कुछ विशेष अर्थ होता है।

कभी कभी व्यंग्य की भाषा में हम चाक-चुस्त चतुर आदमी को भी गुरु कहते हैं, जो अपना काम चुटकियों में बजा ले जाते हैं। ऐसे लोगों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। वे मेरे गुरु नहीं हैं अपितु दूर से ही प्रणाम करने लायक हैं।

गुरु पद का अधिकारी

मेरी दृष्टि में ऐसा पूज्य पुरुष गुरुरूप से वन्दनीय होता है, जो हमारे जीवन में संकल्प-शक्ति, स्वावलम्बन, आचार-व्यवहारों में प्रामाणिकता एवं उच्चतर जीवन मूल्यो के प्रति हमारी आस्था जगा दे एवं राष्ट्र तथा समाज के प्रति सम्यक् उत्तरदायित्व वहन की सत्प्रेरण देने वाला हो। वह हमारे उत्तरोत्तर विकास में एक सच्चे मित्र, जीवन-दृष्टि-दाता और मार्गदर्शक का काम करता है।

गुण कभी एक साथ और एकमुश्त नहीं मिलते हैं। जीवन में उनका विकास क्रमिक होता है। मेरे पाँचों गुरु कभी अलग-अलग और कभी समग्र रूप से मेरे लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। मेरे जीवन की न्यूनताएँ मेरी अपनी है और कुछ उत्तम है गुरुजनों की देन हैं। मेरे जीवन निर्माण में आचार्य गौरीशंकर जी का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है।

आचार्य जी मेरे ज्ञान गुरु

वे पहली बार सरदारशहर (तत्कालीन जि. बीकानेर) आये तब बहुत कम लोग उन्हें पहचानते थे और यह जानते थे कि आचार्य गौरीशंकर जी नगर के गणमान्य वकील पं जगनराम जी के सुपुत्र हैं। उन दिनों मैं सातवीं कक्षा में पढने वाला किशोरवय विद्यार्थी मात्र था। जीवन के इस वय: सन्धिकाल में कल्पना का प्रवाह और भावनाओ का ज्वार तीव्रतम होता है। यही वह अवस्था होती है जब सुयोग्य मार्ग-दर्शक गुरु की पद पद पर आवश्यकता होती है। मेरे बाल गुरु श्री खेतूलाल जी शर्मा ने चरित्र निष्ठा, आत्म निर्भरता, समाज सेवा, देश प्रेम आदि गुणों की महिमा तो

समझायी थी लेकिन इन गुणों का कोई स्वरूप मेरी अपरिपक्व बुद्धि में नहीं बन पा रहा था। इन संस्कारों को सही परिप्रेक्ष्य में समझने और उनको व्यवहार में उतारने का ज्ञान आचार्य गौरीशंकर जी से मिला है।

उनके प्रथम दर्शन में ही मैं अभिभूत हो गया था। तब मुझे लगा था कि ईश्वर ने मेरा मार्ग-दर्शन करने के लिए अपना कोई देवदूत भेजा है। जब हम नौवीं कक्षा में पहुँचे, आचार्य जी हमारी स्कूल में संस्कृत के अध्यापक नियुक्त होकर आ गए थे। अगले वर्ष दसवीं कक्षा खुलने वाली थी। हम इस प्रकार हमारे नगर हाईस्कूल के प्रथम बैच के विद्यार्थी थे। स्कूल के विद्यार्थी उनके स्नेहशील चुम्बकीय व्यक्तित्व और शिक्षक उनकी नम्रता और विद्वत्तता बडे प्रभावित थे। स्कूल के तत्कालीन हेडमास्टर साहब को मैंने एक बार यहाँ तक कहते सुना था, 'काश मै आचार्य जी की कक्षा का विद्यार्थी होता।'' हमारे उन हेडमास्टर साहब का नाम सी.पी.कपूर था।

हम कुछ विद्यार्थी उन्हें रात दिन घेरे रहते थे। उनमें स्वर्गीय राधाकृष्ण गोयल, दीपचन्द नाहटा, डॉ. मूलचन्द सेठिया, सुमानचन्द चाण्डक, पूनमचन्द्र पंसारी आदि हम लोग विशेष रूप से साथ रहते थे। श्री पूर्णचन्द्र मीमाणी यद्यपि आगे के अध्ययन के लिए चूरु चले गए थे, फिर भी उनके गहरे सम्पर्क जुड़े हुए थे। यहाँ तक कि आचार्य जी के साथ हुई ज्वालापुर महाविद्यालय के यात्रा-प्रवास में श्री मीमाणीजी पूनमचन्द पंसारी और मैं लम्बे समय तक आचार्य जी के साथ रहे थे। वे उन दिनों स्वयं गायत्री जाप किया करते थे और हमें गीता भी पढाते थे।

इस प्रकार स्कूल के भीतर और बाहर सन् १९३७-१९३८ वाले शिक्षा सत्र से सन् ई १९४२ तक के चार पांच वर्षों तक मुझे उनका भरपूर स्नेह और मार्ग-दर्शन मिला है। उन्होंने मेरे मन में साहित्य और दर्शन के अध्ययन की अमिट भूख जगायी है, जो आज भी मिटती नहीं है। वे मेरी किशोर सुलभ हर समस्या के समाधान थे। मैंने पूछा 'चाय पहले पीनी चाहिए या पानी', आचार्य जी का जवाब आया, "जो कुछ मिले खापीकर ऊपर से गर्म पानी (चाय) पी लो।'' मेरी जिज्ञासा थी, "महात्माओं से कैसे मिलना चाहिए?'' आचार्य जी ने पट समाधान दिया, "भई ! मै तो महात्माओं से बहुत डरता हूँ। वे मुरकी डालकर अपने पीछे लगा लेते हैं। उनसे दूर से ही मिलना अच्छा है।'' मैंने जानना चाहा, "जीवन में आस्तिक बनना चाहिए या नास्तिक।'' वे तपाक से बोले, "बुधमल ! बस कुछ बनना चाहिए। तुम आस्तिक या नास्तिक जो बनो, लेकिन नम्बर एक बनो।'' आज सोचता हूँ तो लगता है, पहला उत्तर स्वास्थ्य का, दूसरा स्वतंत्र व्यक्तित्व निर्माण का और तीसरा स्वतंत्र चिन्तन की गहरी प्रतिष्ठा के तीन सूत्र हैं।

अब तीस-बत्तीस वर्ष गुजर गए हैं। आचार्य जी कलकत्ता आये हुए थे। भारत प्रख्यात सरदारशहर की शिक्षण-संस्था गाँधी विद्यामन्दिर के काम से पधारे थे। गाँधी विद्या मन्दिर सेठ श्री

कन्हैयालाल जी दूगड़ (सम्प्रति स्वामी श्री रामशरणदास जी) एवं आचार्य श्री गौरी शंकर जी के मणि-कांचन सम्बन्ध और साधना का सुफल है। सुतरां मैं आचार्य जी को सदैव उस संस्थान के सह-संस्थापक के रूप में ही देखता हूँ। उस समय के अल्प-प्रवासकाल में उन्हें मेरे साथ सह निवास का थोडा सा समय मिल गया था। मेरी टेबल पर पड़े दर्शन-शास्त्र के ग्रन्थों को देखकर उन्होंने सहज भाव से पूछा 'ये क्या कर रहे हो?'' मैंने कहा, "भारतीय चिन्तन में परामनोविज्ञान के तत्व'' विषय पर पीएच.डी के लिए थीसिस लिखने की तैयारी कर रहा हूँ।'' वे बोले तो लिख दो, बस तुरंत लिखो। मैंने निवेदन किया 'मुझ में अक्ल नहीं है, और आप जैसा निर्देशक नहीं ढूंढ पा रहा हूँ।'' आचार्य जी ने कहा तो पूछ लो, क्या पूछना है?'' मैंने बताया मेरी बाधा 'सांख्य' है। सांख्य-दर्शन में प्रकृति को केन्द्र मानकर सृष्टि-रचना की व्याख्या हो जाती है, फिर भी उसमें साक्षी रूप ईश्वर को मान लेने से मुझे परामनोविज्ञान के साथ सांख्य की तुलना करने में बाधा हो रही है।'' उन्होंने समाधान दिया, 'यह कोई बाधा नहीं है। लिख दो ईश्वर की अवधारणा सांख्य में बाद के भाष्यकारों ने जोड दी है, मूल सांख्य दर्शन में ऐसा कुछ नहीं है।'' मेरा मार्ग सरल हो गया था।

आचार्य गौरी शंकर जी के लिए दर्शन-शास्त्र की उलझी हुई समस्याओं का समाधान हस्त आमलकवत् है। वे सच्चे अर्थों में दर्शन पण्डित हैं।

नई चेतना के पुरोधा

सरदारशहर आगमन के बाद थोडे से दिनों में ही आचार्यजी सर्वजनप्रिय हो गए थे। उनकी वाणी के हर शब्द से मिठास टपकता था। उनके सरल, आत्मीय व्यवहार में निष्कपटता झलकती थी। उनके स्वभाव में मृदुता और मुदिता का अपूर्व संगम था। नगर निवासयों ने पहचान लिया था कि उनके नगर में कोई विलक्षण पुरुष आया है। वह विद्वान है। ज्ञानी है। सौ टंच खरा सोना है। उन्हें विश्वास हो गया था कि यह अपने ज्ञान की तिजारत नहीं करेगा। उसे बेचेगा नहीं और खुद बिकेगा भी नहीं। यह अपने ज्ञान को मुक्तहस्त बांटेगा। नई चेतना जगाएगा। लोक-अनुमान बहुधा सच निकलता है। आचार्यजी लोक-प्रचेता थे।

उस समय विश्व जबर्दस्त संक्रान्ति काल से गुजर रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्ति की ओर था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गति तीव्रतम हो रही थी। युद्धजनित बुराइयों और कठिनाइयों में वृद्धि हो रही थी। देशी रियासतों की स्थिति बडी विचित्र थी। राजनैतिक चेतना से हीन, शिक्षा से शून्य, सर्वत्र कठोर सामन्ती व्यवस्था का बोलबाला था। राजनैतिक स्वतंत्रता और जनाधिकारों का नाम लेना जैसे पाप हो।

इस प्रकार की परिस्थितियों में आचार्य जी ने शिक्षा और साहित्य के विकास को केन्द्र में

रखकर लोकचेतना जगाने का निर्विवाद मार्ग इख्तियार किया। सरदारशहर में हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना, समिति के अन्तर्गत अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए नवयुवकों का संगठन, जनसभाओं और विचार संगोष्ठियों के आयोजनों आदि अनेक प्रवृत्तियाँ प्रारम्भ हो गयी थीं। आचार्य जी ने उन्हीं दिनों बीकानेर राज्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन का गठन कर उसका पहला अधिवेशन सरदारशहर में करवाया। बीकानेर एवं उसके आसपास के शिक्षा-विदों, शिक्षितों और चेतना सम्पन्न कार्यकर्ताओं के पारस्परिक मिलन-चिन्तन का यह अपूर्व अवसर था। इसका प्रभाव बड़ा व्यापक और प्रेरक हुआ। आसपास के सभी नगरों में साहित्य के माध्यम से लोक-चेतना जागरण के लिए कहीं विशेष और कहीं छिटपुट काम शुरु हो गया था। अनेक स्थानों पर पुस्तकालय स्थापित हुए और अध्ययन-चिन्तन के केन्द्र बन गए। सरदार शहर के प्रायः हर मोहल्लों में वाचनालय खुल गए थे। यों यहाँ तो हमने एक चलती फिरती सभा भी बनायी थी, जो प्रतिदिन सांयकाल ताल के खुले मैदान में आयोजित होती थी। उसकी गतिविधियों की रिपोर्ट तत्कालीन गुप्तचर विभाग में आज भी दर्ज हैं।

उन दिनों गौरीशंकर जी का कोई विरोधी नहीं था, कोई प्रतिस्पर्धी नहीं था। वे अनामी रहकर ही प्रेरक बनते थे। उनमें सस्ती प्रचार वृत्ति की भूख हमने कभी नहीं देखी। यश कीर्ति के लिए वे कभी लालायित नहीं रहे।

शिक्षा, गौसेवा और आयुर्वेद के क्षेत्र में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर स्पृहणीय कार्य किए हैं। उन सबके लिए अधिक जानकारी, अधिक स्थान और स्वतंत्र विवेचन अपेक्षित है।

राजनीतिक नेतृत्व के हकदार

अगर हम थोडा-सा अनाग्रहपूर्वक विचार करें तो इस क्षेत्र की राजनीति में जनप्रतिनिधित्व के प्रथम हकदार आचार्य गौरीशंकर जी थे। उनमें एक सच्चे राष्ट्र-सेवक और जननेता के सभी गुण मौजूद थे। वे अपने क्षेत्र के लोकजीवन की समस्याओं को जानते थे और उनके निराकरण का मार्ग भी। उनकी योग्यता, सच्चाई और सार्वजनिक ईमानदारी के सभी कायल थे। सच कहें तो, आजादी के बाद वाली सत्ता की चुनावी राजनीति में उनके गुण ही उनके मार्ग की बाधा बन गए। उन्हें मुगालते में रखकर दूसरे चतुर लोगों ने उनका हक छीन लिया। इस क्षेत्र की जनता राजनीति के इन दॉवपेचों को समझ तक नहीं पायी और आचार्य जी की राजनैतिक सेवाओं से वंचित रह गई। जनता का यह दुर्भाग्य था। आचार्य गौरीशंकर जी का यह सौभाग्य सिद्ध हुआ कि वे दागदार राजनेताओं की जमात के भागीदार बनने से बच गए। विधानसभाओं की तो बात ही क्या करें आज तो यह भी प्रश्न बन गया है कि हमारे पूज्य सांसदों में से कौन कितना विश्वसनीय रह गया है। भारतीय राजनीति में पतन की यह प्रक्रिया संविधान की स्वीकृति के साथ ही प्रारम्भ हो गयी थी।

आचार्य गौरीशंकर जी की तरह ही भारतीय मनीषा के हरण का यह राजनैतिक पतनोन्मुख खेल स्थायी जैसा हो गया है। इसके अनेक कारण हैं। राजनीति के भीतर ही भीतर एक लघु राजनीति पनपती रहती है। वह बडी क्षूद्र और अनिष्टकारी होती है। उसके साथ जातिवाद, धर्म-सम्प्रदायवाद, भाई भतीजावाद, निजी स्वार्थसिद्धि एवं धनतंत्र के कुप्रभाव का दुष्चक्र पनपता तथा पुष्ट होता रहता है। इन सबके चलते नये नये सामन्त पैदा हो गए हैं। वे पुराने सामन्तों से अधिक टुच्चे और खतरनाक हैं। अगर हम इस नये सामन्तवाद की पुराने सामन्तवाद से निष्पक्ष तुलना करें तो लगेगा कि हमारा प्रजातंत्र झूठा है। हमने प्रजातंत्र के नाम से पाया कम है, खोया अधिक है। यह ऐसी राजनीति है जिसमें धोखेबाज, बौने लोग कद्दावर बन जाते हैं और जो कद्दावर हैं और जिन्हें कद्दावर होना चाहिए वे पीछे ढकेल दिये जाते हैं या पीछे हट जाते है। पूरे राष्ट्र की यही स्थिति है। आचार्य गौरी शंकर जी भी इसके अपवाद नहीं हैं। वे न तो अपने नैतिक मानदण्डों से नीचे उतर कर ऐसे घृणित नीचे स्तर की राजनीति कर सकते थे और न भ्रष्टाचार की राजनीति के साथ निम्नस्तर के समझौते। इसलिए राजनीति उन्हें फलदायी नहीं हुई।

अब उन जैसे लोगों की आवश्यकता है और यह अवसर था जब वे राष्ट्रीय जीवन के गिरते हुए मूल्यों को उबारने के लिए युवा जुझारू शक्ति का क्रान्तिकारी संगठन कर पाते, लेकिन वे अब उम्र और स्वास्थ्य से क्षीण हो गए हैं। उनका यह अधूरा काम उनके शिष्यों का आह्वान कर रहा है।

मैं, मेरे गुरु गौरी शंकर जी आचार्य के आशीर्वाद का अनुभव कर रहा हूँ। वे शतायु हों, अमरकीर्ति हों और मुझे आशीर्वाद देते रहें।

नई दिल्ली-२१

"मेरा शरीर माँ के दूध पर जितना पला है उससे कहीं अधिक मेरा हृदय व बुद्धि दोनों गीता के दूध से पोषित हुए हैं।''"जीवन के विकास के लिए आवश्यक प्राय: प्रत्येक विचार गीता में आ गया है। इसलिये अनुभवी पुरूषों ने यथार्थ ही कहा है कि गीता धर्म ज्ञान का एक अमर कोष है।''

-सन्त विनोबा

निबन्ध की तथ्यावलि आचार्यजी के प्रमुख एवं प्रिय सहकर्मी शिष्य श्री पूर्णचन्द्र मीमाणी द्वारा लेखक को संभरित तथा कलमबद्ध आलेख भी उनके द्वारा संपादित।

सरदार शहर में देवदूत सदृश आये आचार्य गौरीशंकर जी की देन

-डॉ. शेरसिंह बीदावत

हितोपदेश की प्रस्ताविका के सातवें श्लोक में लिखा है कि प्रतिष्ठा-सिद्धि के लिए दो विधाएँ हैं- एक शस्त्र की, दूसरी शास्त्र की। पहली (शस्त्र विद्या) बुढ़ापे में हास्य और दूसरी (शास्त्र विद्या) सदा आदर कराती है।

विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे विद्ये प्रतिपत्तये
आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाद्रियते सदा।।

श्रद्धेय आचार्यजी दूसरी विद्या के अधिकारी मनीषी हैं जिनकी लगभग नब्बे वर्ष की वय में यह अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। उनके इस सार्वजनिक सम्मान में मेरा भी दूर बैठे हार्दिक सहभाग एवं उनके शतायु होने हेतु शत-शत शुभैषाएँ !

संसार में दो पेशे सर्वाधिक पवित्र माने जाते हैं- पहला शिक्षा और दूसरा चिकित्सा का। जहाँ चिकित्सा जीवन बचाती है, वहाँ शिक्षा जीवन बनाती है। आचार्य जी मूल रूप से शिक्षक रहे हैं। सन् १९४० में आचार्य जी सरदारशहर नये नये खुले गंगा गोल्डन जुबली हाईस्कूल में राजकीय अनुबंधाधीन संस्कृत शिक्षक पद पर नियुक्त हुए। मेरे इस विद्यालय में प्रवेश से पूर्व ही आचार्यजी अन्यत्र स्थानान्तरित हो चुके थे, पर मुझे प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर में उनका आगमन वरदान सिद्ध हुआ। अत्युक्ति नहीं होगी अगर यह कहा जाये कि वे यहाँ मानो देवदूत बन कर आये। वे महामना मालवीय जी के बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में आचार्य उपाधि लेकर आये। वहाँ अपने शिक्षाकाल में उन्होंने ढाई हजार प्रतियोगियों के मध्य गीता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक भी अर्जित किया और स्वयं मालवीय जी द्वारा प्रशंसित हुए।

सरदार शहर में आचार्यजी हालाँकि तब तीन या चार साल ही रहे, पर उस अल्पावधि में ही नगर में बहुमुखी जागरण की जबरदस्त लहर उत्पन्न कर दी। उनके आगमन से पूर्व सन् १९२५ से मनोरंजन नाट्य परिषद नामक एक सांस्कृतिक संस्था तो जरूर काम कर रही थी, पर साहित्यिक गतिविधियों का पूर्ण अभाव सा ही था। कई प्रमुख वैद्यों यथा पं. हिमकर जी, पं लक्ष्मीनारायण जी आदि और संस्कृतज्ञ पण्डितों ने मिल कर सन् १९३८ के अंत या १९३९ के आरम्भ में साहित्य समिति की स्थापना तो कर दी पर कोई गतिविधियां खास आरम्भ नहीं हुईं। सन्

१९४० के शैक्षिक सत्रारम्भोपरान्त आचार्य गौरीशंकर जी के आगमन के बाद उनकी प्रेरणा से पठन-पाठन, लेखन-भाषण तथा साहित्यानुशीलन की विभिन्न गतिविधियाँ सवेग चल पड़ीं। आचार्य जी ने हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति प्रबल प्रेम उत्पन्न कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण और राष्ट्र प्रेम की भी अपूर्व ज्योत जलादी। साहित्य के क्षेत्र में महावीर प्रसाद द्विवेदी युग से नव चेतना और सर्जना की लहर सी पूरे देश में प्रवहमान् हो गई थी, वह राजस्थान के मरुस्थली अंचल यथा चूरु, रतनगढ़, सुजानगढ, लाडनूँ, सरदारशहर आदि नगरों में तथा उनमें भी सरदार शहर में विशेष रूप से चल पडी जिसका श्रेय प्रमुखत: आचार्य गौरीशंकर जी को ही जाता है।

आजकल सरदारशहर के मुख्य बाजार के बीच जहाँ जैन तेरापंथी भवन बना हुआ है, वहाँ उन दिनों साहित्य समिति का कार्यालय और उसकी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बना हुआ था। आचार्य गौरीशंकर ने साहित्य समिति की अन्तर्भूत प्रवृत्ति के रूप में 'हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना कर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की प्रथमा, मध्यमा (विशारद) और उत्तमा (एम.ए की समकक्षवर्तिनी 'रत्न') परीक्षाएँ देने के लिए छात्रों और स्कूलों से निकले युवजनों को अभिप्रेरित किया। पढाई की सारी व्यवस्था विद्यापीठ की तरफ से की गई। इस हेतु ग्रन्थों का 'बुक बैंक' भी खोला गया। सैकडों की संख्या में छात्र मुख्यत: इन तथा देवघर की 'साहित्यालंकार' और पंजाब विश्वविद्यालय की 'प्रभाकर' आदि परीक्षाओं में सफलता पूर्वक बैठे। इससे उन दिनों युवजनों का हिन्दी भाषा और साहित्य तथा राजनीति, दर्शन आदि विषयों का ज्ञान परवान चढ़ गया। उस काल में स्कूली छात्रों का जो ज्ञान था वह आज स्नातकोत्तर छात्रों का भी नहीं। सरदारशहर के आसपास के कस्बों के छात्र भी आचार्य जी से अभिप्रेरित हुए और लेखन-भाषण, साहित्यानुशीलन की प्रवृत्तियाँ उन सबमें भी तीव्र गति से चलने लगीं। चार-छह सालों की लघु अवधि ने ही उन दिनों अच्छे स्तरीय लेखक, वक्ता और कवि एवं विद्वान आदि देश को दिए। गहन अध्ययन और विचार गोष्ठियों तथा व्याख्यानमालादि के आयोजन होने लगे। सरदारशहर नगर के प्राय: सभी प्रमुख मार्ग-स्थलों पर नुक्कड वाचनालय खुले तथा कई पुस्तकालयों, यथा महावीर पुस्तकालय, किशोर पुस्तकालय आदि की स्थापना हुई। गंभीर विषयों पर वाद-विवाद सभाओं, भाषणों आदि का आयोजन नियमित रूप से सोत्साह होने लगा। उच्च स्तरीय हस्तलिखित पत्रिकाएँ साहित्य-मार्तण्ड, किशोर, शंखनाद आदि निकली। साक्षरता वृद्धि हेतु भी गतिविधियाँ चलाई गईं। जीवनोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित की गईं। यह सब आचार्य जी के जोश भरे अभिप्रेरण का सुफल था।

आचार्य जी ने अंचल के अन्यान्य विद्वानों, खासकर संस्कृतज्ञ जनों, यथा पं. विद्याधर जी शास्त्री, पं हनुमत्प्रसाद जी, आचार्य ओकारनाथ जी लाटा आदि को साथ लेकर बीकानेर राज्य

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। चार वर्षों में सम्मेलन के दो अधिवेशन सरदाशहर में, एक चूरु व एक सुजानगढ में आयोजित हुए। उसकी एक स्थायी प्रवृत्ति के रूप में विभिन्न परीक्षाएँ आरम्भ की गईं। साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों में मुख्य साहित्य सत्र के अलावा महिला सम्मेलन, दर्शन सम्मेलन, कवि सम्मेलन, भाषण, लेखन एवं वादविवाद प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जातीं। सम्मेलन के अधिवेशनों में अंचल एवं बाहर के विद्वानों का भी अच्छी खासी संख्या में आगमन मन को बडा सुकून पहुंचाने वाला था। सरदारशहर में पं. विद्याधरजी शास्त्री, नरोत्तमदास जी स्वामी, प्रज्ञाचक्षु पं. केशरीप्रसाद जी शास्त्री, एकाक्षी पं. गजानन्दजी, कविवर रामनिवास हारीत, गीता एवं दर्शन शास्त्र के विद्वान् सेठ रामगोपाल जी मोहता (माहेश्वरी), मौलिक विचारक विद्वान् डॉ. छगन मोहता (पुष्करणा ब्राह्मण), डॉ. कन्हैयालाल गोस्वामी, इतिहासज्ञ नाथूराम खडगावत, बगरहट्टा, हास्य-व्यंग्य एवं वामपंथी कवि चन्द्र देव तथा अन्य अनेक विद्वानों, कवियों, शोध-कर्ताओं आदि ने भाग लिया। सुजानगढ के अधिवेशन में आचार्य चतुरसेन शास्त्री विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। उनके ओजस्वी भाषण की स्मृति आज भी मन में मंडराती है। प्रसंगत: यहाँ एक घटना उल्लेखनीय है। महाजन के प्रज्ञाचक्षु पं. केशरीप्रसादजी शास्त्री वेद, व्याकरण, न्याय, साहित्य, दर्शन, संगीत के लब्धप्रतिष्ठ मर्मज्ञ विद्वान् थे। सुजानगढ़ सम्मेलन में वे भी आये थे। वहाँ उन दिनों इंग्लैण्ड से श्री डालमचन्द जी सेठिया भी बार-एट-लॉ कर (बैरिस्टर बन कर) सुजागढ आये हुए थे। पं. केशरी प्रसाद जी के भाषण से पूर्ण वे खड़े होकर बोले कि अब आप एक अन्धे विद्वान् का चमत्कार पूर्ण भाषण सुनिए। केशरीप्रसाद जी ने अपने भाषण का आरम्भ यह कहते हुए किया कि मुझे दु:ख है कि मुझे अन्धा बताया गया। भले ही मेरे चर्मचक्षु नहीं हैं, पर केवल उन्हें लक्ष्य कर और मेरे समस्त ज्ञान और उसे देने वाले मेरे खुले अन्तर्चक्षुओं की अवज्ञा कर वैरिस्टर वक्ता ने स्वयं अपने अन्धेपन का परिचय दिया है। श्री डालमचन्द्र जी इस पर परम लज्जित हुए तथा पंडित जी के चरण स्पर्श करते हुए उनसे क्षमा मांगी। संयोगत: यह बताना अप्रासंगिक होते हुए भी रोचक होगा कि राजपंडित केशरीप्रसाद जी संगीत शास्त्र के भी विद्वान् एवं सुमधुर कण्ठ के धनी तो थे ही, वे उच्च कोटि के आशु कवि भी थे। कोटा महाराव के राजकुमार के साथ विवाहित होने वाली बीकानेर नरेश गंगासिंहजी की पुत्री के विवाह में उन्होंने आशीर्वाद स्वरूप निम्न पंक्तियों की सद्य रचना की-

पाय विवाह उछाह को वासर, प्रेम-प्रमोद भरे नर-नारी।
माँगत एक मनोरथ सादर पूज गिरीश-गिरीश कुमारी।
दीजिए दान दया करि केशव, कीजिए आशिष सत्य हमारी।
भाग सुहाग लहे कमला सम श्रीयुत् गंगा महीप दुमारी।।

इन्हीं अधिवेशनों की एक अन्य रोचक स्मृति। कवि चन्द्रदेव, बीकानेर डूँगर कॉलेज के

स्नातकोत्तर छात्र ने अपनी हास्य रचना "आलिंगन में कुत्ता आया'' सुना-सुना कर लोगों का खूब मनोरंजन किया। उन दिनों इस कविता की धूम-सी मच गई और लोग उसे बार-बार सुनाने के लिए देखे-पाये गये और भी भूली-बिसरी अनेक स्मृतियाँ उस काल की मन में सोती-जागती हैं, पर वे इस आलेख के लिए अप्रासंगिक हैं।

आचार्यजी के ओजस्वी अभिप्रेरण से साहित्य समिति न केवल शैक्षिक और साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र बनी, अपितु वह सामाजिक जागरण और राजनीतिक चेतना के अधिकाधिक स्फुरण-संवर्द्धन का जीवन स्रोत भी बन गई। उनकी प्रेरणा से सरदारशहर में पुस्तकालय सम्मेलन हुआ तथा पत्र-पत्रिकाओं, चित्रों और जडी बूटियों की प्रदर्शनियाँ भी की गईं। इसी काल में सरदारशहर नगर ने श्री रामलाल सराफ, डॉ. बुधमल शामसुखा, पूर्णचन्द्र मीमाणी, राधा कृष्ण गोयल, कन्हैयालाल दूगड, खेतूलाल शर्मा, दीपचन्द नाहटा, मोहनलाल जैन, कामरेड मोहन लाल शर्मा, हीरा लाल सेठिया, दौलतराम सारण, बैजनाथ पँवार, डॉ. मूलचन्द सेठिया आदि उच्च कोटि के लेखक, कवि, वक्ता, कार्यकर्ता, विद्यानुरागी, विद्वान एवं विचारक देश को दिये। अगली पीढ़ी में प्रो. चन्दन प्रकाश कोठारी, कन्हैयालाल शर्मा, माँगीलाल डागा, बुधमल पारख, शंकरलाल शर्मा, तोलाराम शर्मा आदि अनेक युवजन चमके। आचार्यजी अगर स्मृति साथ देती है तो १९४४ तक ही सरदारशहर रहे पर साहित्यिक और शैक्षिक गतिविधियों का वह ऊर्ज्वसित दौर ३-४ साल ही चला। सन् १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रभाव स्थानीय युवजनों के मानस पर भी पड़ा और वे उत्तरोत्तर राजनीतिक गतिविधियों की ओर आकर्षित होने लगे। सारस्वताराधना का स्थान उत्तरोत्तर राजनीति लेती गई। स्वतंत्रता-संग्राम की अनुगूंज नगर के युवकों के हृदय में भी होने लगी। स्वधीनता-प्राप्ति के बाद तो छात्रों और युवकों में साहित्यानुराग की जगह एकमेव राजनीतिक हलचलों की बहुलता ही बढ़ चली।

आचार्य जी अपने ओजस्वी और प्रेरणा भरे सम्बोधनों (भाषणादि) में सदैव एक ही बात पर विशेष बल देते मैंने भी पाये कि मैं हिन्दुस्तान के ही नहीं, विश्व के मानचित्र पर सरदारशहर की ख्याति से ओतप्रोत नाम देखना चाहता हूँ। इससे प्रकट होता है कि सरदारशहर के प्रति उनके मन में कितना चाव-लगाव था व है। दूसरी ओर उनके शिष्यों और नगरवासियों में उनके प्रति इतना प्रेम और सम्मान है कि उन्होंने भी २७ सितम्बर, सन् १९९८ को आचार्यजी का पूरी गर्मजोशी के साय श्री पूर्णचन्द्र मीमाणी, डॉ. बुधमल शामसुखा और श्री दीपचन्द्र नाहटा की पहल एवं श्री मोहनलाल जैन, मांगीलाल डागा एवं अन्यान्य अनेक कार्यकर्ताओं के सहयोग से उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया। उस अवसर पर शैक्षिक सम्मेलन और कवि सम्मेलन भी स्मरणीय रहे।

आचार्यजी ने बीकानेर राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना के बाद अपने शिक्षा मंत्रित्व

के दौरान अंग्रेजी अध्यापन को तीसरी की जगह छठी कक्षा से अनिवार्य कर दिया तथा हिन्दी शिक्षकों का वेतनमान भी अन्य शिक्षकों के बराबर कर दिया।

आचार्यजी सन् १९५० में पुन: गाँधी विद्या मन्दिर के संस्थापक अध्यक्ष बन कर आये। उसकी स्थापना के प्रेरक, पथ-प्रदर्शक तथा निरन्तर प्रगति-प्रयासों में रत आचार्य अपनी सेवाएँ पाँच साल देकर, उसी तरह अपना स्थान रिक्त कर गये जैसे रघुकुलतिलक राम बाप का राज सहज भाव से बटोही की तरह छोडकर वन-गमन कर गये थे। श्री कन्हैयालाल दूगड (परवर्ती स्वामी रामशरण) ने उनसे अध्यक्षता स्वयं को सौंप देने की याचना की और आचार्यजी ने "तथास्तु" कह कर वह भिक्षा उन्हें दे दी। विद्या मंदिर को जन्म देने और एक मंजिल तक पहुँचाने में आचार्यजी का पुष्कल योगदान था। अपने क्षुद्र अहं से परिचालित होकर अध्यक्ष पद पर दूगड जी ने स्वयं को सुशोभित करना नहीं चाहा होता तो संभवत आज विद्या मन्दिर का स्वरूप भिन्न और उसके क्रियाकलापों की पारदर्शिता सन्देह के दायरों से बाहर होती। जैन धर्म के एक सिद्धान्त क्रमबद्ध पर्यायानुसार जैसा होना था हुआ एवं हो रहा है।

आचार्यजी श्री पूर्णचन्द्र जी मीमाणी को बराबर जब भी मिलते एक ही प्रेरणा देते रहते कि तुम मेरे साथ जुडो और गीता विश्वविद्यालय की स्थापना में योग दान करो, पर मीमाणीजी बताते हैं कि अपनी घोर अस्वस्थता और ढलती उम्र के कारण, चाह कर भी वे यह प्रेरणा पल्ले न घाल सके। काश! आचार्य जी का यह स्वप्न पूरा करने हेतु परमात्मा किन्हीं अन्य को प्रेरित करे।

श्री मीमाणी जी गद्‌गद होकर बताते हैं कि आचार्य जी की वाणी अति मधुमिश्रित एवं संगीतमय तथा व्यक्तित्व बडा चुम्बकीय है जिसके संपर्क सानिध्य का प्रत्यक्ष व परोक्ष सौभाग्य पाकर सरदारशहर नगर आज भी अपनी विलक्षण मेधा-बुद्धि और कार्यक्षमता वाले युवक देश को दे रहा है। आचार्य जी के आकर्षक व्यक्तित्व का अनुमान इसी एक स्मृति से लगा लें कि आरम्भ के चन्द वर्ष सरदारशहर को अपनी सेवाएँ देने के पश्चात् जब वे स्थानान्तरित होकर जाने लगे तो शहर के रेलवे स्टेशन पर एक अनूठे दृश्य के रूप में कम से कम ढाई सौ-तीन सौ की संख्या में उन्हें साश्रु विदाई देने लोग पहुँचे थे। आचार्य जी को मेरे और श्रद्धेय मीमाणी जी के पुनर्पुनरपि नमन! सर्जनहार उन्हें शतायु करे।

□

Bengal Sanskrit Association.

SANSKRIT TITLE EXAMINATION.

This is to certify that *Gauri Sankar Sarma*
son of *P. Jagannam ji Ukil* of *Sardarsahar*
Bikaneer district and pupil of Pandit
Gopal Prasad Sukul of *Majhgaon, Gorakhpur*
having passed the Title Examination held in the year *1934*
in *Sankhya* in the *second* class, has been awarded the Title of *Sankhyatirtha*, and this Diploma is granted in token thereof.

CALCUTTA,

The *June* 1934

President, Bengal Sanskrit Association

Secretary, Bengal Sanskrit Association.

शास्त्राचार्य परीक्षा

सम्वत् १९९७

क्रम संख्या ४

श्री गौरीशङ्कर शर्मा

श्रीमतः पं॰ जगनराम शर्मणः पुत्रः

सरदार शहर (बीकानेर स्टेट) निवासी

विंशति वर्षीयः सप्तनवत्यधिकैकोन विंशति शततमे वैक्रमाब्दे

काशी हिन्दू विश्वविद्यालये शास्त्राचार्यपरीक्षायाः प्रथम

कक्षायामुत्तीर्ण इति प्रमाणीकरोति

विषयः अद्वैत वेदान्त

तिथिः मार्ग॰ शु॰ २

स॰ राधाकृष्णन
वाइस चान्सलर

शास्त्रि परीक्षा सम्वत् १९९३

क्रम संख्या १२०

श्री गौरीशंकर शर्मा

श्रीमतः पं० जगनराम स्य पुत्रः

सरदार शहर बीकानेर निवासी

एक विंशति वर्षीयः मिनवत्युत्तरैकोन विंशति शततमे वैक्रमाब्दे

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय सम्बन्धि प्राच्यविद्या विभागीय शास्त्रि परीक्षायाः प्रथम

कक्षायामुत्तीर्ण इति प्रमाणी करोति

विषयः अद्वैत वेदान्त

वैकल्पिकाः

तिथिः फा० कृ० प्र, १९९३

मदन मोहन मालवीय.

वाइस चान्सलर

क्रमसंख्या - 51 -
Serial No.

अनुक्रमसंख्या 69 UD-PhD-7
Enrolment No.

कुरुक्षेत्र - विश्वविद्यालयः

डाक्टर ऑफ़ फ़िलासफ़ी

(भारतीय-विद्या-संकायः)

प्रमाणीक्रियते यत् गौरी शंकर शर्मा नामा/नाम्नी

श्री जगन राम पुत्रः/पुत्री अस्य विश्वविद्यालयस्य

१९७३ तमे वर्षे सम्पन्ने उपाधिवितरणोत्सवे संस्कृत विषये

डाक्टर ऑफ़ फ़िलासफ़ी

उपाधिना विभूषितः/विभूषिता इति ।

शोधप्रबन्धस्य विषयः "न्याय-वैशेषिक में आत्मा"

Kurukshetra University

Doctor of Philosophy

(Faculty of Indic Studies)

This is to certify that Gouri Shanker Sharma son/daughter of Shri Jagan Ram has been admitted to the degree of

Doctor of Philosophy

in this University in the subject of Sanskrit at the Convocation of 1973.

Title of Thesis "Nyaya-Vaisesik Men Atma"

विश्वविद्यालय-मुद्राङ्कितं प्रमाणपत्रम्
Given under the seal of the University

K. R. Chaudhry
कर्म-सचिवः
Registrar

S. K. ...
उप-कुलपतिः
Vice-Chancellor

...
कुलपतिः
Chancellor

कुरुक्षेत्रे, तिथि: 26 मार्च, 1973
Kurukshetra Dated March 26 1973

माँ भारती के अनन्य पुजारी, परम राष्ट्र सेवक, आदर्श कर्मवीर एवं तरुण तपस्वी
आचार्य पं० गौरीशंकरजी शास्त्री के पुनीत चरणारविंदों में सरदारशहर से
स्थानान्तरित होने की विदा वेला में स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओं,
शिष्यों और सहयोगियों की ओर से सादर समर्पित

भाव पुष्पाञ्जलि

सरगम का स्वरतार है, सुधी की फुलवारी में
[illegible]

हमारे तन्द्रालस प्राणों को जागृति का शंखनाद सुनाने के लिए चिर-जीवन का उल्लास और विद्युत का वेग लेकर आने वाले ओ देव दूत! किन शब्दों में हम तुम्हारा अभिनन्दन करें! हम कांचन-युग भी चाहते थे परन्तु आपने हमें दृष्टि-दान दिया। हमारे शिथिल पैरों में शक्ति का अभाव था, फिर भी दौड़ने लगे। प्रतियोगिता में प्रथम आने पर आपने हमें आशीर्वाद तो दिया परन्तु गिर पड़ने पर उपालम्भ नहीं।

तपोनिष्ठ! जीवन की स्थूल समस्याओं और आधिभौतिक आवश्यकताओं के साथ चिर-सम्बद्ध होने पर भी आप अपने अन्तर्लोक में एक कोमल कवि और दार्शनिक मनीषी भी हैं। गुरु गम्भीर पाण्डित्य दार्शनिकता और हृदय के अनन्त औदार्य-कवित्व-का ऐसा अपूर्व सामञ्जस्य ही आप के व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करता है। लोक-कल्याणकारी प्रवृत्तियों में अगाध विश्वास होने पर भी आप चिर-सत्य के अनन्य उपासक और शाश्वत सौन्दर्य के अन्तः स्पन्दन को अनुभव करने वाले कोमल कवि भी हैं।

जीवन की पूर्णता के प्रतीक! हमें आशंका है आपके प्रभविष्णु व्यक्तित्व की महानता का वर्णन करने में भाषा की दरिद्रता ही सिद्ध होगी। व्यक्तित्व ही नहीं कृतित्व की गुरुता का मूल्यांकन करने के लिए भी हमारे पास कोई मापदण्ड नहीं है —

तू गौरव-गिरि उत्तुंग-काय
पद चूमन का भी क्या उपाय!

महा महीम्! स्थानीय साहित्य समिति के तो आप प्राण ही थे। विद्यापीठके छात्रोंका अध्यापन, साप्ताहिक अधिवेशनों और गोष्ठियों का सञ्चालन आपकी ही प्रेरणा से अनुप्राणित है। वस्तुतः सरदारशहर में साहित्यिक चेतना को प्रबुद्ध करने का सर्वाधिक श्रेय आप को ही है। आपकी शिष्यता के सौभाग्य पर हमें गर्व है और साहित्य समिति आपके तपोपूत महात्मा का आशीर्वाद पाकर कृतकृत्य हुई।

कर्म प्रवीन्! आपकी सेवाएँ अनन्त हैं। इस वियोग-वेला में हमारा अश्रु-विगलित हृदय उन्हें अभिव्यक्त करने में सर्वथा असमर्थ है। पब्लिक लाईब्रेरी, सरदारशहर के द्वारा आयोजित बीकानेर राज्य पुस्तकालय सम्मेलन के सम्बन्ध-सूत्र से आप प्रान्त के प्रमुख पुस्तकालयों को सङ्गठित कर साक्षरता-प्रसार एवं तत्सम्बन्धी नव नव योजनाएँ कार्यान्वित कर चुके हैं। स्थानीय साहित्य समिति के द्वारा प्रस्तुत बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन के माध्यम से प्रान्त की साहित्यिक शक्तियों एवं प्रवृत्तियों का सांगोपांग सङ्गठन आपकी ही क्रियात्मिका शक्ति का अमूल्य पूर्ण प्रतीक है। तथा-कथित दलितवर्ग के प्रति आपकी सक्रिय सहानुभूति का परिचय हरिजन पाठशालाके विगत पांच वर्षों के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आपकी ओजस्विनी एवं प्राणप्रद वक्तृताओं की स्वर-लहरी सरदारशहर के वायु मण्डल को चिर-काल तक अपनी प्रतिध्वनि से तरंगित करती रहेगी।

राजस्थान को विश्व के शीर्षस्थानीय राष्ट्रों में समुन्नत करना ही आपके जीवन की अनन्य आकांक्षा है। सरदारशहरको साहित्यिक और सांस्कृतिक केन्द्र बनाने की अमिट अभिलाषा तो आप एकाधिक बार प्रगट भी कर चुके हैं।

गुरुवर! आपके स्थानान्तरित होने का समाचार सरदारशहर के सार्वजनिक जीवन में भूकम्प की तरह आया। क्या भविष्य में आप के शुभाशीष और मङ्गल-मय सत्प्रेरणाओं से अनुप्राणित होने का सौभाग्य हमें प्राप्त न हो सकेगा? नहीं आप हमें भूल कर भी नहीं भूल सकते! स्नेह का अधिकार क्या इतना अकिंचन है कि हम आप के अपनेपन को भी अभिव्यक्त न कर सकेंगे? नहीं, गुरुदेव! आप के हृदय को सरदारशहर से विलग करने की सामर्थ्य स्वयं परमात्मा में भी नहीं है।

आचार्य प्रवर! हम आप को विश्वास कराना चाहते हैं कि जिस महा-यज्ञ का सूत्र पात आपने सरदारशहर में किया है, उसमें आहुत होने के लिए आपका एक एक शिष्य प्राण प्रण से प्रस्तुत है। आप के द्वारा ऊसर भूमि में आरोपित इस अक्षय अङ्कुर के पल्लवित, पुष्पित और फलित होने में रञ्च मात्र भी सन्देह नहीं है।

सरदारशहर
तिथि [illegible]

आपके स्नेहाकांक्षी
स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओं के सदस्य एवं
विद्यापीठ के छात्र

● ॐ तत्सत् ●

प्रमाण-पत्रम्

(आचार्य देवो भव)

(मातृदेवो भव) (पितृदेवो भव)

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे,
तपोऽतिष्ठत् तप्यमानः समुद्रे,
स स्नातो बभ्रुः पिङ्गलः पृथिव्यां बहु रोचते

श्रीमन्महाविद्यालयस्नातकः श्रीब्रह्मचारी गौरीशङ्कर सारस्वतीर्थः

श्री पण्डित जगन्नाथ शर्मा बीकानेर राज्यान्तर्गत सरदार शहर ग्राम वास्तव्यस्य सुपुत्रः

श्रीमन्महाविद्यालये गुरुजनसकाशाद् विधिवत् शास्त्राण्यधीत्य तत्र परं प्रावीण्यमुपगतोऽतः स विद्यासपदा "विद्याभास्कर" इत्युपाधिना विभूष्यते। अस्य समावर्तनसंस्कारो यथाशास्त्रं मंडलोऽनुमतश्च स यथाविधि स्नाय। महाविद्यालयरक्षा, लोकशिक्षा, देववाणीप्रचारः देशधर्मसेवा इति विविधव्रतचारी परोपकारी विविधोपाधिधारी ब्रह्मचारी पृथिव्यामभिरोचताम्।

(स्वाध्यायान्मा प्रमदः) (सत्यान्न प्रमदः)

य आतृणत्त्ववितथेन कर्णा-
वदुःखं कुर्वन्नमृतं सम्प्रयच्छन्
तं मन्येत पितरं मातरं च
तस्मै न द्रुह्येत् कतमच्चनाह॥
अध्यापिता ये गुरुं नाद्रियन्ते
विप्रा वाचा मनसा कर्मणा वा
यथैव ते न गुरोर्भोजनीया,
तथैव तान्न भुनक्ति श्रुतं तत्॥

(सत्यं वद) (धर्मं चर)

उपाधिदान विधिः ज्येष्ठ कृष्णा
द्वितीया संवत्
(ज्वालापुरीयो-महाविद्यालयः)

नरदेवशास्त्री
आचार्यः

अनुक्रमाङ्क ६३४

आगरा विश्वविद्यालय

[आगरा यूनीवर्सिटी]

AGRA UNIVERSITY

19 27

तमसो मा ज्योतिर्गमय

मास्टर ऑफ़ आर्ट्स

प्रमाणित किया जाता है कि गौरीशङ्कर शास्त्री
(डी॰ ए॰ वी॰ कालेज, कानपुर)
ने इस विश्वविद्यालय से १९५९ की परीक्षा में संस्कृत (Sanskrit) विषय लेकर **मास्टर ऑफ़ आर्ट्स** की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की।

आगरा विश्वविद्यालय
२१ नवम्बर, १९५९

वाइस चान्सलर

चित्र-वीथी
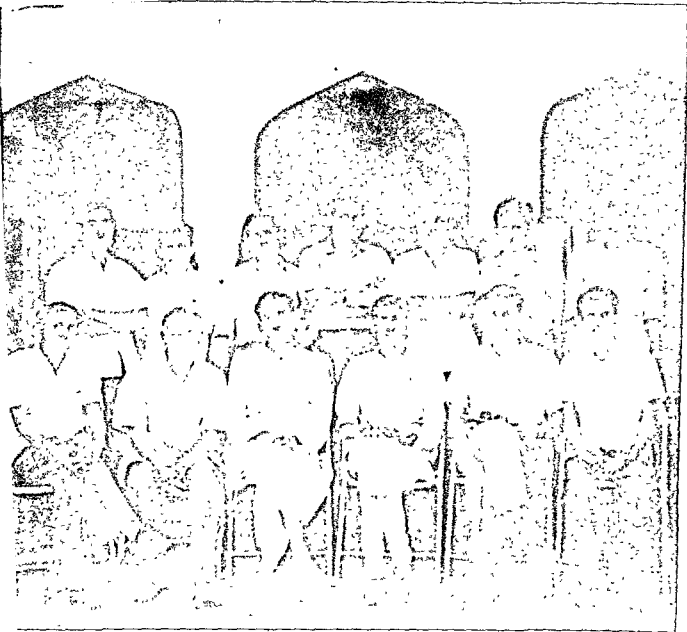
अपने बड़े पुत्र की शादी में जोबनेर कृषि कॉलेज के
अध्यापकों के साथ

नीचे बायें से दायें :– प्रो. सी. प्रसाद, पं.झम्मन लाल जी वकील (बड़े भ्राता)
स्वयं आचार्य जी, उनके पुत्र भीमसेन शर्मा,
प्रो. बी.पी. श्रीवास्तव, प्रो. अग्निहोत्री

ऊपर बायें से दायें :– श्री रमेश चन्द्र शर्मा (बड़े दामाद), श्री फिलिप पोस,
प्रो. कालरा, प्रो. मोहन, अन्य अधिकारी,
प्रो. आर.डी. सिंह, प्रो. हरिसिंह

डॉ. गौरीशंकर आचार्य गाँधी विद्या मंदिर परिवार के साथ

नीचे बायें से दायें :– दौलतराम सारण, चन्दनमल बैद,
कन्हैया लाल दूगड, सोहन लाल जी दूगड़

ऊपर बायें से दायें :– दीपचन्द नाहटा, श्रीमती हरिभाऊ उपाध्याय,
श्री हरिभाऊ उपाध्याय, मुख्यमंत्री (अजमेर),
चौ. कुंभाराम जी मंत्री (राजस्थान)
डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

दिसम्बर 1963 में एस. के.एन. कृषि विश्वविद्यालय के वार्षिक उत्सव पर आयोजित समारोह में बाएं से श्री भीमसेन शर्मा छात्रसंघ अध्यक्ष (ज्येष्ठ पुत्र) डॉ. आचार्य श्री गौरीशंकर जी कृषि मंत्री राजस्थान श्री नाथूराम मिर्धा एवं केन्द्रीय कृषि मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह

भादरा स्थित अपने निवास पर तत्कालीन उपमुख्यमंत्री (राज.) हरिभाऊ उपाध्याय, आचार्य गौरीशंकर जी, उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री झम्मनलाल जी विचार विमर्श करते हुए।

1963 रतनगढ़ में श्री गाँधी बाल निकेतन के वार्षिकोत्सव पर बाएं से श्री श्यामसुन्दर लाल जी, श्री विश्वनाथ, आचार्य जी एवं चम्पालाल उपाध्याय

श्री हरिभाऊ उपाध्याय शिक्षा मन्त्री के साथ दाएं से— श्रीमती आनन्दी देवी उपाध्याय, श्री चम्पालाल उपाध्याय, आचार्य जी, हरिभाऊ जी आदि
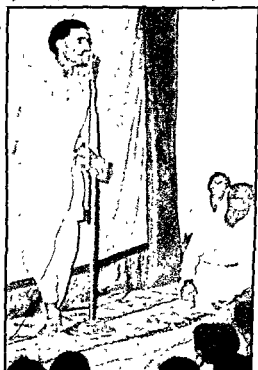
श्री गाँधी बाल निकेतन रतनगढ़ के वार्षिकोत्सव पर आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री

5.1.1977 को श्री गाँधी बाल निकेतन रतनगढ़ के अध्यक्ष एवं समाजसेवी चम्पालाल जी के साथ डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

श्री गाँधी बाल निकेतन के वार्षिकोत्सव पर एक बालिका आचार्य श्री गौरीशंकर जी का तिलक लगाकर अभिनन्दन करती हुई (5.1.1977)
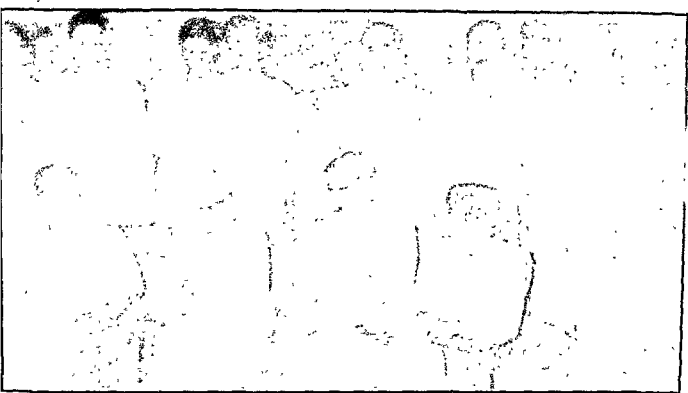
बाएं से दूसरे श्री हरिभाऊ उपाध्याय, उप मुख्यमंत्री राजस्थान, भादरा स्थित घर पर परिवार के साथ,
डॉ. गौरीशंकर आचार्य, तीसरे श्री चम्पालाल जी उपाध्याय,
चौथे श्री झम्मनलाल जी वकील आचार्य जी के ज्येष्ठ भ्राता

श्री गाँधी बाल निकेतन रतनगढ़ के वार्षिकोत्सव पर 5.1.1977 को श्री चम्पालाल जी अध्यक्ष एवं अन्य महानुभावों के साथ श्री गौरीशंकर जी आचार्य

※ एक दुर्लभ चित्र - पाँच पीढी एक साथ ※

मध्य में आचार्य श्री गौरीशंकर जी की माताजी श्रीमती चन्द्रावली देवी, बाँए हैं उनकी पुत्री लक्ष्मीदेवी (घडसी देवी) दाँये कान्ता देवी धर्मपत्नी श्री चम्पालाल जी उपाध्याय तथा दोनो तरफ खडी हैं चम्पालाल जी की पुत्रियाँ, पुत्री की गोद में बालक

2 अगस्त 1963, श्री वैष्णव आई.टी.आई रतनगढ़ का आयुर्वेद भवन में उद्घाटन करते श्रम मंत्री श्री भीखा भाई, अध्यक्षता कर रहे हैं आचार्यजी। साथ में दाएं से चम्पालाल उपाध्याय, मोहनलाल सारस्वत, चन्दनमल बैद एवं श्री पन्नालाल बैद
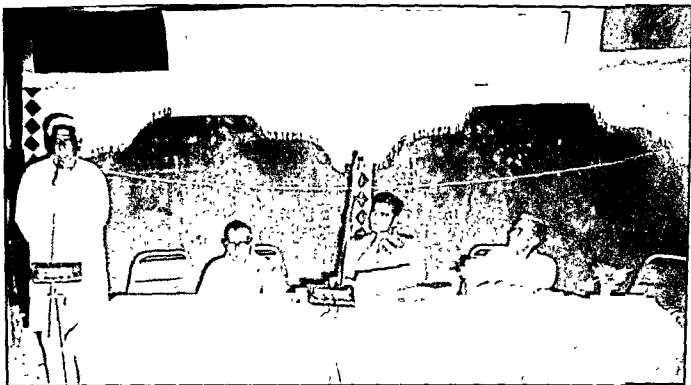
डॉ. गौरीशंकर आचार्य गंगानगर में 27 मार्च 81 को दिल्ली और देश सांध्य दैनिक का उद्घाटन करते हुए
साथ में बैठे हुए हैं स्वतन्त्रता सैनानी नत्थूराम जी योगी

बीकानेर साहित्य सम्मेलन के भादरा अधिवेशन के दौरान आचार्य गौरीशंकर अपने सहयोगियों के साथ

बीकानेर के अपने मंत्रिमंडल के साथ बाएं से दूसरे डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य,
प्रधानमंत्री डॉ. जसवंत सिंह एवं सरदार मस्तानसिंह पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री

महात्मा गांधी के अस्थि कलश को विसर्जन हेतु ले जाते हुए
आचार्य गौरीशंकर शर्मा, श्री रघुवर दयाल गोयल आदि

8.8.1948 को बीकानेर राज्य के शिक्षा, रेल एवं डाकतार मंत्री डॉ. गौरीशंकर आचार्य गणमान्य लोगों के साथ एक महत्वपूर्ण राजनैतिक मन्त्रणा करते हुए

सरदारशहर में कार्यकर्ताओं के बीच डॉ. गौरीशंकर आचार्य साथ में मूलचन्द जी सेठिया श्री दौलतराम सारण और श्री रामलाल जी सर्राफ

वैद्यों के सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए आचार्य श्री गौरीशंकर जी

आचार्य श्री सरदार शहर में हुई फसल का अवलोकन करते हुए

आर्य समाज स्कूल के वार्षिक उत्सव पर भाषण देते
आचार्य गौरीशंकर जी

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से
न्याय एवं वैशेषिक दर्शन में आत्मा
विषय पर पी-एच.डी. करने के बाद
मिली डिग्री के साथ
आचार्य श्री गौरीशंकर जी

गंगानगर आर्य समाज स्कूल के वार्षिक उत्सव की अध्यक्षता करते हुए
आचार्य जी बायें श्री सुदबोधक जी साथ हैं।

1948 में शिक्षा, डाकतार एवं रेल मंत्री बीकानेर राज्य के श्री गौरीशंकर आचार्य
सरदारशहर प्रवास के दौरान पुस्तकालय के रजिस्टर में हस्ताक्षर करते हुए

गंगानगर आर्य समाज स्कूल
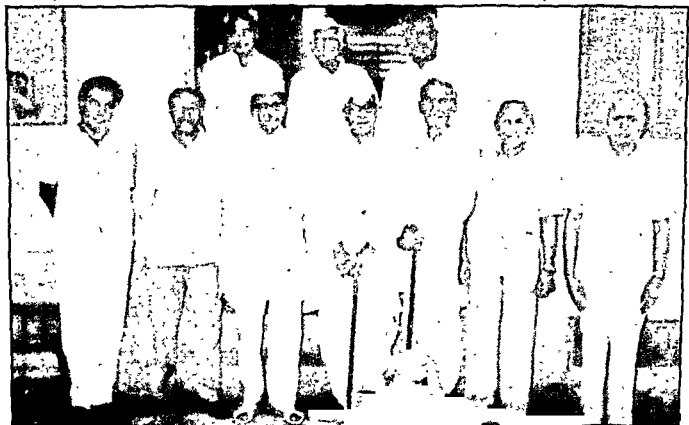
गोमाता भवन के प्रांगण में बायें से दायें : सर्वश्री गोपाल शर्मा, रामअवतार अग्रवाल, पूर्व प्रधानमंत्री गुलजारीलाल नन्दा, चन्द्रभान शर्मा, डॉ. गौरीशंकर आचार्य, बसन्तीलाल छाबड़ा, पी.सी. चिव खड़े हैं। ऊपर की पंक्ति में : सर्वश्री ब्रह्मदत्त शर्मा, ज्ञानचन्द मोदी, मुरलीधर गोयल खड़े हैं।
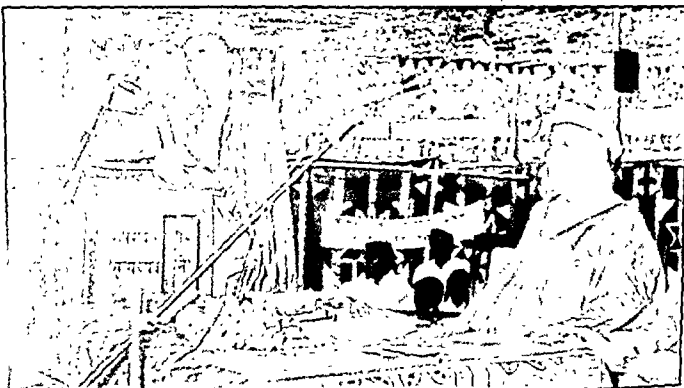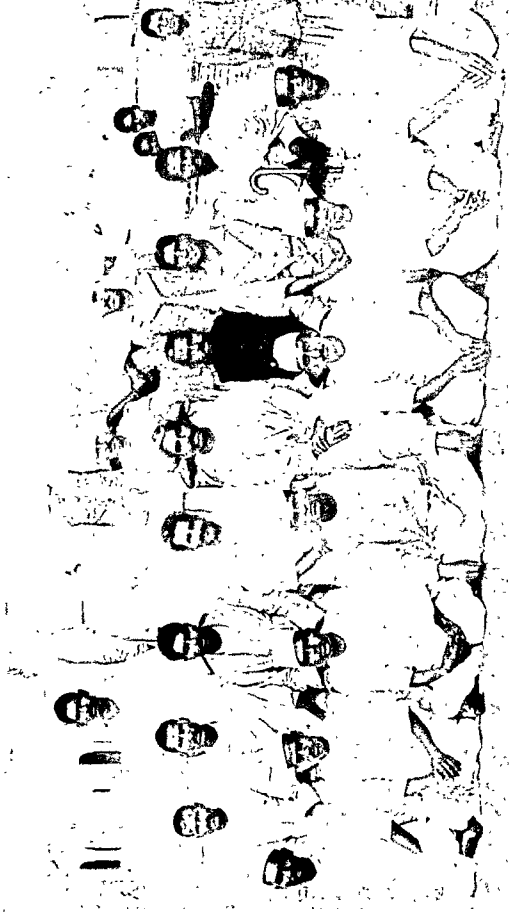
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस में विद्यार्थियों के साथ आचार्य श्री

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, ओरियण्टल कॉलेज (... सन् 1935

नीचे वैठे हुए बाईं ओर से – श्री गौरीशङ्कर शर्मा सांख्यतीर्थ। श्री विश्वनाथ शर्मा वेदान्त व्याकरण शास्त्री। श्री धर्मेन्द्रनाथ 'वसु' शास्त्री, विद्यावाचस्पति। श्री इन्द्र, वेदान्त शास्त्री, न्यायतीर्थ। श्रीरामनारायण महन्त। कुर्सी पर वैठे हुए बांई ओर से– पं. श्री लक्ष्मीनाथ झा (वेदान्ताध्यापक) म.म.पं. श्री प्रमथनाथ तर्कभूषण (प्रिंसिपल)। महामना पं. मदनमोहन मालवीय (वाइस चान्सलर) आचार्य आनन्दशङ्कर बापूभाइ ध्रुव (प्रो. वाइस चान्सलर) सर्वतन्त्रस्वरूप पं. श्री बालकृष्ण मिश्र (वेदान्त प्रधानाध्यापक)। खड़े हुए बाईं ओर से– श्री महेश्वर शास्त्री, वेदान्ताचार्य, दर्शनरत्नाकर (न्याय प्रधानाध्यापक रघुनाथ सं. कालेज जम्बू) श्री जयराम शर्मा, शास्त्री। श्री विद्याधर शर्मा। श्री मधुसूदन शर्मा साहित्याचार्य। श्री वीरमणि उपाध्याय, एम.ए.एल.एल.बी. साहित्याचार्य (प्रिंसिपल, रणवीर संस्कृत पाठशाला, काशी)। श्री देवीप्रसाद केडिपाल, वेदान्ताचार्य (प्रिंसिपल ऋषिकुल, लायलपुर)। श्री गिरिजादत्त त्रिपाठी, न्याय व्याकरणाचार्य बी.ए.।

डॉ. हुमायूं कबीर संयुक्त शिक्षा सचिव, भारत सरकार सभा को संबोधित करते हुए मंच पर बाएं से दूसरे सभापति आचार्य श्री गौरीशंकर

गांधी विद्या मंदिर के संस्थापक अध्यक्ष श्री गौरीशंकर आचार्य का निवास स्थान (1952-1960 तक) →

सम्पादक श्री पद्मसिंह भाटी जी का निवास स्थान (प्रथम झोंपड़ी) ↓

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, ओरियण्टल कॉलेज (वेदान्त विभाग) सन् 1935

नीचे बैठे हुए बाईं ओर से - श्री गौरीशङ्कर शर्मा सांख्यतीर्थ। श्री विश्वनाथ शर्मा वेदान्त व्याकरण शास्त्री। श्री धर्मेन्द्रनाथ 'वसु' शास्त्री, विद्यावाचस्पति। श्री इन्द्र, वेदान्त शास्त्री, न्यायतीर्थ। श्रीरामनारायण महन्त। कुर्सी पर बैठे हुए बांई ओर से- पं. श्री लक्ष्मीनाथ झा (वेदान्ताध्यापक) म.म.पं. श्री प्रमथनाथ तर्कभूषण (प्रिंसिपल)। महामना पं. मदनमोहन मालवीय (वाइस चान्सलर) आचार्य आनन्दशङ्कर बापूभाइ ध्रुव (प्रो. वाइस चान्सलर) सर्वतन्त्रस्वरूप पं. श्री बालकृष्ण मिश्र (वेदान्त प्रधानाध्यापक)। खडे हुए बाईं ओर से- श्री महेश्वर शास्त्री, वेदान्ताचार्य, दर्शनरत्नाकर (न्याय प्रधानाध्यापक रघुनाथ सं. कालेज जम्बू) श्री जयराम शर्मा, शास्त्री। श्री विद्याधर शर्मा। श्री मधुसूदन शर्मा साहित्याचार्य। श्री वीरमणि उपाध्याय, एम.ए.एल.एल.बी. साहित्याचार्य (प्रिंसिपल, रणवीर संस्कृत पाठशाला, काशी)। श्री देवीप्रसाद केडिपाल, वेदान्ताचार्य (प्रिंसिपल ऋषिकुल, लायलपुर)। श्री गिरिजादत्त त्रिपाठी, न्याय व्याकरणाचार्य बी.ए.।

डॉ. हुमायूं कबीर संयुक्त शिक्षा सचिव, भारत सरकार सभा को संबोधित करते हुए मंच पर बाएं से दूसरे सभापति आचार्य श्री गौरीशंकर

गांधी विद्या मंदिर के संस्थापक अध्यक्ष श्री गौरीशंकर आचार्य का निवास स्थान (1952-1960 तक) →

सम्पादक श्री पद्मसिंह भाटी जी का निवास स्थान (प्रथम झोंपड़ी)↓

भारत के प्रथम राष्ट्रपति
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी
सरदारशहर में आयुर्वेद विश्व भारती
का उद्घाटन करते हुए।
पीछे खड़े हैं आचार्य श्री गौरीशंकर जी
एवं श्री भंवरलाल जी दूगड़।

डॉ. कैलाशनाथ काटजू,
गांधी विद्या मंदिर में पूज्य बापू
की मूर्ति के सम्मुख
पुष्पांजलि अर्पित करते हुए
साथ में हैं आचार्य श्री गौरीशंकर
और कन्हैयालाल दूगड

डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

बजरंग लाल सोनी के तृतीय सुपुत्र प्रभुदयाल की भावी वधू कमलादेवी का तिलक कर सगाई की औपचारिकता करते हुए डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

अपने पिताश्री भंवरलाल जी सोनी एवं गुरुदेव डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य के पार्श्व में बजरंग लाल सोनी

बजरंगलाल सोनी के द्वितीय सुपुत्र गणेशमल की धर्मपत्नी आनन्दी देवी से पग-पकडाई की रस्म निभाते हुए डॉ. गौरीशंकर आचार्य

डॉ. गौरीशंकर आचार्य बीच में माताश्री चन्द्रावली देवी
ज्येष्ठ भ्राता पं. झम्मनलाल शर्मा वकील भादरा अपने घर पर।

आचार्य गौरीशंकर जी अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री झम्मनलाल जी के पड़पौत्र तुषार को गोद में दुलार करते हुए
पास में बैठे हैं भ्राता श्री झम्मनलाल जी एवं उनके पुत्र श्री ओम प्रकाश
पास में खड़ी हैं पुत्रवधू ज्योति शर्मा एवं पुत्र दीपक

आचार्य श्री गौरीशंकर जी जयपुर में, अपने निवास बी-१९-बी में प्रसन्न मुद्रा में बैठे हुए।

गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार में आचार्य श्री गौरीशंकर जी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी के साथ।

आचार्य गौरीशंकर जी के कनिष्ठ पुत्र श्री कृष्णचन्द्र शर्मा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शशि शर्मा के साथ

4.2.91 को बड़े भ्राता के पौत्र के विवाह अवसर पर अपने भ्राता पं. झम्मनलाल जी वकील श्री दीपक शर्मा और श्रीमती ज्योति शर्मा

६ जून, १९९० को डॉ. आचार्यजी अपने बड़े भ्राता पं. झम्मनलाल जी वकील तथा गुरुकुल महाविद्यालय के वैद्यराज श्री किसनसिंह जी (गांधी टोपी) के साथ अपने बड़े पुत्र की पौत्री दीपिका शर्मा की शादी के अवसर का एक चित्र

६ जून, ९० में पौत्री की शादी .... आचार्यश्री गौरीशंकर जी, पौत्री श्रीमती दीपिका बादल, पौत्री रामा, चि. विकास बादल एवं आचार्य जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री झम्मनलाल जी (वकील)

←
हरिद्वार गुरुकुल महाविद्यालय में आचार्य श्री गौरीशंकर जी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी तीसरे नम्बर के दामाद श्री मधुसूदन जी द्विवेदी एवं बैठे हुए हैं पुत्री डॉ. संतोष शर्मा एवं दोहिती पारुल शर्मा

→
धर्मपत्नी लक्ष्मी देवी शर्मा और चारों पुत्रियाँ बायें से डॉ. संतोष द्विवेदी, श्रीमती तारादेवी, श्रीमती श्यामा उपाध्याय, श्रीमती लक्ष्मीदेवी आचार्य और श्रीमती इन्दु शर्मा।
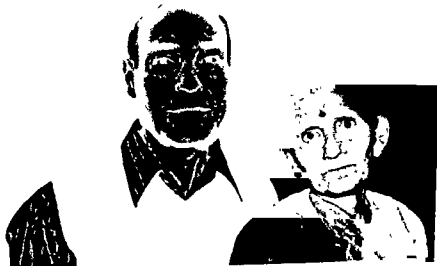
←
बड़ी लडकी श्रीमती तारादेवी और दामाद श्री रमेशचन्द्र शर्मा

आचार्य श्री गौरीशंकर जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी अपनी सबसे छोटी पुत्री श्रीमती श्यामा उपाध्याय और दामाद चि. अजय उपाध्याय की शादी के अवसर पर आशीर्वाद देते हुए, पीछे खड़े हैं पुत्री डॉ. संतोष शर्मा एवं दामाद श्री मधुसूदन द्विवेदी

पौत्र के विवाह अवसर पर आचार्य श्री गौरीशंकर जी को नृत्य में शामिल करती उनकी सबसे छोटी पुत्री [illegible] श्रीमती संतोष (एक अत्यन्त दुर्लभ चित्र)

दोहिते राजेन्द्र आचार्य की शादी पर सम्पूर्ण परिवार के साथ डॉ. आचार्य जी

२१ नवम्बर को आचार्य श्री गौरीशंकर जी के पौत्र की शादी के अवसर पर बाएँ से सर्वश्री ज्ञानचंद मोदी, आचार्य श्री गौरीशंकर जी; पौत्र वधू श्रीमती मोनिका शर्मा, पौत्र आलोक शर्मा, हरिमोहन माथुर (भूतपूर्व मुख्य सचिव) डॉ. आर.के.पटेल कुलपति राज.कृषि विश्वविद्यालय, आचार्य श्री के कनिष्ठ पुत्र कृष्णचंद शर्मा, चन्दन मल वैद (भूतपूर्व मंत्री राज.) श्री मूलचंद सेठिया, गणेशमल चिंडालिया, ज्येष्ठ पुत्र श्री भीमसेन शर्मा एवं राजेश खण्डे।

आचार्य श्री के पौत्र आलोक शर्मा के विवाह उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में भूतपूर्व मंत्री चन्दनमल वैद आचार्य श्री की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी से वार्तालाप करते हुए।

आचार्य गौरीशंकर जी अपने पौत्र आलोक शर्मा के विवाह अवसर पर,
साथ में हैं पौत्रवधू श्रीमती मोनिका शर्मा एवं धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी (२१ नवम्बर)

बड़े पुत्र के पुत्र और आचार्य जी के पौत्र आलोक की शादी के मोके प ... मोहिता
(छोटे पुत्र की लड़की) श्रीमती मोनिका शर्मा, श्री आलोक शर्मा, शशि
छोटे पुत्र, परिवार की महिला एवं श्रीमती अनिता शर्मा (बड़े पुत्र की पत्नी)

*
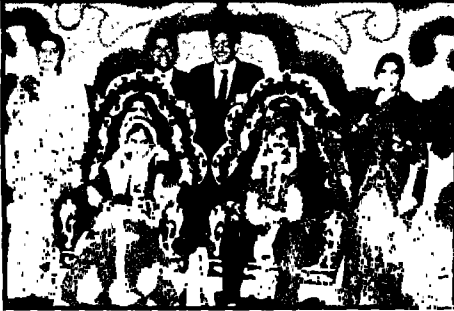
ज्येष्ठ पुत्र डॉ. भीम
एवं
श्रीमती अनीता
के पुत्र
चि. आलोक शर्मा
की
शादी समारोह
के अवसर पर लिए गए चित्र

*
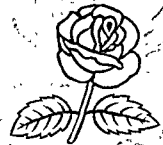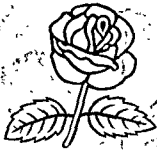
आचार्य जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री भीमसेन शर्मा एडिनबर्ग (इंग्लैण्ड) में अन्तर्राष्ट्रीय पौध रोग विज्ञान सम्मेलन १० अगस्त ९५ में इजरायल के वैज्ञानिक से शोध के विषय में चर्चा के दौरान

मैयो विश्व विद्यालय जापान में डॉ. भीमसेन शर्मा विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में बायें से, पौध रोग विभाग के: प्रो. किमिहाऊ इनागाकी डॉ. भीमसेन शर्मा विश्वविद्यालय के कुलपति (प्रेसिडेंट) डॉ. मसकी एमिनाक, श्रीमती अनिता शर्मा इन्टरनेशनल सैन्टर के प्रभारी प्रोफेसर (नवम्बर २०००)

श्रीमिलापचन्द दूगड़ (सुपुत्र स्वामी रामशरण जी उर्फ कन्हैयालाल दूगड एवं अध्यक्ष गाधी [illegible]
आचार्य जी को थाल एवं श्रीफल अर्पित कर प्रणाम मुद्रा में।

गुरुकुल महाविद्यालय की एक दुकान पर अप्रैल २००१ में आचार्य श्री गौरीशंकर जी अपने ज्येष्ठ पुत्रश्री भीमसेन शर्मा एवं पुत्र वधू श्रीमती अनीता के साथ चाय का आनन्द लेते हुए।
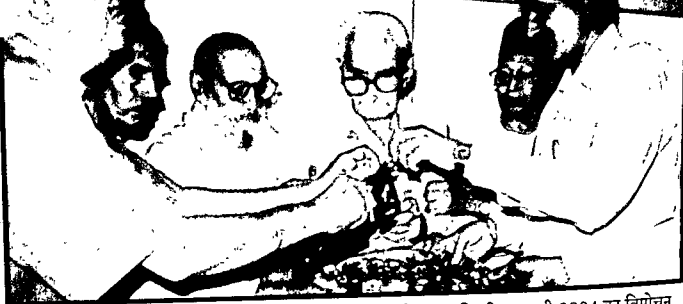
13 जून, 2004 को श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण तहसील सभा श्री गंगानगर की परिचय पाती 2004 का विमोचन करते हुए आचार्य श्री गौरीशंकर जी, बाँये से पुत्र कृष्णचन्द तहसील अध्यक्ष मोहनलाल पंचारिया वैधराज रामेश्वर दत्त जी (सफेद दाड़ी में)

13 जून, 2004 को श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण तहसील सभा श्री गंगानगर की परिचय पाती 2004 का विमोचन करते हुए बायें से पुत्र कृष्णचन्द्र तहसील अध्यक्ष मोहन लाल पंचारिया, वैद्यराज रामेश्वर दत्त जी (सफेद दाड़ी) और आचार्य गौरीशंकर जी।

पौत्र आलोक की शादी में एक वैवाहिक कार्यक्रम में आचार्यजी एवं उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी देवी, एक रस्म निभाते हुए। पास में खडी हैं छोटे पुत्र की पत्नी शशी शर्मा

गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार के अतिथिगृह में डॉ. गौरीशंकर आचार्य से ज्येष्ठ पुत्र भीमसेन शर्मा
अपनी धर्मपत्नी अनीता शर्मा के साथ एक वर्षीय शैक्षिक जापान यात्रा से लौटने पर मिलते हुए
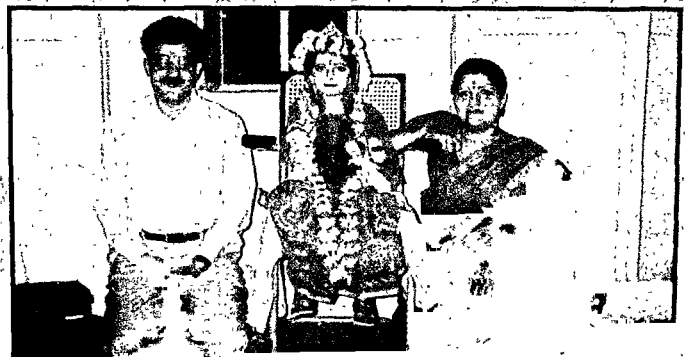
बाएं से पोती दामाद श्री विकास बादल मध्य में पड़ दोहिती विदीका बादल एवं पौत्री दीपिका बादल

गांधी विद्या मंदिर सरदार शहर द्वारा जयपुर में आयोजित शिक्षा सम्मेलन में आकाशवाणी के संयुक्त निदेशक सिंघवी जी से विचार विमर्श करते हुए आचार्य जी मध्य में ज्येष्ठ पुत्र डॉ. भीमसेन शर्मा

गांधी विद्या मंदिर सरदार शहर द्वारा जयपुर में आयोजित शिक्षा सम्मेलन में भाग लेते हुए आचार्य जी डॉ. बसन्तीलाल जी छाबडा, भूतपूर्व अध्यक्ष गांधी विद्या मन्दिर सरदारशहर कनकमल दूगड
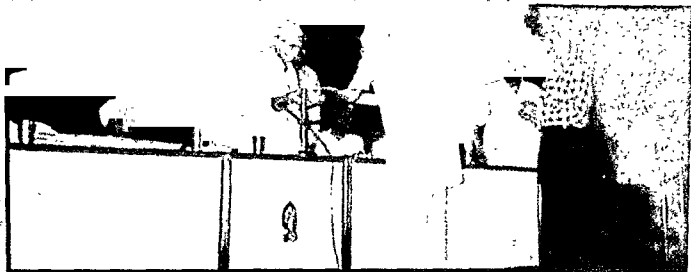
27 सितम्बर 1998 को सरदारशहर में नागरिक अभिनन्दन के मौके पर
गाँधी मन्दिर के अध्यक्ष मिलाप चंद दूगड़ आचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर अभिनन्दन करते हुए
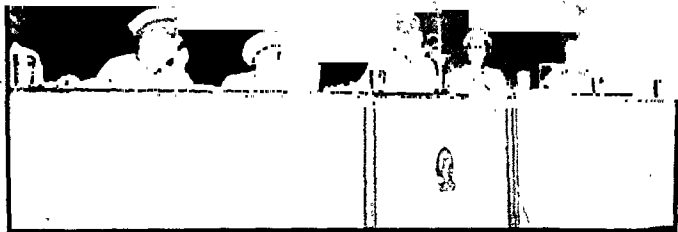
सरदारशहर में नागरिक अभिनन्दन के दौरान आचार्य श्री गौरीशंकर जी अध्यक्षीय भाषण देते हुए

श्री कन्हैयालाल दुगड़ द्वारा आचार्य गौरीशंकरजी को स्मरणोपहार भेंट करते हुए। (स्मृति चिह्न-गोलाकार डिश पर रजत सरस्वती-प्रतिभा) जिसके नीचे पट्टिका पर जिस उपलक्ष्य में उपहार दिया गया उसका आलेख। श्री दुगड़ के पीछे खड़े हैं संयोजक डॉ. बुद्धमल श्यामसुखा।

अतिरुग्ण एवं कृश कमजोर आचार्य डॉ. गौरीशंकर जी को अभिनन्दन भेंट करते हुए श्री दीपचन्द नाहटा सहायता कर रहे हैं अध्यक्ष महोदय एवं खड़े रह सकने के लिए सहारा दे रहे हैं। आचार्य श्री के कनिष्ठ सुपुत्र श्री कृष्ण कुमार एडवोकेट-पत्रकार पूर्णचन्द्र मीमाणी

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह में कुलपति डॉ. गौरीशंकर आचार्य किसी विशेष पत्र का गठन करते हुए।

गुरुकुल महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के दौरान कुलपति डॉ. गौरीशंकर आचार्य एवं अन्य पदाधिकारी

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार में आयोजित दर्शनानन्द जयन्ती 26.1.1990

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह में उपाधि प्राप्त स्नातकों के साथ कुलपति डॉ. गौरीशंकर जी आचार्य

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के ६५वें वार्षिकोत्सव एवं आयुर्वेद सम्मेलन के दौरान मुख्य अतिथि डॉ. गौरीशंकर आचार्य एक भावपूर्ण मुद्रा में।
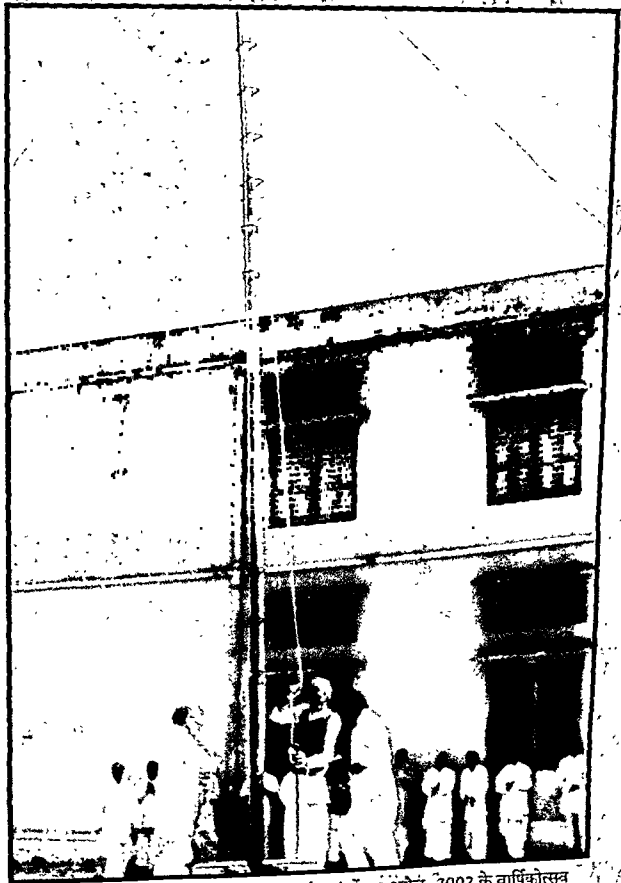
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तरांचल) में 13 अप्रैल, 2002 के वार्षिकोत्सव के प्रारम्भ में झण्डारोहण करते डॉ. गौरीशंकर आचार्य।
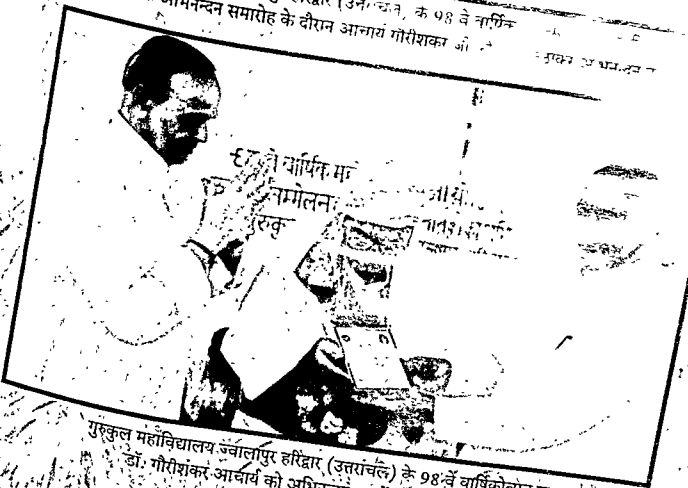
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के वार्षिकोत्सव के अवसर पर हरियाणा की जन स्वास्थ्य मंत्री प्रसन्नादेवी एवं कुलपति डॉ. गौरीशंकर आचार्य तथा अन्य पदाधिकारीगण
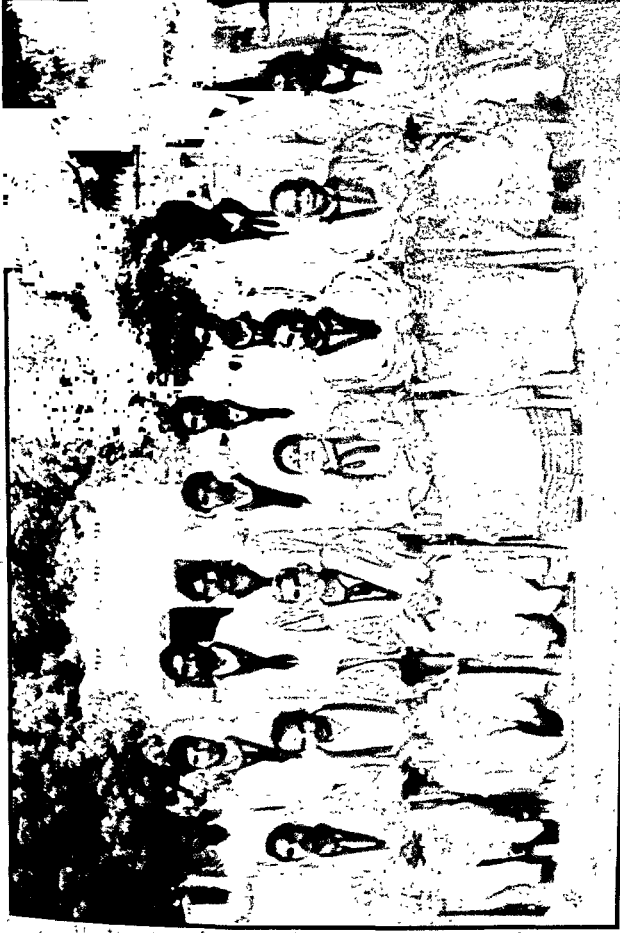
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तरांचल) के दीक्षान्त समारोह के पश्चात् हरियाणा की जनस्वास्थ्य मंत्री प्रसन्नादेवी, प्रधान एवं प्रधानाचार्य डॉ. हरिगोपाल शास्त्री के साथ कुलपति डॉ. गौरीशंकर आचार्य

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तरांचल) के वार्षिक महोत्सव पर दीक्षान्त भाषण देते हुए कुलपति डॉ. गौरीशंकर आचार्य।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तरांचल) के दीक्षान्त समारोह पर श्रीमती प्रसन्नादेवी, जन स्वास्थ्य मंत्री हरियाणा का अभिनन्दन करते हुए आचार्यजी

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तरांचल) के दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित करते हुए कुलपति डॉ गौरीशंकर आचार्य जी।

॥ जय श्रीराम ॥

पदमसिंह भाटी

राजस्थान के प्रमुख पत्रकार पदमसिंह भाटी साहित्य और पत्रकारिता में विशिष्ठ स्थान रखते हैं।

जन्म : 5 जून, 1939, शिव छापरी गाँव, जिला-नागौर, (राज.)

पिता का नाम : स्व. ठाकुर मंगेज सिंह जी

शिक्षा : फतेहपुर और गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर, जिला-चूरू, (राज.)

कार्यक्षेत्र
- अपने छात्रजीवन में किशोर पत्र का प्रकाशन
- कार्यालय सचिव-राजस्थान ... कल्याण संघ जयपुर 1959 से 62 तक साथ ही
- निजी सचिव तत्कालीन अध्यक्षा श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया
- कुछ समय सरदार शहर में अध्यापन कार्य
- विनोबा बस्ती सुधार समिति (हरिजनोद्धार) का कार्य
- अध्यक्ष : चूरू – जिला लघु सिंचाई संघ, चूरू-जिला युवक कांग्रेस, चूरू जिला भारत सेवक समाज।
- सचिव : इन्टरनेशनल सोसायटी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर
- सदस्य : कार्यकारिणी राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस

पत्रकार प्रतिनिधित्व :
सरदार शहर से "समाचार भारती" तथा अन्य समाचार पत्रों का
- 1970-75 तक स्टॉफ रिपोर्टर संवाद समिति समाचार भारती, जयपुर
- अगस्त 1975 "दैनिक नवज्योति" जयपुर में सम्पादकीय विभाग में संवाददाता
- मुख्य संवाददाता "दैनिक नवज्योति" जयपुर तथा जयपुर ब्यूरो प्रमुख

संगठन महामंत्री: महामंत्री (तीन बार), राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ जयपुर वर्ष 1975-85 तक

अध्यक्ष : 1988 में राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ जयपुर

विदेश यात्रा : भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासघ के प्रतिनिधि मण्डल में, सोवियत रूस एव नेपाल

सम्मान
- पत्रकार जगत में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए चार बार।
- भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ
- राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ
- पिंकसिटी प्रेस क्लब, जयपुर,
- जयपुर समारोह समिति,

वर्तमान : स्थानीय सम्पादक "दैनिक समाचार जगत" प्रातः एव सायकालीन